समग्र क्षेत्र विकास नियोजन

(मांगरोल तहसील का भौगोलिक अध्ययन)

INTEGRATED AREA DEVELOPMENT PLANNING
(A Geographical Study of Mangrol Tehsil)

कोटा विश्वविद्यालय, कोटा

की पीएच.डी. (भूगोल) उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध प्रबन्ध

सामाजिक विज्ञान संकाय

शोधार्थी

रवि कुमार नागर

पर्यवेक्षक

डॉ. एन.के. जेतवाल

सहआचार्य

भूगोल विभाग

राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बून्दी

कोटा विश्वविद्यालय, कोटा

2018

Certificate

I feel great pleasure in certifying that the thesis entitled **"Integrated Area Development Planning (A Geographical Study of Mangrol Tehsil)"** by Ravi Kumar Nagar Under my guidance. He has completed the following requirements as per Ph.D. regulations of the University.

(a) Course work as per the university rules.

(b) Residential requirement of the university (200 days)

(c) Regularly submitted annual progress report.

(d) Presented his work in the departmental committee.

(e) Published/accepted minimum of two research paper in a referred research journal.

I recommended the submission of thesis.

Date : 4.8.2018

Dr. N.K.Jetwal
Supervisor
सह आचार्य
राजकीय महाविद्यालय
बून्दी (राज.)

शोध सार

समग्र क्षेत्र विकास नियोजन विकास की परिभाषा प्रस्तुत करता है। जिसमें समग्र विकास की संकल्पना को मूल आधार माना गया है। अध्ययन क्षेत्र में मांगरोल तहसील के समग्र विकास को परिभाषित किया गया है। जिसमें सम्पूर्ण परिवेश ग्रामीण होने के कारण विकास कार्य कृषि पर निर्भर है। यहाँ पर विभिन्न गाँवों में विभिन्न आधारभूत सुविधाऐं उपलब्ध है एवं कई गांव सुविधाओं की दृष्टि से पिछड़े हुए है। अध्ययन क्षेत्र में इन्हीं सुविधाओं को सारगर्भीत किया गया है तथा सुविधाओं के लिए आवश्यक दशाऐं उनकी स्थिति एवं व्यक्तियों के लिए आवश्यकताओं को निर्धारित किया गया है। जिसमें अध्ययन क्षेत्र की स्थिति जलवायु एवं विभिन्न भौतिक दशाऐं क्षेत्र के विकास को परिभाषित करती है।

अध्ययन क्षेत्र में शिक्षा चिकित्सा, संचार, बाजार एवं मूलभूत आवश्यकताओं का अध्ययन किया गया है। जिसमें विभिन्न सुविधाओं को विकास के लिए आवश्यक बताया है।

शोध ग्रन्थ में प्रथम अध्याय के अन्तर्गत अध्ययन के उद्देश्य, विकास की संकल्पना, कार्यों की समीक्षा, विधि तंत्र आदि को समायोजित किया गया है। जिसमें विभिन्न संकल्पनाओं के आधार पर अध्ययन की रूपरेखा प्रस्तुत की है।

द्वितीय अध्याय में अध्ययन क्षेत्र की स्थिति उच्चावच, अपवाह तंत्र, जलवायु, प्राकृतिक वनस्पति, मृदा, आर्थिक स्वरूप, जनसांख्यिकीय स्वरूप आदि के आधार पर क्षेत्र की स्थिति का निर्धारण किया गया है।

तृतीय अध्याय में समग्र क्षेत्र विकास के स्वरूप एवं उनके अंगों का वर्णन किया गया है। जिसमें केन्द्रीय कार्यों की संकल्पना प्रस्तृत की गई। तथा उनका महत्व निर्धारित किया गया। इसके बाद केन्द्रीय स्थल के सिद्दान्त मांगरोल के संदर्भ में प्रस्तुत किये गये। जिसमें विभिन्न सेवाओं, शिक्षा, चिकित्सा, संचार, जनुपयोगी सेवाऐं आदि का वर्णन किया गया तथा सेवा केन्द्रों की स्थिति निर्धारित की गई।

चतुर्थ अध्याय में केन्द्रीय स्थलों की कार्यात्मक सम्बद्धता एवं प्रवाह को परिभाषित किया गया है। जिसमें सम्बद्धता का मुख्य आधार यातायात माना गया है तथा यातायात प्रवाह को परिभाषित किया गया है। जिसमें वर्तमान में यातायात सुविधा एवं उनकी सम्बद्धता को परिभाषित किया गया। इसके अतिरिक्त विभिन्न सामाजिक सुविधाओं कृषि एवं अकृषि सुविधाओं की सम्बद्धता एवं रिक्तता को परिभाषित किया गया। जिसके आधार पर केन्द्रीय स्थलों की भूमिका को ग्रामीण स्तर पर निर्धारित किया गया।

पंचम अध्याय में कार्यात्मक पदानुक्रम को निर्धारित किया गया जिसमें पदानुक्रम की भूमिका स्पष्ट करते हुए चयनित कार्यों के मूल्यांकन के आधार पर पदानुक्रम निर्धारित किया गया तथा केन्द्रीय कार्यों के भार का निर्धारण किया गया। केन्द्रीय के निर्धारण के साथ ही जनसंख्या की व्यवसायिक संरचना के आधार पर पदानुक्रम निर्धारित किया गया।

षष्ठम अध्याय में प्रादेशिक सम्बद्धता के संश्लेषण को प्रस्तुत किया गया है। जिसमें विभिन्न कार्यों एवं सेवाओं के लिए न्यूनतम जनसंख्या निर्धारित की गयी। जनसंख्या के आधार पर सेवा केन्द्रों की रिक्तता को प्रदर्शित किया गया। साथ ही कार्यात्मक रिक्तता के क्षेत्र बताये गये तथा वर्तमान में अपेक्षित सुविधाओं को सुझाया गया है।

सप्तम अध्याय में समग्र विकास हेतु वर्तमान स्वरूप एवं भावी विकास के लिए व्यूह रचना प्रस्तुत की गयी। जिसमें प्रदेश के विकास में केन्द्रीय स्थलों की भूमिका को निर्धारित करते हुए वर्तमान आर्थिक सुविधाओं में भावी

विकास की कठिनाईयाँ भौगोलिक, आर्थिक सामाजिक स्तर पर निर्धारित की गई तथा कार्यात्मक पदानुक्रम का प्रस्ताव निर्धारित किया गया तथा क्षेत्र विकास के लिए प्रस्ताव तैयार किया गया।

अष्ठम अध्याय में शोध सारांश एवं निष्कर्ष एवं सुझाव प्रस्तुत किये गये।

इस प्रकार इस शोध ग्रन्थ में समग्र क्षेत्र विकास नियोजन में मांगरोल तहसील को आधार मानते हुए विभिन्न तथ्यों को प्रस्तुत किया गया एवं भावी विकास के लिए विभिन्न प्रस्ताव तैयार किये गये। जिनके आधार पर अध्ययन क्षेत्र को ओर अधिक विकसति किया जा सकता है।

रवि कुमार नागर

Candidate's Declaration

I hereby, certify that the work, which is being presented in the thesis, entitled **"Integrated Area Development Planning (A Geographical Study of Mangrol Tehsil)"** in partial fulfillment of the requirement for the award of the Degree of Doctor of Philosophy, carried under the supervision of Dr. N.K.Jetwal and submitted to the Department of Geography in the faculty of social science, Government College Bundi, represents my ideas in my own words and where others ideas or words have been included. I have adequately cited and referenced the original sources. The work presented in this thesis has not been submitted elsewhere for the award of any other degree or diploma from any Institutions. I also declare that I have adhered to all principles of academic honesty and integrity and have not misrepresented or fabricated or falsified any idea/data/fact/source in my submission. I understand that any violation of the above will cause for disciplinary action by the university and can also evoke penal action from the source which have thus not been properly cited or from whom proper permission has not been taken when needed.

रवि कुमार

Ravi Kumar Nagar

Date : 03-08-2018

This is certify that above statement made by Ravi Kumar Nagar Registration No. RS/589/13 is correct to the best of my knowledge.

Date: 4.8.2018

Dr. N.K.Jetwal

Supervisor

सह आचार्य
राजकीय महाविद्यालय
बून्दी (राज.)

आभार

''ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्य भर्गो देवस्य धीमहि, धियो यो नः प्रचोदयात्''

सर्वप्रथम वेद माता को नमन जिन्होंने संसार में वेद पुराणों की रचना का आधार रखा। संसार में प्रत्येक प्राणी किसी न किसी अभिलाषा के साथ जीवन व्यतीत करता है। प्राणी अपने किये गये कार्यों के आधार पर समाज में अपना अस्तित्व निर्धारित करता है।

ऐसे मनुष्यों में से मैं भी एक हूँ जिसने पृथ्वी के प्रति अपनी रूची दिखाई एवं अध्ययन विषय में भूगोल को अपनी प्राथमिकता दी। प्रारम्भ से ही मेरा जीवन ग्रामीण परिवेश का होने के कारण प्रकृति से प्रभावित रहा। प्रकृति की प्रत्येक घटना हमें कुछ नया संदेश देना चाहती है। मैंने उसी संदेश को समझने की कोशिश की जिसके चलते मेरे अध्ययन विषय में भूगोल विषय को जानने में अपनी रूची दिखाई। इससे प्रभावित होकर मैंने शोध हेतु अपने आप को तैयार किया और कोटा विश्व विद्यालय कोटा ने मुझे शोध का अवसर प्रदान किया। साथ ही मुझे परम पूज्य गुरूदेव श्रीमान् डॉ. नन्दकिशोर जेतवाल का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ जो वर्तमान में भूगोल विभाध्यक्ष के पद पर राजकीय महाविद्यालय बून्दी में अपनी सेवाऐं दे रहे हैं। जिन्होंने मेरे शोध को व्यवस्थित एवं प्रबन्धित किया। आपके मार्गदर्शन में मुझे न केवल शोध हेतु प्रेरणा मिली अपितु जीवन के कई उतार चढ़ाव से भी अवगत कराया। आपने कुशल प्रबन्धन, अनुशासन एवं संयम पूर्वक जीवन निर्वाह हेतु प्रेरित किया। इस हेतु मैं सपरिवार गुरूवर का आभारी हूँ।

मेरे शोध हेतु मुझे आशिर्वाद मेरे स्व. दादा–दादी श्री रामविलास एवं श्रीमती भूली बाई का प्राप्त हुआ, जिन्होंने मुझे सुसंस्कार का पाठ अपने जीवन के प्रथम चरण में ही पढ़ाया उनका भी मैं सदैव आभारी रहूँगा।

माता–पिता जीवन के ईश्वरीय शक्ति होने का प्रमाण है। संसार में वे ईश्वर का स्वरूप हैं जो अपने त्याग एवं तप के बल पर अपनी संतान को हर प्रकार की सुख सुविधा देने का प्रयास करते हैं। मेरे पिता श्रीमान् जमुना शंकर नागर एवं

माता श्रीमती चन्द्रकांता ने अपने वात्सल्य एवं ममत्व भाव से मुझे अपने शोध हेतु प्रेरित किया। मैं और मेरा शोध सदैव आपके चरणों में समर्पित रहेगा।

इस शोध हेतु मुझे मेरे अन्य गुरूवर श्रीमान् एच.एम. सक्सेना, डॉ. एम.जेड.ए. खान, डॉ. संदीप यादव, डॉ. संदीप सिंह चौहान, डॉ. एल.सी. अग्रवाल, डॉ. विनोद कुमार भारद्वाज एवं प्रोफेसर विजयराम मीणा ने समय–समय पर मुझे मार्गदर्शित किया जिनका में आभारी हूँ।

शोध ग्रन्थ का लेखन मैंने अपने परिवार के प्यार एवं दुलार के बीच किया जिसमें मेरे बड़े भाई एवं भाभी डॉ. अशोक कुमार–श्रीमती अनिता, श्री सोभागमल–लीला बाई, डॉ. प्रमोद नागर–नीमा एवं जीजा जी दीदी श्री महेन्द्र कुमार–मधुबाला का आभारी रहूँगा।

इस शोध ग्रन्थ का अधिकांश समय मैंने अपने परिवार के साथ बिताया जिसमें मेरी पत्नी राजेश नागर ने लगातार प्रेरित किया एवं मेरे पुत्र अक्षांश नागर का प्यार मुझे लगातार अपने लक्ष्य की ओर बढ़ाता रहा। आपके प्यार एवं समर्पण के बल पर मैं अपना शोध कार्य सकुशल पूर्ण कर सका। मैं आपका आभारी रहूँगा।

मेरे परिवार में मेरे भतिजे–भतिजी शीतल, कुणाल, कर्णवी, जतीन, मंजीत एवं भान्जे गगन, हर्ष आपके प्यार एवं स्नेह का भी आभारी रहूँगा।

मैं मेरे परम् मित्रों में श्री जगदीश नागर, बन्टेश कुमार, डॉ. मोहम्मद हनीफ खान, कौशल किशोर, बनवारी, दुष्यंत, नासिर खान, तनवीर एवं अन्य साथियों का आभारी हूँ जिन्होंने मुझे प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से सहयोग प्रदान किया।

अन्त में मैं मेरे सहयोगी नासिर खान का आभारी हूँ जिन्होंने मेरे शोध को कम्प्यूटर के द्वारा सुसज्जित एवं व्यवस्थित किया।

मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि मुझे लगातार ऐसे कार्य के लिए प्रेरित करते रहें जिससे मैं समाज में शिक्षा सम्बन्धित नये आयाम प्रस्तुत कर सकूं।

रवि कुमार नागर

अनुक्रमणिका

मानचित्र सूची (ii)

तालिका सूची (iv)

आरेख सूची (vii)

अध्याय	विषय वस्तु	पृष्ठ सं.
अध्याय प्रथम	परिचय	1–12
अध्याय द्वितीय	भौगोलिक पृष्ठभूमि	13–53
अध्याय तृतीय	समग्र क्षेत्र विकास का स्वरूप एवं उसके अंग	54–86
अध्याय चतुर्थ	केन्द्रीय स्थलों की कार्यात्मक सम्बद्धता एवं प्रवाह	87 – 107
अध्याय पंचम	कार्यात्मक पदानुक्रम	108 – 129
अध्याय षष्ठम	प्रादेशिक सम्बद्धता का संश्लेषण	130 – 175
अध्याय सप्तम्	समग्र विकास हेतु वर्तमान स्वरूप एवं भावी विकास के लिए व्यूह रचना	176 – 188
अध्याय अष्ठम्	निष्कर्ष, सारांश एवं सुझाव	189 – 197
	सारांश	198 – 210
	संदर्भ ग्रन्थ सूची	211 – 217

मानचित्र सूची

मानचित्र सं.	विषय वस्तु	पृष्ठ सं.
2.1	अवस्थिति मानचित्र	14
2.2	अधिवासों की स्थिति	15
2.3	उच्चावच	17
2.4	अपवाह तंत्र	20
2.5	मृदा	30
2.6	भौगोलिक प्रदेश	32
2.7	परिवहन तंत्र	39
3.1	शैक्षणिक सुविधाओं का वितरण प्रतिरूप	59
3.2	स्वास्थ्य सुविधाओं का वितरण प्रतिरूप	67
3.3	संचार सुविधाओं का वितरण प्रतिरूप	72
3.4	पशु चिकित्सा सुविधाओं का वितरण प्रतिरूप	76
3.5	आवश्यक सेवाओं का वितरण प्रतिरूप	79
3.6	बैंकिंग सेवाओं का वितरण प्रतिरूप	82
3.7	सहकारी समितियों का वितरण प्रतिरूप	84
4.1	सड़कों की अभिगम्यता	88
4.2	यातायात प्रवाह	90
4.3	घरेलु उद्योगों को ग्रामीण प्राथमिकता	93
4.4	साप्ताहिकी बाजार को ग्रामीण प्राथमिकता	95
4.5	राजस्थान सम्पर्क केन्द्र को ग्रामीण प्राथमिकता	97
4.6	ईंधन आपूर्ति को ग्रामीण प्राथमिकता	99
4.7	सहकारी समितियों को ग्रामीण प्राथमिकता	101
4.8	उर्वरक केन्द्रों को ग्रामीण प्राथमिकता	102

मानचित्र सं.	विषय वस्तु	पृष्ठ सं.
4.9	पशु चिकित्सालयों को ग्रामीण प्राथमिकता	104
4.10	बैंकिंग सेवाओं को ग्रामीण प्राथमिकता	106
6.1	उच्च सेवाओं की रिक्तता के क्षेत्र	147
6.2	मध्यम सेवाओं की रिक्तता के क्षेत्र	149
6.3	निम्न सेवाओं की रिक्तता के क्षेत्र	151
6.4	महाविद्यालय की कार्यात्मक सम्बद्धता का स्थानिक प्रतिरूप	154
6.5	डिस्पेंसरी की कार्यात्मक सम्बद्धता का स्थानिक प्रतिरूप	157
6.6	प्राथमिक सेवा केन्द्र की कार्यात्मक सम्बद्धता का स्थानिक प्रतिरूप	159
6.7	डाकघर की कार्यात्मक सम्बद्धता का स्थानिक प्रतिरूप	161
6.8	थोक बाजार की कार्यात्मक सम्बद्धता का स्थानिक प्रतिरूप	164
6.9	बैंक की कार्यात्मक सम्बद्धता का स्थानिक प्रतिरूप	166
6.10	सहकारी समिति की कार्यात्मक सम्बद्धता का स्थानिक प्रतिरूप	168
6.11	राजस्थान सम्पर्क केन्द्र की कार्यात्मक सम्बद्धता का स्थानिक प्रतिरूप	171
6.12	उर्वरक केन्द्र की कार्यात्मक सम्बद्धता का स्थानिक प्रतिरूप	173
7.1	वर्तमान सेवा केन्द्र	178
7.2	प्रस्तावित सेवा केन्द्र	185

तालिकाओं की सूची

तालिका सं.	विषय वस्तु	पृष्ठ सं.
2.1	मांगरोल तहसील – औसत मासिक वर्षा (2001–2011)	24
2.2	मांगरोल तहसील – वार्षिक वर्षा का अंतर 1991–2011 (मि.मी. में)	25
2.3	मांगरोल तहसील – पशु वितरण	35
2.4	मांगरोल तहसील – जनसंख्या आकार के अनुसार प्राथमिक विद्यालयों का वितरण प्रतिरूप	41
2.5	मांगरोल तहसील – अधिवासों में जनसंख्या वितरण	43-45
2.6	मांगरोल तहसील – जनसंख्या आकार के अनुसार अधिवासों की संख्या	46
2.7	मांगरोल तहसील – जनसंख्या घनत्व के अनुसार अधिवासों की संख्या	49
2.8	मांगरोल तहसील – साक्षरता	52
2.9	मांगरोल तहसील – व्यवसायिक स्वरूप	53
3.1	मांगरोल तहसील – जनसंख्या आकार के अनुसार प्राथमिक विद्यालयों का वितरण प्रतिरूप	57
3.2	मांगरोल तहसील – भौगोलिक प्रदेशों के अनुसार प्राथमिक विद्यालय केन्द्रों की औसत दूरी	58
3.3	मांगरोल तहसील – जनसंख्या के अनुसार उच्च प्राथमिक विद्यालयों का विवरण प्रतिरूप	60
3.4	मांगरोल तहसील – भौगोलिक प्रदेशों के अनुसार उच्च प्राथमिक शिक्षा केन्द्रों की औसत दूरी	61
3.5	मांगरोल तहसील – जनसंख्या आकार के अनुसार माध्यमिक विद्यालय का विवरण प्रतिरूप	62
3.6	मांगरोल तहसील – भौगोलिक प्रदेशों के अनुसार माध्यमिक शिक्षा केन्द्रों की औसत दूरी	63

तालिका सं.	विषय वस्तु	पृष्ठ सं.
3.7	मांगरोल तहसील – जनसंख्या आकार के अनुसार उच्च माध्यमिक विद्यालयों का विवरण प्रतिरूप	63
3.8	मांगरोल तहसील – भौगोलिक प्रदेशों के अनुसार उच्च माध्यमिक शिक्षा केन्द्रों की औसत दूरी	64
3.9	मांगरोल तहसील – जनसंख्या आकार के अनुसार स्वास्थ्य केन्द्रों का विवरण प्रतिरूप	66
3.10	मांगरोल तहसील – भौगोलिक प्रदेशों के अनुसार स्वास्थ्य केन्द्रों की औसत दूरी	66
3.11	मांगरोल तहसील – जनसंख्या आकार के अनुसार प्राथमिक उप स्वास्थ्य केन्द्रों का विवरण प्रतिरूप	68
3.12	मांगरोल तहसील – भौगोलिक प्रदेशों के अनुसार प्राथमिक उप स्वास्थ्य केन्द्रों की औसत दूरी	69
3.13	मांगरोल तहसील – जनसंख्या आकार के अनुसार परिवार कल्याण केन्द्रों का विवरण प्रतिरूप	70
3.14	मांगरोल तहसील – भौगोलिक प्रदेशों के अनुसार परिवार कल्याण केन्द्रों की औसत दूरी	70
3.15	मांगरोल तहसील – जनसंख्या आकार के अनुसार डाकघर का विवरण प्रतिरूप	71
3.16	मांगरोल तहसील – भौगोलिक प्रदेशों के अनुसार डाकघर सेवाओं की औसत दूरी	73
3.17	मांगरोल तहसील – जनसंख्या आकार के अनुसार दूरभाष सेवा केन्द्रों का विवरण प्रतिरूप	74
3.18	मांगरोल तहसील – भौगोलिक प्रदेशों के अनुसार दूरभाष सेवा केन्द्रों की औसत दूरी	75
3.19	मांगरोल तहसील – जनसंख्या आकार के अनुसार पशु चिकित्सा केन्द्रों का वितरण प्रतिरूप	77
3.20	मांगरोल तहसील – भौगोलिक प्रदेशों के अनुसार पशु चिकित्सा सेवा केन्द्रों की औसत दूरी	78
3.21	मांगरोल तहसील – जनसंख्या आकार के अनुसार आवश्यक सेवाओं का वितरण प्रतिरूप	78
3.22	मांगरोल तहसील – जनसंख्या आकार के अनुसार खाद्य आपूर्ति केन्द्रों का वितरण प्रतिरूप	80

तालिका सं.	विषय वस्तु	पृष्ठ सं.
3.23	मांगरोल तहसील – जनसंख्या आकार के अनुसार बैंकिंग सेवाओं का वितरण प्रतिरूप	81
3.24	मांगरोल तहसील – जनसंख्या आकार के अनुसार उर्वरक एवं कीटनाशक केन्द्रों का वितरण प्रतिरूप	83
5.1	मांगरोल तहसील – सेवाओं का कार्य भार	111
5.2	मांगरोल तहसील – केन्द्रीय सूचकांक के विभिन्न पदानुक्रम के आधार पर अधिवासों की संख्या एवं प्रतिशत	113
5.3	मांगरोल तहसील – जनसंख्या की व्यवसायिक संरचना के आधार पर पदानुक्रम	118
5.4	मांगरोल तहसील – संयुक्त केन्द्रीय भार के आधार पर अधिवासों का पदानुक्रम के अनुसार विवरण	124
5.5	मांगरोल तहसील – कार्यात्मक पदानुक्रम एवं जनसंख्या पदानुक्रम के आवासों की संख्या का तुलनात्मक वितरण	126
5.6	मांगरोल तहसील – कार्यात्मक पदानुक्रम एवं संयुक्त पदानुक्रम के आवासों की संख्या का तुलनात्मक वितरण	128
5.7	मांगरोल तहसील – जनसंख्या पदानुक्रम एवं संयुक्त पदानुक्रम के आवासों की संख्या का तुलनात्मक वितरण	129
6.1	मांगरोल तहसील – अधिवासों की जनसंख्या आकार एवं कार्यात्मक वितरण	132
6.2	विभिन्न कार्यों एवं सुविधाओं के लिए न्यूनतम जनसंख्या के अनुसार प्रस्तावित एवं आवश्यक कार्यों की संख्या	133
6.3	मांगरोल तहसील – मांगरोल तहसील में विभिन्न सेवाओं का विस्तार	144
6.4	मांगरोल तहसील – उच्च शिक्षा सेवित अधिवासों की संख्या, क्षेत्र एवं जनसंख्या	155
6.5	मांगरोल तहसील – डिस्पेंसरी सेवित अधिवासों की संख्या, क्षेत्र एवं जनसंख्या	156
6.6	मांगरोल तहसील – प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र से सेवित अधिवासों की संख्या, क्षेत्र एवं जनसंख्या	160
6.7	मांगरोल तहसील – डाकघर सेवित अधिवासों की संख्या, क्षेत्र एवं जनसंख्या	162
6.8	मांगरोल तहसील – थोक बाजार सेवित अधिवासों की संख्या, क्षेत्र एवं जनसंख्या	163
6.9	मांगरोल तहसील – बैंक सेवित अधिवासों की संख्या, क्षेत्र एवं जनसंख्या	167
6.10	मांगरोल तहसील – सहकारी समिति सेवित अधिवासों की संख्या, क्षेत्र एवं जनसंख्या	169
6.11	मांगरोल तहसील – राजस्थान संपर्क केन्द्र सेवित अधिवासों की संख्या, क्षेत्र एवं जनसंख्या	170
6.12	मांगरोल तहसील – उर्वरक वितरण केन्द्र सेवित अधिवासों की संख्या, क्षेत्र एवं जनसंख्या	174

आरेख एवं ग्राफ सूची

आरेख/ग्राफ संख्या	विषय वस्तु	पृष्ठ सं.
2.1	मांगरोल तहसील – क्लाईमोग्राफ	22
2.2	मांगरोल तहसील – हिदरग्राफ	23
2.3	औसत वार्षिक वर्षा (1991–2011)	26
2.4	वार्षिक वर्षा परिवर्तनशीलता एवं अंतर	27
2.5	मांगरोल तहसील में पशु पालन का वितरण 2015	36
2.6	मांगरोल तहसील में दशकीय जनसंख्या वृद्धि	42
5.1	मांगरोल तहसील – जनसंख्या एवं सेवा केन्द्रों के कार्यिक भार का सहसम्बन्ध	114
5.2	मांगरोल तहसील – जनसंख्या एवं व्यवसायिक जनसंख्या केन्द्रीय भार का सहसम्बन्ध	119
5.3	मांगरोल तहसील – जनसंख्या एवं संयुक्त केन्द्रीय भार का सहसम्बन्ध	123
6.1	विभिन्न सेवाओं के लिए न्यूनतम जनसंख्या	137-139

तालिकाओं की सूची

तालिका सं.	विषय वस्तु	पृष्ठ सं.
2.1	मांगरोल तहसील – औसत मासिक वर्षा (2001–2011)	24
2.2	मांगरोल तहसील – वार्षिक वर्षा का अंतर 1991–2011 (मि.मी. में)	25
2.3	मांगरोल तहसील – पशु वितरण	35
2.4	मांगरोल तहसील – जनसंख्या आकार के अनुसार प्राथमिक विद्यालयों का वितरण प्रतिरूप	41
2.5	मांगरोल तहसील – अधिवासों में जनसंख्या वितरण	43-45
2.6	मांगरोल तहसील – जनसंख्या आकार के अनुसार अधिवासों की संख्या	46
2.7	मांगरोल तहसील – जनसंख्या घनत्व के अनुसार अधिवासों की संख्या	49
2.8	मांगरोल तहसील – साक्षरता	52
2.9	मांगरोल तहसील – व्यवसायिक स्वरूप	53
3.1	मांगरोल तहसील – जनसंख्या आकार के अनुसार प्राथमिक विद्यालयों का वितरण प्रतिरूप	57
3.2	मांगरोल तहसील – भौगोलिक प्रदेशों के अनुसार प्राथमिक विद्यालय केन्द्रों की औसत दूरी	58
3.3	मांगरोल तहसील – जनसंख्या के अनुसार उच्च प्राथमिक विद्यालयों का विवरण प्रतिरूप	60
3.4	मांगरोल तहसील – भौगोलिक प्रदेशों के अनुसार उच्च प्राथमिक शिक्षा केन्द्रों की औसत दूरी	61
3.5	मांगरोल तहसील – जनसंख्या आकार के अनुसार माध्यमिक विद्यालय का विवरण प्रतिरूप	62
3.6	मांगरोल तहसील – भौगोलिक प्रदेशों के अनुसार माध्यमिक शिक्षा केन्द्रों की औसत दूरी	63

तालिका सं.	विषय वस्तु	पृष्ठ सं.
3.7	मांगरोल तहसील – जनसंख्या आकार के अनुसार उच्च माध्यमिक विद्यालयों का विवरण प्रतिरूप	63
3.8	मांगरोल तहसील – भौगोलिक प्रदेशों के अनुसार उच्च माध्यमिक शिक्षा केन्द्रों की औसत दूरी	64
3.9	मांगरोल तहसील – जनसंख्या आकार के अनुसार स्वास्थ्य केन्द्रों का विवरण प्रतिरूप	66
3.10	मांगरोल तहसील – भौगोलिक प्रदेशों के अनुसार स्वास्थ्य केन्द्रों की औसत दूरी	66
3.11	मांगरोल तहसील – जनसंख्या आकार के अनुसार प्राथमिक उप स्वास्थ्य केन्द्रों का विवरण प्रतिरूप	68
3.12	मांगरोल तहसील – भौगोलिक प्रदेशों के अनुसार प्राथमिक उप स्वास्थ्य केन्द्रों की औसत दूरी	69
3.13	मांगरोल तहसील – जनसंख्या आकार के अनुसार परिवार कल्याण केन्द्रों का विवरण प्रतिरूप	70
3.14	मांगरोल तहसील – भौगोलिक प्रदेशों के अनुसार परिवार कल्याण केन्द्रों की औसत दूरी	70
3.15	मांगरोल तहसील – जनसंख्या आकार के अनुसार डाकघर का विवरण प्रतिरूप	71
3.16	मांगरोल तहसील – भौगोलिक प्रदेशों के अनुसार डाकघर सेवाओं की औसत दूरी	73
3.17	मांगरोल तहसील – जनसंख्या आकार के अनुसार दूरभाष सेवा केन्द्रों का विवरण प्रतिरूप	74
3.18	मांगरोल तहसील – भौगोलिक प्रदेशों के अनुसार दूरभाष सेवा केन्द्रों की औसत दूरी	75
3.19	मांगरोल तहसील – जनसंख्या आकार के अनुसार पशु चिकित्सा केन्द्रों का वितरण प्रतिरूप	77
3.20	मांगरोल तहसील – भौगोलिक प्रदेशों के अनुसार पशु चिकित्सा सेवा केन्द्रों की औसत दूरी	78
3.21	मांगरोल तहसील – जनसंख्या आकार के अनुसार आवश्यक सेवाओं का वितरण प्रतिरूप	78
3.22	मांगरोल तहसील – जनसंख्या आकार के अनुसार खाद्य आपूर्ति केन्द्रों का वितरण प्रतिरूप	80

तालिका सं.	विषय वस्तु	पृष्ठ सं.
3.23	मांगरोल तहसील – जनसंख्या आकार के अनुसार बैंकिंग सेवाओं का वितरण प्रतिरूप	81
3.24	मांगरोल तहसील – जनसंख्या आकार के अनुसार उर्वरक एवं कीटनाशक केन्द्रों का वितरण प्रतिरूप	83
5.1	मांगरोल तहसील – सेवाओं का कार्य भार	111
5.2	मांगरोल तहसील – केन्द्रीय सूचकांक के विभिन्न पदानुक्रम के आधार पर अधिवासों की संख्या एवं प्रतिशत	113
5.3	मांगरोल तहसील – जनसंख्या की व्यवसायिक संरचना के आधार पर पदानुक्रम	118
5.4	मांगरोल तहसील – संयुक्त केन्द्रीय भार के आधार पर अधिवासों का पदानुक्रम के अनुसार विवरण	124
5.5	मांगरोल तहसील – कार्यात्मक पदानुक्रम एवं जनसंख्या पदानुक्रम के आवासों की संख्या का तुलनात्मक वितरण	126
5.6	मांगरोल तहसील – कार्यात्मक पदानुक्रम एवं संयुक्त पदानुक्रम के आवासों की संख्या का तुलनात्मक वितरण	128
5.7	मांगरोल तहसील – जनसंख्या पदानुक्रम एवं संयुक्त पदानुक्रम के आवासों की संख्या का तुलनात्मक वितरण	129
6.1	मांगरोल तहसील – अधिवासों की जनसंख्या आकार एवं कार्यात्मक वितरण	132
6.2	विभिन्न कार्यों एवं सुविधाओं के लिए न्यूनतम जनसंख्या के अनुसार प्रस्तावित एवं आवश्यक कार्यों की संख्या	133
6.3	मांगरोल तहसील – मांगरोल तहसील में विभिन्न सेवाओं का विस्तार	144
6.4	मांगरोल तहसील – उच्च शिक्षा सेवित अधिवासों की संख्या, क्षेत्र एवं जनसंख्या	155
6.5	मांगरोल तहसील – डिस्पेंसरी सेवित अधिवासों की संख्या, क्षेत्र एवं जनसंख्या	156
6.6	मांगरोल तहसील – प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र से सेवित अधिवासों की संख्या, क्षेत्र एवं जनसंख्या	160
6.7	मांगरोल तहसील – डाकघर सेवित अधिवासों की संख्या, क्षेत्र एवं जनसंख्या	162
6.8	मांगरोल तहसील – थोक बाजार सेवित अधिवासों की संख्या, क्षेत्र एवं जनसंख्या	163
6.9	मांगरोल तहसील – बैंक सेवित अधिवासों की संख्या, क्षेत्र एवं जनसंख्या	167
6.10	मांगरोल तहसील – सहकारी समिति सेवित अधिवासों की संख्या, क्षेत्र एवं जनसंख्या	169
6.11	मांगरोल तहसील – राजस्थान संपर्क केन्द्र सेवित अधिवासों की संख्या, क्षेत्र एवं जनसंख्या	170
6.12	मांगरोल तहसील – उर्वरक वितरण केन्द्र सेवित अधिवासों की संख्या, क्षेत्र एवं जनसंख्या	174

मानचित्र सूची

मानचित्र सं.	विषय वस्तु	पृष्ठ सं.
2.1	अवस्थिति मानचित्र	14
2.2	अधिवासों की स्थिति	15
2.3	उच्चावच	17
2.4	अपवाह तंत्र	20
2.5	मृदा	30
2.6	भौगोलिक प्रदेश	32
2.7	परिवहन तंत्र	39
3.1	शैक्षणिक सुविधाओं का वितरण प्रतिरूप	59
3.2	स्वास्थ्य सुविधाओं का वितरण प्रतिरूप	67
3.3	संचार सुविधाओं का वितरण प्रतिरूप	72
3.4	पशु चिकित्सा सुविधाओं का वितरण प्रतिरूप	76
3.5	आवश्यक सेवाओं का वितरण प्रतिरूप	79
3.6	बैंकिंग सेवाओं का वितरण प्रतिरूप	82
3.7	सहकारी समितियों का वितरण प्रतिरूप	84
4.1	सड़कों की अभिगम्यता	88
4.2	यातायात प्रवाह	90
4.3	घरेलु उद्योगों को ग्रामीण प्राथमिकता	93
4.4	साप्ताहिकी बाजार को ग्रामीण प्राथमिकता	95
4.5	राजस्थान सम्पर्क केन्द्र को ग्रामीण प्राथमिकता	97
4.6	ईंधन आपूर्ति को ग्रामीण प्राथमिकता	99
4.7	सहकारी समितियों को ग्रामीण प्राथमिकता	101
4.8	उर्वरक केन्द्रों को ग्रामीण प्राथमिकता	102

मानचित्र सं.	विषय वस्तु	पृष्ठ सं.
4.9	पशु चिकित्सालयों को ग्रामीण प्राथमिकता	104
4.10	बैंकिंग सेवाओं को ग्रामीण प्राथमिकता	106
6.1	उच्च सेवाओं की रिक्तता के क्षेत्र	147
6.2	मध्यम सेवाओं की रिक्तता के क्षेत्र	149
6.3	निम्न सेवाओं की रिक्तता के क्षेत्र	151
6.4	महाविद्यालय की कार्यात्मक सम्बद्धता का स्थानिक प्रतिरूप	154
6.5	डिस्पेंसरी की कार्यात्मक सम्बद्धता का स्थानिक प्रतिरूप	157
6.6	प्राथमिक सेवा केन्द्र की कार्यात्मक सम्बद्धता का स्थानिक प्रतिरूप	159
6.7	डाकघर की कार्यात्मक सम्बद्धता का स्थानिक प्रतिरूप	161
6.8	थोक बाजार की कार्यात्मक सम्बद्धता का स्थानिक प्रतिरूप	164
6.9	बैंक की कार्यात्मक सम्बद्धता का स्थानिक प्रतिरूप	166
6.10	सहकारी समिति की कार्यात्मक सम्बद्धता का स्थानिक प्रतिरूप	168
6.11	राजस्थान सम्पर्क केन्द्र की कार्यात्मक सम्बद्धता का स्थानिक प्रतिरूप	171
6.12	उर्वरक केन्द्र की कार्यात्मक सम्बद्धता का स्थानिक प्रतिरूप	173
7.1	वर्तमान सेवा केन्द्र	178
7.2	प्रस्तावित सेवा केन्द्र	185

आरेख एवं ग्राफ सूची

आरेख/ग्राफ संख्या	विषय वस्तु	पृष्ठ सं.
2.1	मांगरोल तहसील – क्लाईमोग्राफ	22
2.2	मांगरोल तहसील – हिदरग्राफ	23
2.3	औसत वार्षिक वर्षा (1991–2011)	26
2.4	वार्षिक वर्षा परिवर्तनशीलता एवं अंतर	27
2.5	मांगरोल तहसील में पशु पालन का वितरण 2015	36
2.6	मांगरोल तहसील में दशकीय जनसंख्या वृद्धि	42
5.1	मांगरोल तहसील – जनसंख्या एवं सेवा केन्द्रों के कार्यिक भार का सहसम्बन्ध	114
5.2	मांगरोल तहसील – जनसंख्या एवं व्यवसायिक जनसंख्या केन्द्रीय भार का सहसम्बन्ध	119
5.3	मांगरोल तहसील – जनसंख्या एवं संयुक्त केन्द्रीय भार का सहसम्बन्ध	123
6.1	विभिन्न सेवाओं के लिए न्यूनतम जनसंख्या	137-139

परिचय –

समग्र क्षेत्र विकास नियोजन अध्ययन क्षेत्र के विकास की परिभाषा प्रस्तुत करता है। जिसमें विभिन्न कार्यों एवं उनकी क्रियाओं को जनसंख्या एवं संसाधनों के साथ समन्वित किया जाता है। भारत में समग्र विकास कार्यक्रम सर्वप्रथम 1977 में लागू किया गया। समग्र विकास कार्यक्रम जिला ग्रामीण विकास एजेंसी तथा ब्लॉक स्तर एजेंसी द्वारा जमीनी स्तर पर प्रारम्भ किया गया। जिला ग्रामीण एजेंसी की स्थापना 1 अप्रेल 1999 को हुई। जिसमें धन के लिए प्रावधान केन्द्रीय एवं राज्य सरकार द्वारा 75:25 के अनुपात में किया जाता है। स्थानीय आधार पर विकास हेतु बनाये गये कार्यक्रम को नियोजन कहा जाता है। नियोजित विकास से ही समग्र विकास संभव है। अतः स्थानीय व क्षेत्रीय समग्र विकास देश के निवासियों की आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक विकास से सम्बन्धित है। समग्र विकास एक नियोजित क्षेत्रीय विषय है जिसके द्वारा किसी भी प्रदेश की समस्याओं का आंकलन करके निदान हेतु सुझाव दिया जाता है। अधिकांश देशों में भूमि एवं पूंजी सीमित है। अतः समग्र विकास द्वारा संसाधनों का समुचित प्रयोग करते हुए सीमित संसाधन की खोज करके उच्च तकनिकी तथा प्रशिक्षण द्वारा अधिकतम विकास किया जा सकता है।

समग्र ग्रामीण विकास –

ग्रामीण स्तर पर विकास कृषि कार्यों पर निर्भर है। विभिन्न गांवों में कृषि क्षेत्र के आधार पर वहाँ के रोजगार निर्धारित होते हैं। चूंकि ग्रामीण स्तर पर विभिन्न औद्योगिक इकाईयाँ एवं रोजगार के आयाम कम होते हैं। इसी कारण ग्रामीण स्तर पर कृषि की मुख्य आधारभूत रोजगार उपलब्ध करवाते हैं।

यहाँ पर विभिन्न संसाधनों की कमी होती है तथा तकनिकी विकास की दृष्टि से भी पिछड़े हुए होते हैं। किसी भी ग्रामीण विकास का निर्धारण वहाँ कि जीवनशैली एवं आर्थिक स्तर के आधार पर किया जाता है। पिछड़े हुए विभिन्न गांवों में आधारभूत सुविधाऐं समग्र विकास को बढ़ावा देती है।

जिसमें शिक्षा, चिकित्सा, संचार, परिवहन विभिन्न सुविधाऐं हैं। जिनके आधार पर समग्र विकास को परिभाषित किया जा सकता है।

शोध के प्रमुख उद्देश्य –

यह शोध प्रारूप नियोजनकर्ता का ध्यान उन क्षेत्रों की ओर आकर्षित करता है जो पिछड़े हैं। इस अध्ययन क्षेत्र में उन क्षेत्रों का पता लगाकर वहाँ की आधारभूत सुविधाओं को समुचित रूप से स्थापित करना प्रमुख उद्देश्य है। इसके अतिरिक्त शोध कार्य के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं –

1. कृषि, भूमि सुधार, मृदा संरक्षण, सिंचाई सुविधाऐं आदि कृषि अर्थव्यवस्थाओं के विस्तार हेतु प्रेरित करना।
2. शिक्षा, चिकित्सा, संचार, विपणन, साख की मूलभूत अधःसंरचना में सुधार करने हेतु सुझाव प्रस्तुत करना।
3. सामाजिक, आर्थिक अधःसंरचना का विस्तार एवं सुदृढ़िकरण करने का प्रयास।
4. संसाधनों का संरक्षण एवं वृद्धि केन्द्रों का प्रस्ताव प्रस्तुत करना।
5. विकास के लिए क्षमता एवं कौशल का उन्नयन करना।
6. नवीन परियोजनाओं एवं उनका विकास एवं उपयोग की रूपरेखा निर्धारित करना।
7. पशुपालन, बागवानी, कुटिर उद्योग जैसी संलग्न गतिविधियों के माध्यम से रोजगार के साधनों का उन्नयन करना।
8. क्षमता के आधार पर केन्द्रीय कार्यों की उपलब्धता के आधार पर सुविधाओं का समुचित अध्ययन करना।

समग्र क्षेत्र विकास की संकल्पना –

भारत एक ग्रामीण देश है जहाँ पर ग्रामीण विकास की पृष्ठभूमि एवं समन्वित विकास कार्यक्रम की अत्यधिक आवश्यकता है। भारत में समन्वित

विकास कार्यक्रम 2 अक्टूबर 1980 को प्रारम्भ किया गया। ग्रामीण विकास हेतु कृषि, बाजार, संचार, प्रशिक्षण, शिक्षा, साख एवं विद्युतापूर्ती, परिवहन सुविधा आदि के लिए नीतियों के निर्धारण की आवश्यकता है। वर्तमान अध्ययन कईं ग्रामीण गतिविधियों की औचित्यपूर्ण भागों में संरचनात्मक परिवर्तन करना होगा। साथ ही भूमि उपयोग के प्रतिरूप को पुनः व्यवस्थित करना पड़ेगा। वर्तमान परिस्थितियाँ गांवों में सभी ओर विकास की अनुमति प्रदान नहीं करती। इसलिए निश्चित कार्य तथा निवेश इकाई को खोजने की आवश्यकता है। जिससे कार्य की स्थापना की आदर्श स्थिति का पता लगाया जा सके। समग्र विकास में मुख्य कार्य निम्नलिखित है। दातेवला समिति निम्नलिखित क्रियाओं को विकास खण्ड स्तर पर नियोजित तथा क्रियान्वित करने की अनुशंषा प्रस्तुत करती है।

1. कृषि एवं सम्बन्धित नियोजन
2. गौण सिंचाई
3. मृदा संरक्षण एवं जल प्रबन्धन
4. पशु पालन
5. वानिकी
6. कृषि उत्पादों का प्रकमण
7. कृषि उत्पादन के संसाधनों की आपूर्ति
8. कुटिर एवं लघु उद्योग
9. स्थानिय सुविधाओं का आधार
10. सार्वजनिक सुविधाऐं
    - (अ) पेयजल आपूर्ति
    - (ब) स्वास्थ्य एवं पोषण
    - (स) शिक्षा

(द) आवास

(य) सफाई

(र) स्थानिक परिवहन

(ल) जन कल्याण कार्यक्रम

(ह) स्थानीय युवकों को प्रशिक्षण एवं स्थानीय जनसंख्या के कौशल में वृद्धि

उपरोक्त सभी क्रियाओं के आधार पर अध्ययन क्षेत्र में समग्र विकास हेतु विकास के आयाम प्रस्तुत करना एवं उनका तार्किक अध्ययन करना। समग्र विकास हेतु समस्त कार्यों का अध्ययन अत्यंत महत्वपूर्ण है।

<u>अब तक किये गये कार्य की समीक्षा</u> –

पी. सेन गुप्ता एवं गैलिना (1969) ने ''इकोनोमिक रिजनलाईजेशन ऑफ इण्डिया–प्रोब्लम्स एण्ड एप्रोचेज'' में भारत को लघु प्रदेशों में विभाजित किया। लघु प्रदेशों को एकल संसाधन, मध्यम प्रदेशों को स्थानीय, प्रादेशिक तथा राष्ट्रीय महत्व के विशेषीकरण के आधार पर विभाजित किया।

आर.पी. मिश्रा (1969) ने ''रीजनल प्लानिंग इन इण्डिया'' में भारत को आर्थिक विकास स्तर, संसाधनों का वितरण एवं उपयोग आदि के आधार पर 13 वृहत तथा मध्यम प्रदेशों में विभाजित किया।

एस.एन.माली (1970) ने ''रीजनल प्लानिंग फोर सोसियल फेसीलिटीज ए केस स्टडी ऑफ ईस्टर्न महाराष्ट्र'' में क्षेत्रिय नियोजक में सामाजिक सुविधाओं की महत्ता के आधार पर पूर्वी महाराष्ट्र का प्रादेशिक नियोजन प्रस्तुत किया।

एल.एस.भट्ट (1972) ने ''रीजनल प्लानिंग इन इण्डिया ए केस स्टडी ऑफ करनाल डिस्ट्रिक्ट'' में करनाल जिले में नियोजन में सामाजिक स्तर के 23 चर मूल्यों से ग्रामीण अधिवासों का पदानुक्रम निर्धारित किया।

रोडीनेली, डी.ए. एण्ड रूडले (1976) ने ''अरबन फंक्संस इन रूरल डेवलपमेंट इन एनालिसस ऑफ इन्टीग्रेटेड स्पेसियल डेवलपमेंट पालिसी आफिस ऑफ अरबन डवलपमेंट यू.एस.ए.आई.डी. वाशिंगटन में संयुक्त राज्य अमेरिका के विभिन्न गांवों के विकास की रूपरेखा को निर्धारित किया।

मिश्रा, आर.पी. और के.वी. सुन्दरम (1980) ने अपने शोध में भारत में बहुस्तरीय नियोजन एवं समन्वित ग्रामीण विकास पर कार्य किया और ग्रामीण विकास के विभिन्न चर मूल्यों का विश्लेषण किया है।

मिश्रा, जी.के. और ए. कुन्दु (1980) ने बस्तर एवं चन्द्रचुर जिलों में ग्रामीण विद्युतिकरण के आधार पर प्रादेशिक नियोजन का सूक्ष्मस्तरीय अध्ययन किया। परन्तु इन्होंने अन्य सेवाओं को आधार नहीं माना।

प्रसाद, एम. और एच.एल. सिंह (1981) ने बिहार के भंजपुर जिले कोलवार उपखण्ड में ग्रामीण विकास के लिए सूक्ष्मस्तरीय नियोजन का एक अध्ययन किया। जिसमें विभिन्न सेवाओं के स्तरों की पहचान की।

सिंह, शिव बहादुर (1983) ने ''बलिया जनपद के केन्द्रस्थल तंत्र'' में केन्द्रीय स्थलों की संकल्पना को परिभाषित करते हुए केन्द्रीय कार्यों का निर्धारण किया।

चन्द्र, रवि प्रताप (1984) ने ''अवध प्रदेश में केन्द्रीयता एवं नगर पदानुक्रम में परिवर्तन'' में अवध के केन्द्रीय कार्यों एवं नगरों की विभिन्न श्रेणियों को उनकी सेवाओं के आधार पर वर्गीकृत किया।

चन्द्र, रघुवीर (1985) ने ''फंक्शनल हेरारकी ऑफ रूरल सेन्ट्रल प्लेस, नई दिल्ली'' में कार्यों की केन्द्रीयता का निर्धारण उनके विभिन्न चरणों के आधार पर किया गया।

दुबे, बेचन एवं सिंह, मंगला (1985) ने ''समन्वित ग्रामीण विकास'' में वाराणसी के प्रमुख गांवों के विकास को विभिन्न कार्यों के आधार पर निर्धारित किया।

नकवी, आई.आर. (1987) ने ''फर्रूखाबाद डिस्ट्रीक्ट ए स्टडी इन रूरल सेटलमेंट ज्योग्राफी'' में फर्रूखाबाद जिले के ग्रामीण अधिवासों के समग्र विकास को विश्लेषित किया।

एन.पी.सिंह (1989) ने ''स्पेशियो फंक्शनल प्लानिंग'' में पश्चिमी उत्तर प्रदेश में 30 चर मूल्य लेकर नियोजन की रूपरेखा प्रस्तुत की, इन्होंने विभिन्न सेवाओं को नियोजन का आधार बनाया।

सोहनलाल (1990) ने ''ओरिजन एण्ड ग्राथ ऑफ रूरल सर्विस सेन्टर'' में ग्रामीण क्षेत्रों में सेवा केन्द्रों की उत्पत्ति तथा वृद्धि को बताते हुये नियोजन प्रदेश प्रस्तावित किये।

पाठक, गणेश कुमार (1993) ने ''बलिया जनपद के सेवा केन्द्र एवं ग्रामीण विकास में उनके योगदान'' में बलिया जनपद के ग्रामीण विकास को विभिन्न सेवा केन्द्रों के आधार पर निर्धारित किया।

श्रीवास्तव, दिलीप कुमार (1997) ने ''रोल ऑफ सोशियो इकोनोमिक फेसिलिटिज इन इंटिग्रेटेड रूरल डवलपमेंट'' में ग्रामीण विकास की संकल्पना को समाज की आर्थिक स्थिति एवं अन्य सुविधाओं के साथ परिभाषित किया।

डॉ. टी.आर. डेहरे (1998) ने ''क्षेत्रिय नियोजन एवं सामाजिक विकास'' में कृषि विकास योजना, सेवा केन्द्रों का मूल्यांकन, पदानुक्रम, स्थानीय वितरण औद्योगिक एवं परिवहन विकास, सामाजिक सुविधाओं का विकास आदि की एक विस्तृत योजना प्रस्तुत की। परन्तु प्रादेशिक असमानताओं को उजागर नहीं किया।

संदीप यादव (2001) ने ''स्पेशियों फंक्शनल प्लानिंग इन राजस्थान : ए माइक्रो एनालाइटीकल स्टडी ऑफ ब्यावर–तहसील'' में पिछडेपन को दूर करने के लिए वृद्धि केन्द्रों एवं सेवा केन्द्रों के माध्यम से नियोजन की रूपरेखा प्रस्तुत की।

पी. मीनाक्षी व विमल बारह (2006) ने ''असम के जोहर नगर में महिला साक्षरता व शिक्षा पर शोध अध्ययन किया गया, जिसमें महिलाओं के पिछडेपन के कारणों पर प्रकाश नहीं डाला गया।

धर्मेन्द्र सिंह (2007) द्वारा ''अलीगढ़ नगर में स्वास्थ्य सुविधा'' पर शोध अध्ययन किया गया, जिसमें स्वास्थ्य सम्बन्धी कार्यक्रमों की गुणवत्ता का उल्लेख नहीं किया गया।

देवेन्द्र सिंह राणावत (2010) ने ''एकीकृत ग्रामीण विकास योजना'' (झालरापाटन तहसील का अध्ययन) में स्थानीय स्तर पर उपलब्ध मानवीय एवं भौतिक संसाधनों के क्षैत्रीय विकास के लिए विभिन्न आयाम प्रस्तुत किये गये है। जिनमें विकास के लिए कौशल एवं क्षमताओं की विवेचना नहीं की गई।

<u>परिकल्पनाऐं –</u>

मांगरोल अध्ययन क्षेत्र निम्नलिखित परिकल्पनाओं पर आधारित है।

1. अध्ययन क्षेत्र में आधारभूत सुविधाऐं विद्यमान है परन्तु रोजगार उद्योग जैसी सेवाओं की आवश्यकता है।
2. अध्ययन क्षेत्र के विभिन्न केन्द्रीय स्थल सीमित स्थानों पर उपलब्ध है।
3. तहसील में उच्च शिक्षा, तकनीकि शिक्षा, कृषि तकनीकि जैसी सेवाओं की रिक्तता हैं।
4. मांगरोल तहसील में औद्योगिक रिक्तता एवं बाजारीय प्रवाह की रिक्तता हैं।
5. अध्ययन क्षेत्र में समग्र नियोजित विकास के लिए आधारभूत योजना आवश्यक है। जिससे नियोजित विकास एवं रोजगार की सुविधाऐं उपलब्ध हो सके।
6. मांगरोल तहसील के समग्र विकास के लिए सेवा केन्द्रों का पास होना आवश्यक है। जिससे विभिन्न अधिवास सेवा प्राप्त कर सकें।

7. समग्र विकास के लिए आवश्यक है कि विभिन्न ग्रामीण सुविधाओं का विकास हो एवं तकनीकि एवं आधुनिकता का समावेश हो।

8. विभिन्न सेवा केन्द्रों का निर्धारण जनसंख्या एवं दूरी को ध्यान में रखते हुये किया जाना आवश्यक है।

आंकड़ों का संग्रहण एवं विधितंत्र –

इसमें प्राथमिक एवं द्वितीयक आंकड़ों का संग्रहण किया गया। जलवायु, जनसंख्या, औद्योगिक आंकड़ें विभिन्न प्रकाशित एवं अप्रकाशित स्त्रोतों सरकारी कार्यालयों आदि से प्राप्त किये गये। विभिन्न सामाजिक सेवाओं एवं आर्थिक कार्यों के आंकड़ें प्राथमिक स्तर पर एकत्रित किये गये।

प्राप्त आंकड़ों के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए कुछ आधारभूत सांख्यिकीय विधियों जैसे ग्रामीण स्तर के आंकड़ों का संग्रहण, आइसोक्रोनिकल रेखाओं, अधिवासों का निकटतम पड़ौसी सूचकांक, जनांकिकी विश्लेषण की आधुनिक विधियाँ, बाजार प्रणाली का आधुनिक मॉडल, अधिवासों की केन्द्रीयता एवं उनकी पदानुक्रमता जिससे कार्यात्मक स्वरूप स्पष्ट हो सके।

केन्द्रीय स्थान सिद्धान्त की पदानुक्रमता का निर्धारण केन्द्रीय कार्यों द्वारा किया जाता है। ताकि विशिष्ट कार्य का उपयोग अधिकतम निवासियों द्वारा किया जा सके। इस हेतु ऐसी स्थिति आवश्यक है जिसमें कार्यकर्ता की सरल सीधे और सुविधाजनक रूप से उक्त कार्य स्थिति तक पहुंच संभव हो सके। जहाँ पर वह कार्य सम्पन्न किया जा रहा है। इस हेतु आवश्यकतानुसार सड़क मार्गों का विकास किया जा सके ताकि यातायात खर्च को तुलनात्मक रूप से कम किया जा सके। ऐसी स्थिति मांगरोल तहसील में प्राप्त करना शोधकार्य का मुख्य आयाम है।

अध्ययन में निम्नलिखित आधारभूत सांख्यिकी विधियों एवं सूत्रों का प्रयोग किया गया –

(i) कार्लपियर्सन का सहसम्बन्ध गुणांक

$$r = \frac{\sum dxdy}{\frac{N\sqrt{\sum d^2x}}{N} X \frac{N\sqrt{\sum d^2y}}{N}}$$

यहाँ $\sum dxdy$ = **X** तथा **Y** के विचलनों के गुणनफल का योग

$\sum d^2x$ = **X** के विचलनों के वर्गों का योग

$\sum d^2y$ = **Y** के विचलनों के वर्गों का योग

N = पदों की संख्या

(ii) केन्द्रीयता सूचकांक

$$C = \frac{N}{Fi}$$

यहाँ **C**= केन्द्रीयता सूचकांक

N= गाँवों की कुल जनसंख्या

Fi= अधिवास जहाँ सुविधा है।

(iii) अधिवासों की केन्द्रीयता

$$C = \frac{NX100}{P}$$

यहाँ **C**= अधिवासों की केन्द्रीयता

N =उस अधिवास में गैर प्राथमिक कार्य में संलग्न जनसंख्या

P= तहसील में कुल गैर प्राथमिक कार्यों में संलग्न जनसंख्या

(iv) केन्द्रीय भारिता

$$Ci = \sum_{i=1}^{K} wiXij$$

यहाँ **Ci = i**अधिवास के लिये संयुक्त भार

Wi = iसेवा का भार

Xij = j अधिवास में **i** सेवा का भार

K =किसी सेवा की उपसेवाओं का योग

शोधकार्य को निम्न आठ अध्यायों में रखा गया है –

प्रथम अध्याय – परिचय

1. प्रस्तावना
2. अध्ययन का उद्देश्य
3. समग्र क्षेत्र विकास की संकल्पना
4. अब तक किये गये कार्य की समिक्षा
5. परिकल्पनाऐं
6. आंकड़ों के स्त्रोत एवं विधि तंत्र
7. अध्ययन की रूपरेखा

द्वितीय अध्याय – भौगोलिक पृष्ठभूमि

1. स्थिति
2. भू–आकृति स्वरूप एवं उच्चावच
3. अपवाह तंत्र
4. जलवायु
5. प्राकृतिक वनस्पति
6. मृदा

7. आर्थिक स्वरूप – कृषि, पशुपालन, सिंचाई, खनिज, परिवहन, विपणन।

8. जनसांख्यिकीय स्वरूप – वृद्धि, वितरण, घनत्व, व्यवसायिक स्वरूप, साक्षरता, लिंगानुपात, नगरीय एवं ग्रामीण जनसंख्या

तृतीय अध्याय – समग्र क्षेत्र विकास का स्वरूप एवं उसके अंग –

1. केन्द्रीय कार्यों की संकल्पना
2. केन्द्रीय कार्यों के अध्ययन का महत्व
3. केन्द्रीय स्थल का सिद्धांत एवं मांगरोल तहसील में स्वरूप
4. शिक्षा
5. स्वास्थ्य एवं चिकित्सा सुविधायें
6. प्रशासनिक सेवायें
7. भूमि उपयोग एवं नियोजन
8. जनउपयोगी सेवायें
9. पेयजल आपूर्ती
10. रोजगार के विभिन्न साधन
11. प्रशिक्षण कार्यक्रम

चतुर्थ अध्याय – केन्द्रीय स्थलों की कार्यात्मक सम्बद्धता एवं प्रवाह

1. कार्यात्मक सम्बद्धता का आधार – यातायात
2. यातायात प्रवाह
3. वर्तमान यातायात सुविधा एवं सम्बद्धता
4. सामाजिक सुविधाओं व उनकी सम्बद्धता की रिक्तता एवं समस्यायें
5. कृषि एवं अकृषि कार्यों के बाजारीय प्रवाह की रिक्तता एवं बहुलता
6. समग्र नियोजन में केन्द्रीय स्थलों की ग्रामीण स्तर पर भूमिका

पंचम अध्याय – कार्यात्मक पदानुक्रम

1. कार्यात्मक पदानुक्रम की भूमिका
2. चयनित केन्द्रीय कार्यों के मूल्यांकन के आधार पर पदानुक्रम
3. केन्द्रीय कार्यों के भार का निर्धारण
4. केन्द्रीय कार्यों एवं जनसंख्या की व्यावसायिक संरचना के आधार पर पदानुक्रम

षष्ठम अध्याय – प्रादेशिक सम्बद्धता का संश्लेषण

1. विभिन्न कार्यों एवं सुविधाओं के लिए न्यूनतम जनसंख्या
2. स्थानिक रिक्तताऐं
3. कार्यात्मक रिक्तता के क्षेत्र
4. क्षेत्र में वर्तमान तथा अपेक्षित सुविधाऐं

सप्तम अध्याय – समग्र विकास हेतु वर्तमान स्वरूप एवं भावी विकास के लिए व्यूह रचना

1. प्रदेश के विकास में केन्द्रीय स्थानों की भूमिका
2. वर्तमान आर्थिक सुविधाओं में भावी विकास की कठिनाइयाँ– भौगोलिक, आर्थिक, सामाजिक
3. कार्यात्मक पदानुक्रम का प्रस्तावित प्रारूप
4. क्षेत्रीय विकास के प्रस्ताव

अष्टम अध्याय – उपसंहार एवं सुझाव

2.1 परिचय

राजस्थान के दक्षिण–पूर्वी भाग में हाड़ौती अंचल के अन्तर्गत बाराँ जिला आता है। अध्ययन क्षेत्र जिला मुख्यालय से उत्तर में स्थित है।

पूर्व में 1948–1949 तक तत्कालीन कोटा रियासत का बाराँ जिला मुख्यालय था। जिसमें बाराँ, किशनगंज, शाहबाद, मांगरोल, सांगोद, कुंजेड नामक 7 निजाम शामिल थे। आजादी के बाद संयुक्त राजस्थान का गठन होने पर बाराँ को कोटा जिले में सम्मिलित किया गया। 43 वर्ष तक बाराँ को कोटा जिले की तहसील के रूप में जाना गया तथा उपखण्ड मुख्यालय रहा।

राजस्थान सरकार द्वारा 10 अप्रेल 1991 को विभिन्न जिलों की घोषणा के साथ बाराँ जिले को जिला घोषित किया गया। जिसमें विभिन्न तहसीलें स्थित हैं।

1. बाराँ
2. मांगरोल
3. अंता
4. छीपाबड़ौद
5. छबड़ा
6. अटरू
7. किशनगंज
8. शाहबाद

2.2 अध्ययन क्षेत्र की स्थिति –

मांगरोल तहसील राजस्थान के दक्षिण–पूर्वी भाग में स्थित है। जो मध्य प्रदेश की सीमा के साथ कोटा एवं बाराँ जिले के मध्य स्थित है। बाराँ जिले में मांगरोल की स्थिति उत्तर–पश्चिम भाग में स्थित है। जो कि **$25^0$16'** से **$25^0$33'** उत्तरी अक्षांशों के बीच एवं देशान्तरीय विस्तार **$76^0$20'** से **$76^0$35'** के बीच स्थित है। इसके उत्तर में कोटा जिले

मानचित्र संख्या 2.1 : मांगरोल तहसील की अवस्थिति

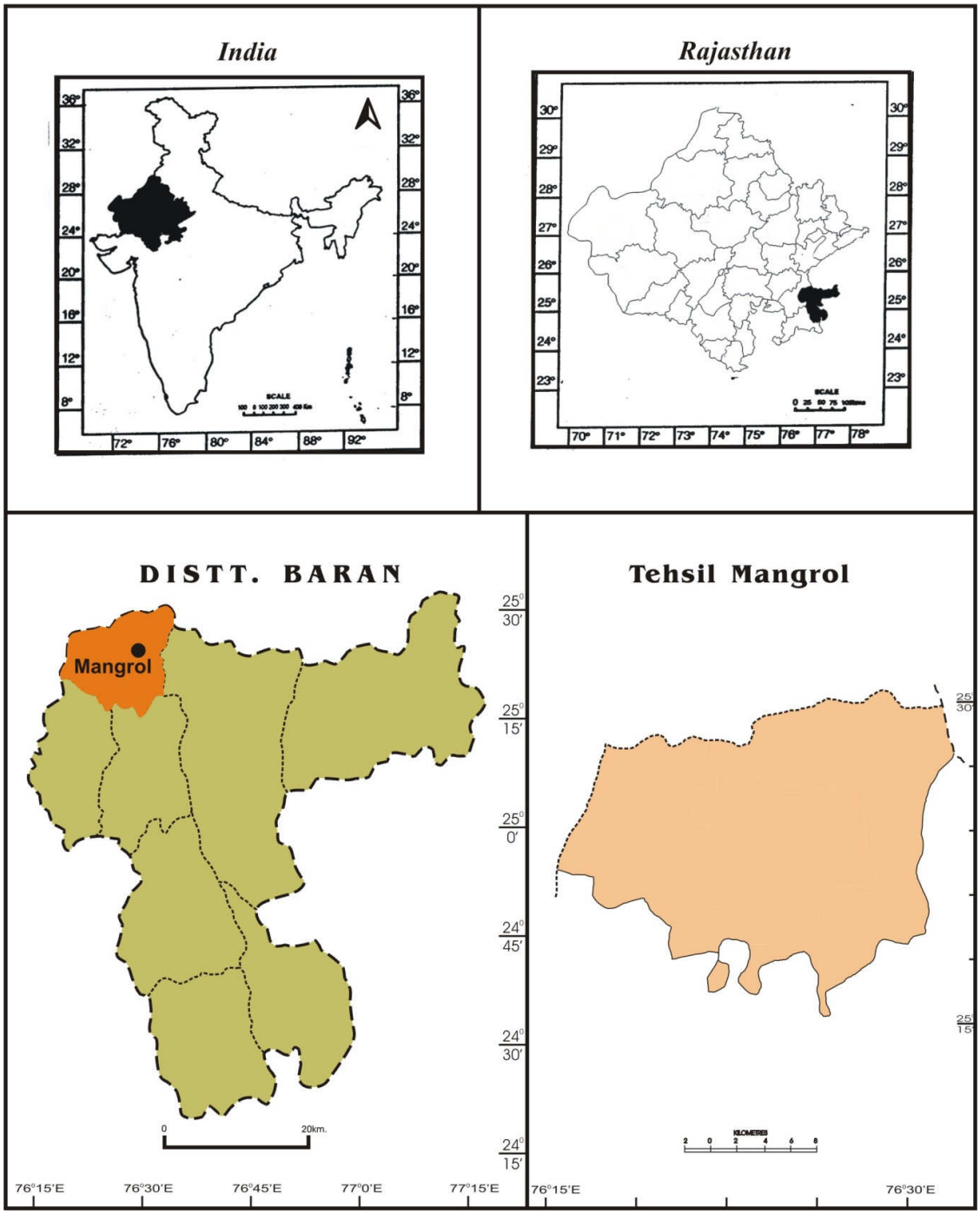

मानचित्र संख्या 2.2

मांगरोल तहसील में विभिन्न अधिवासों की स्थिति

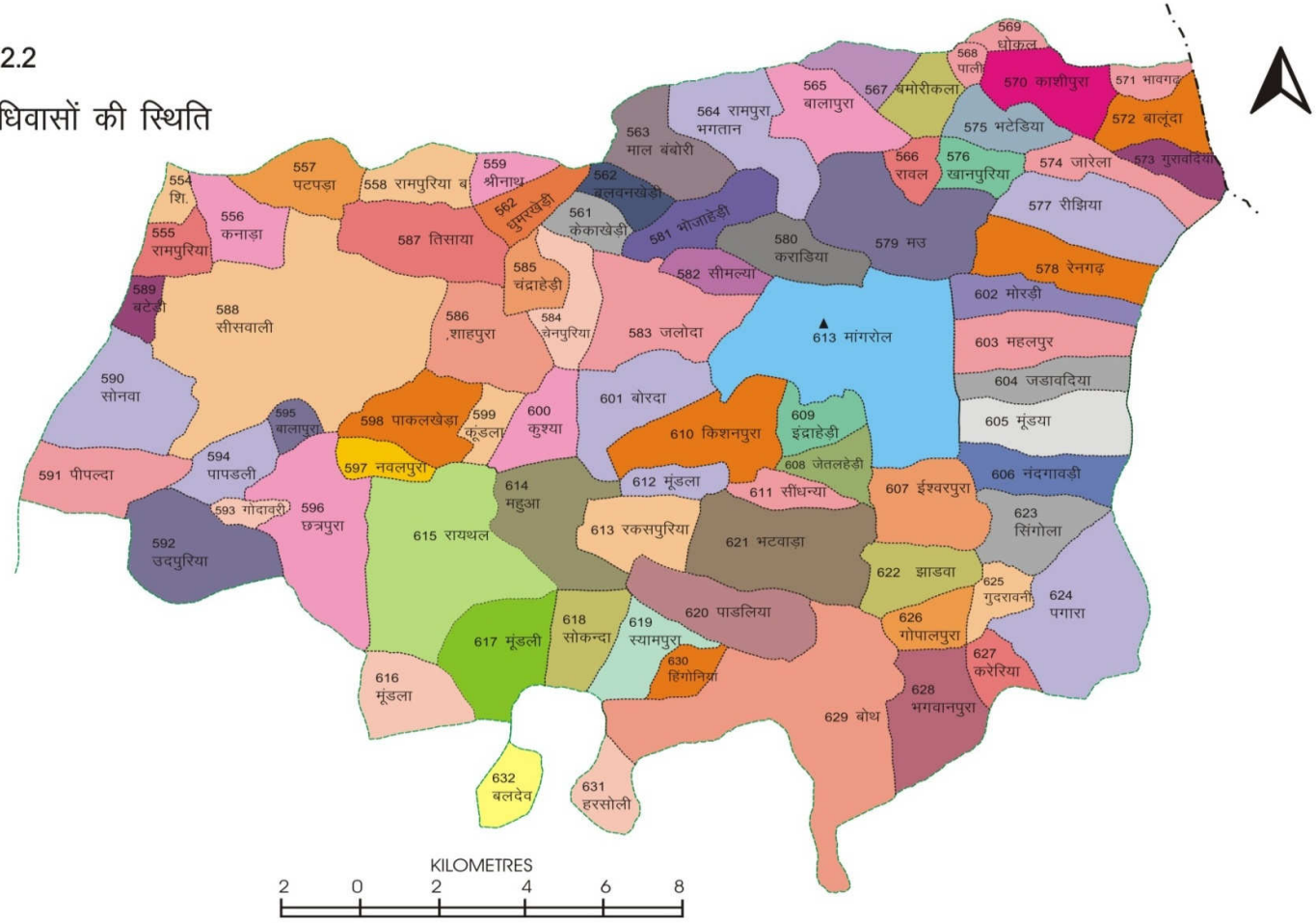

की पीपल्दा तहसील, पूर्व में किशनगंज तहसील, दक्षिण में जिला मुख्यालय बाराँ, पश्चिम में अंता तहसील स्थित है। इसका कुछ भाग मध्य प्रदेश की सीमा को स्पर्श करता है जो कि श्योपुर जिले की सीमा के साथ जुड़ा हुआ है। अध्ययन क्षेत्र का विस्तार उत्तर से दक्षिण की ओर लगभग 18 किलोमीटर एवं पूर्व से पश्चिम की ओर लगभग 24 किलोमीटर है। मांगरोल तहसील 431.25 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में विस्तृत है। 2011 की जनगणना के अनुसार यहाँ पर 106963 व्यक्ति निवास करते हैं। यहाँ पर कुल 20516 परिवार है। तहसील का जनघनत्व 248 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर है। इस भाग की समुद्र तल से औसत ऊँचाई 242 मीटर (794 फीट) है।

2.3 उच्चावच –

भू–भाग प्रायद्वीपीय भारत के मध्य विंध्यन प्रदेश के मालवा पठार के उत्तर में स्थित है। उच्चावच स्वरूप के आधार पर मांगरोल तहसील में अधिक अंतर देखने को नहीं मिलता। मानचित्र संख्या 2.3 के अनुसार इसका पूर्वी भाग एवं पश्चिमी भाग प्रायः समतल है तथा मध्य भाग उच्च भू भाग है। इसी कारण अध्ययन क्षेत्र की प्रवाह प्रणाली मध्य भाग से दोनों ओर विकसित है। यहाँ पर उबड़–खाबड़ भूमि एवं समतल भूमि तथा ढाल के अनुसार विभिन्न स्थानिक ऊँचाईयों के आधार पर विश्लेषण किया गया। जिसमें इसकी संरचना दक्षिण की ओर उच्च एवं उत्तर की ओर निम्न है। जिसके कारण इसका ढ़ाल दक्षिणी–पूर्वी पठार से उत्तर की ओर कालीसिंध एवं पार्वती नदियों की ओर है। तहसील का दक्षिणी भाग 240 मीटर तक ऊँचा है। जबकि उत्तरी–पूर्वी, उत्तरी, उत्तर–पश्चिमी क्षेत्र का अधिकांश भाग 220 मीटर से 238 मीटर के मध्य ऊँचाई वाला है। तहसील का अधिकांश भाग समतल है। मुख्य रूप से इस भाग को 220 मीटर समोच्च रेखा विभाजित करती है। जो दक्षिण और पूर्वी उच्च प्रदेशों को उत्तर तथा उत्तरी–पश्चिमी एवं उत्तरी–पूर्वी को निम्न प्रदेश से अलग करती है।

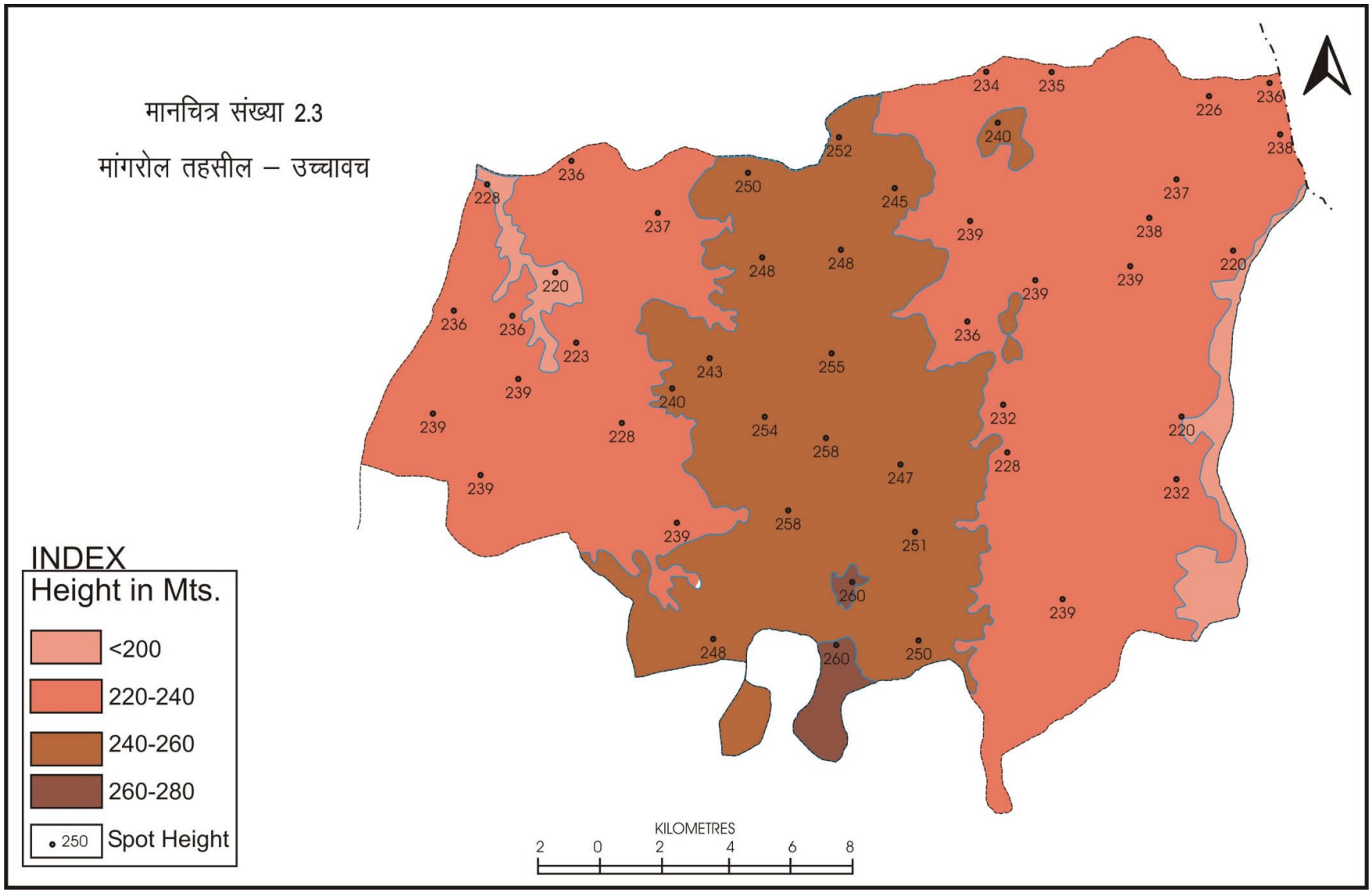

मानचित्र संख्या 2.3
मांगरोल तहसील – उच्चावच
INDEX
Height in Mts.
<200
220-240
240-260
260-280
250 Spot Height
KILOMETRES
2 0 2 4 6 8

2.4 भूगर्भिक संरचना –

यहाँ पर बालू मिट्टी, कंकड़, लेटेराइट, दक्कन लावा एवं विंध्यन चट्टानें देखने को मिलती हैं। जो कि भूगर्भिक संरचना का कालिक निर्धारण करती है। इनमें बालू मिट्टी, कंकड, नवीन लेटेराइड, दक्कन लावा, निम्न क्रिटेशियस युग को तथा विंध्यन चट्टानें पेलेजोइक काल को प्रदर्शित करती है। इस प्रकार संरचनात्मक दृष्टि से यह संरचना प्राचीन संरचना मानी गयी है। यहाँ पर नदियों के द्वारा जलोढ़ का प्रभाव कम देखने को मिलता है। अधिकांशतः भूगर्भिक संरचना मुख्य रूप से प्राचीन युग की होने के कारण यहाँ पर नवीन संरचना कम विकसित है।

इसमें पूर्वी भाग में विंध्यन पेलेजोइक काल की भूगर्भिक संरचना है जबकि मध्य भाग में नवीन लेटेराइड मिट्टी का जमाव देखने को मिलता है। जबकि इसका पश्चिमी भाग जलोढ़ एवं दोमट मिट्टी का क्षेत्र है।

2.5 अपवाह तंत्र –

उच्चावच स्वरूप के ढाल के आधार पर किसी भी भाग की अपवाह प्रणाली का निर्धारण होता है। इसी प्रकार ढाल के अनुसार मांगरोल की अपवाह प्रणाली को निर्धारित किया गया। जिसमें यहाँ पर मौसमी नदी–नालों, नदियों एवं नहरों के जाल के आधार पर इनकों वर्गीकृत किया गया। यहाँ पर मुख्य नदियों में कालीसिंध एवं पार्वती प्रमुख है। अपितु अध्ययन क्षेत्र के बीच से बाणगंगा नदी भी निकली हुई है परन्तु वर्तमान में यह नदी विलुप्त होने के चरम पर पहुँच चुकी है। अन्यथा कभी यह मुख्य नदियों में से एक थी। अपवाह की दृष्टि से प्रमुख नदियों का विवेचन किया जाना आवश्यक है।

(1) कालीसिंध –

यह नदी कोटा जिले से पश्चिम की सीमा बनाते हुए मांगरोल तहसील में प्रवेश करती है एवं लगभग 22 किलोमीटर प्रवाहित होने के बाद कोटा जिले की पीपल्दा तहसील में प्रवेश करती है। इसकी मुख्य सहायक

नदियों में परवन नदी है। जो इस भाग को दक्षिण से अलग करती है। यह नदी अंता तहसील में होकर गुजरती है। अन्य सहायक नदी में खाड़ी नदी प्रमुख है जो अंता व सीसवाली में प्रवाहित होती है। यह नदी सीसवाली के पास ढीपरी नामक स्थान पर कालीसिंध में मिल जाती है।

(2) पार्वती नदी –

यहाँ पर यह अपवाह तंत्र चम्बल नदी के अपवाह तंत्र में सम्मिलित किया जाता है। जो कि गंगा यमुना नदी तंत्र का अभिन्न अंग है। यह प्रवाह प्रणाली बंगाल की खाडी में अंततः विलिन हो जाती है। यह नदी अध्ययन क्षेत्र के पूर्व की प्रमुख नदी है जो पूर्वी सीमा का निर्धारण करती है। यह नदी मध्य प्रदेश के सीरोह के निकट से निकलती है। इसके बाद बाराँ जिले में प्रवाहित होती हुई सवाई माधोपुर जिले के फलिया नामक स्थान पर चम्बल में मिल जाती है। यह नदी मांगरोल तहसील में लगभग 13 किलोमीटर प्रवाहित होती है जो बम्बोरीकलां के पास तहसील की तथा मध्य प्रदेश एवं राजस्थान की सीमा का निर्धारण करती है। इस नदी की प्रमुख सहायक नदी में बाणगंगा प्रमुख है जो बम्बोरीकलां के पास हांडीपाली नामक स्थान पर पार्वती नदी में मिल जाती है।

अपवाह तंत्र का ढाल जनसंख्या के वितरण एवं घनत्व को प्रभावित करता है। यहाँ पर अधिकांश जनसंख्या कृषि आधारित होने के कारण अपवाह तंत्र से अधिक प्रवाहित होती है। इसी आधार पर तहसील के उच्च भाग में जनघनत्व कम एवं समतल भाग में अधिक जनघनत्व पाया जाता है। यहाँ पर दो फसल प्रणाली अपनाई जाती है। जबकि उच्च भाग में केवल एक ही फसल प्रणाली पर अधिकांश जनसंख्या आश्रित है। जिसको मुख्य रूप से यहाँ की प्रवाह प्रणाली प्रभावित करती है एवं कृषि संरचना का निर्धारण करती है।

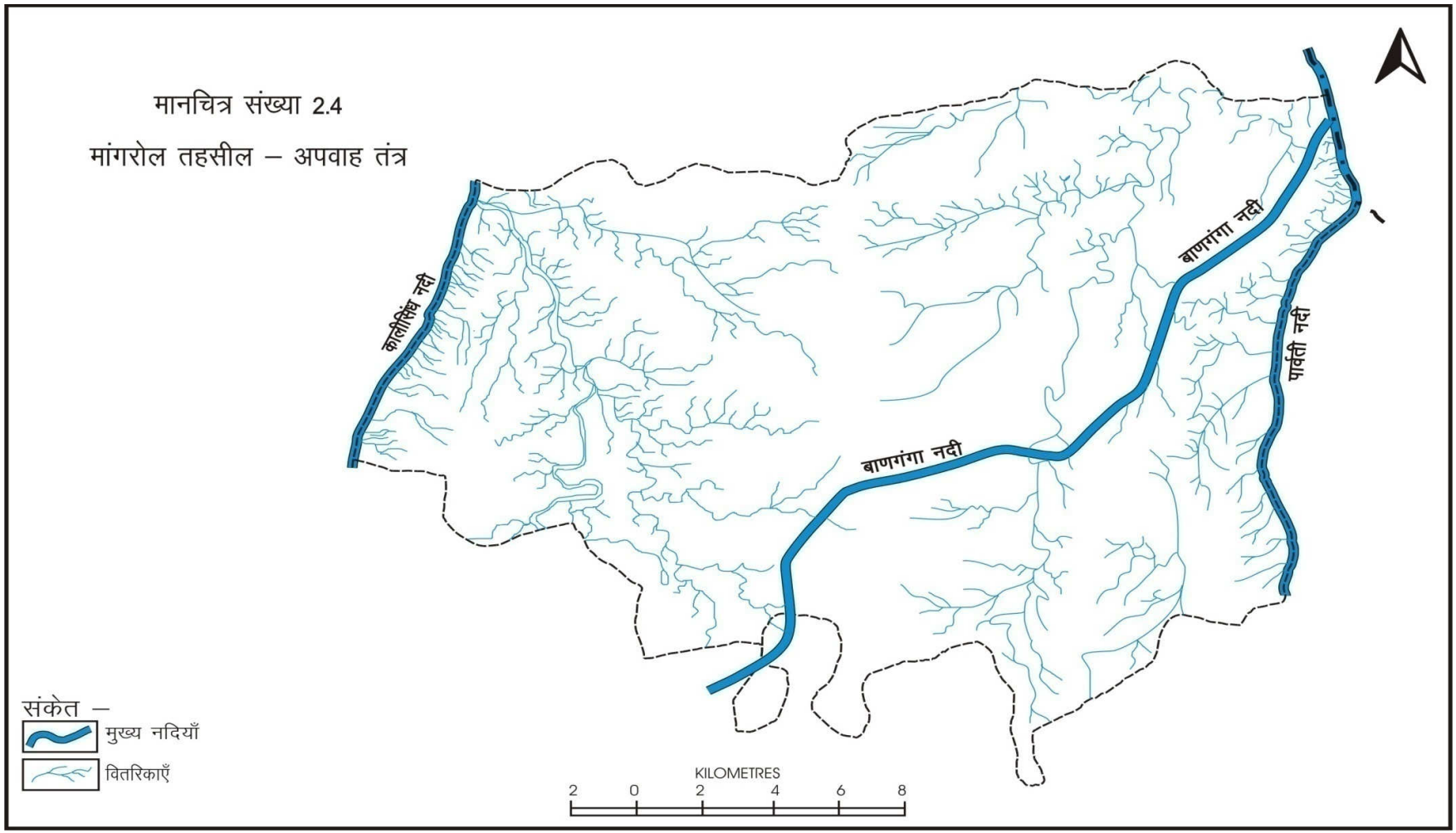
मानचित्र संख्या 2.4
मांगरोल तहसील – अपवाह तंत्र
कालीसिंध नदी
बाणगंगा नदी
बाणगंगा नदी
पार्वती नदी
संकेत –
मुख्य नदियाँ
वितरिकाएँ
KILOMETRES
2 0 2 4 6 8

2.6 जलवायु –

जलवायु का निर्धारण तापमान, वर्षा, वायुदाब एवं आर्द्रता के आधार पर किया जाता है। यहाँ की जलवायु मुख्य रूप से उष्ण एवं आर्द्र जलवायु के अन्तर्गत आती है। जलवायु को ऋतुओं के आधार पर 4 भागों में वर्गीकृत किया गया है। जो निम्न प्रकार है –

(1) ग्रीष्म ऋतु – मार्च माह से 15 जून तक

(2) वर्षा ऋतु – 15 जून से 15 सितम्बर तक

(3) शरद ऋतु – 15 सितम्बर से 15 दिसम्बर तक

(4) शीत ऋतु – 15 दिसम्बर से फरवरी माह तक

यहाँ की जलवायु दशाओं के आधार पर मानसून का आगमन मध्य जुलाई में होता है। दक्षिणी–पश्चिमी मानसून आने के साथ–साथ तापमान गिरता जाता है। जिसके परिणाम स्वरूप धीरे–धीरे अक्टूबर माह तक मानसून समाप्त हो जाता है। यहाँ पर अधिकतम मासिक तापमान आरेख संख्या 2.1 के अनुसार मई माह में 31.1 डिग्री सेल्सियस एवं न्यूनतम औसत मासिक तापमान जनवरी माह में 14.9 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया है। यहाँ पर मानसून ऋतु के अतिरिक्त अन्य ऋतुओं में वायु शुष्क रहती है। फरवरी से मई तक आर्द्रता कम रहती है तथा जून से अक्टूबर तक आर्द्रता बढ़ जाती है। मांगरोल तहसील में औसत वार्षिक वर्षा तालिका संख्या 2.1 के अनुसार 732 मिलीमीटर दर्ज की गयी। यहाँ पर अधिकांश वर्षा अरब सागर एवं बंगाल की खाडी दोनों मानूसन से होती है। यहाँ विशिष्ट मानसून जलवायु दशायें पायी जाती है। सामान्य रूप से जलवायु शुष्क है।

मांगरोल तहसील – क्लाईमोग्राफ

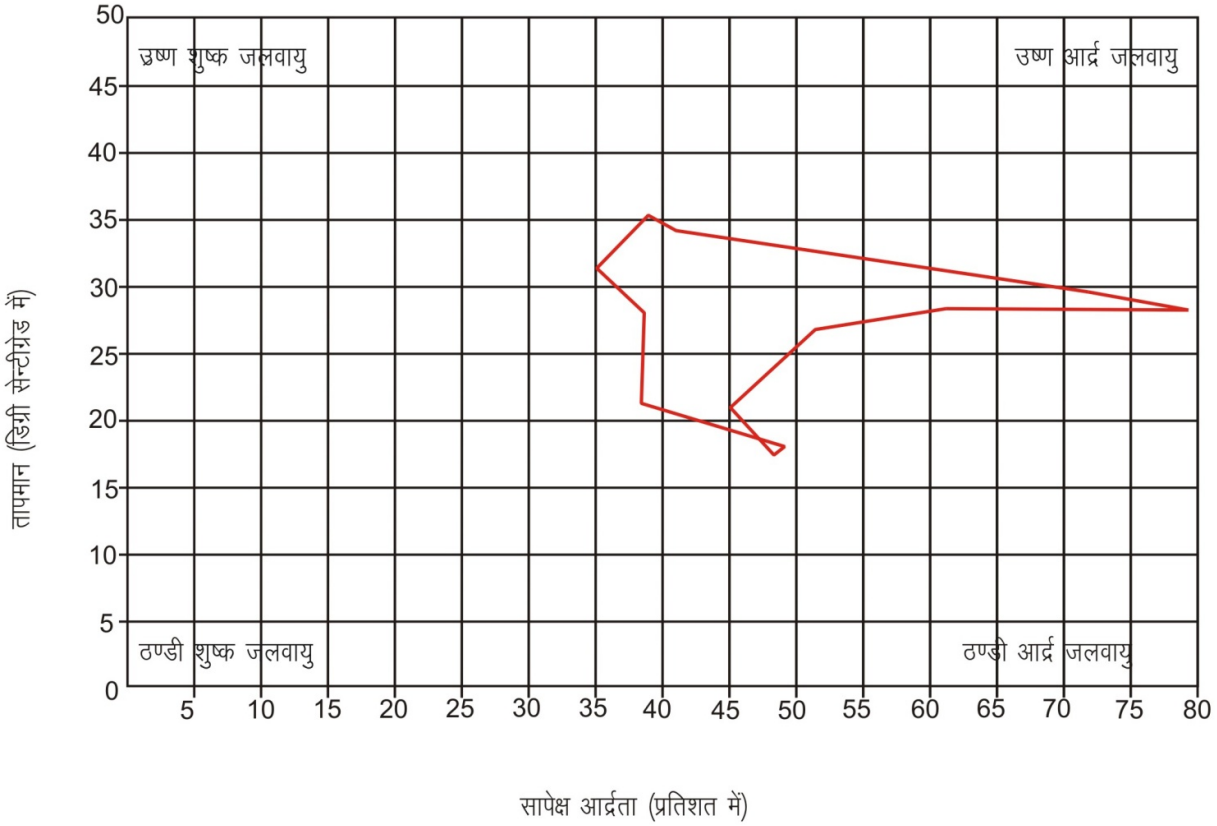

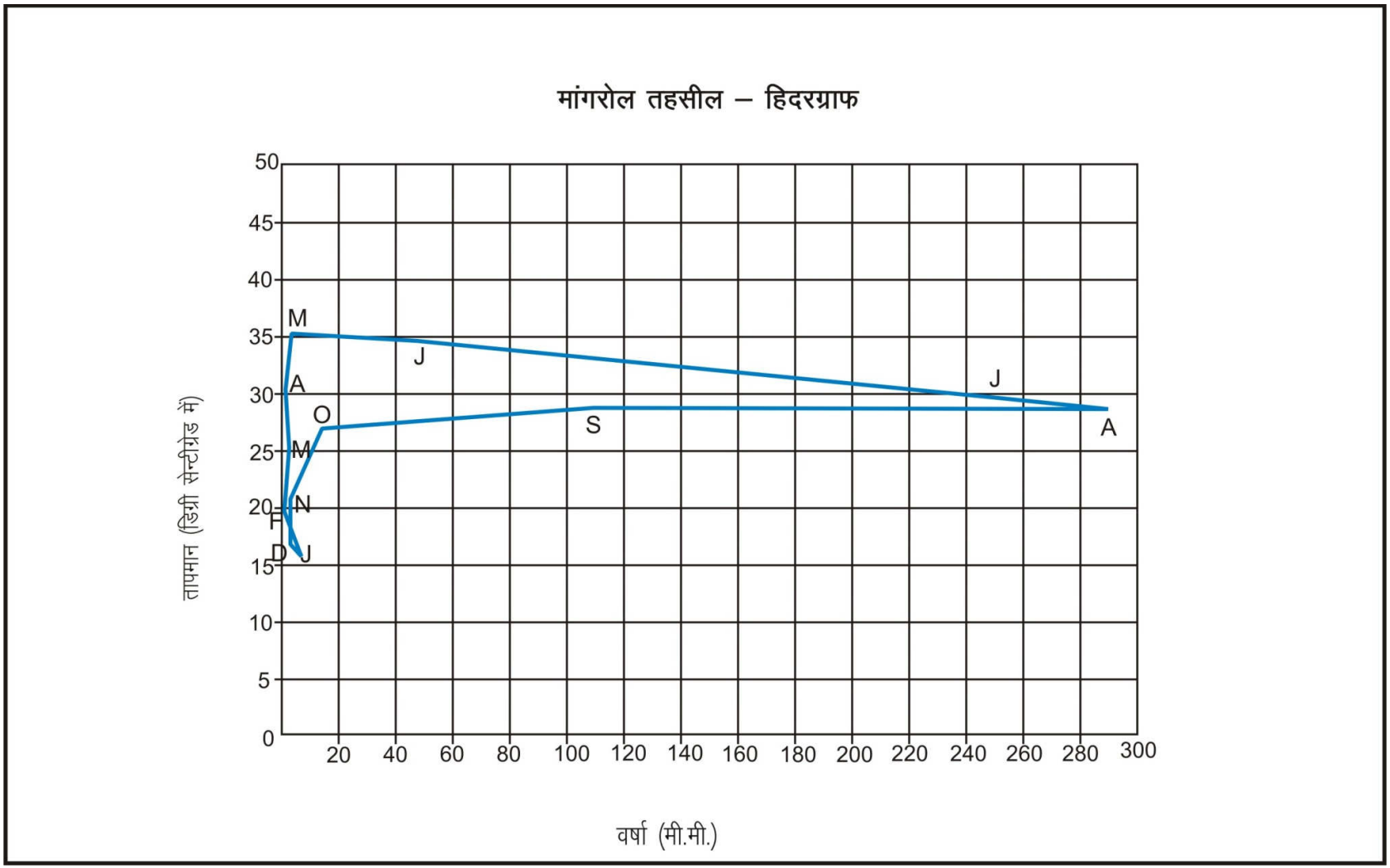

मांगरोल तहसील – हिदरग्राफ

2.6.1 वर्षा –

अध्ययन क्षेत्र में नवीनतम आँकड़ों के अनुसार वर्षा का निर्धारण किया गया है। जो कि तालिका संख्या 2.1 में प्रदर्शित है। तालिका के अनुसार औसत मासिक वर्षा एवं वर्षा के दिनों की संख्या का निर्धारण 2001 से 2011 के आँकड़ों के अनुसार किया गया। जिसमें 2011 के आँकड़ों सर्वाधिक वर्षा जुलाई माह में दर्ज की गई। इसमें वर्षा के दिनों की संख्या 19 दर्ज की गई तथा न्यूनतम वर्षा नवम्बर एवं फरवरी माह में दर्ज की गई।

तालिका संख्या 2.1 :		मांगरोल तहसील – औसत मासिक वर्षा (2001–2011)			
क्र.स.	माह	औसत मासिक वर्षा		वर्षा के दिनों की संख्या	
		2001	2011	2001	2011
1	जनवरी	-	6	-	3
2	फरवरी	-	-	-	-
3	मार्च	-	4	-	1
4	अप्रेल	6	3	2	2
5	मई	43	25	5	7
6	जून	170	142	13	16
7	जुलाई	440	636	15	19
8	अगस्त	210	443	9	13
9	सितम्बर	-	135	-	8
10	अक्टूबर	5	9	1	5
11	नवम्बर	-	15	-	-
12	दिसम्बर	-	-	-	6
योग		874	1418	45	80

वर्ष 2001 में कुल वार्षिक वर्षा 874 मिलीमीटर हुई। वहीं एक दशक बाद यह वर्षा बढ़कर 1418 मिलीमीटर रही। इस प्रकार दशक आंकड़ों में वर्षा में वृद्धि हुई। 2001 में सर्वाधिक वर्षा जुलाई में 440 मिलीमिटर दर्ज की गयी जबकि 2011 में सर्वाधिक वर्षा जुलाई माह में 636 मिलीमीटर दर्ज की गई।

तालिका संख्या 2.2 : मांगरोल तहसील – वार्षिक वर्षा का अंतर 1991–2011 (मि.मी. में)

वर्ष	वार्षिक वर्षा	औसत वर्षा में अंतर	कुल क्रमानुसार अंतर
1991	976	243.18	243.18
1992	675	-57.82	185.36
1993	691	-41.82	143.54
1994	861	128.18	271.72
1995	871	138.18	409.9
1996	941	208.18	618.08
1997	1047	314.18	932.26
1998	751	18.18	950.44
1999	986	253.18	1203.62
2000	961	228.18	1431.8
2001	874	141.18	1572.98
2002	350	-382.82	1190.16
2003	502	-230.82	959.34
2004	817	84.18	1043.52
2005	760	27.18	1070.7
2006	732	-0.82	1071.52
2007	481	-251.82	819.7
2008	1051	318.18	1137.88
2009	502	-230.82	907.06
2010	569	-163.82	743.24
2011	1418	685.18	1428.42

आरेख संख्या 2.3 : औसत वार्षिक वर्षा 1991–2011

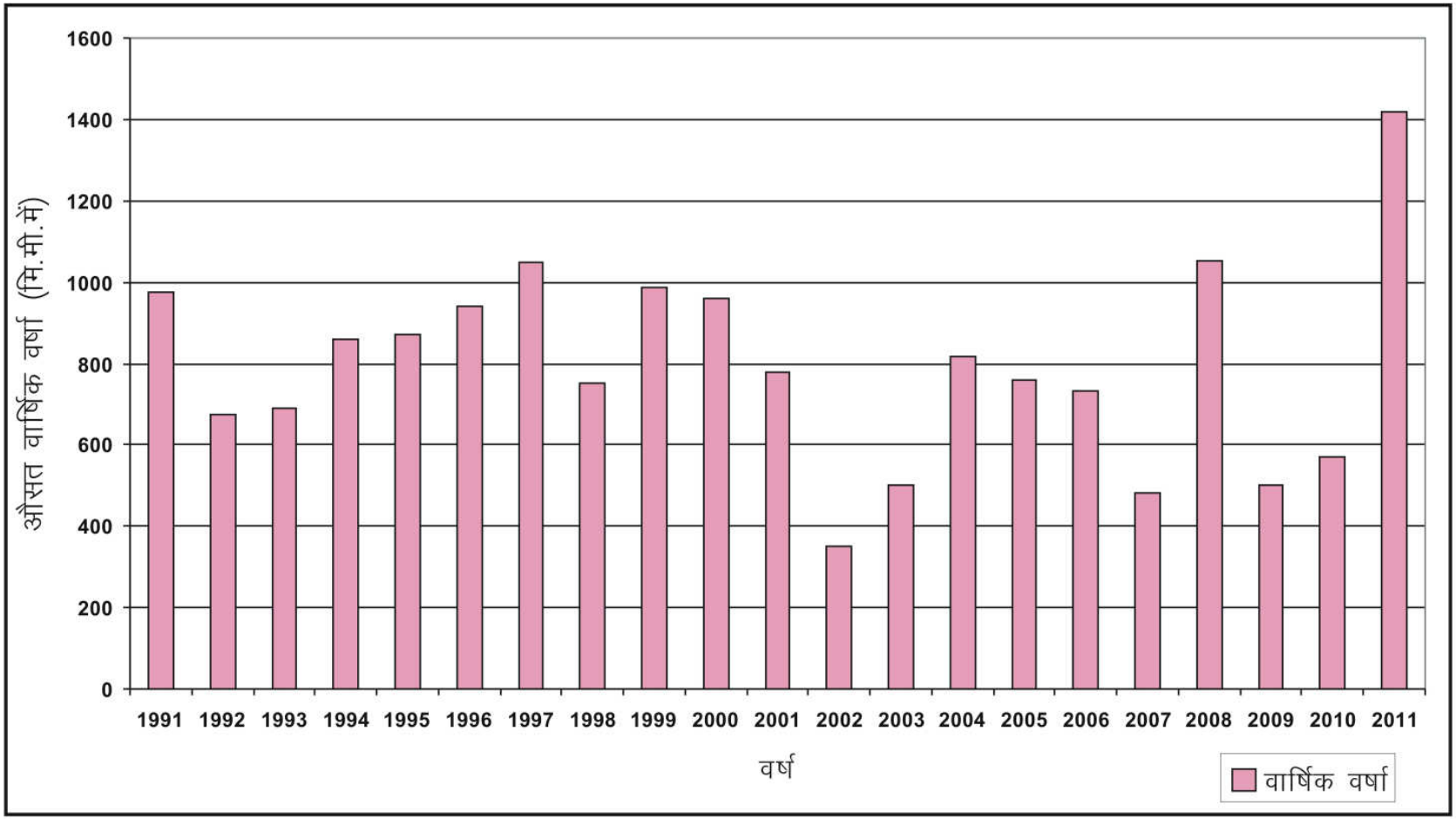

आरेख संख्या 2.4 : वार्षिक वर्षा परिवर्तनशीलता एवं अंतर

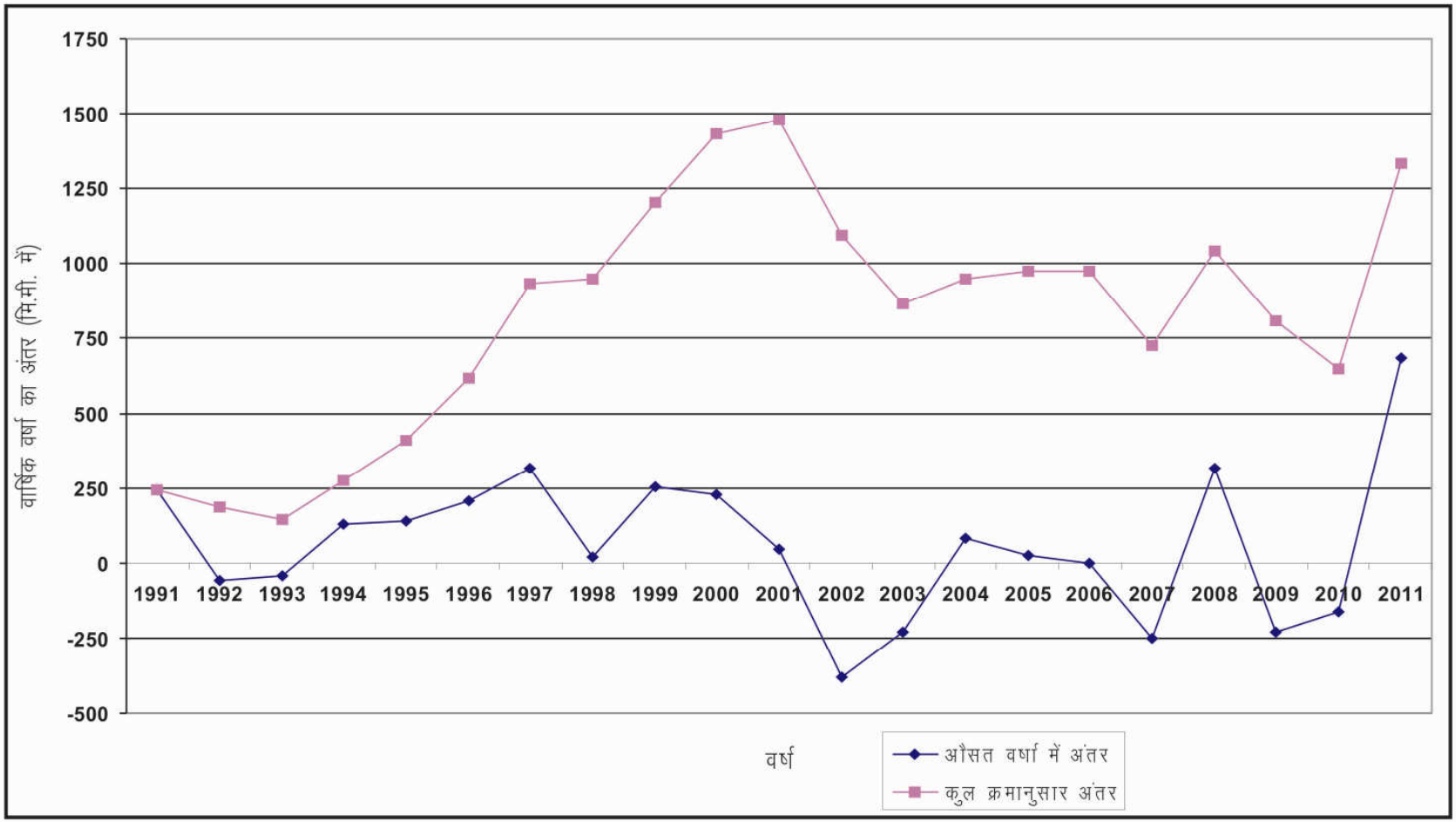

तालिका संख्या 2.2 में 20 वर्षों की औसत वार्षिक वर्षा को प्रदर्शित किया गया है। इसमें सर्वाधिक वर्षा 2011 में दर्ज की गई एवं न्यूनतम वर्षा 2002 में 350 मिलीमीटर दर्ज की गई। इसके अनुसार औसत वार्षिक अंतर में भी कई परिणाम सामने आये। जिसमें औसत वार्षिक वर्षा का अंतर 2002 में –382.82 मिलीमीटर रहा। जबकि 2011 में औसत वार्षिक वर्षा का अंतर 685.18 रहा। इस प्रकार 20 वर्षों में कई बार वर्षा औसत से कम रही एवं कई बार औसत से कई अधिक।

2.7 प्राकृतिक वनस्पति एवं पशु सम्पदा –

मांगरोल तहसील प्राकृतिक वनस्पति की दृष्टि से हरी–भरी है। यहाँ पर कई प्रकार के पेड़–पौधें पाये जाते हैं। कृषि भूमि में विस्तार के कारण पेड़–पौधों की संख्या पिछले दशकों से कम होती जा रही है। यहाँ पर पश्चिमी एवं पूर्वी भाग में अधिक वनस्पति पाई जाती है। जिसमें कंटीली झांड़ियाँ मुख्य है। पूर्व में यहाँ पर वन भूमि का विस्तार हुआ करता था परन्तु जनसंख्या वृद्धि के साथ कृषि भूमि में विस्तार के कारण वन कम होते गए। इनका उपयोग मुख्य रूप से घरेलू उपयोग में एवं जलाऊ लकड़ियों के रूप में हुआ। वर्तमान स्थिति में केवल गैर कृषित भूमि पर ही वृक्षों का आवरण देखने को मिलता है तथा नदियों के किनारों पर भी लगभग 500–700 मीटर दूरी पर दोनों ओर झाड़ियाँ के रूप में वनस्पति देखी जा सकती है। तहसील में मुख्य रूप से नीम, आम, बबूल, जामून, बैर, खजूर, शीशम आदि के वृक्ष देखे जा सकते हैं तथा गौंण रूप से महुआ, ढाक, गूलर, आँवला, खेजड़ी, खैर के वृक्ष देखे जा सकते हैं। तहसील में वनों की कमी होने के कारण चरागाह भी संकुचित होते जा रहे हैं जिसके कारण इसका प्रभाव पशु–पक्षियों पर भी देखा जा सकता है। यहाँ पर हिरण, सियार, जंगली गाय, खरगोश आदि देखे जा सकते हैं तथा पक्षीयों में मुख्य रूप से चिड़ियाँ, कौआ, तीतर, बटेर, कबूतर, तोता, उल्लू, मोर आदि देखे जा सकते हैं।

मांगरोल तहसील के पास अन्ता में सोरसन पक्षी अभ्यारण्य है। जिसको गोडावन की शरण स्थली भी कहा जाता है। यद्यपि यहाँ से

गोडावन की प्रजाति लगभग विलुप्त हो चुकी है। पशु–पक्षियों का वनों से निकटतम सम्बन्ध होता है परन्तु वर्तमान में लोगों के द्वारा वनों को समाप्त करने का प्रयास किया जा रहा है। जिससे यह पशु–पक्षी अब फसलों एवं आवासों के पास ही रहने लगे है। यहाँ के वनों से स्थानीय व्यक्तियों को बैर, गोंद, शहद, छाल, तेन्दू पत्ते एवं फल प्राप्त होते हैं। जो कि वनों की कमी के कारण गौंण उत्पाद उपलब्धता हो गई हैं।

2.8 मृदा –

मृदा का स्वरूप किसी भी प्रदेश की रूपरेखा को निर्धारित करता है। मिट्टी का उपयोग एवं उपजाऊपन मनुष्य को सर्वाधिक प्रभावित करता है। मृदा का उपजाऊपन मृदा में उपस्थित खनिज लवणों पर निर्भर होता है तथा मृदा का उपजाऊपन मृदा संरचना पर आधारित है। इसमें प्रदेश की भौगोलिक दशाऐं भी मृदा स्वरूप को प्रभावित करती है। मृदा स्वरूप के आधार पर किसी भी प्रदेश की प्रकृति सुनिश्चित की जाती है कि वह प्रदेश, कृषि प्रदेश, औद्योगिक प्रदेश या खनन क्षेत्र यह वहाँ की मृदा संरचना पर ही आश्रित है।

तहसील के सभी भागों में लगभग मृदा संरचना में अंतर देखने को मिलता है। यह भाग मालवा पठार का अभिन्न अंग होने के कारण काली मिट्टी की बहुलता पाई जाती है। परन्तु प्रमुख नदियों के द्वारा मृदा स्वरूप में परिवर्तन देखने को मिलता है। पार्वती, कालीसिंध व बाणगंगा नदियों के किनारे काली एवं दोमट मिट्टी पायी जाती है। इसके पूर्व भाग में लाल पथरीली एवं कंकड़युक्त मिट्टी पायी जाती है तथा पश्चिमी भाग में पीली मिट्टी अधिक पाई जाती है। इस मिट्टी में नाइट्रोजन, फास्फोरस, कार्बनिक तत्वों की मात्रा कम पायी जाती है। मृदा की उपजाऊ क्षमता अधिक होने के कारण यह भाग कृषि आधारित है तथा अधिकांश व्यक्तियों की आजिविका कृषि पर निर्भर है।

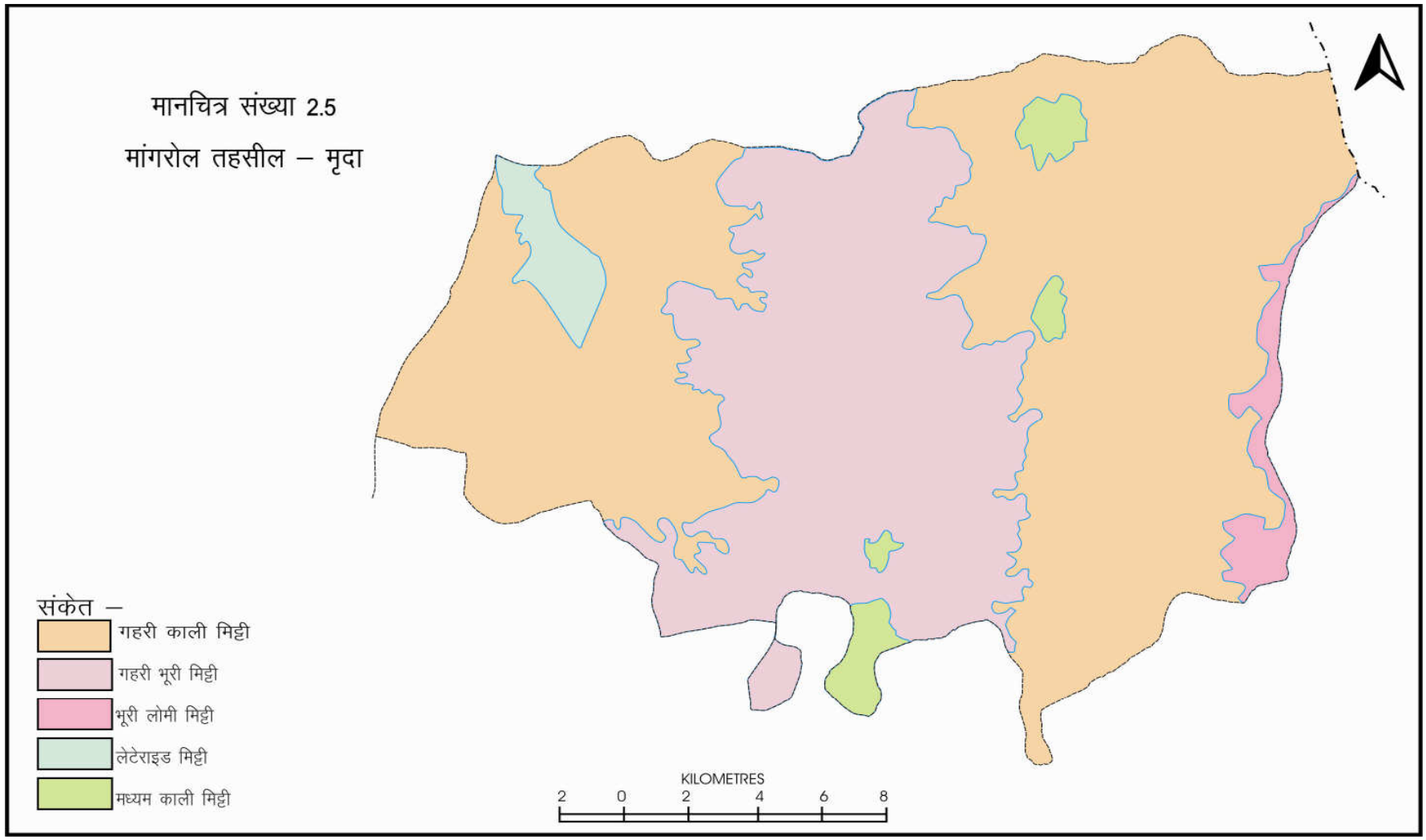
मानचित्र संख्या 2.5
मांगरोल तहसील – मृदा
संकेत –
गहरी काली मिट्टी
गहरी भूरी मिट्टी
भूरी लोमी मिट्टी
लेटेराइड मिट्टी
मध्यम काली मिट्टी
KILOMETRES
2 0 2 4 6 8

2.9 प्राकृतिक विभाग –

भौतिक विभाग का विभाजन वहाँ की भौगोलिक संरचना के आधार पर किया जाता है। उच्चावचों के आधार पर संरचना का निर्धारण किया जाता है परन्तु लगभग समतल भाग को भौतिक विभाग में बांटना एक जटिलता का विषय है। इसी का एक उदाहरण मांगरोल तहसील को माना जा सकता है। यहाँ पर भी भौतिक संरचना के स्वरूप में ज्यादा अंतर देखने को नहीं मिलता है परन्तु अध्ययन की सुविधाओं को ध्यान में रखते हुए मानचित्र संख्या 2.6 के अनुसार तहसील को कुल तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है।

1. पूर्वी निम्न प्रदेश
2. मध्य उच्च प्रदेश
3. पश्चिमी निम्न प्रदेश

2.9.1 पूर्वी निम्न प्रदेश –

तहसील का उत्तर–पश्चिमी, दक्षिणी–पश्चिमी एवं पश्चिमी भाग इसे प्रदेश के अन्तर्गत सम्मिलित किया जाता है। यह समुद्रतल से 220–240 मीटर की ऊँचाई रखता है। इस भाग में पीली मिट्टी एवं कंकड़ युक्त मृदा पायी जाती है। यह भाग लगभग आयताकार स्वरूप में फैला हुआ है। इस भाग में उत्तर से दक्षिण की ओर पार्वती नदी प्रवाहित होती है तथा कई प्रकार के छोटे छोटे बीहड़ क्षेत्र पाये जाते हैं जो कि चम्बल नदी के समकक्ष छोटे स्वरूप में देखे जाते हैं।

पूर्वी निम्न प्रदेश का क्षेत्रफल 325.21 वर्ग किलोमीटर है। जिसमें तहसील के लगभग 29 गांव सम्मिलित किये जा सकते हैं। इसका ढाल उत्तर से दक्षिण की ओर होने के कारण प्रवाह उत्तर–दक्षिण की ओर होता है।

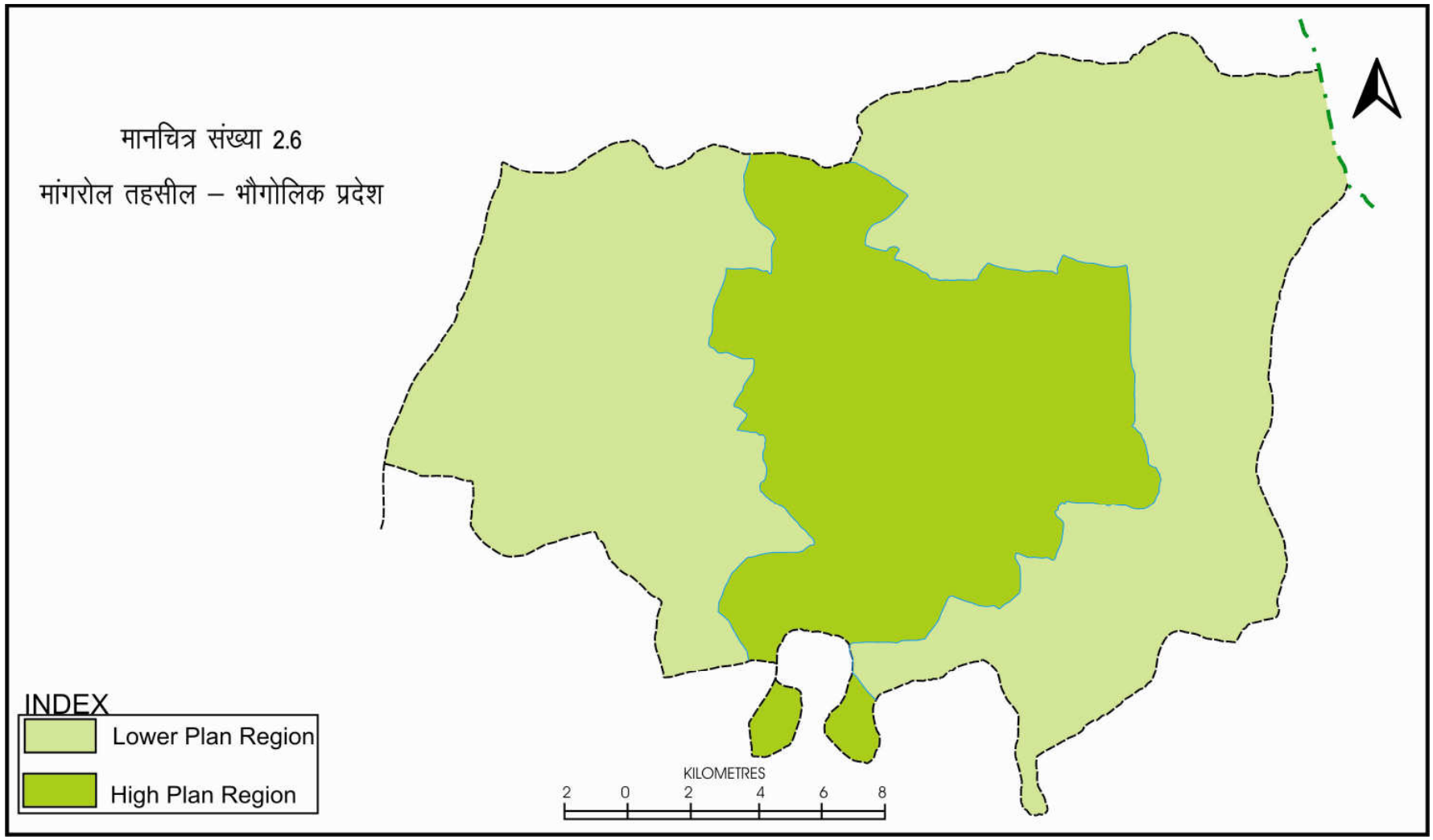
मानचित्र संख्या 2.6
मांगरोल तहसील – भौगोलिक प्रदेश
INDEX
Lower Plan Region
High Plan Region
KILOMETRES
2 0 2 4 6 8

2.9.2 मध्य उच्च प्रदेश –

यह भाग तहसील के मध्य में स्थित है। जो कि मैदानी एवं पठारी भाग है। यह प्रदेश निम्न प्रदेश तथा पश्चिमी प्रदेश के बीच स्थित है। इसमें 27 गांव सम्मिलित किये जाते है। जो कि 221.73 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैला हुआ है। यह तहसील के लगभग 29 प्रतिशत भाग पर स्थित है। यह प्रदेश 240–260 मीटर समुद्रतल से ऊँचाई रखने के कारण अन्य भागों की अपेक्षा ऊँचा है। इसी कारण इस भाग को मध्य उच्च भाग कहते है। इस भाग में काली मिट्टी की अधिकता पायी जाती है तथा तहसील मुख्यालय का सम्पूर्ण भाग इसी भाग के अन्तर्गत आता है। यह भाग सर्वाधिक उपजाऊ एवं धनधान्य से परिपूर्ण माना जाता है।

2.9.3 पश्चिमी निम्न प्रदेश –

यह प्रदेश तहसील मुख्यालय के पश्चिमी भाग में स्थित है जो कि बाणगंगा से लेकर कालीसिंध नदी तक फैला हुआ है। इसके अन्तर्गत उत्तर–पश्चिम, दक्षिण–पश्चिम एवं पश्चिमी प्रदेश को सम्मिलित किया जाता है। इसके अन्तर्गत लगभग 108.7 किलोमीटर क्षेत्र को सम्मिलित किया जाता है। इसके अन्तर्गत लगभग 23 गांवों को सम्मिलित किया जाता है। इस प्रदेश के अधिकांश भाग में काली मिट्टी पायी जाती है तथा इसके पश्चिमी भाग में कालीसिंध के किनारे वाले भागों पर पीली मृदा की प्रधानता पायी जाती है। जो सीसवाली कस्बें के पश्चिमी भाग आते हैं। जहाँ पर कृषि कार्य कम देखने को मिलता हैं। अधिकांश भागों पर कंटिली झाड़ियाँ उगी हुई हैं।

2.10 आर्थिक स्वरूप –

मांगरोल तहसील आर्थिक दृष्टि से पूर्ण रूप से कृषि पर निर्भर है। यहाँ की आबादी की 67 प्रतिशत जनसंख्या कृषि पर आश्रित है। इसी कारण आर्थिक स्वरूप का मुख्य आधार कृषि है। यहाँ के कृषि स्वरूप का वर्णन निम्न प्रकार से किया जा सकता है।

(अ) कृषि –

सम्पूर्ण भारतवर्ष की कुल जनसंख्या का लगभग 70 प्रतिशत भाग कृषि कार्य में संलग्न है। यहाँ की अर्थव्यवस्था को कृषि ही प्रभावित करती है। इसी प्रकार राजस्थान में भी अधिकांश जनसंख्या कृषि पर ही निर्भर है। राजस्थान के दक्षिणी–पूर्वी भाग को विशेषरूप से कृषि भाग के अन्तर्गत रखा जाता है तथा अध्ययन क्षेत्र इसी भाग का एक हिस्सा है। यहाँ पर दायी मुख्य नहर से सिंचाई सुविधा होने के कारण यह भाग पूर्ण रूप से सिंचित भाग है। जिसके कुछ भागों को छोड़कर अधिकांश भाग सिंचित क्षेत्र के अन्तर्गत आते हैं। यहाँ पर प्रवाहित होने वाली पार्वती एवं कालिसिंध से भी संलग्न क्षेत्रों में सिंचाई की जाती है। सिंचाई के लिए यहाँ के व्यक्ति पारंपरिक कृषि स्त्रोतों का उपयोग करते हैं। प्रारम्भ में कृषि कार्य पूर्ण रूप से पशुओं एवं मानवीय श्रम पर निर्भर था वहीं वर्तमान में यंत्रिकरण के कारण यांत्रिक हो गया हैं। यंत्रिकरण के कारण यहाँ के कृषि प्रारूप में कई प्रकार के अंतर देखने को मिलते हैं।

प्रारम्भ में जहाँ मोटे अनाज की फसलें की जाती थी वहीं अब खाद्यान्न फसलें होने लगी हैं। इन फसलों के कारण लोगों की खाद्य आपूर्ती के साथ–साथ आय में भी वृद्धि हुई हैं। जिससे उनके जीवन में कई प्रकार के परिवर्तन देखे जा सकते हैं।

यहाँ पर अधिकांश जनसंख्या कृषि से सम्बन्धित विभिन्न गतिविधियों में संलग्न है। यहाँ पर कृषि कार्य के लिए ट्रेक्टर, मशीन, हार्वेस्टर एवं अन्य आधुनिक यंत्र काम में लिये जाते हैं। यहाँ पर कुल 2114 ट्रेक्टर 37 हार्वेस्टर, 14 भूसा मशीन, 11 लहसुन मशीन एवं अन्य छोटी मशीनें हैं। जिनके द्वारा कृषि कार्य शीघ्रता के साथ आधुनिक ढंग से किया जाता हैं।

(ब) सिंचाई –

अध्ययन क्षेत्र का अधिकांश भाग दायीं मुख्य नहर की शाखा अयाना ब्रांच से सिंचित होता हैं। जिसमें विभिन्न लिफ्ट परियोजनाऐं कृषि भाग को सिंचित करती हैं। जहाँ पर मुख्य लिफ्ट परियोजना गणेशगंज लिफ्ट

परियोजना है जो रकसपुरिया ग्राम से प्रारंभ होकर गणेशगंज कोटा जिले तक कृषि भाग को सिंचित करती हैं। इसके अतिरिक्त यहाँ पर शाहपुरा माईनर, कराड़िया माइनर, भटवाड़ा सिंधनिया माइनर, सीसवाली माइनर, उदपुरिया माइनर, काशीपुरा माइनर, ईश्वरपुरा माइनर आदि से सिंचाई की जाती हैं। इसके अतिरिक्त नलकूप, कुओं एवं नदी के द्वारा भी सिंचाई की जाती हैं।

यहाँ पर अधिकांश भाग नहरी सिंचाई तंत्र के अन्तर्गत आते है तथा पूर्वी भाग में नदी से इंजनों द्वारा सिंचाई की जाती हैं। ईश्वरपुरा पंचायत के कुछ गांव में नलकूप द्वारा भी सिंचाई की जाती हैं।

(स) पशुपालन –

किसी भी क्षेत्र में कृषि के साथ–साथ पशुपालन मुख्य व्यवसाय के अन्तर्गत आता है। यहाँ पर पशुपालन विशेषरूप से पूर्वी एवं पश्चिमी भागों में व्यावसायिक एवं मध्य भाग में निर्वहन के लिए किया जाता है। यहाँ पर गाय, भैंस, बकरी, मुर्गियाँ आदि पशु पाले जाते हैं।

तालिका संख्या 2.3 : मांगरोल तहसील – पशु वितरण

क्र.स.	पशु	पशुओं की संख्या
1	गौवंश	35726
2	भैंस	23342
3	भेड़	2230
4	ब्करी	47320
5	सुअर	4515
6	घोड़े, खच्चर व गधे	405
7	अन्य पशु	8132
	कुल	**121670**

आरेख संख्या 2.5 : मांगरोल तहसील में पशुओं का वितरण 2015

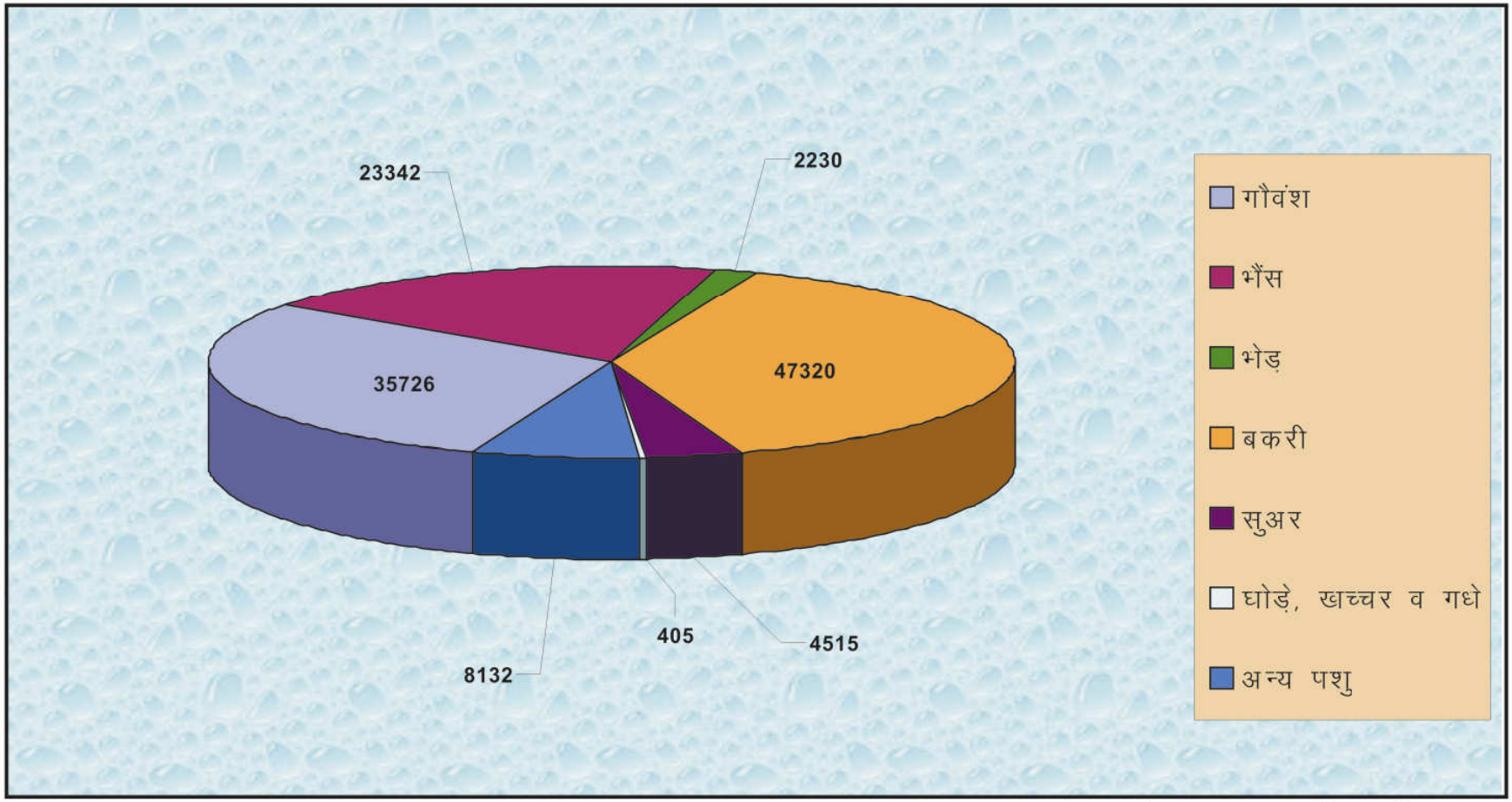

स्त्रोत – पशु पालन विभाग, जिला बारां

आरेख संख्या 2.5 के अनुसार 121670 पशु हैं। जिनमें गौवंश 35726, भैंसे 23142, 2230 भैड़े, 47320 बकरिया, 405 घोड़े, खच्चर व गधे, 4515 सुअर तथा अन्य पशुओं की संख्या 8132 हैं। जिनमें मुर्गे–मुर्गिया, कुत्तें जैसे अन्य पालतु पशुओं को सम्मिलित किया गया हैं।

यहाँ पर 3 गौशाला, लघु डेयरी उद्योग, ग्रामीण बकरी पालन एवं घरेलू पशु पालन में कई प्रकार के पशु पाले जाते हैं। यहाँ पर पशुओं को दूध बेचने एवं घरेलू उपयोग के लिए पाला जाता हैं। अध्ययन क्षेत्र के तीनों भागों में पशु पालन मुख्य रूप से देखने को मिलता है।

(द) विपणन –

कृषि के साथ–साथ उद्योग, व्यापार का भी बहुत महत्व है। मांगरोल तहसील में विकसित बाजार एवं उद्योग कम देखने को मिलते हैं। यहाँ पर बाजार मुख्य रूप से महत्वपूर्ण आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए लगे हुए हैं। यहाँ पर किसी प्रकार का कोई प्रमुख उद्योग नहीं होने के कारण बाजार उद्योग आधारित नहीं हैं। विपणन के अन्तर्गत यहाँ पर मांगरोल, सीसवाली में कृषि मण्डी की शुरूआत की गयी हैं। परन्तु वर्तमान में यहाँ पर खरीद केन्द्र प्रारम्भ नहीं होने के कारण यह भी अध्ययन क्षेत्र को प्रभावित नहीं करती हैं। यहाँ पर बाजार कपड़ा, रेडिमेड खिलौने, सौन्दर्य प्रसाधन, बर्तन, इलेक्ट्रोनिक्स, लौहे एवं ऑटोमोबाइल्स, मोटर पार्ट्स अन्य छोटे आवश्यकताओं से सम्बन्धित वस्तुओं के हैं।

यहाँ पर खादी उद्योग के अन्तर्गत कई छोटे कुटिर उद्योग स्थित हैं। जहाँ पर कपड़ा बनाया जाता है। यहाँ पर अधिकांश कपड़ा हाथ से बनाया जाता हैं जो कि प्राचीन पद्दति से निर्मित होने के कारण अधिक प्रभावी नहीं है। वर्तमान में यहाँ पर 37 इकाईयों में छोटी मशीनों के द्वारा भी कपड़ा बनाने का कार्य प्रारम्भ कर दिया गया हैं। जिससे यहाँ पर संलग्न क्षेत्रों में एवं अन्य उद्योग मेलों में मांगरोल खादी का कपड़ा बेचा जाता हैं।

यहाँ पर साप्ताहिकी हाट बाजार लगते हैं। जिसमें घरेलू आवश्यकताओं से सम्बन्धित विभिन्न वस्तुऐं उपलब्ध रहती हैं। व्यक्ति अपने आवश्यकता अनुसार विभिन्न वस्तुओं का क्रय करता हैं। इस प्रकार स्थानीय बाजार घरेलू आवश्यकताओं तक सीमित हैं।

(य) परिवहन –

अध्ययन क्षेत्र में किसी प्रकार का रेल मार्ग एवं राष्ट्रीय राजमार्ग नहीं है। परिवहन की दृष्टि से यह क्षेत्र राज्य मार्ग एवं ग्रामीण जिला सड़कों वाले परिवहन क्षेत्र के अन्तर्गत आता हैं। जिसमें राज्य राजमार्ग संख्या 1, राज्य राजमार्ग संख्या 19बी स्थित है तथा जिला सड़कों में दो सड़कें कोटा–बारां एवं बारां–श्योपुर प्रमुख सड़कें हैं। यहाँ पर विभिन्न प्रकार की ग्रामीण सड़कें कच्ची सड़कें ग्रामीण पक्की सड़कें आदि स्थित हैं। जो यहाँ के परिवहन तंत्र को विकसित करती हैं। 2009 के बाद यहाँ पर सड़कों का जाल विस्तृत हुआ हैं। जिसमें प्रत्येक ग्राम पंचायत मुख्यालय पक्की सड़कों से जुड़ा हुआ हैं एवं छोटे गांव पक्की सड़कों से पंचायत मुख्यालय एवं तहसील से जुड़े हुए हैं। इस प्रकार परिवहन की दृष्टि से यह क्षेत्र पक्की सड़कों की दृष्टि से विकसित क्षेत्र हैं। जहाँ पर विभिन्न प्रकार की पक्की सड़कें स्थित हैं। मानचित्र संख्या 2.7 के अनुसार यहाँ पर सड़कों में मांगरोल – सीसवाली – कोटा मार्ग, मांगरोल – बारां – श्योपुर मार्ग, मांगरोल–श्योपुर मार्ग आदि स्थित हैं।

(र) खनिज –

खनिज की दृष्टि से मांगरोल तहसील क्षेत्र पिछड़ा हुआ हैं। क्योंकि यहाँ पर ईमारती पत्थर के अतिरिक्त अन्य कोई खनिज प्राप्त नहीं होता हैं। यहाँ पर पूर्वी भाग में पार्वती नदी से रेत, बालू, बजरी एवं ईमारती पत्थर का खनन किया जाता हैं तथा पश्चिमी भाग से कालीसिंध नदी से केवल ईमारती पत्थर का खनन किया जाता हैं। इस भाग में कालीसिंध की गहराई अधिक होने के कारण रेत प्राप्त नहीं हो पाती हैं।

मानचित्र संख्या 2.7

मांगरोल तहसील – परिवहन तंत्र

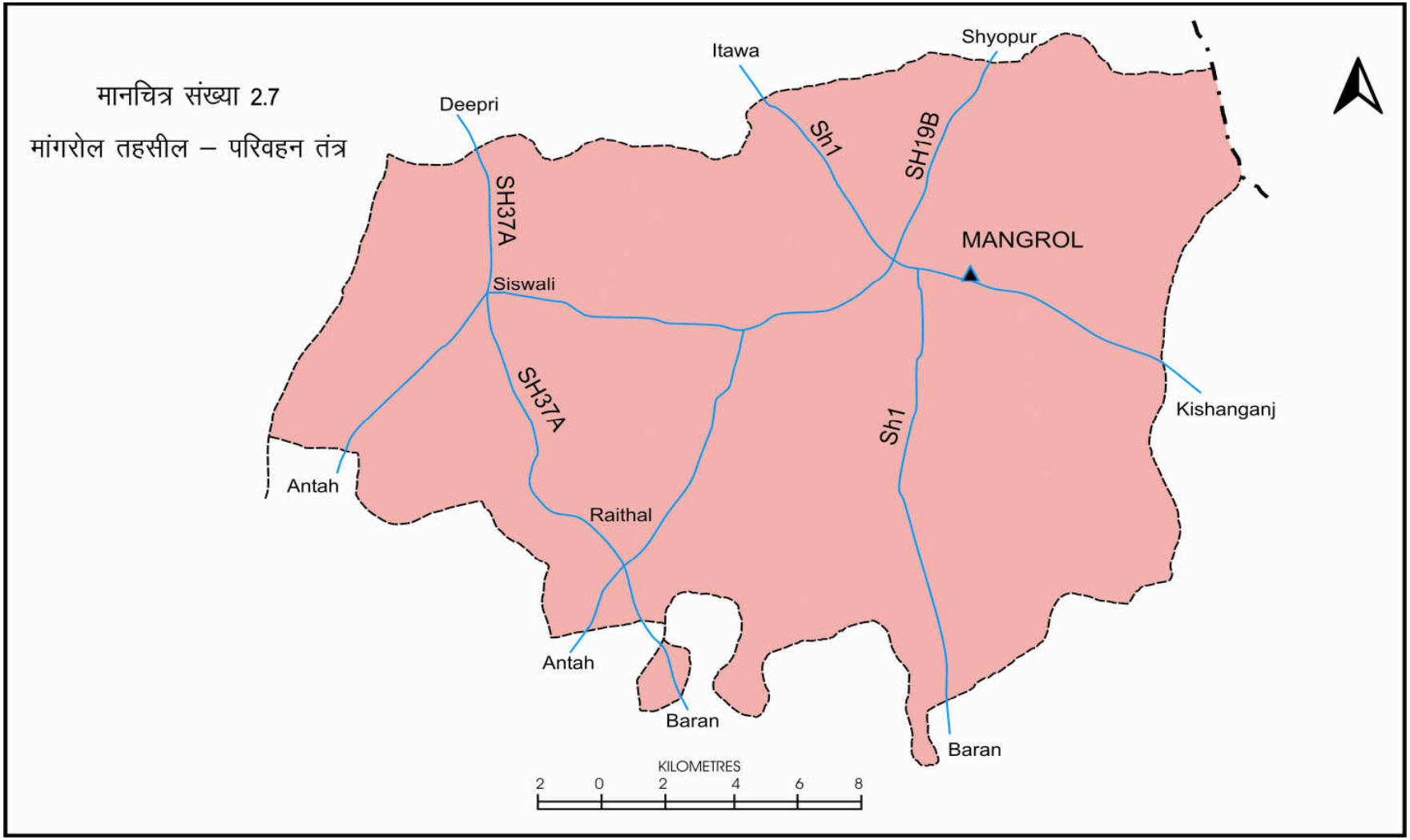

2.8 जननांकिकीय स्वरूप –

कृषि क्षेत्र जहाँ पर विकसित होता है वहाँ पर जनसंख्या निश्चित रूप से सघन रूप से निवास करती हैं। इसी प्रकार अध्ययन क्षेत्र में भी कृषि भाग का व्यापक विस्तार होने के कारण यहाँ पर जनसंख्या की विकसित संरचना देखने को मिलती हैं। जनसंख्या के निवास को यहाँ की जलवायु आर्द्रता, जलापूर्ति, समतल धरातल, कृषि एवं अन्य सुविधाऐं प्रभावित करती हैं।

2.8.1 जनसंख्या वृद्धि –

जनसंख्या वृद्धि किसी भी प्रदेश में तब ही संभव है जब वहाँ पर आर्थिक विकास एवं महत्वपूर्ण सुविधा उपलब्ध हो। जनसंख्या वृद्धि एवं विकास का निर्धारण क्षेत्र के आर्थिक स्थिति के आधार पर किया जा सकता हैं। कई क्षेत्रों में संसाधनों के स्वरूप के आधार पर जनसंख्या का विकास संभव हैं। यद्यपि मांगरोल क्षेत्र के आर्थिक विकास की दर धीमी रही परन्तु जनसंख्या वृद्धि दर एक दशक में लगभग एक चौथाई रही।

जनसंख्या वृद्धि सामान्यतः विभिन्न प्रभावित करने वाले कारकों पर निर्भर करती हैं। जनसंख्या वृद्धि दर संसाधन आधारित होती हैं। जहाँ पर सीमित संसाधन होते है वहाँ जनसंख्या वृद्धि दर न्यूनतम पायी जाती हैं। मांगरोल में प्रायः संसाधन सीमित हैं। इसी कारण यहाँ पर भी जनसंख्या वृद्धि दर न्यूनतम है। तालिका संख्या 2.4 के अनुसार विभिन्न दशकों में जनसंख्या के आंकड़ों के अनुसार यहाँ पर जनसंख्या 2001 में 87813 व्यक्ति थी वहीं बढ़कर 2011 में 106963 व्यक्ति हो गयी। इस प्रकार जनसंख्या वृद्धि विभिन्न दशकों में यहाँ पर विभिन्न दर से बढ़ती रही। 1981 में जनसंख्या वृद्धि दर 25.37 थी जो 1991 के दशक में घटकर 24. 59 रही तथा 2001 में यही वृद्धि दर पुनः बढ़कर 25.69 हो गयी एवं 2011 में जनसंख्या वृद्धि दर में पुनः कमी दर्ज की गयी। यह घटकर 21.80 प्रतिशत रह गयी। इस प्रकार 2011 में जनसंख्या वृद्धि दर में कमी दर्ज की गयी। इसका मुख्य कारण उच्च शिक्षा एवं रोजगार के लिए लोगों का

प्रवास प्रमुख रहा। इसी कारण तहसील की जनसंख्या वृद्धि में कमी दर्ज की गयी। विभिन्न जनसंख्या वृद्धि दर निम्न प्रकार है –

तालिका संख्या 2.4 : मांगरोल तहसील–जनसंख्या में दशकीय वृद्धि, लिंगानुपात एवं घनत्व

वर्ष	व्यक्ति	दशकीय अन्तर		पुरूष	स्त्री	लिंगानुपात	घनत्व
		व्यक्ति	प्रतिशत				
1981	56073	9969	25.37	29379	26694	909	124
1991	69865	13792	24.59	35091	33774	936	155
2001	87813	17948	25.69	44758	43055	962	194
2011	106963	19150	21.8	55370	51593	932	237

जिसमें 1981 में दशकीय वृद्धि 9969 व्यक्ति, 1991 में 13792 व्यक्ति, 2001 में 17948 व्यक्ति तथा 2011 में 19150 व्यक्ति रहें। जिसमें 1981 से 2001 तक लिंगानुपात में भी वृद्धि हुई। 2011 में लिंगानुपात में गिरावट दर्ज की गई। इस प्रकार 2011 में कुल जनसंख्या में पुरूषों की संख्या 55370 पर स्त्रियों की संख्या 51593 हैं तथा यहाँ का लिंगानुपात 932 हैं। जो कि 2001 में 962 था।

आरेख संख्या 2.6 : मांगरोल तहसील में दशकीय जनसंख्या वृद्धि

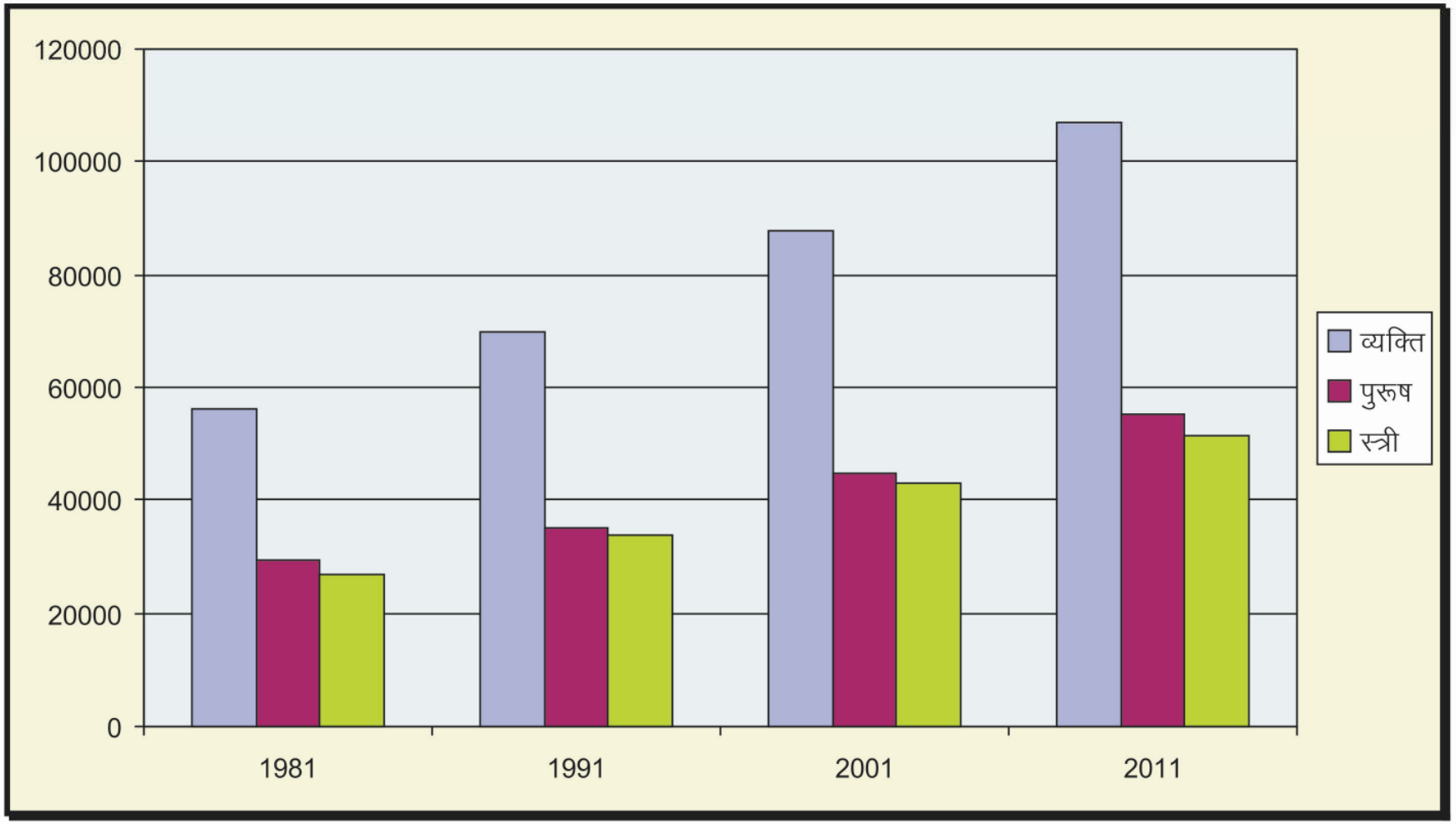

2.8.2 जनसंख्या वितरण –

जनसंख्या वितरण विभिन्न संसाधनों पर आधारित होता है। जहाँ पर आधारभूत सुविधायें अधिक होती हैं वहाँ पर अधिक जनसंख्या देखने को मिलती हैं। मांगरोल तहसील में भी इसी प्रकार विभिन्न अधिवासों में जनसंख्या वितरण 2011 के आंकड़ों के अध्ययन के अनुसार कुल जनसंख्या 106963 जिसमें 55370 पुरूष तथा 51593 महिलाऐं हैं।

तालिका संख्या 2.5 : मांगरोल तहसील–अधिवासों में जनसंख्या वितरण

पूर्वी निम्न प्रदेश

Village Code	Name of Village	No_HH	TOT_P	TOT_M	TOT_F
102563	Mal Bamori	397	2093	1093	1000
102564	Rampura Bhagtan	118	669	355	314
102565	Balapura	155	815	423	392
102566	Rawal Jawal	213	1136	589	547
102567	Bamori Kalan	956	4834	2512	2322
102568	Pali	32	141	76	65
102570	Kashi Pura	72	416	212	204
102571	Bhaogrh	177	780	411	369
102572	Balunda	127	698	366	332
102574	Jarela	120	632	327	305
102575	Bhateriya	108	590	300	290
102576	Khanpuriya	139	697	357	340
102577	Reejhya	128	688	359	329
102578	Rengarh	176	806	446	360
102579	Mau	485	2592	1327	1265
102580	Karariya	85	440	218	222
102581	Bhojyaheri	163	751	383	368
102582	Seemalya	191	1056	532	524
102602	Mordi	57	268	136	132
102603	Mahalpur	76	330	179	151
102604	Jarawadiya	94	417	227	190
102605	Mundiya	150	772	419	353
102606	Nandgaonri	35	150	75	75
102622	Jharwa	158	920	470	450
102623	Singola	122	646	327	319
102624	Pagara	8	48	28	20
102625	Gudrawani	65	320	169	151
102626	Gopalpura	109	633	346	287
102627	Kareeriya	2	9	4	5
102628	Bhagwanpura	165	866	471	395
102629	Bohat	1086	5415	2827	2588
	Total	**5969**	**30628**	**15964**	**14664**

मध्य निम्न प्रदेश

Village Code	Name	No_HH	TOT_P	TOT_M	TOT_F
102559	Shrinal	130	562	304	258
102560	Dhoomarkheri	96	535	276	259
102561	Kekakheri	94	456	235	221
102562	Balwankheri	27	121	64	57
102583	Jaloda Tejaji	193	1188	604	584
102584	Chainpuriya	114	511	270	241
102585	Chandraheri	101	499	266	233
102586	Shahupura	261	1384	710	674
102599	Koondla	192	924	484	440
102600	Kushya	77	419	230	189
102601	Borda	246	1274	665	609
102607	Ishwarpura	332	1673	848	825
102608	Jetal Heri	114	510	265	245
102609	Indraheri	2	7	4	3
102610	Kishanpura	130	743	371	372
102611	Seeghanya	45	225	116	109
102612	Moondla	77	424	210	214
102613	Rakaspuriya	119	632	331	301
102614	Mahuaa	304	1680	849	831
102617	Moondli	179	960	513	447
102618	Sokhanda	104	523	286	237
102619	Shyampura	68	411	224	187
102620	Padaliya	184	1006	537	469
102621	Bhatwara	585	2918	1519	1399
102630	Hingoniya	192	1083	591	492
102631	Harsoli	98	544	272	272
102632	Baldeo Pura	163	816	417	399
800613	Mangrol (M)	4632	25073	12915	12158
	Total	**8859**	**47101**	**24376**	**22725**

पश्चिमी निम्न प्रदेश

Village Code	Name	No_HH	TOT_P	TOT_M	TOT_F
102556	Kanada	86	422	216	206
102557	Patpara	176	927	471	456
102558	Rampuriya Barod	71	381	195	186
102587	Tisaya	390	1979	1023	956
102588	Seeswali	2938	14991	7809	7182
102590	Sonwa	192	1060	542	518
102591	Pipalda	69	351	172	179
102592	Udpuriya	257	1373	705	668
102593	Godawari	20	110	58	52
102594	Paparli	171	804	397	407
102596	Chhatrapura	185	1076	548	528
102597	Nawalpura	82	437	224	213
102598	Pakalkhera	239	1293	658	635
102615	Raithal	648	3288	1719	1569
102616	Mundala	164	742	362	380
	Total	**5688**	**29234**	**15099**	**14135**

अध्ययन क्षेत्र के पश्चिमी भाग में कुल जनसंख्या 29234 व्यक्ति जिसमें 15099 पुरूष एवं 14135 महिलाऐं मध्य भाग में कुल 47101 व्यक्ति जिसमें 24376 पुरूष, 22725 महिलाऐं तथा पूर्वी भाग में कुल 30628 व्यक्ति जिसमें 15964 पुरूष, 14664 महिलाऐं हैं। अध्ययन क्षेत्र में पश्चिमी भाग में सर्वाधिक जनसंख्या सीसवाली में 14991 एवं रायथल में 3288 हैं तथा मध्य भाग में सर्वाधिक जनसंख्या तहसील मुख्यालय मांगरोल में 25073 एवं

भटवाड़ा ग्राम में 2918 हैं। पूर्वी भाग में सर्वाधिक जनसंख्या बोहत में 5415 एवं बम्बोरी कलां में 4834 हैं।

इस प्रकार विभिन्न जनसंख्या वितरण को अधिवास स्वरूप के आधार पर तालिका संख्या 2.6 के अनुसार निर्धारित किया गया।

तालिका संख्या 2.6 : मांगरोल तहसील – जनसंख्या आकार के अनुसार अधिवासों की संख्या

जनसंख्या आकार	अधिवासों की संख्या		
	पूर्वी भाग	मध्य भाग	पश्चिमी भाग
0-100	4	1	6
101-500	8	7	3
501-1000	15	11	3
1001-2000	2	7	5
2000 से अधिक	2	2	2

जिसमें वितरण को विभिन्न श्रेणी में परिभाषित किया गया। जिसमें विभिन्न क्षेत्रों के आधार पर जनसंख्या वितरण निम्न प्रकार है।

(अ) 0—100 जनसंख्या वाले अधिवास –

इसके अन्तर्गत ऐसे अधिवासों को सम्मिलित किया गया हैं जहाँ पर जनसंख्या 100 व्यक्ति से कम हैं। जिसमें पूर्वी भाग में धोंकलखेड़ी, गुरावदीया, करेरिया, पगारा अधिवासों को सम्मिलित किया गया हैं। पश्चिमी भाग में 6 अधिवास शिवपुरा, रामपुरा, गोदावरी, भटेड़ी, बालापुरा, रामपुरिया (बड़ोद) एवं मध्य भाग का 1 अधिवास इन्द्राहेड़ी सम्मिलित किया गया हैं। इस प्रकार कम जनसंख्या वाले अधिवासों में पश्चिमी भाग के अधिक

अधिवासों को सम्मिलित किया गया। जिसमें गैर आबादी होने के कारण इन अधिवासों की संख्या यहाँ पर अधिक हैं।

(ब) 101—500 जनसंख्या वाले अधिवास —

इसके अन्तर्गत 500 से कम जनसंख्या वाले विभिन्न अधिवासों को सम्मिलित किया गया हैं। इस श्रेणी के सर्वाधिक अधिवास पूर्वी भाग में एवं न्यूनतम अधिवास पश्चिमी भाग में है। यहाँ पर पूर्वी भाग में पाली, नंदगांवड़ी, मोरडी, काशीपुरा, गुदरावनी, महलपुर, करेरिया, जड़ावदीया, मध्य भाग में बलवन खेड़ी, सिंघानिया, श्यामपुरा, कुशिया, मूंडला, केकाखेड़ी, चन्द्राहेड़ी तथा पश्चिमी भाग में रामपुरिया, नवलपुरा, कनाडा अधिवास सम्मिलित हैं। इस प्रकार अध्ययन क्षेत्र में कुल 18 अधिवास इस श्रेणी के अन्तर्गत आते हैं।

(स) 500—1000 जनसंख्या वाले अधिवास —

इस श्रेणी के अधिवास सर्वाधिक पूर्वी भाग में एवं न्यूनतम पश्चिमी भाग में स्थित हैं। जिसमें पूर्वी भाग में भटेरिया, गोपालपुरा, रामपुरा भक्तान, जारेला, सिंगोला, बालूंदा, रिझिया, खानपुरिया, मूंडिया, बालापुरा, झाड़वा, भोजाहेड़ी, भगवानपुरा, रेनगढ़, भावगढ़ अधिवास सम्मिलित हैं। पश्चिमी भाग में मूंडला, पापड़ली, पटपड़ा तथा मध्य भाग में धूमरखेड़ी, हरसोली, सोकन्दा, चेनपुरिया, जेतलहेड़ी, रकसपुरिया, श्रीनाथ, किशनपुरा, बलदेवपुरा, मूंडली, कूंडला अधिवास हैं। इस प्रकार सम्पूर्ण प्रदेश में 28 अधिवास इस श्रेणी के अन्तर्गत आते हैं। अध्ययन क्षेत्र में सर्वाधिक अधिवास इसी श्रेणी के अन्तर्गत हैं।

(द) 1000—2000 जनसंख्या वाले अधिवास —

इस श्रेणी के अन्तर्गत कुल 14 अधिवास आते हैं। जिसमें सर्वाधिक अधिवास मध्य भाग में एवं न्यूनतम अधिवास पूर्वी भाग में है। यहाँ पर पूर्वी भाग में सीमलिया व रावल जावल अधिवास, मध्य भाग में पाडलिया, हिंगोनिया, जलोदा तेजाजी, बोरदा, शाहपुरा, महुआ, ईश्वरपुरा अधिवास

तथा पश्चिमी भाग में छतरपुरा, सोनवा, पाकलखेड़ा, उदपुरिया, तिसाया अधिवास आते हैं। इस प्रकार इस श्रेणी में पश्चिमी भाग की अपेक्षा पूर्वी भाग में अधिवास कम हैं। यही कारण हैं कि यहाँ पर छोटे अधिवास पश्चिमी भाग में अधिक हैं। क्योंकि मध्य श्रेणी के अधिवासों में छोटे अधिवासों को विकसित नहीं होने देते हैं।

(य) 2000 से अधिक जनसंख्या वाले अधिवास –

इस श्रेणी के अधिवास सर्वाधिक पूर्वी भाग में स्थित हैं तथा पश्चिमी एवं मध्य भाग में अधिवासों की संख्या समान हैं। यहाँ पर पूर्वी भाग में माल बम्बोरी, मऊ, बम्बोरी कलां, बोहत जैसे बड़ें अधिवास सम्मिलित हैं। मध्य भाग में भटवाड़ा एवं मांगरोल अधिवास तथा पश्चिमी भाग में रायथल व सीसवाली अधिवास आते हैं। इस प्रकार कुल 8 अधिवास हैं। जिसमें सबसे कम मध्य भाग में तहसील मुख्यालय को छोड़कर मात्र 1 अधिवास है। यहाँ पर अधिवास कम होने का मुख्य कारण तहसील मुख्यालय का होना है। जिससे कोई भी बड़ा अधिवास विकसित नहीं हो सका।

2.8.3 जनसंख्या घनत्व –

प्रति इकाई क्षेत्रफल में निवासित कुल व्यक्तियों की संख्या को जनघनत्व कहा जाता हैं। जनसंख्या घनत्व किसी भी प्रदेश के विकास का द्योतक होता हैं। जहाँ पर जनसंख्या घनत्व अधिक होता है निश्चित रूप से वहाँ पर विकास की दशाऐं होती हैं। जहाँ पर जनसंख्या घनत्व विरल होता है वहाँ पर कई प्रकार की समस्याऐं जनसंख्या वितरण को प्रभावित करती हैं। अध्ययन क्षेत्र का औसत जनघनत्व 237 व्यक्ति प्रतिवर्ग किलोमीटर हैं। यहाँ पर सर्वाधिक जनघनत्व मांगरोल, सीसवाली, जैसे बड़े अधिवासों में पाया जाता हैं। अध्ययन क्षेत्र के पूर्वी भाग में सर्वाधिक जनघनत्व तहसील मुख्यालय के अतिरिक्त कुंडला में 469 व्यक्ति प्रति किलोमीटर है। हिंगोनिया में 369 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर है। मध्य भाग में रावल जावल में 380 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर, गोपालपुरा में 329 तथा पश्चिमी भाग में सीसवाली में 472 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर जनघनत्व पाया जाता

हैं। घनत्व भिन्नता के आधार पर अध्ययन क्षेत्र को तालिका संख्या 2.7 के अनुसार निम्न प्रकार से परिभाषित किया गया है।

तालिका संख्या 2.7 : मांगरोल तहसील – जनसंख्या घनत्व के अनुसार अधिवासों की संख्या

जन घनत्व	अधिवासों की संख्या		
	पूर्वी भाग	मध्य भाग	पश्चिमी भाग
अधिक जन घनत्व (200 से अधिक)	12	7	4
मध्यम जन घनत्व (101–200)	14	15	8
निम्न जन घनत्व (100 से कम)	7	6	7

(अ) अधिक जन घनत्व वाले अधिवास –

इसमें 201 व्यक्ति से अधिक जनघनत्व वाले अधिवासों को सम्मिलित किया गया हैं। जिसमें पूर्वी भाग में सर्वाधिक घनत्व रावल जावल में 380 हैं। इसके अतिरिक्त अधिक घनत्व वाले अधिवास पाली, गुदरावनी, काशीपुरा, गोपालपुरा, बालून्दा, खानपुरिया, भोजाहेड़ी, सीमल्या, मऊ, बम्बोरीकलां एवं बोहत सहित 12 अधिवास हैं। मध्य भाग में सर्वाधिक घनत्व कूंडला अधिवास का 469 हैं। इसके अधिक घनत्व वाले अधिवास केकाखेड़ी, चन्द्राहेड़ी, बलदेवपुरा, हिंगोनिया, ईश्वरपुरा, भटवाड़ा एवं मांगरोल तहसील सहित 7 अधिवास एवं पश्चिमी भाग में सर्वाधिक घनत्व सीसवाली का है। इसमें अधिक घनत्व वाले पाकलखेड़ा, उदपुरिया, तिसाया सहित 4 अधिवास सम्मिलित किये गये हैं। पूर्वी भाग में क्षेत्रफल कम होने के कारण एवं कृषि भूमि का विकास अधिक होने के कारण इस भाग में जन घनत्व पश्चिमी भाग की अपेक्षा अधिक पाया गया हैं। इस भाग के अन्तर्गत कुल 23 अधिवास आते हैं।

(ब) मध्य जन घनत्व वाले अधिवास –

इसके अन्तर्गत 101 से 200 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर घनत्व वाले क्षेत्रों को सम्मिलित किया गया हैं। जिसके अन्तर्गत कुल 37 अधिवास आते हैं। जिनमें सर्वाधिक मध्य भाग में मूंडला, धूमरखेड़ी, हरसोली, सोकन्दा, चेनपुरिया, जेतलहेड़ी, रकसपुरिया, श्रीनाल, मूंडली, पाड़लिया, जलोदा तेजाजी, बोरदा, शाहपुरा, महुआ सहित 15 अधिवास एवं पूर्वी भाग में करेरिया, जड़ावदिया, भटेरिया, रामपुरा भक्तान, सिंगोला, रिझिया, मूंडिया, बालापुरा, झाड़वा, भगवानपुरा, रेनगढ़, भावगढ़, मालबम्बोरी सहित 14 अधिवासों को सम्मिलित किया गया हैं। पश्चिमी भाग में नवलपुरा, कनाड़ा, मूंडला, पापड़ली, पटपड़ा, छत्रपुरा, सोनवा, रायथल सहित 8 अधिवास हैं। पश्चिमी भाग में अधिवासों की संख्या कम होने का मुख्य कारण विस्तृत क्षेत्रफल एवं आर्थिक विकास की कमी हैं।

(स) निम्न जन घनत्व वाले अधिवास –

गैर आबादी क्षेत्रों के अतिरिक्त सर्वाधिक निम्न घनत्व वाले अधिवास मध्य भाग में पाये गये। इसका मुख्य कारण यहाँ पर छोटे क्षेत्रफल में विकसित अधिवास हैं। यहाँ पर पश्चिमी भाग में रामपुरिया (बड़ोद), बालापुरा, भटेड़ी, गोदावरी, रामपुरा, शिवपुरा सहित 6 अधिवासों को सम्मिलित किया गया हैं। मध्य भाग में इन्द्राहेड़ी, बलवनखेड़ी, सिंगानिया, श्यामपुरा, कुशिया, किशनपुरा सहित 6 अधिवास एवं पूर्वी भाग में धोंकलखेड़ी, गुरावदिया, करेरिया, पगारा, नंदगांवड़ी, मोरड़ी, महलपुर सहित 7 अधिवास निम्न जन घनत्व वाले अधिवासों की श्रेणी में आते हैं।

2.8.4 <u>लिंगानुपात</u> –

लिंगानुपात का निर्धारण 1000 पुरूषों पर महिलाओं की संख्या के आधार पर किया जाता है। इस आधार पर अध्ययन क्षेत्र का 2011 के आंकड़ों के अनुसार औसत लिंगानुपात 932 व्यक्ति हैं। जिसमें सर्वाधिक लिंगानुपात मूंडला में 1050 व्यक्ति एवं न्यूनतम लिंगानुपात पगारा में 714 व्यक्ति हैं। लिंगानुपात के आधार पर अध्ययन क्षेत्र में विभिन्न अधिवासों का

लिंगानुपात पूर्वी भाग में औसत 919 व्यक्ति है। जिसमें सर्वाधिक लिंगानुपात करीरिया में 1018, नंदगांवड़ी में 1000 एवं न्यूनतम जन घनत्व पगारा में 714 है। इसमें न्यूनतम लिंगानुपात होने का मुख्य कारण अधिवास का पिछड़ा हुआ होना एवं शिक्षा की कमी होना हैं। इसी कारण यहाँ पर लिंगानुपात कम देखने को मिलता हैं।

मध्य भाग का औसत लिंगानुपात 932 व्यक्ति है। जिसमें सर्वाधिक लिंगानुपात वाले अधिवासों में मूंडला (किशनपुरा) में 1019, किशनपुरा में 1003, हरसोली में 1000 व्यक्ति है एवं न्यूनतम लिंगानुपात इंद्राहेड़ी में 750 व्यक्ति है। इसमें कम घनत्व होने का मुख्य कारण अधिवासों का कम होना हैं। क्योंकि यहाँ पर केवल 2 अधिवास हैं जिसमें कुल 7 व्यक्ति निवास करते हैं तथा इसमें पुरूषों की संख्या अधिक है जो लिंगानुपात को सर्वाधिक प्रभावित करते हैं।

पश्चिमी भाग में औसत लिंगानुपात 936 व्यक्ति है। जिसमें सर्वाधिक लिंगानुपात वाले अधिवासों में मूंडला (रायथल) में 1050, पीपल्दा में 1041, पापड़ली में 1025 है। न्यूनतम लिंगानुपात गोदावरी में 897 है।

इस प्रकार शिक्षा का विस्तार एवं अन्य मूलभूत सुविधाओं के आधार पर लिंगानुपात का निर्धारण विभिन्न अधिवासों में उनकी दशा के आधार पर निर्धारित है।

2.8.5 साक्षरता —

अध्ययन क्षेत्र में कुल साक्षर व्यक्तियों की संख्या 64798 है तथा औसत साक्षरता का प्रतिशत 60.56 है। तालिका संख्या 2.9 के अनुसार इसमें पूर्वी भाग में 15839 व्यक्ति साक्षर एवं साक्षरता का प्रतिशत 51.71 है। जिसमें पुरूष 10076 एवं महिला 5783 साक्षर हैं। मध्य भाग में कुल साक्षर 31349 व्यक्ति हैं जिसमें पुरूष साक्षर 19175 तथा महिला साक्षर 12174 हैं। पश्चिमी भाग में कुल साक्षर 17590 हैं जिसमें पुरूष साक्षर 10883 तथा महिला साक्षर 6707 हैं।

तालिका संख्या 2.8 : मांगरोल तहसील – साक्षरता

अध्ययन क्षेत्र	कुल साक्षर	प्रतिशत	पुरूष साक्षर	प्रतिशत	महिला साक्षर	प्रतिशत
पूर्वी भाग	15839	51.71	10076	63.62	5783	36.51
मध्य भाग	31349	66.56	19175	61.17	12174	38.83
पश्चिमी भाग	17590	60.17	10883	61.87	6707	38.13
कुल	64778	60.56	40134	72.48	24664	47.80

यहाँ पर सर्वाधिक साक्षरता प्रतिशत मध्य भाग में स्थित है क्योंकि यहाँ पर तहसील मुख्यालय नजदीक होने के कारण शिक्षा सुविधा आसानी से उपलब्ध हो जाती हैं। न्यूनतम साक्षरता प्रतिशत पूर्वी भाग में 51.71 हैं। पुरूष साक्षरता का सर्वाधिक प्रतिशत पूर्वी भाग में हैं तथा महिला साक्षरता का सर्वाधिक प्रतिशत मध्य भाग में हैं। जिनमें न्यूनतम पुरूष साक्षरता प्रतिशत मध्य भाग में एवं न्यूनतम महिला साक्षरता प्रतिशत पूर्वी भाग में हैं। इस प्रकार अध्ययन क्षेत्र में साक्षरता दर लगभग समान हैं। पुरूष साक्षरता एवं महिला साक्षरता में अंतर देखने को मिलता हैं क्योंकि यहाँ पर औसत पुरूष साक्षरता दर 72.48 हैं। वहीं महिलाओं की साक्षरता दर मात्र 47.80 हैं। इसका मुख्य कारण प्रारम्भ में क्षेत्र का कम विकसित होना हैं। क्योंकि पूर्व में सभी अधिवासों पर शिक्षा सुविधा उपलब्ध नहीं थी। वर्तमान में धीरे–धीरे महिला साक्षरता अधिक होती जा रही हैं।

2.8.10 व्यवसायिक स्वरूप –

अध्ययन क्षेत्र में अधिकांश व्यक्ति कृषि कार्य में संलग्न हैं। यहाँ पर कुल 48652 व्यक्ति कृषि एवं अन्य व्यवसायों में संलग्न हैं। जिनमें 39043 पुरूष एवं 19809 महिलाऐं हैं। इस प्रकार व्यवसायिक कार्यों में संलग्न व्यक्तियों का प्रतिशत 45.48 हैं। तालिका संख्या 2.10 के अनुसार पूर्वी भाग में 15655 कुल व्यक्ति व्यवसायिक कार्य में संलग्न हैं तथा पश्चिमी भाग में 12653 एवं मध्य भाग में 20344 व्यक्ति व्यवसायिक कार्य करते हैं।

तालिका संख्या 2.9 : मांगरोल तहसील – व्यवसायिक स्वरूप

अध्ययन क्षेत्र	कुल जनसंख्या			व्यवसायिक जनसंख्या			प्रतिशत
	कुल	पुरूष	महिला	कुल	पुरूष	महिला	
पूर्वी भाग	30628	15964	14664	15655	8747	7108	51.11
मध्य भाग	47101	24376	22725	20344	12475	7869	43.19
पश्चिमी भाग	29234	15099	14135	12653	7821	4832	43.28
कुल	**106963**	**55439**	**51524**	**48652**	**29043**	**19809**	**45.48**

इस प्रकार सर्वाधिक व्यक्ति मध्य भाग में व्यवसायिक कार्य करते हैं। जिसमें सर्वाधिक पुरूष मध्य भाग में 12475 एवं महिलाऐं 78669 हैं। न्यूनतम कार्यरत व्यक्तियों की संख्या पश्चिमी भाग में हैं। क्योंकि इस भाग में कृषि कार्य एवं अन्य व्यवसाय कम मात्रा में हैं। इसका मुख्य कारण जनसंख्या विरलता एवं प्रर्किणन अधिवासों का होना हैं।

3.1 केन्द्रीय कार्यों की संकल्पना

किसी भी कार्य को केन्द्रीय कार्य जब माना जाता हैं जब उसके संलग्न अधिवासों द्वारा उसकी विभिन्न सुविधाओं का उपभोग किया जाता हो। प्रत्येक स्थान पर केन्द्रीय कार्य नहीं हो सकते हैं। केन्द्रीय कार्य की स्थिति जनसंख्या संरचना के आधार पर निर्धारित होती हैं। व्यक्तियों की मांग के आधार पर सरकार के द्वारा केन्द्रीय कार्य स्थापित किये जाते हैं। जहाँ से अधिकतम लोग उनका उपभोग कर सके। इसी आधार पर कार्यों को उच्च श्रेणी एवं निम्न श्रेणी में रखा जाता हैं।

अध्ययन क्षेत्र के विश्लेषण से यह ज्ञात होता है कि केन्द्रीय कार्यों का निर्धारण व्यक्तियों के सर्वांगीण विकास के लिए किया जाता हैं। कार्यों की प्रकृति शिक्षा, चिकित्सा, प्रशासनिक सेवा, पटवार मंडल, संचार सुविधा, जनकल्याण कार्यक्रम, जनुपयोगी सेवाऐं, प्रशिक्षण कार्यक्रम आदि प्रकार के हो सकते हैं। इनका उपयोग विभिन्न व्यक्तियों द्वारा जीवन शैली को उच्च बनाने के लिए एवं अपनी मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ती के लिए किया जाता हैं। इस प्रकार केन्द्रीय कार्य जहाँ पर स्थित होते हैं वहाँ पर अधिकतम लोग निवास करते हैं एवं संलग्न क्षेत्रों के अधिकतम व्यक्तियों द्वारा इन कार्यों का उपभोग किया जाता हैं। कार्य की प्रकृति के आधार पर एवं विभिन्न सुविधाओं के आधार पर व्यक्ति इनका चयन करते हैं तथा सुगमता वाले कार्यों को चयन करते हैं एवं अपने उपभोग योग्य बनाते हैं।

अध्ययन क्षेत्र में विभिन्न प्रकार के केन्द्रीय कार्यों का विश्लेषण किया गया है। जिसमें विभिन्न आवश्यकताओं की पूर्ती करने वाले केन्द्रीय कार्यों का निर्धारण किया गया एवं व्यक्तियों के साथ अधिवासों के आधार पर उनका विश्लेषण किया गया।

3.2 केन्द्रीय कार्यो के अध्ययन का महत्व–

समग्र विकास के लिए आवश्यक है कि उस स्थान पर अधिकतम केन्द्रीय कार्यों का सांद्रण हो। केन्द्रीय कार्य कार्यात्मक एवं स्थानिक प्रकार के होते हैं जो एक दूसरे को विभिन्न प्रकार से प्रभावित करते हैं। साथ ही दोनों एक दूसरे के पूरक होते हैं। इस प्रकार यह स्पष्ट होता है कि केन्द्रीय

कार्यों के स्वरूप के निर्धारण में वहाँ की भौगोलिक संरचना, जनानंकिकीय संरचना एवं स्थानिक संरचना आदि के आधार पर निर्धारण किया जाता हैं। जहाँ से सभी केन्द्रीय कार्य किसी न किसी स्वरूप में प्रभावित करते हैं। इस प्रकार विभिन्न पहलुओं का अध्ययन केन्द्रीय कार्यों के आधार पर किया जाता हैं तथा इसके विभिन्न घटकों को अंतर्संबधित करते हुए उनका तुलनात्मक अध्ययन किया जाता हैं।

विभिन्न तथ्यों का निर्धारण करते हुए केन्द्रीय कार्यों पर विचार किया जाना आवश्यक है। यह कार्य हमें किसी न किसी स्वरूप में प्रभावित करते हैं एवं अध्ययन क्षेत्र के विकास के लिए केन्द्रीय कार्यों का विकास आवश्यक है। इनके आधार पर ही अध्ययन क्षेत्र में भविष्य में समग्र नियोजित विकास किया जा सकता है।

3.3 केन्द्रीय स्थल सिद्वांत एवं मांगरोल तहसील का स्वरूप–

केन्द्रीय स्थल सिद्वान्त के अनुसार उस स्थान को केन्द्रीय स्थल माना जाता हैं जहाँ पर सम्पूर्ण सुविधाऐं उपलब्ध हो सके। केन्द्रीय स्थल सिद्वान्त की संकल्पना सर्वप्रथम पीटर गेडिस द्वारा दी गयी जिसमें उन्होंने केन्द्रीय स्थल को परिभाषित किया। इसी आधार पर सम्पूर्ण सुविधाओं युक्त एवं अधिकतम व्यक्तियों की पहुँच वाला क्षेत्र केन्द्रीय स्थल माना जाता हैं। इस प्रकार केन्द्रीय स्थल के निर्धारण करने से पूर्व वहाँ कि समस्त सुविधाओं का अध्ययन करना आवश्यक हैं।

अध्ययन क्षेत्र में मांगरोल तहसील का तहसील मुख्यालय क्षेत्र केन्द्रीय स्थल के रूप में माना जाता है क्योंकि इसमें सम्पूर्ण सुविधाऐं उपलब्ध है एवं विभिन्न क्षेत्रों को सुविधाऐं उपलब्ध करवाने का कार्य करता है। तहसील मुख्यालय पर सार्वभौमिक सुविधाओं को ध्यान में रखते हुए केन्द्रीय स्थल का निर्धारण का मुख्य आधार जनसंख्या संरचना को भी माना गया है। साथ ही सहायक कारकों में राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक एवं विभिन्न सरकारी परियोजनाओं के आधार पर केन्द्रीय कार्यों की स्थिति इसको केन्द्रीय स्थल के रूप में परिभाषित करती है। जिसका निर्धारण निम्न तथ्यों के आधार पर किया जा सकता है।

3.4 शैक्षणिक सुविधा–

शिक्षा किसी भी क्षेत्र की स्थिति का मुख्य आधार माना जाता है। क्योंकि शिक्षा के आधार पर ही विभिन्न प्रकार के सार्वभौमिक विकास किये जा सकते हैं। शिक्षा के द्वारा ही किसी भी क्षेत्र की विभिन्न दशाओं का निर्धारण किया जाता है। शिक्षा के उपक्रम में प्राथमिक शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा तक सम्मिलित किया जाता है। शैक्षणिक सुविधाओं की दूरी को ध्यान में रखते हुए विभिन्न अवस्थाओं का निर्धारण किया गया है। इसके प्रमुख घटक निम्नलिखित हैं –

3.4.1 प्राथमिक विद्यालय का वितरण प्रतिरूप–

प्रारम्भिक शिक्षा को आधारभूत शिक्षा माना जाता है। जिसको ध्यान में रखते हुए लगभग सभी गाँवों में यह सुविधा उपलब्ध कराई गयी हैं। जहाँ पर अधिवास बसे हुए है और अधिवासों की संख्या 20 से अधिक हैं वहाँ पर प्राथमिक विद्यालय स्थित हैं।

किसी भी व्यक्ति के लिए प्राथमिक शिक्षा व्यक्ति के अधिकार में अभिवर्णित है कि सरकार द्वारा इसी कारण अध्ययन क्षेत्र के केवल 15 गाँवों में यह सुविधा स्थानिक उपलब्ध नहीं है। वह प्रारम्भिक शिक्षा के लिए अन्य स्थानों पर निर्भर हैं। अध्ययन क्षेत्र में कुल 80 अधिवास हैं जिसमें 74 आबादी एवं 6 गैर आबादी क्षेत्र हैं। इस प्रकार यह सुविधा आबादी क्षेत्रों में से केवल 9 अधिवासों में उपलब्ध नहीं है। जिनमें आवासों की संख्या कम होने के कारण यह सुविधा दिया जाना संभव नहीं हैं। यहाँ पर जिन अधिवासों में आवासों की संख्या अधिक है। वहाँ पर प्राथमिक विद्यालयों की संख्या भी अधिक है। तालिका संख्या 3.1 के अनुसार 0 से 99 आवासों वाले 30 अधिवासों में 15 प्राथमिक विद्यालय स्थित हैं। 100 से 199 आवासों वाले 34 अधिवासों में केवल चंद्राहेडी गाँव में यह सुविधा उपलब्ध नहीं हैं। अन्य 33 अधिवासों में प्राथमिक विद्यालय स्थित है। 200 से 499 आवासों वाले 10 अधिवासों में प्राथमिक विद्यालयों की संख्या 17 है। 500 से 999 आवासों वाले 3 अधिवासों में प्राथमिक विद्यालयों की संख्या 12 है तथा 1000 से अधिक आबादी वाले मांगरोल तहसील, सीसवाली, बोहत में इन विद्यालयों की संख्या 43 है। इस प्रकार अध्ययन क्षेत्र के कुल 80 अधिवासों में 120

प्राथमिक विद्यालय स्थित है जो सम्पूर्ण क्षेत्र को प्रारम्भिक शिक्षा की सुविधा प्रदान करते हैं।

तालिका संख्या 3.1 : मांगरोल तहसील – जनसंख्या आकार के अनुसार प्राथमिक विद्यालयों का वितरण प्रतिरूप

अधिवास प्रतिरूप	कुल अधिवास	प्राथमिक विद्यालयों की संख्या
0-99	30	15
100-199	34	33
200-499	10	17
500-999	3	12
Above 1000	3	43
कुल	**80**	**120**

3.4.2 प्राथमिक विद्यालयों की औसत दूरी–

अध्ययन क्षेत्र में प्राथमिक विद्यालयों की स्थिति अधिकांश अधिवासों में होने के कारण यहाँ पर औसत दूरी मात्र 0.31 किलोमीटर है। तालिका संख्या 3.2 में क्षेत्र के अनुसार दूरियों को अंकित किया गया हैं। जिससे यह ज्ञात होता है कि सर्वाधिक औसत दूरी पूर्वी निम्न प्रदेश में 0.36 किलोमीटर है जिसमें कुल प्राथमिक विद्यालयों के 32.50 प्राथमिक विद्यालय हैं। मध्य उच्च भूमि में प्राथमिक विद्यालयों की औसत दूरी 0.23 है जो कि न्यूनतम दूरी है क्योंकि इस भाग में सर्वाधिक 40.83 प्रतिशत प्राथमिक विद्यालय स्थित

हैं। क्षेत्र के पश्चिमी भाग में लगभग सभी गाँवों में प्राथमिक विद्यालय स्थित हैं जो आबादी क्षेत्रों के अन्तर्गत आते हैं। इस भाग की कुल औसत दूरी शून्य है तथा यहाँ पर 26.66 प्रतिशत प्राथमिक विद्यालय स्थित हैं। अध्ययन क्षेत्र में सर्वाधिक विद्यालय मध्य उच्च भूमि में तथा न्यूनतम विद्यालय पश्चिमी भाग में स्थित हैं।

तालिका संख्या 3.2 : मांगरोल तहसील – भौगोलिक प्रदेशों के अनुसार प्राथमिक विद्यालय केन्द्रों की औसत दूरी

भौगोलिक प्रदेश	औसत दुरी (कि.मी.में)	कुल प्राथमिक विद्यालयों का प्रतिशत
पूर्वी निम्न प्रदेश	0.36	32.51
मध्य उच्च भूमि	0.23	40.83
पश्चिमी निम्न प्रदेश	0	26.66
कुल	**0.31**	**100.00**

3.4.3

3.1 केन्द्रीय कार्यों की संकल्पना

किसी भी कार्य को केन्द्रीय कार्य जब माना जाता हैं जब उसके संलग्न अधिवासों द्वारा उसकी विभिन्न सुविधाओं का उपभोग किया जाता हो। प्रत्येक स्थान पर केन्द्रीय कार्य नहीं हो सकते हैं। केन्द्रीय कार्य की स्थिति जनसंख्या संरचना के आधार पर निर्धारित होती हैं। व्यक्तियों की मांग के आधार पर सरकार के द्वारा केन्द्रीय कार्य स्थापित किये जाते हैं। जहाँ से अधिकतम लोग उनका उपभोग कर सके। इसी आधार पर कार्यों को उच्च श्रेणी एवं निम्न श्रेणी में रखा जाता हैं।

अध्ययन क्षेत्र के विश्लेषण से यह ज्ञात होता है कि केन्द्रीय कार्यों का निर्धारण व्यक्तियों के सर्वांगीण विकास के लिए किया जाता हैं। कार्यों की प्रकृति शिक्षा, चिकित्सा, प्रशासनिक सेवा, पटवार मंडल, संचार सुविधा, जनकल्याण कार्यक्रम, जनुपयोगी सेवाऐं, प्रशिक्षण कार्यक्रम आदि प्रकार के हो सकते हैं। इनका उपयोग विभिन्न व्यक्तियों द्वारा जीवन शैली को उच्च बनाने के लिए एवं अपनी मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ती के लिए किया जाता हैं। इस प्रकार केन्द्रीय कार्य जहाँ पर स्थित होते हैं वहाँ पर अधिकतम लोग निवास करते हैं एवं संलग्न क्षेत्रों के अधिकतम व्यक्तियों द्वारा इन कार्यों का उपभोग किया जाता हैं। कार्य की प्रकृति के आधार पर एवं विभिन्न सुविधाओं के आधार पर व्यक्ति इनका चयन करते हैं तथा सुगमता वाले कार्यों को चयन करते हैं एवं अपने उपभोग योग्य बनाते हैं।

अध्ययन क्षेत्र में विभिन्न प्रकार के केन्द्रीय कार्यों का विश्लेषण किया गया है। जिसमें विभिन्न आवश्यकताओं की पूर्ती करने वाले केन्द्रीय कार्यों का निर्धारण किया गया एवं व्यक्तियों के साथ अधिवासों के आधार पर उनका विश्लेषण किया गया।

3.2 केन्द्रीय कार्यो के अध्ययन का महत्व–

समग्र विकास के लिए आवश्यक है कि उस स्थान पर अधिकतम केन्द्रीय कार्यों का सांद्रण हो। केन्द्रीय कार्य कार्यात्मक एवं स्थानिक प्रकार के होते हैं जो एक दूसरे को विभिन्न प्रकार से प्रभावित करते हैं। साथ ही दोनों एक दूसरे के पूरक होते हैं। इस प्रकार यह स्पष्ट होता है कि केन्द्रीय

कार्यों के स्वरूप के निर्धारण में वहाँ की भौगोलिक संरचना, जनानंकिकीय संरचना एवं स्थानिक संरचना आदि के आधार पर निर्धारण किया जाता हैं। जहाँ से सभी केन्द्रीय कार्य किसी न किसी स्वरूप में प्रभावित करते हैं। इस प्रकार विभिन्न पहलुओं का अध्ययन केन्द्रीय कार्यों के आधार पर किया जाता हैं तथा इसके विभिन्न घटकों को अंतर्संबधित करते हुए उनका तुलनात्मक अध्ययन किया जाता हैं।

विभिन्न तथ्यों का निर्धारण करते हुए केन्द्रीय कार्यों पर विचार किया जाना आवश्यक है। यह कार्य हमें किसी न किसी स्वरूप में प्रभावित करते हैं एवं अध्ययन क्षेत्र के विकास के लिए केन्द्रीय कार्यों का विकास आवश्यक है। इनके आधार पर ही अध्ययन क्षेत्र में भविष्य में समग्र नियोजित विकास किया जा सकता है।

3.3 केन्द्रीय स्थल सिद्वांत एवं मांगरोल तहसील का स्वरूप–

केन्द्रीय स्थल सिद्वान्त के अनुसार उस स्थान को केन्द्रीय स्थल माना जाता हैं जहाँ पर सम्पूर्ण सुविधाऐं उपलब्ध हो सके। केन्द्रीय स्थल सिद्वान्त की संकल्पना सर्वप्रथम पीटर गेडिस द्वारा दी गयी जिसमें उन्होंने केन्द्रीय स्थल को परिभाषित किया। इसी आधार पर सम्पूर्ण सुविधाओं युक्त एवं अधिकतम व्यक्तियों की पहुँच वाला क्षेत्र केन्द्रीय स्थल माना जाता हैं। इस प्रकार केन्द्रीय स्थल के निर्धारण करने से पूर्व वहाँ कि समस्त सुविधाओं का अध्ययन करना आवश्यक हैं।

अध्ययन क्षेत्र में मांगरोल तहसील का तहसील मुख्यालय क्षेत्र केन्द्रीय स्थल के रूप में माना जाता है क्योंकि इसमें सम्पूर्ण सुविधाऐं उपलब्ध है एवं विभिन्न क्षेत्रों को सुविधाऐं उपलब्ध करवाने का कार्य करता है। तहसील मुख्यालय पर सार्वभौमिक सुविधाओं को ध्यान में रखते हुए केन्द्रीय स्थल का निर्धारण का मुख्य आधार जनसंख्या संरचना को भी माना गया है। साथ ही सहायक कारकों में राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक एवं विभिन्न सरकारी परियोजनाओं के आधार पर केन्द्रीय कार्यों की स्थिति इसको केन्द्रीय स्थल के रूप में परिभाषित करती है। जिसका निर्धारण निम्न तथ्यों के आधार पर किया जा सकता है।

3.4 शैक्षणिक सुविधा–

शिक्षा किसी भी क्षेत्र की स्थिति का मुख्य आधार माना जाता है। क्योंकि शिक्षा के आधार पर ही विभिन्न प्रकार के सार्वभौमिक विकास किये जा सकते हैं। शिक्षा के द्वारा ही किसी भी क्षेत्र की विभिन्न दशाओं का निर्धारण किया जाता है। शिक्षा के उपक्रम में प्राथमिक शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा तक सम्मिलित किया जाता है। शैक्षणिक सुविधाओं की दूरी को ध्यान में रखते हुए विभिन्न अवस्थाओं का निर्धारण किया गया है। इसके प्रमुख घटक निम्नलिखित हैं –

3.4.1 प्राथमिक विद्यालय का वितरण प्रतिरूप–

प्रारम्भिक शिक्षा को आधारभूत शिक्षा माना जाता है। जिसको ध्यान में रखते हुए लगभग सभी गाँवों में यह सुविधा उपलब्ध कराई गयी हैं। जहाँ पर अधिवास बसे हुए है और अधिवासों की संख्या 20 से अधिक हैं वहाँ पर प्राथमिक विद्यालय स्थित हैं।

किसी भी व्यक्ति के लिए प्राथमिक शिक्षा व्यक्ति के अधिकार में अभिवर्णित है कि सरकार द्वारा इसी कारण अध्ययन क्षेत्र के केवल 15 गाँवों में यह सुविधा स्थानिक उपलब्ध नहीं है। वह प्रारम्भिक शिक्षा के लिए अन्य स्थानों पर निर्भर हैं। अध्ययन क्षेत्र में कुल 80 अधिवास हैं जिसमें 74 आबादी एवं 6 गैर आबादी क्षेत्र हैं। इस प्रकार यह सुविधा आबादी क्षेत्रों में से केवल 9 अधिवासों में उपलब्ध नहीं है। जिनमें आवासों की संख्या कम होने के कारण यह सुविधा दिया जाना संभव नहीं हैं। यहाँ पर जिन अधिवासों में आवासों की संख्या अधिक है। वहाँ पर प्राथमिक विद्यालयों की संख्या भी अधिक है। तालिका संख्या 3.1 के अनुसार 0 से 99 आवासों वाले 30 अधिवासों में 15 प्राथमिक विद्यालय स्थित हैं। 100 से 199 आवासों वाले 34 अधिवासों में केवल चंद्राहेडी गाँव में यह सुविधा उपलब्ध नहीं हैं। अन्य 33 अधिवासों में प्राथमिक विद्यालय स्थित है। 200 से 499 आवासों वाले 10 अधिवासों में प्राथमिक विद्यालयों की संख्या 17 है। 500 से 999 आवासों वाले 3 अधिवासों में प्राथमिक विद्यालयों की संख्या 12 है तथा 1000 से अधिक आबादी वाले मांगरोल तहसील, सीसवाली, बोहत में इन विद्यालयों की संख्या 43 है। इस प्रकार अध्ययन क्षेत्र के कुल 80 अधिवासों में 120

प्राथमिक विद्यालय स्थित है जो सम्पूर्ण क्षेत्र को प्रारम्भिक शिक्षा की सुविधा प्रदान करते हैं।

तालिका संख्या 3.1 : मांगरोल तहसील – जनसंख्या आकार के अनुसार प्राथमिक विद्यालयों का वितरण प्रतिरूप

अधिवास प्रतिरूप	कुल अधिवास	प्राथमिक विद्यालयों की संख्या
0-99	30	15
100-199	34	33
200-499	10	17
500-999	3	12
Above 1000	3	43
कुल	**80**	**120**

3.4.2 प्राथमिक विद्यालयों की औसत दूरी–

अध्ययन क्षेत्र में प्राथमिक विद्यालयों की स्थिति अधिकांश अधिवासों में होने के कारण यहाँ पर औसत दूरी मात्र 0.31 किलोमीटर है। तालिका संख्या 3.2 में क्षेत्र के अनुसार दूरियों को अंकित किया गया हैं। जिससे यह ज्ञात होता है कि सर्वाधिक औसत दूरी पूर्वी निम्न प्रदेश में 0.36 किलोमीटर है जिसमें कुल प्राथमिक विद्यालयों के 32.50 प्राथमिक विद्यालय हैं। मध्य उच्च भूमि में प्राथमिक विद्यालयों की औसत दूरी 0.23 है जो कि न्यूनतम दूरी है क्योंकि इस भाग में सर्वाधिक 40.83 प्रतिशत प्राथमिक विद्यालय स्थित

हैं। क्षेत्र के पश्चिमी भाग में लगभग सभी गाँवों में प्राथमिक विद्यालय स्थित हैं जो आबादी क्षेत्रों के अन्तर्गत आते हैं। इस भाग की कुल औसत दूरी शून्य है तथा यहाँ पर 26.66 प्रतिशत प्राथमिक विद्यालय स्थित हैं। अध्ययन क्षेत्र में सर्वाधिक विद्यालय मध्य उच्च भूमि में तथा न्यूनतम विद्यालय पश्चिमी भाग में स्थित हैं।

तालिका संख्या 3.2 : मांगरोल तहसील – भौगोलिक प्रदेशों के अनुसार प्राथमिक विद्यालय केन्द्रों की औसत दूरी

भौगोलिक प्रदेश	औसत दुरी (कि.मी.में)	कुल प्राथमिक विद्यालयों का प्रतिशत
पूर्वी निम्न प्रदेश	0.36	32.51
मध्य उच्च भूमि	0.23	40.83
पश्चिमी निम्न प्रदेश	0	26.66
कुल	**0.31**	**100.00**

3.4.3 उच्च प्राथमिक विद्यालयों का वितरण प्रारूप–

अध्ययन क्षेत्र में उच्च प्राथमिक विद्यालयों की संख्या 88 हैं जो कि 37 अधिवासों को अपनी सेवाऐं दे रहे हैं। तालिका संख्या 3.3 के अनुसार कई ऐसे अधिवास है जहाँ पर एक से अधिक उच्च प्राथमिक विद्यालय अध्ययन क्षेत्र में 43 ऐसे अधिवास हैं जहाँ पर एक भी उच्च प्राथमिक विद्यालय नहीं हैं। अध्ययन क्षेत्र के 99 से कम आवासों वाले अधिवासों में

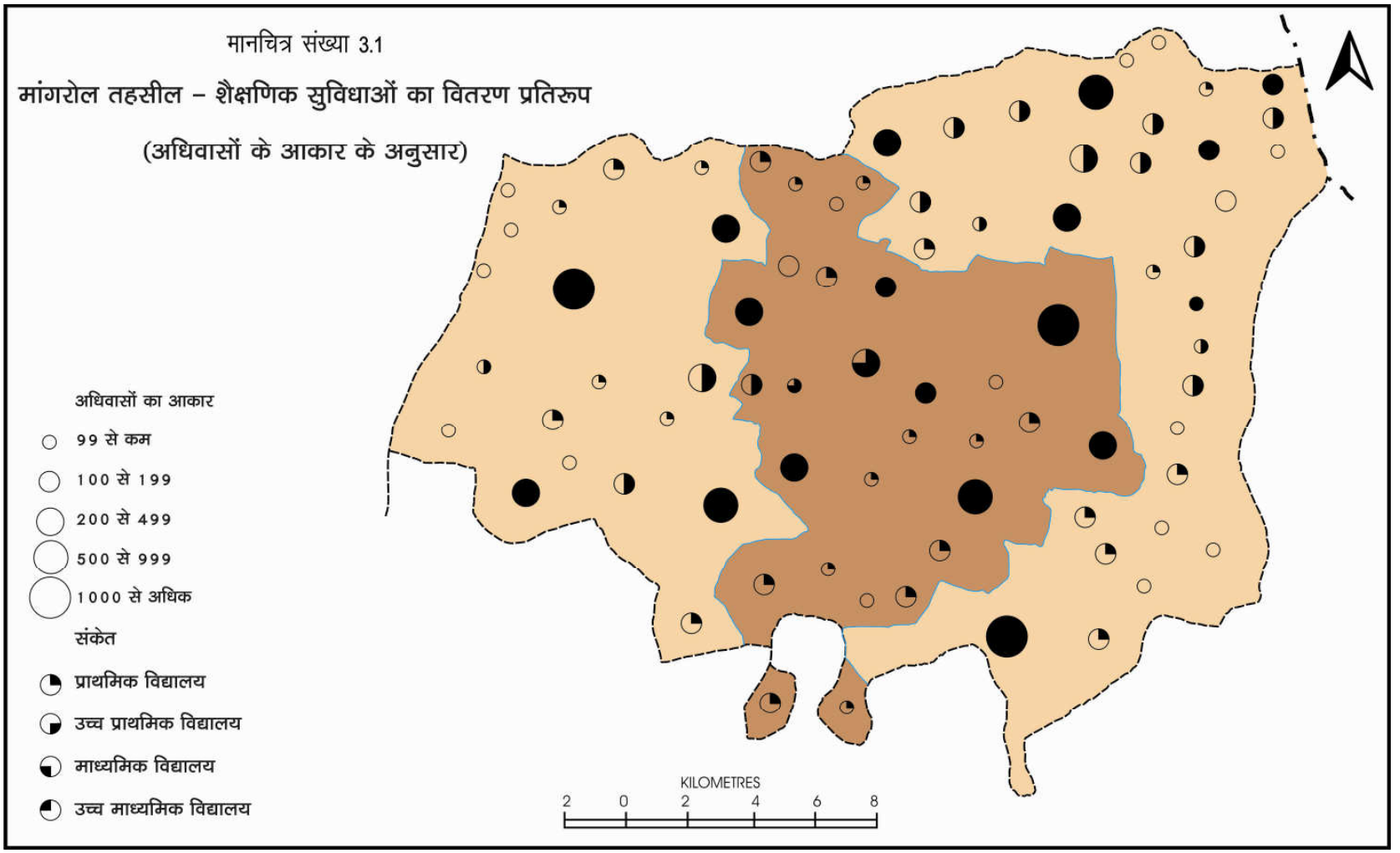
मानचित्र संख्या 3.1
मांगरोल तहसील – शैक्षणिक सुविधाओं का वितरण प्रतिरूप
(अधिवासों के आकार के अनुसार)
अधिवासों का आकार
99 से कम
100 से 199
200 से 499
500 से 999
1000 से अधिक
संकेत
प्राथमिक विद्यालय
उच्च प्राथमिक विद्यालय
माध्यमिक विद्यालय
उच्च माध्यमिक विद्यालय
KILOMETRES
2 0 2 4 6 8

मात्र 3 उच्च प्राथमिक विद्यालय महलपुर, जड़ावदिया और कुशिया गाँव में स्थित हैं। 100 से 199 आवासों वाले 34 अधिवासों में 16 उच्च प्राथमिक विद्यालय स्थित हैं। 200 से 499 आवासों वाले 10 अधिवासों में 17 उच्च प्राथमिक विद्यालय स्थित हैं। 500 से 999 आवासों वाले बंबोरी, भटवाड़ा, रायथल में 12 उच्च प्राथमिक विद्यालय स्थित हैं। सर्वाधिक विद्यालय 1000 से अधिक आवासों वाले 3 अधिवासों में 40 उच्च प्राथमिक विद्यालय स्थित हैं। मांगरोल नगर में सर्वाधिक 19 उच्च प्राथमिक विद्यालय हैं।

तालिका संख्या 3.3 : मांगरोल तहसील – जनसंख्या के अनुसार उच्च प्राथमिक विद्यालयों का वितरण प्रतिरूप

अधिवास प्रतिरूप	कुल अधिवास	उच्च प्राथमिक विद्यालयों की संख्या
0-99	30	3
100-199	34	16
200-499	10	16
500-999	3	12
Above 1000	3	40
कुल	**80**	**87**

3.4.4 उच्च प्राथमिक विद्यालयों की औसत दूरी–

सम्पूर्ण अध्ययन क्षेत्र में उच्च प्राथमिक विद्यालयों की औसत दूरी 1.94 किलोमीटर है। तालिका संख्या 3.4 में भौगोलिक प्रदेशों के अनुसार उनकी औसत दूरी एवं प्रतिशत को दर्शाया गया है। जिसमें सर्वाधिक औसत दूरी

मध्य भाग में 2.68 किलोमीटर जिसमें 35.63 प्रतिशत उच्च प्राथमिक विद्यालय स्थित हैं। इसी प्रकार पूर्वी भाग में औसत दूरी 1.39 है जबकि उच्च प्राथमिक विद्यालयों का प्रतिशत पूर्वी भाग के बराबर 35.63 है। सबसे कम औसत दूरी पश्चिमी भाग में 1.16 प्रतिशत है। जहाँ पर 28.74 प्रतिशत उच्च प्राथमिक विद्यालय हैं। इस भाग में सर्वाधिक औसत दूरी मध्यम भाग में एवं कुल प्रतिशत मध्य एवं पूर्वी भाग में समान है।

तालिका संख्या 3.4 : मांगरोल तहसील–भौगोलिक प्रदेशों के अनुसार उच्च प्राथमिक शिक्षा केन्द्रों की औसत दूरी

भौगोलिक प्रदेश	औसत दुरी (कि.मी.में)	कुल उच्च प्राथमिक विद्यालयों का प्रतिशत
पूर्वी निम्न प्रदेश	1.39	35.63
मध्य उच्च भूमि	2.68	35.63
पश्चिमी निम्न प्रदेश	1.16	28.74
कुल	**1.94**	**100.00**

3.4.5 माध्यमिक विद्यालयों का वितरण प्रतिरूप–

अध्ययन क्षेत्र में माध्यमिक विद्यालयों की संख्या न्यूनतम हैं। यहाँ पर माध्यमिक स्तर की शिक्षा सुविधा उच्च माध्यमिक विद्यालयों की संख्या के साथ अधिकांशतः उपलब्ध हैं। यहाँ पर मात्र 20 अधिवासों में यह सुविधा उपलब्ध हैं जो कि कुल अधिवासों का एक चौथाई भाग रखता हैं। तालिका संख्या 3.5 के अनुसार ज्ञात किया जा सकता है कि 60 अधिवास ऐसे हैं जो माध्यमिक विद्यालयों से वंचित हैं। यह अधिवास माध्यमिक शिक्षा के लिए अन्य 20 विद्यालयों पर आश्रित हैं। यहाँ पर 100 से कम आवासों वाले अधिवासों में एक मात्र माध्यमिक विद्यालय पंचायत मुख्यालय महलपुर में स्थित है। 100 से 199 आवासों वाले अधिवासों में माध्यमिक विद्यालयों की संख्या 5 हैं। 200 से 499 आवासों वाले अधिवासों में 9 माध्यमिक विद्यालय स्थित हैं। 500 से 1000 आवासों वाले अधिवासों में 8 माध्यमिक विद्यालय

स्थित हैं। 1000 से अधिक आवास वाले अधिवासों में बोहत, मांगरोल, सीसवाली में कुल 21 माध्यमिक विद्यालयों की सुविधा उपलब्ध हैं। अध्ययन क्षेत्र के प्रत्येक पंचायत मुख्यालय पर माध्यमिक विद्यालय की सुविधा उपलब्ध हैं तथा सीसवाली पंचायत मुख्यालय पर यह संख्या सर्वाधिक हैं जो कि तहसील मुख्यालय के बाद दूसरा स्थान रखती है।

तालिका संख्या 3.5 : मांगरोल तहसील–जनसंख्या के अनुसार
माध्यमिक विद्यालयों का वितरण प्रतिरूप

अधिवास प्रतिरूप	कुल अधिवास	माध्यमिक संख्या
0-99	30	1
100-199	34	5
200-499	10	9
500-999	3	8
Above 1000	3	21
कुल	**80**	**44**

3.4.6 माध्यमिक विद्यालयों की औसत दूरी–

अध्ययन क्षेत्र में माध्यमिक विद्यालयों की औसत दूरी 2.96 किलोमीटर है। तालिका संख्या 3.6 के अनुसार सर्वाधिक औसत दूरी पूर्वी भाग में स्थित है। जहाँ पर अध्ययन क्षेत्र के 25 प्रतिशत विद्यालय स्थित हैं। इसके बाद मध्यम भाग में औसत दूरी 4.8 किलोमीटर है। जहाँ पर सर्वाधिक 45.45 प्रतिशत माध्यमिक विद्यालय स्थित है। न्यूनतम दूरी पश्चिमी भाग में स्थित है। जहाँ पर माध्यमिक विद्यालयों का प्रतिशत 29.55 हैं। सर्वाधिक विद्यालय मध्य भाग में स्थित हैं।

तालिका संख्या 3.6 : मांगरोल तहसील–भौगोलिक प्रदेशों के अनुसार माध्यमिक शिक्षा केन्द्रों की औसत दूरी

भौगोलिक प्रदेश	औसत दुरी (कि.मी.में)	कुल माध्यमिक विद्यालयों का प्रतिशत
पूर्वी निम्न प्रदेश	8.27	25.00
मध्य उच्च भूमि	4.8	45.45
पश्चिमी निम्न प्रदेश	3.85	29.55
कुल	**2.96**	**100.00**

3.4.7 उच्च माध्यमिक विद्यालय का वितरण प्रारूप–

अध्ययन क्षेत्र में कुल 32 उच्च माध्यमिक विद्यालय स्थित हैं। तालिका संख्या 3.7 के अनुसार 0 से 99 आवास वाले अधिवासों में 1 उच्च माध्यमिक विद्यालय महलपुर में स्थित है।

तालिका संख्या 3.7 : जनसंख्या आकार के अनुसार उच्च माध्यमिक विद्यालय का वितरण प्रतिरूप

अधिवास प्रतिरूप	कुल अधिवास	उच्च माध्यमिक विद्यालयों की संख्या
0-99	30	1
100-199	34	4
200-499	10	7
500-999	3	5
Above 1000	3	15
कुल	**80**	**32**

100 से 199 आवास वाले अधिवासों में किशनपुरा, भावगढ़, जड़ौदा तेजाजी, जारेला में 4 उच्च माध्यमिक विद्यालय स्थित हैं। 200 से 499 आवास वाले अधिवासों में 7 उच्च माध्यमिक विद्यालय स्थित हैं। 500 से 999 आवास वाले अधिवासों में 5 उच्च माध्यमिक विद्यालय स्थित हैं। 1000 से अधिक आवास वाले 3 अधिवासों में 15 उच्च माध्यमिक विद्यालय स्थित हैं।

अध्ययन क्षेत्र में प्रत्येक पंचायत मुख्यालय पर उच्च माध्यमिक विद्यालय की सुविधा उपलब्ध है। सीसवाली पंचायत मुख्यालय पर सर्वाधिक उच्च माध्यमिक विद्यालय स्थित हैं तथा तहसील मुख्यालय मांगरोल में उनकी संख्या सर्वाधिक हैं।

3.4.8 उच्च माध्यमिक विद्यालयों की औसत दूरी–

अध्ययन क्षेत्र में सर्वाधिक औसत दूरी 3.23 किलोमीटर है तालिका संख्या 3.8 के अनुसार सर्वाधिक औसत दूरी पूर्वी निम्न मैदानी भाग में स्थित है। इसमें कुल उच्च माध्यमिक विद्यालय 28.13 प्रतिशत है। मध्य उच्च मैदानी भाग की औसत दूरी 9 किलोमीटर है एवं इसके क्षेत्र के सर्वाधिक 40.63 प्रतिशत उच्च माध्यमिक विद्यालय स्थित हैं। पश्चिमी निम्न भूमि मैदानी भाग में औसत दूरी 5 किलोमीटर हैं तथा यहाँ पर कुल 31.25 प्रतिशत उच्च माध्यमिक विद्यालय स्थित हैं। सर्वाधिक विद्यालय मध्य भाग में स्थित हैं।

तालिका संख्या 3.8 : मांगरोल तहसील – भौगोलिक प्रदेशों के अनुसार उच्च माध्यमिक शिक्षा केन्द्रों की औसत दूरी

भौगोलिक प्रदेश	औसत दुरी (कि.मी.में)	उच्च माध्यमिक विद्यालयों का प्रतिशत
पूर्वी निम्न प्रदेश	10.22	28.13
मध्य उच्च भूमि	9	40.63
पश्चिमी निम्न प्रदेश	5	31.24
कुल	**3.23**	**100.00**

3.4.9 उच्च शिक्षा का वितरण प्रतिरूप–

अध्ययन क्षेत्र में उच्च शिक्षा के लिए मांगरोल तहसील मुख्यालय पर 1 राजकीय एवं 1 निजी महाविद्यालय स्थित हैं तथा तहसील मुख्यालय के अलावा सीसवाली में 2 निजी महाविद्यालय स्थित है जिनमें 1 बालिका शिक्षा हेतु महाविद्यालय हैं जो कि आवासीय विद्यालय है। इस प्रकार अध्ययन क्षेत्र में महाविद्यालय की औसत दूरी 7.28 किलोमीटर है। सर्वाधिक पूर्वी भाग में स्थित है क्योंकि इस भाग में अधिवास प्रारूप प्रकिर्णण प्रकार का है।

3.5 स्वास्थ्य केन्द्र –

शिक्षा के बाद चिकित्सा सुविधा भी महत्वपूर्ण मानी जाती है। अध्ययन क्षेत्र में यह सुविधा अत्यन्त दयनीय है। कहीं पर स्वास्थ्य केन्द्र हैं तो चिकित्सक नहीं है। प्रत्येक पंचायत मुख्यालय पर उपस्वास्थ्य केन्द्र एवं तहसील मुख्यालय पर प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र स्थित हैं। पंचायत मुख्यालय पर चिकित्सक नियुक्त नहीं होने के कारण कुछ पंचायतों में ही यह सुविधा ठीक ढंग से उपलब्ध हो पा रही हैं। 1000 से अधिक आवासों वाले अधिवासों में यह सुविधा उपलब्ध हो पा रही हैं। अन्य अधिवासों को अधिक आवासों वाले अधिवासों पर चिकित्सा सुविधा के लिए निर्भर रहना पड़ता है। अध्ययन क्षेत्र की विभिन्न सुविधाऐं निम्नलिखित हैं–

3.5.1 प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों का वितरण प्रारूप–

अध्ययन क्षेत्र में यह स्थिति बहुत गंभीर विषय है कि तालिका संख्या 3.9 के अनुसार कुल 80 अधिवासों में से मांगरोल, रायथल, सीसवाली, बोहत, बंबोरीकलां मात्र 5 अधिवासों में यह सुविधा उपलब्ध हैं। 500 से कम आबादी वाले अधिवासों में एक भी प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र नहीं हैं तथा 1000 से कम आवासों वाले अधिवासों में 2 स्वास्थ्य केन्द्र बम्बोरीकलां, रायथल में स्थित हैं। 1000 से अधिक आवासों वाले अधिवासों में तहसील मुख्यालय के अतिरिक्त सीसवाली, बोहत ग्राम पंचायत मुख्यालय पर यह सुविधा उपलब्ध है। इस प्रकार यह सुविधा केवल 5 अधिवासों में उपलब्ध हैं।

तालिका संख्या 3.9 : मांगरोल तहसील – जनसंख्या आकार के अनुसार स्वास्थ्य केन्द्रों का वितरण प्रतिरूप

अधिवास प्रतिरूप	कुल अधिवास	स्वास्थ्य केन्द्रों की संख्या
0-99	30	0
100-199	34	0
200-499	10	0
500-999	3	2
Above 1000	3	3
कुल	**80**	**5**

3.5.2 प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों की औसत दूरी–

अध्ययन क्षेत्र में प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों की औसत दूरी 7.57 किलोमीटर है। तालिका संख्या 3.10 के अनुसार सर्वाधिक औसत दूरी मध्य भाग में 9.46 किलोमीटर है जिसमें प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों का 33.33 प्रतिशत भाग हैं तथा पूर्वी भाग में औसत दूरी 5.03 किलोमीटर है। जिनमें 16.67 प्रतिशत प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र स्थित हैं। पश्चिमी भाग में औसत दूरी 3.67 किलोमीटर है जो कि न्यूनतम दूरी है। इस भाग में सर्वाधिक 50 प्रतिशत स्वास्थ्य केन्द्र स्थित हैं।

तालिका संख्या 3.10 : मांगरोल तहसील – भौगोलिक प्रदेशों के अनुसार स्वास्थ्य केन्द्रों की औसत दूरी

भौगोलिक प्रदेश	औसत दुरी (कि.मी.में)	उच्च माध्यमिक विद्यालयों का प्रतिशत
पूर्वी निम्न प्रदेश	5.03	33.33
मध्य उच्च भूमि	9.46	16.67
पश्चिमी निम्न प्रदेश	3.67	50.00
कुल	**7.57**	**100.00**

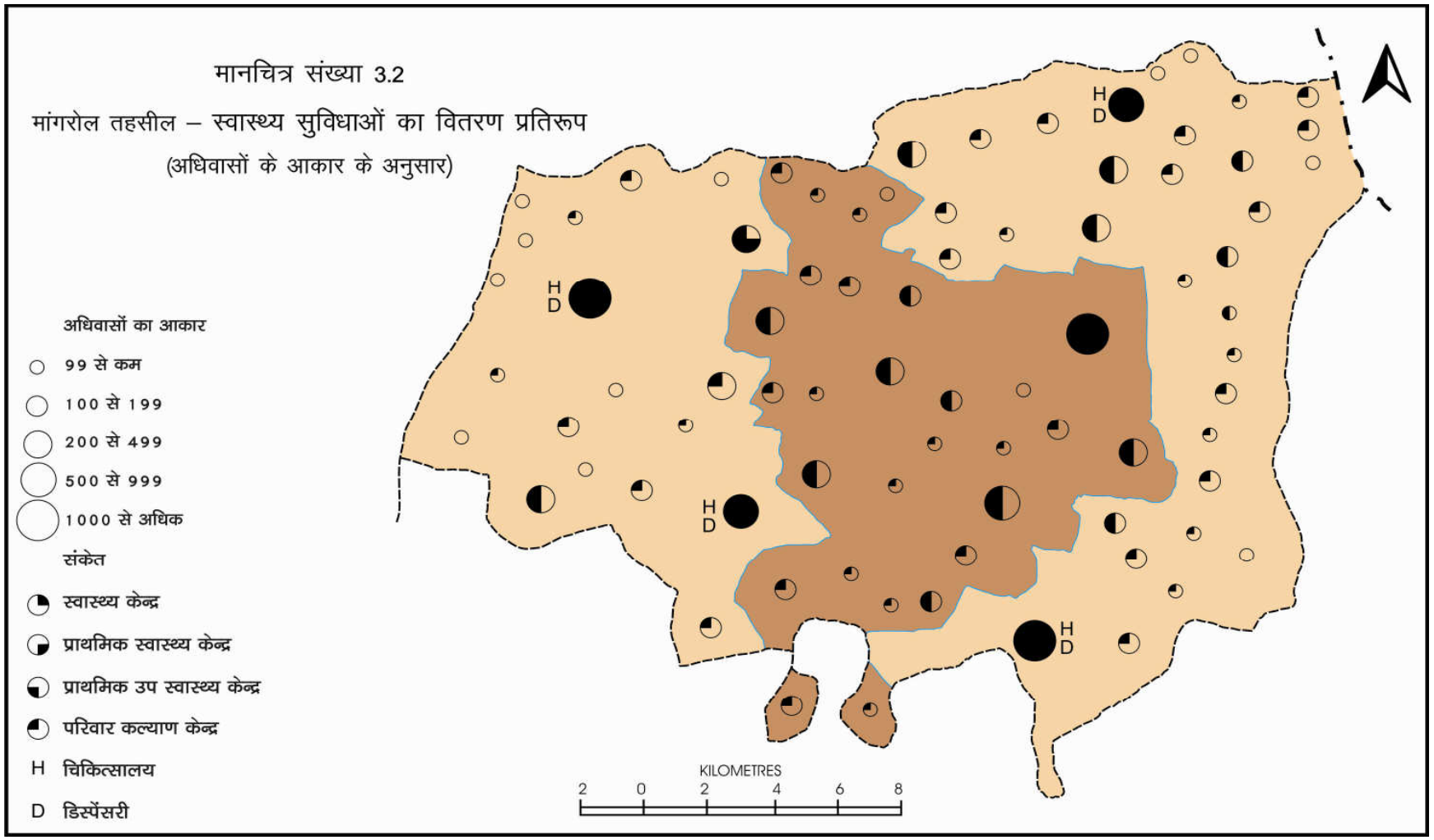
मानचित्र संख्या 3.2
मांगरोल तहसील – स्वास्थ्य सुविधाओं का वितरण प्रतिरूप
(अधिवासों के आकार के अनुसार)
अधिवासों का आकार
99 से कम
100 से 199
200 से 499
500 से 999
1000 से अधिक
संकेत
स्वास्थ्य केन्द्र
प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र
प्राथमिक उप स्वास्थ्य केन्द्र
परिवार कल्याण केन्द्र
H चिकित्सालय
D डिस्पेंसरी
H D
H D
H D
KILOMETRES
2 0 2 4 6 8

3.5.3 प्राथमिक उपस्वास्थ्य केन्द्रों का वितरण प्रारूप–

अध्ययन क्षेत्र में प्रत्येक ग्राम पंचायत मुख्यालय पर उपस्वास्थ्य केन्द्र स्थित हैं। तालिका संख्या 3.11 के अनुसार 0 से 99 आवासों वाले अधिवासों में 1 उप स्वास्थ्य केन्द्र महलपुर में स्थित है। 100 से 199 आवासों वाले 34 अधिवासों में 7 उप स्वास्थ्य केन्द्र स्थित हैं। 200 से 499 आवासों वाले 10 अधिवासों में 9 उप स्वास्थ्य केन्द्र हैं। 500 से 999 वाले 3 अधिवासों में 2 उप स्वास्थ्य केन्द्र एवं 1000 से अधिक आवासों वाले 3 अधिवासों में 3 उप स्वास्थ्य केन्द्र स्थित हैं। इस प्रकार कुल 22 प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र अध्ययन क्षेत्र में स्थित हैं।

तालिका संख्या 3.11 : मांगरोल तहसील – जनसंख्या आकार के अनुसार प्राथमिक उप स्वास्थ्य केन्द्रों का वितरण प्रतिरूप

अधिवास प्रतिरूप	कुल अधिवास	प्राथमिक उप स्वास्थ्य केन्द्रों की संख्या
0-99	30	1
100-199	34	7
200-499	10	9
500-999	3	2
Above 1000	3	3
कुल	**80**	**22**

3.5.4 प्राथमिक उप स्वास्थ्य केन्द्रों की औसत दूरी–

अध्ययन क्षेत्र में प्राथमिक उप स्वास्थ्य केन्द्रों की औसत दूरी 3.6 किलोमीटर हैं। तालिका संख्या 3.12 के अनुसार पश्चिमी भाग में 25.33 किलोमीटर सर्वाधिक औसत दूरी हैं। जिसमें मात्र 13.64 प्रतिशत प्राथमिक उप स्वास्थ्य केन्द्र स्थित हैं। मध्य भाग में उप स्वास्थ्य केन्द्रों की औसत दूरी

12.89 किलोमीटर है तथा 40.91 प्रतिशत उप स्वास्थ्य केन्द्र स्थित हैं। अध्ययन क्षेत्र के पूर्वी भाग में सर्वाधिक स्वास्थ्य केन्द्र 45.45 प्रतिशत स्थित हैं। जिनकी औसत दूरी 9.6 किलोमीटर है। यह औसत दूरी अध्ययन क्षेत्र की न्यूनतम औसत दूरी है।

तालिका संख्या 3.12 : मांगरोल तहसील – भौगोलिक प्रदेशों के अनुसार प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों की औसत दूरी

भौगोलिक प्रदेश	औसत दुरी (कि.मी.में)	प्राथमिक उप स्वास्थ्य केन्द्रों का प्रतिशत
पूर्वी निम्न प्रदेश	9.6	45.45
मध्य उच्च भूमि	12.89	40.91
पश्चिमी निम्न प्रदेश	25.33	13.64
कुल	**3.6**	**100.00**

3.5.5 परिवार कल्याण केन्द्रों का वितरण प्रारूप–

परिवार कल्याण केन्द्रों के अन्तर्गत लगभग सभी केन्द्रों पर यह सुविधा उपलब्ध हैं। अध्ययन क्षेत्र में इनकी कुल संख्या 121 हैं। जो कि 70 अधिवासों को अपनी सेवाऐं दे रहे हैं। तालिका संख्या 3.13 के अनुसार 0 से 99 आवासों वाले अधिवासों में परिवार कल्याण केन्द्रों की संख्या 18 हैं। 100 से 199 आवासों वाले अधिवासों में परिवार कल्याण केन्द्रों की संख्या 37 हैं। 200 से 499 आवासों वाले अधिवासों में इनकी संख्या 20 हैं तथा 500 से 999 आवासों वाले अधिवासों में इनकी संख्या 10 तथा 1000 से अधिक आवासों वाले अधिवासों में यह संख्या 36 हैं। सर्वाधिक परिवार कल्याण केन्द्र मांगरोल तहसील मुख्यालय एवं ग्राम पंचायत सीसवाली में स्थित है।

तालिका संख्या 3.13 : मांगरोल तहसील – जनसंख्या आकार के अनुसार परिवार कल्याण केन्द्रों का वितरण प्रतिरूप

अधिवास प्रतिरूप	कुल अधिवास	परिवार कल्याण केन्द्रों की संख्या
0-99	30	18
100-199	34	37
200-499	10	20
500-999	3	10
Above 1000	3	36
कुल	**80**	**121**

3.5.6 परिवार कल्याण केन्द्रों की औसत दूरी–

अध्ययन क्षेत्र में परिवार कल्याण केन्द्रों की औसत दूरी 0.30 किलोमीटर हैं जो कि न्यूनतम दूरी है। सर्वाधिक दूरी पूर्वी भाग में 0.32 किलोमीटर है तथा इनमें परिवार कल्याण केन्द्रों का प्रतिशत 33.88 है।

तालिका संख्या 3.14 : मांगरोल तहसील – भौगोलिक प्रदेशों के अनुसार परिवार कल्याण केन्द्रों की औसत दूरी

भौगोलिक प्रदेश	औसत दुरी (कि.मी.में)	परिवार कल्याण केन्द्रों का प्रतिशत
पूर्वी निम्न प्रदेश	0.32	33.88
मध्य उच्च भूमि	0.18	42.15
पश्चिमी निम्न प्रदेश	0.07	23.97
कुल	**0.30**	**100.00**

मध्य भाग में औसत दूरी 0.18 है तथा परिवार कल्याण केन्द्रों का प्रतिशत 42.15 है। न्यूनतम दूरी पश्चिमी भाग में स्थित है। जो कि 0.07 किलोमीटर है तथा इसमें परिवार कल्याण केन्द्रों का प्रतिशत 23.97 है। सर्वाधिक परिवार कल्याण केन्द्र मध्य भाग में स्थित हैं।

3.6 संचार सुविधा–

संचार सुविधाओं को भी प्रमुख आवश्यक सुविधा माना जाता है। जिसमें डाक सुविधा दूर संचार एवं आधुनिक **WiFi** सुविधा को सम्मिलित किया गया है। संचार किसी भी अध्ययन क्षेत्र के विकास का प्रमुख आधार माना गया है। अध्ययन क्षेत्र में राजस्थान संपर्क केन्द्रों में यह सुविधा उपलब्ध हैं। जिसमें समस्त ग्राम पंचायत मुख्यालय में यह सुविधा उपलब्ध है।

3.6.1 डाक सेवाओं का वितरण प्रारूप–

अध्ययन क्षेत्र में कुल 17 डाकघर स्थित हैं। जहाँ से विभिन्न प्रकार की डाक सुविधा उपलब्ध होती हैं। प्रत्येक गाँव में इन डाकघरों से डाक सुविधा उपलब्ध करवाई जाती है।

तालिका संख्या 3.15 : मांगरोल तहसील – जनसंख्या आकार के अनुसार डाकघर का वितरण प्रतिरूप

अधिवास प्रतिरूप	कुल अधिवास	डाकघरों की संख्या
0-99	30	1
100-199	34	3
200-499	10	7
500-999	3	3
Above 1000	3	3
कुल	**80**	**17**

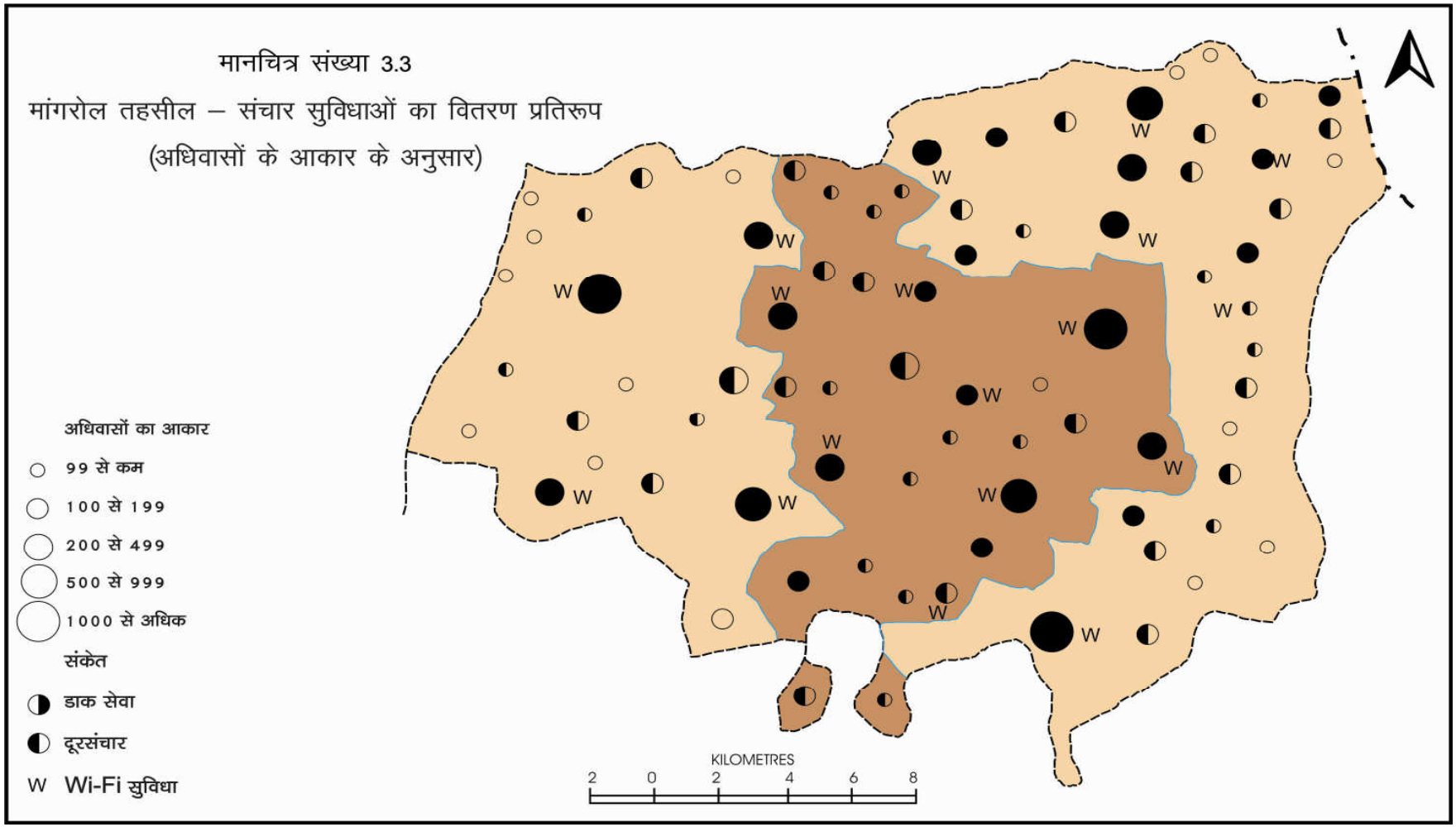
मानचित्र संख्या 3.3
मांगरोल तहसील – संचार सुविधाओं का वितरण प्रतिरूप
(अधिवासों के आकार के अनुसार)
अधिवासों का आकार
99 से कम
100 से 199
200 से 499
500 से 999
1000 से अधिक
संकेत
डाक सेवा
दूरसंचार
W Wi-Fi सुविधा
KILOMETRES
2 0 2 4 6 8

तालिका संख्या 3.15 के अनुसार 0 से 99 आवासों वाले अधिवासों में डाकघर केवल महलपुर ग्राम में स्थित है। 100 से 199 आवासों वाले अधिवासों में केवल 3 डाकघर, 200 से 499 आवासों वाले अधिवासों में 7 डाकघर, 500 से 999 आवासों वाले अधिवासों में 3 डाकघर और 1000 से अधिक आवासों वाले अधिवासों में 3 डाकघर स्थित हैं। मांगरोल, सीसवाली, बोहत, बम्बोरीकलां में मुख्य डाकघर स्थित हैं।

3.6.2 डाक सेवाओं की औसत दूरी–

अध्ययन क्षेत्र में डाक सेवाओं की औसत दूरी 4.48 है। तालिका संख्या 3.16 के अनुसार सर्वाधिक औसत दूरी 22.5 किलोमीटर मध्य भाग में स्थित है। यहाँ पर डाक सेवाओं का प्रतिशत 19.5 है। इसके बाद पश्चिमी भाग में औसत दूरी 19.63 किलोमीटर है तथा डाकघरों का प्रतिशत 38.10 है। पूर्वी भाग में औसत दूरी न्यूनतम 12.44 किलोमीटर है तथा डाकघरों का प्रतिशत सर्वाधिक 42.86 है।

तालिका संख्या 3.16 : मांगरोल तहसील – भौगोलिक प्रदेशों के अनुसार डाकघर सेवा केन्द्रों की औसत दूरी

भौगोलिक प्रदेश	औसत दुरी (कि.मी.में)	डाकघर सेवाओं का प्रतिशत
पूर्वी निम्न प्रदेश	12.44	42.85
मध्य उच्च भूमि	22.5	19.05
पश्चिमी निम्न प्रदेश	19.63	38.10
कुल	**4.48**	**100.00**

3.6.3 दूरभाष सेवाओं का वितरण प्रतिरूप–

अध्ययन क्षेत्र में कुल 66 अधिवासों में दूरभाष सेवाऐं स्थित है। तालिका संख्या 3.17 के अनुसार 0 से 99 आवासों वाले अधिवासों में दूरभाष केन्द्रों की संख्या 16, 100 से 199 आवासों वाले अधिवासों में दूरभाष केन्द्रों

की संख्या 34, 200 से 499 आवासों वाले अधिवासों में इनकी संख्या 10, 500 से 999 आवासों वाले अधिवासों में इनकी संख्या 3 तथा 1000 से अधिक आवासों वाले अधिवासों में यह संख्या 3 हैं। यहाँ पर दूरभाष केन्द्रों की संख्या राजकीय सुविधाओं के आधार पर निर्धारित की गई हैं। अन्यथा वर्तमान में यह सुविधा लगभग प्रत्येक घरों में मोबाईल सेवा के रूप में उपलब्ध हैं।

तालिका संख्या 3.17 : मांगरोल तहसील – जनसंख्या आकार के अनुसार दूरभाष सेवा केन्द्रों का वितरण प्रतिरूप

अधिवास प्रतिरूप	कुल अधिवास	दूरभाष सेवा केन्द्रों की संख्या
0-99	30	16
100-199	34	34
200-499	10	10
500-999	3	3
Above 1000	3	3
कुल	**80**	**66**

3.6.4 दूरभाष सेवाओं की औसत दूरी–

अध्ययन क्षेत्र में दूरभाष केन्द्रों की औसत दूरी 37.37 किलोमीटर है जिसमें तालिका संख्या 3.18 के अनुसार औसत दूरी पूर्वी भाग में 0.67 किलोमीटर है। जहाँ पर दूरभाष केन्द्रों का प्रतिशत 40.91 है। मध्य भाग में औसत दूरी 0.74 किलोमीटर है तथा दूरभाष केन्द्रों का प्रतिशत 40.91 है। पश्चिमी भाग की औसत दूरी 0.83 किलोमीटर है। यहाँ पर दूरभाष केन्द्रों का प्रतिशत 18.18 है। सर्वाधिक औसत दूरी पश्चिमी भाग में स्थित है।

तालिका संख्या 3.18 : मांगरोल तहसील – भौगोलिक प्रदेशों के अनुसार दूरभाष सेवा केन्द्रों की औसत दूरी

भौगोलिक प्रदेश	औसत दुरी (कि.मी.में)	दूरभाष सेवा केन्द्रों का प्रतिशत
पूर्वी निम्न प्रदेश	0.67	40.91
मध्य उच्च भूमि	0.074	40.91
पश्चिमी निम्न प्रदेश	0.83	18.18
कुल	**0.37**	**100.00**

3.6.5 WiFi सुविधा वितरण प्रतिरूप एवं दूरी–

सभी ग्राम पंचायत मुख्यालय एवं तहसील मुख्यालय पर **WiFi** सुविधा सरकार द्वारा उपलब्ध करवाई गयी हैं। तहसील मुख्यालय के कई केन्द्रों पर यह सुविधा उपलब्ध हैं। प्रत्येक अधिवास इनकी सुविधाओं का उपभोग करने के लिए पंचायत मुख्यालय एवं तहसील मुख्यालय या स्वयं के मोबाइल नेटवर्क से प्राप्त करते हैं। मोबाइल नेटवर्क में **WiFi** की सुविधा उपलब्ध होने के कारण इनकी औसत दूरी भी शून्य दर्ज की गयी हैं।

3.7 पशु चिकित्सा सेवाऐं–

अध्ययन क्षेत्र के प्रत्येक पंचायत मुख्यालय पर पशु चिकित्सा सेवाऐं उपलब्ध हैं परन्तु चिकित्सक के उपलब्ध नहीं होने के कारण केवल मांगरोल, सीसवाली, बम्बोरीकलां में यह सुविधा निरन्तर कार्यरत हैं। अन्य क्षेत्रों में पशु चिकित्सा सुविधा चिकित्सकों के अभाव में चरमराई हुई है।

3.7.1 पशु चिकित्सा केन्द्रों का वितरण प्रतिरूप–

पशु चिकित्सा केन्द्रों की स्थिति तालिका संख्या 3.19 के अनुसार निर्धारित होती है। जिसमें 0 से 99 आवासों वाले अधिवासों

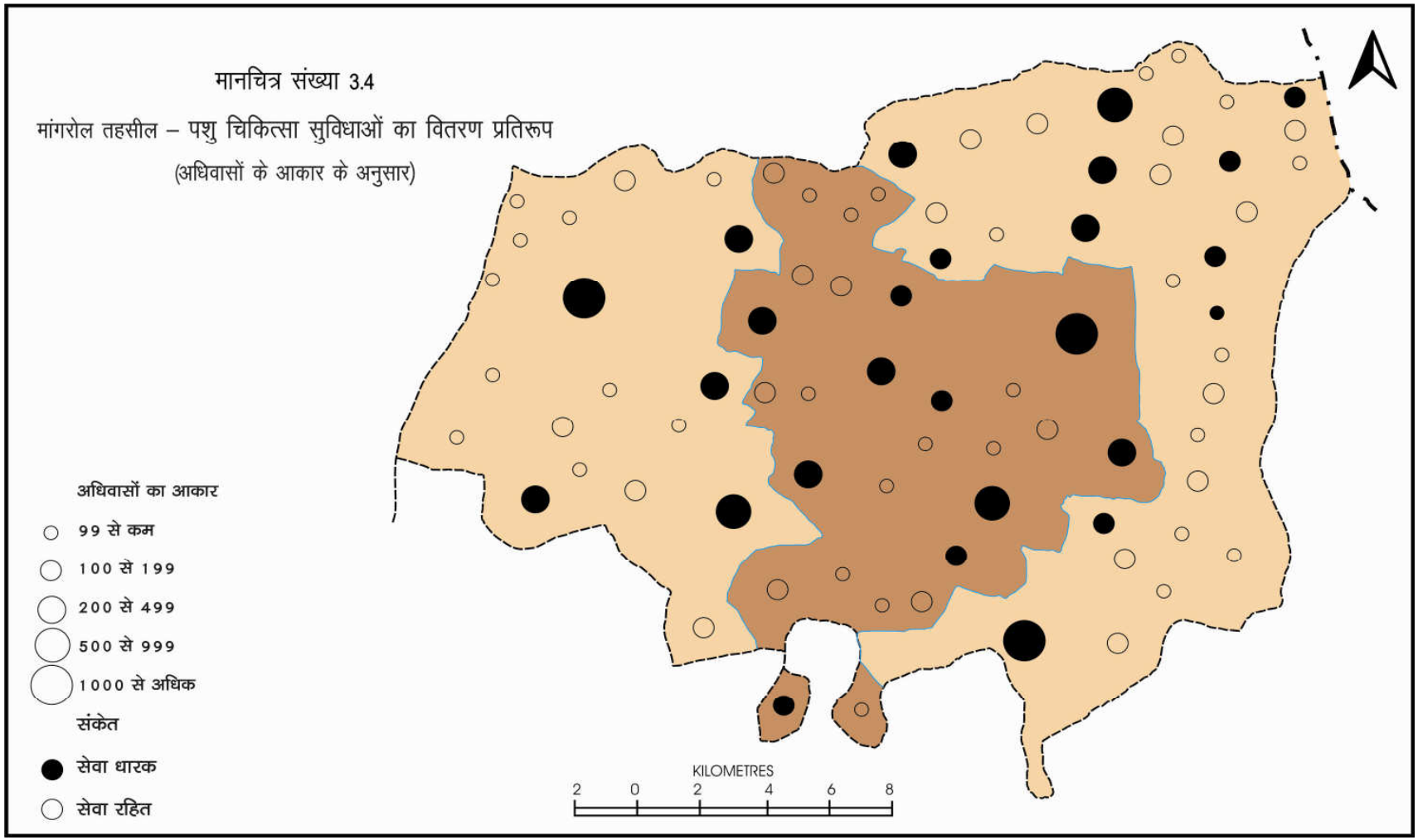
मानचित्र संख्या 3.4
मांगरोल तहसील – पशु चिकित्सा सुविधाओं का वितरण प्रतिरूप
(अधिवासों के आकार के अनुसार)
अधिवासों का आकार
99 से कम
100 से 199
200 से 499
500 से 999
1000 से अधिक
संकेत
सेवा धारक
सेवा रहित
KILOMETRES
2 0 2 4 6 8

में महलपुर में पशु चिकित्सा केन्द्र स्थित हैं। 100 से 199 एवं 200 से 400 आवासों वाले अधिवासों में 9–9 पशु चिकित्सा सेवा केन्द्र स्थित हैं। 1000 से कम वाले अधिवासों में 3 एवं 1000 से अधिक आवासों वाले अधिवासों में इनकी संख्या 3 हैं। इस प्रकार यह सुविधा 25 केन्द्रों पर उपलब्ध हैं। जहाँ से विभिन्न अधिवासों को पशु चिकित्सा सेवा उपलब्ध कराई जाती हैं।

तालिका संख्या 3.19 : मांगरोल तहसील – जनसंख्या आकार के अनुसार पशु चिकित्सा केन्द्रों का वितरण प्रतिरूप

अधिवास प्रतिरूप	कुल अधिवास	पशु चिकित्सा सेवा केन्द्रों की संख्या
0-99	30	1
100-199	34	9
200-499	10	9
500-999	3	3
Above 1000	3	3
कुल	**80**	**25**

3.7.2 पशु चिकित्सा केन्द्रों की औसत दूरी–

पशु चिकित्सा केन्द्रों की औसत दूरी 3.43 किलोमीटर है। तालिका संख्या 3.20 के अनुसार सर्वाधिक औसत दूरी पश्चिमी भाग में है। इसमें पशु चिकित्सा केन्द्रों की संख्या का 16 प्रतिशत है। मध्य भाग में पशु चिकित्सा केन्द्रों की औसत दूरी 13.5 किलोमीटर है तथा इनका प्रतिशत 40 है। पूर्वी भाग में औसत दूरी 7 किलोमीटर एवं प्रतिशत 44 है। इस प्रकार सर्वाधिक प्रतिशत एवं न्यूनतम दूरी पूर्वी भाग में स्थित है।

तालिका संख्या 3.20 : मांगरोल तहसील – भौगोलिक प्रदेशों के अनुसार पशु चिकित्सा केन्द्रों की औसत दूरी

भौगोलिक प्रदेश	औसत दुरी (कि.मी.में)	पशु चिकित्सा सेवा केन्द्रों का प्रतिशत
पूर्वी निम्न प्रदेश	15.76	16.00
मध्य उच्च भूमि	13.50	40.0
पश्चिमी निम्न प्रदेश	7.00	44.00
कुल	**3.43**	**100.00**

3.8 आवश्यक सेवाऐं–

इसके अन्तर्गत विभिन्न आवश्यक सेवाओं को सम्मिलित किया गया हैं। जिसमें महत्वपूर्ण सेवाऐं सम्मिलित है जो कि लगभग सभी अधिवासों को उपलब्ध हैं।

तालिका संख्या 3.21 : मांगरोल तहसील – जनसंख्या आकार के अनुसार आवश्यक सेवाओं का वितरण प्रतिरूप

अधिवास प्रतिरूप	कुल अधिवास	जल सेवा धारक अधिवास	विद्युत सेवा धारक अधिवास
0-99	30	24	24
100-199	34	34	34
200-499	10	10	10
500-999	3	3	3
Above 1000	3	3	3
कुल	**80**	**74**	**74**

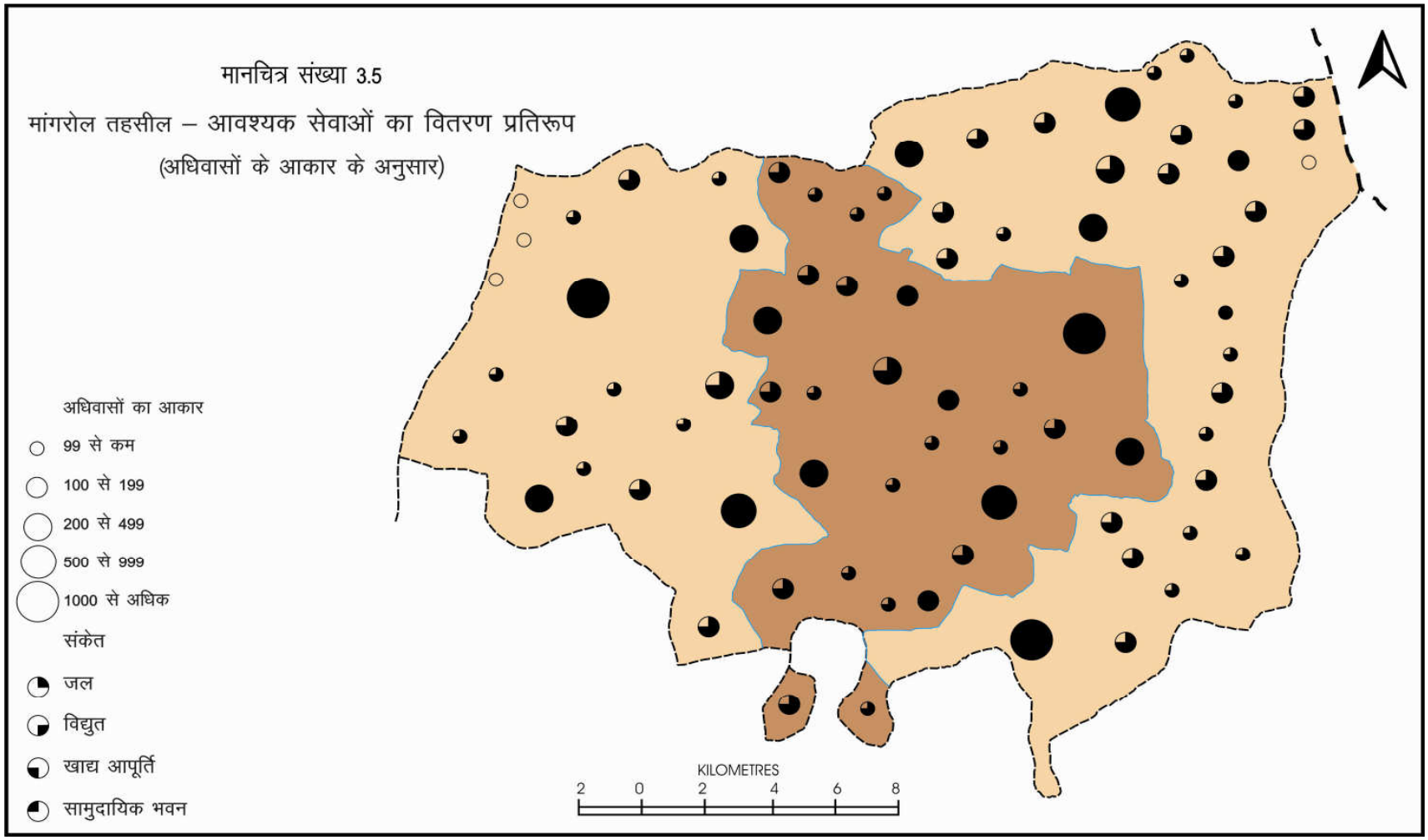
मानचित्र संख्या 3.5
मांगरोल तहसील – आवश्यक सेवाओं का वितरण प्रतिरूप
(अधिवासों के आकार के अनुसार)
अधिवासों का आकार
99 से कम
100 से 199
200 से 499
500 से 999
1000 से अधिक
संकेत
जल
विद्युत
खाद्य आपूर्ति
सामुदायिक भवन
KILOMETRES
2 0 2 4 6 8

तालिका संख्या 3.21 के अनुसार जल सेवा धारक एवं विद्युत सेवा धारक अध्ययन क्षेत्र के कुल अधिवासों में 74 अधिवासों में उपलब्ध हैं। 6 अधिवास गैर आबादी क्षेत्र होने के कारण यहाँ पर यह सुविधा उपलब्ध नहीं हैं। इसी प्रकार तालिका संख्या 3.22 के अनुसार खाद्य आपूर्ति केन्द्रों की संख्या 74 हैं। जिनका वितरण 0 से 99 आवासों वाले अधिवासों में 24, 100 से अधिक आवासों वाले अधिवासों में सभी अधिवासों को यह सुविधा उपलब्ध हैं। 6 अधिवास गैर आबादी वाले होने के कारण यह सुविधा उपलब्ध नहीं हैं। यहाँ पर आपूर्ति केन्द्रों का प्रतिशत 0 से 99 आवासों वाले अधिवासों में 32.43 प्रतिशत, 100 से 199 आवासों वाले अधिवासों में 45.95, 200 से 499 वाले अधिवासों में 13.51 प्रतिशत, 500 से 999 आवासों वाले अधिवासों में 4.05 प्रतिशत तथा 1000 से अधिक आवासों वाले अधिवासों में खाद्य आपूर्ति केन्द्र का प्रतिशत 4.05 हैं।

तालिका संख्या 3.22 : मांगरोल तहसील – जनसंख्या आकार के अनुसार खाद्य आपूर्ति केन्द्रों का वितरण प्रतिरूप

अधिवास प्रतिरूप	कुल अधिवास	खाद्य आपूर्ति केन्द्र	खाद्य आपूर्ति केन्द्रों का प्रतिशत
0-99	30	30	37.50
100-199	34	34	42.50
200-499	10	10	12.50
500-999	3	3	3.75
Above 1000	3	3	3.75
कुल	**80**	**80**	**100.00**

3.9 बैंकिंग सेवाओं का वितरण प्रतिरूप–

बैंकिंग सेवाऐं प्रत्येक स्थान पर उपलब्ध हो पाना संभव नहीं हैं। यहाँ पर तालिका संख्या 3.23 के अनुसार राष्ट्रीयकृत बैंकों की संख्या 12 तथा ग्रामीण बैंकों की संख्या 18 एवं सहकारी बैंकों की संख्या 17 हैं। पंचायत मुख्यालय पर बैंकिंग सुविधाऐं उपलब्ध कराये जाने की योजना सरकार द्वारा क्रियान्वित की गई हैं परन्तु इन सुविधाओं का उपयोग व्यक्ति अभी तक नहीं

कर पा रहे हैं। यहाँ 0 से 99 आवासों वाले अधिवासों में 2 बैंक स्थित हैं जो कि सहकारी बैंक हैं। इन आवासों में इनका प्रतिशत 4.25 है। इसी प्रकार 100 से 199 आवासों वाले अधिवासों में भी 2 सहकारी बैंक स्थित हैं जिनका प्रतिशत 4.25 हैं। 200 से 499 आवासों वाले अधिवासों में बैंकों की संख्या 19 हैं। जिसमें सम्पूर्ण सहकारी बैंकों को सम्मिलित किया गया हैं तथा कुल बैंकों की प्रतिशत का 40.43 प्रतिशत हैं। 500 से 999 आवासों वाले अधिवासों में बैंकों की संख्या 10 हैं जो ग्रामीण बैंक एवं सहकारी बैंक सम्मिलित हैं। इसमें रायथल में राष्ट्रीयकृत बैंक भी स्थित हैं। जिसमें बैंकों का प्रतिशत 21.28 हैं। 1000 से अधिक आवासों वाले अधिवासों में कुल 14 राष्ट्रीयकृत ग्रामीण एवं सहकारी बैंक स्थित हैं जो कुल बैंकों का 29.79 प्रतिशत भाग है। अध्ययन केन्द्र में कुल 47 बैंक स्थित हैं। जिसमें पूर्वी एवं मध्य भाग में 7–7 अधिवासों पर एवं पश्चिमी भाग में 4 अधिवासों पर यह सुविधा उपलब्ध है।

तालिका संख्या 3.23 : मांगरोल तहसील – जनसंख्या आकार के अनुसार बैंकिंग सेवाओं का वितरण प्रतिरूप

अधिवास प्रतिरूप	कुल अधिवास	बैंकों की संख्या	बैंकों का प्रतिशत
0-99	30	2	4.25
100-199	34	2	4.25
200-499	10	19	40.43
500-999	3	10	21.28
Above 1000	3	14	29.79
कुल	**80**	**47**	**100.00**

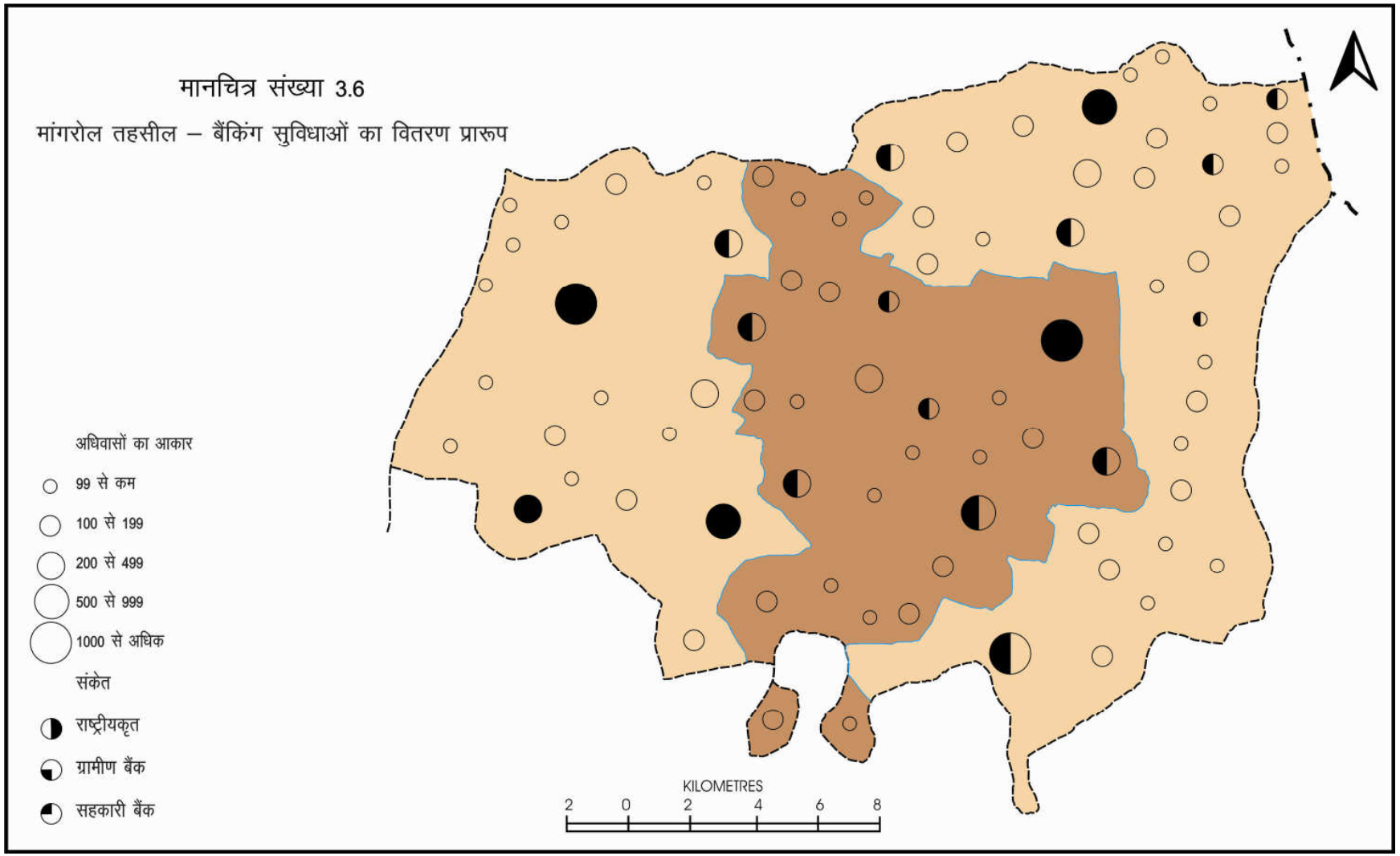
मानचित्र संख्या 3.6
मांगरोल तहसील – बैंकिंग सुविधाओं का वितरण प्रारूप
अधिवासों का आकार
99 से कम
100 से 199
200 से 499
500 से 999
1000 से अधिक
संकेत
राष्ट्रीयकृत
ग्रामीण बैंक
सहकारी बैंक
KILOMETRES
2 0 2 4 6 8

3.10 उर्वरक एवं कीटनाशक केन्द्रों का वितरण प्रतिरूप–

अध्ययन क्षेत्र कृषि प्रधान क्षेत्र होने के कारण उर्वरक एवं कीटनाशक केन्द्र मुख्य सेवाऐं मानी जाती हैं। जिसमें प्रत्येक व्यक्ति किसी न किसी कार्य से इन सेवाओं का लाभ प्राप्त करता हैं। प्रत्येक ग्राम पंचायत मुख्यालय पर यह सेवाऐं सहकारी समितियों द्वारा प्रदत्त की गयी हैं तथा यहाँ पर मांगरोल, सीसवाली, शाहपुरा, बम्बोरीकलां, माल बम्बोरी, रायथल, बोहत, ईश्वरपुरा, उदपुरिया आदि पंचायत मुख्यालयों पर भी कीटनाशक सेवाऐं उपलब्ध हैं। अन्य अधिवास इन सेवा केन्द्रों पर निर्भर हैं। तालिका संख्या 3.24 के अनुसार 0 से 99 आवासों वाले अधिवासों में महलपुर में यह सुविधा उपलब्ध हैं। 100 से 199 आवासों वाले अधिवासों में किशनपुरा एवं जारेला ग्राम पंचायत में यह सेवा उपलब्ध हैं। 200 से 499 आवासों वाले अधिवासों में इनकी संख्या 7 हैं। 500 से 999 आवासों वाले अधिवासों में 3 उर्वरक एवं कीटनाशक सेवा केन्द्र स्थित हैं। 1000 से अधिक आवासों वाले अधिवासों में उर्वरक एवं कीटनाशक केन्द्रों की संख्या 24 हैं। इस प्रकार कुल 37 कीटनाशक एवं उर्वरक केन्द्र स्थित हैं जो अध्ययन क्षेत्र को सेवाऐं दे रहे हैं।

तालिका संख्या 3.24 : मांगरोल तहसील–जनसंख्या आकार के अनुसार उर्वरक एवं कीटनाशक केन्द्रों का वितरण प्रतिरूप

अधिवास प्रतिरूप	कुल अधिवास	उर्वरक एवं कीटनाशक केन्द्रों की संख्या
0-99	30	1
100-199	34	2
200-499	10	7
500-999	3	3
Above 1000	3	24
कुल	**80**	**37**

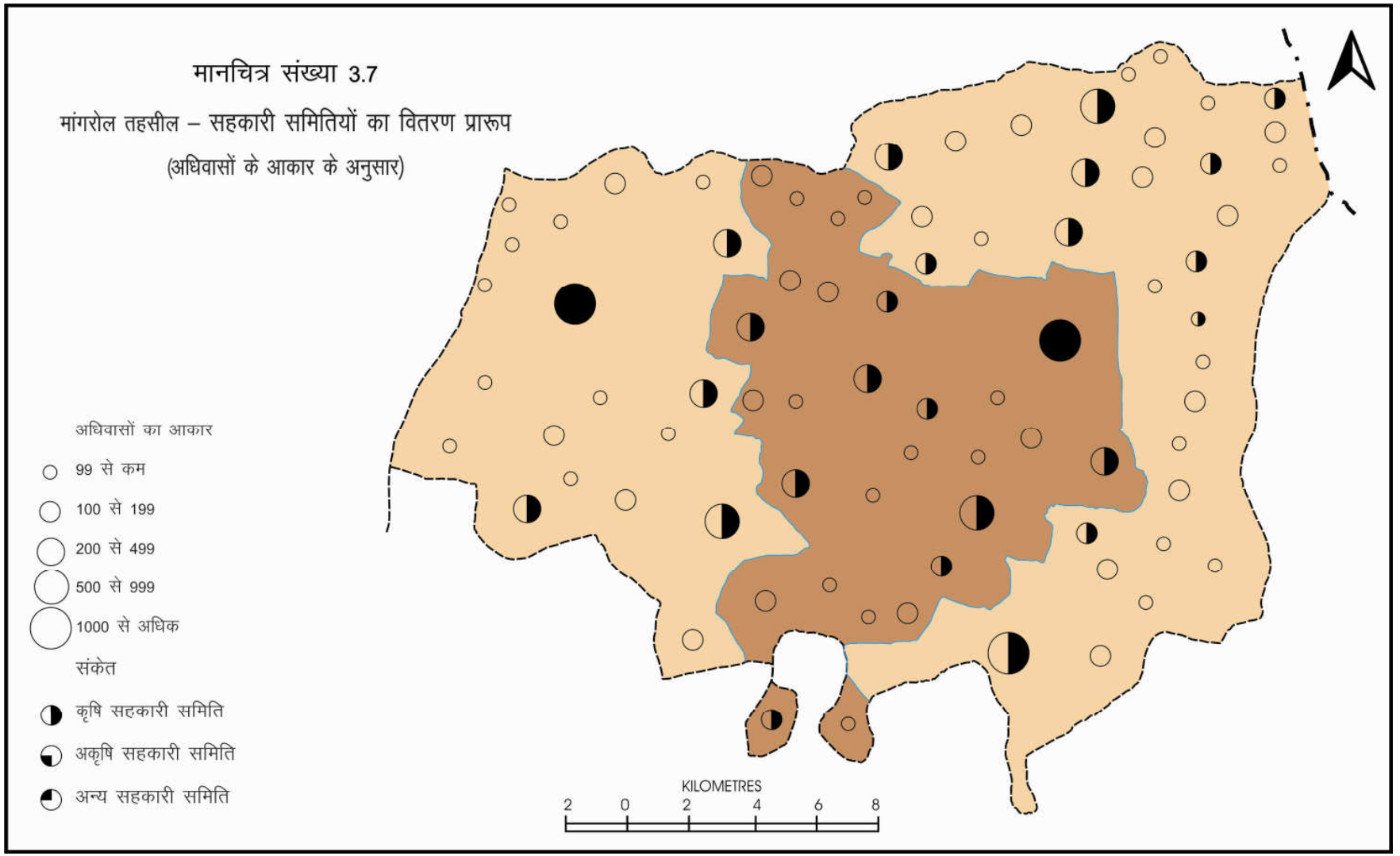
मानचित्र संख्या 3.7
मांगरोल तहसील – सहकारी समितियों का वितरण प्रारूप
(अधिवासों के आकार के अनुसार)
अधिवासों का आकार
99 से कम
100 से 199
200 से 499
500 से 999
1000 से अधिक
संकेत
कृषि सहकारी समिति
अकृषि सहकारी समिति
अन्य सहकारी समिति
KILOMETRES
2 0 2 4 6 8

3.11 जन कल्याण कार्य कार्यक्रम–

अध्ययन क्षेत्र में विभिन्न जल कल्याण कार्य योजनाऐं संचालित हैं जिसमें सभी पंचायत मुख्यालयों पर 17 स्थानों पर अटल सेवा केन्द्रों पर महानरेगा के द्वारा रोजगार की सुविधा उपलब्ध कराई जाती हैं। जिसमें प्रतिदिन अपने पंचायत मुख्यालय पर सरकार के द्वारा रोजगार गारंटी अधिनियम के तहत रोजगार दिया जाता है। यह सुविधा पूर्वी क्षेत्रों में 6 सेवा केन्द्रों के विभिन्न गाँवों में एवं मध्य भाग के 7 सेवा केन्द्रों के विभिन्न गाँवों में एवं पश्चिमी भाग के 4 सेवा केन्द्रों के विभिन्न गाँवों में उपलब्ध हैं। जहाँ से व्यक्ति विभिन्न प्रकार की रोजगार सेवा को प्राप्त करता है।

3.12 जनुपयोगी सेवाऐं–

अध्ययन क्षेत्र में कईं प्रकार के जनुपयोगी सेवाऐं उपलब्ध हैं। जिसमें महिला स्वयं सहायता समूह, रोजगार समूह, ग्रामीण रोजगार गारंटी सेवा, बैंकिंग सेवा, विभिन्न प्रशासनिक सेवा, ई–मित्र सेवा, संचार सेवा, शिक्षा सेवा, चिकित्सा सेवा, पशु चिकित्सा सेवा, स्वच्छता सेवा, पेयजल आपूर्ति सेवा, विद्युत सेवा, विभिन्न प्रकार की जनुपयोगी सेवाऐं अध्ययन क्षेत्र के सभी पंचायत मुख्यालय एवं अन्य सेवा केन्द्रों पर उपलब्ध हैं।

3.13 रोजगार के विभिन्न साधन–

अध्ययन क्षेत्र कृषि प्रधान क्षेत्र होने के कारण रोजगार के विभिन्न स्त्रोत कृषि आधारित हैं। कृषि पर ही अधिकतम रोजगार निर्भर हैं। यहाँ पर फसल रोपण, निराई–गुडाई, कटाई एवं अन्य कृषि कार्यों के लिए ग्रामीण स्तर पर रोजगार की सुविधा उपलब्ध हैं। अन्य रोजगार के लिए सीसवाली, मांगरोल, बम्बोरीकलां जैसे अधिक आवासों वाले अधिवासों पर स्थानीय व्यक्तियों को निर्भर रहना पड़ता है। अध्ययन क्षेत्र में कोई औद्योगिक ईकाई नहीं होने के कारण रोजगार के साधन उपलब्ध नहीं हैं।

3.14 प्रशिक्षण कार्यक्रम–

अध्ययन क्षेत्र में विभिन्न प्रशिक्षण केन्द्र उपलब्ध हैं। जहाँ पर औद्योगिक, सिलाई, घरेलू उद्योग एवं अन्य कार्यों का प्रशिक्षण दिया जाता हैं। औद्योगिक प्रशिक्षण के अन्तर्गत मांगरोल में 6 औद्योगिक प्रशिक्षण केन्द्र **(ITI)** उपलब्ध हैं। जहाँ से औद्योगिक प्रशिक्षण प्राप्त किया जाता हैं तथा प्रधानमंत्री आजीविका मिशन **(PMKY)** प्रशिक्षण कार्यक्रम के तहत वर्तमान में कई प्रशिक्षण कार्यक्रम केवल तहसील मुख्यालय पर संचालित हैं। इन सेवाओं के उपभोग हेतु व्यक्ति तहसील मुख्यालय पर निर्भर हैं।

केन्द्रीय स्थल में विभिन्न प्रकार के केन्द्रीय कार्य स्थित होते हैं। जिनके अन्तसंबद्धता निकटवर्ती अधिवासों को प्राप्त होती हैं। जिन तक पहुँचने के लिए विभिन्न प्रवाह मार्गों एवं संसाधनों का उपयोग किया जाता हैं। इन्हीं संसाधनों के आधार पर किसी भी केन्द्रीय स्थल की सम्बद्धता अन्य अधिवासों के साथ निर्धारित होती हैं। जिसमें सम्बद्धता का मुख्य आधार यातायात के साधनों को माना जाता है। अध्ययन क्षेत्र में केन्द्रीय स्थल तहसील मुख्यालय मांगरोल में स्थित है तथा इनकी कार्यात्मक सम्बद्धता अन्य पंचायत समितियों के साथ निर्धारित की गई है। सम्बद्धताओं का निर्धारण निम्न तथ्यों के आधार पर किया गया है।

4.1 कार्यात्मक सम्बद्धता का आधार – यातायात–

केन्द्रीय स्थल तक पहुँचने के लिए विभिन्न यातायात संसाधनों का होना आवश्यक हैं। मांगरोल तहसील को केन्द्रीय स्थल के रूप में अन्य पंचायत मुख्यालयों को सेवाऐं दे रही हैं। साथ ही विभिन्न पंचायतों के अधिवास भी केन्द्रीय स्थल से सेवा प्राप्त कर रहे हैं। केन्द्र स्थल तक पहुँचने के लिए अध्ययन क्षेत्र में सड़क मार्ग प्रमुख साधन हैं क्योंकि यहाँ पर रेल मार्ग सुविधा उपलब्ध नहीं हैं। जिला मुख्यालय बाराँ में 25 किलोमीटर की दूरी तय करते हुए इस सुविधा तक पहुँचा जा सकता है। तहसील में व्यक्ति कृषि कार्य, शिक्षा, चिकित्सा अन्य प्रशासनिक कार्य हेतु केन्द्रीय स्थल पर निर्भर हैं। जहाँ तक पहुँचने के लिए यातायात के विभिन्न साधन मोटर साईकिल, ट्रेक्टर, बस, जीप, साईकिल आदि का उपभोग किया जाता हैं। तहसील मुख्यालय **SH1** द्वारा **NH27** से जुड़ा हुआ है जो जिला मुख्यालय होते हुए प्रमुख स्थानों को जोड़ता हैं। अध्ययन क्षेत्र में **SH19** से मध्य प्रदेश राज्य के श्योपुर जिले से जुड़ा हुआ है तथा **SH37A** मार्ग कोटा जिले से जोड़ता है। इस प्रकार अध्ययन क्षेत्र में पर्याप्त यातायात सुविधा उपलब्ध है। केन्द्रीय स्थल विभिन्न पंचायत मुख्यालयों से पक्की सड़कों से जुड़ा हुआ है। प्रत्येक पंचायत मुख्यालय विभिन्न अधिवासों से पक्की सड़कों से जुड़ा हुआ है तथा कुछ अधिवासों में पक्की सड़कें नहीं हैं

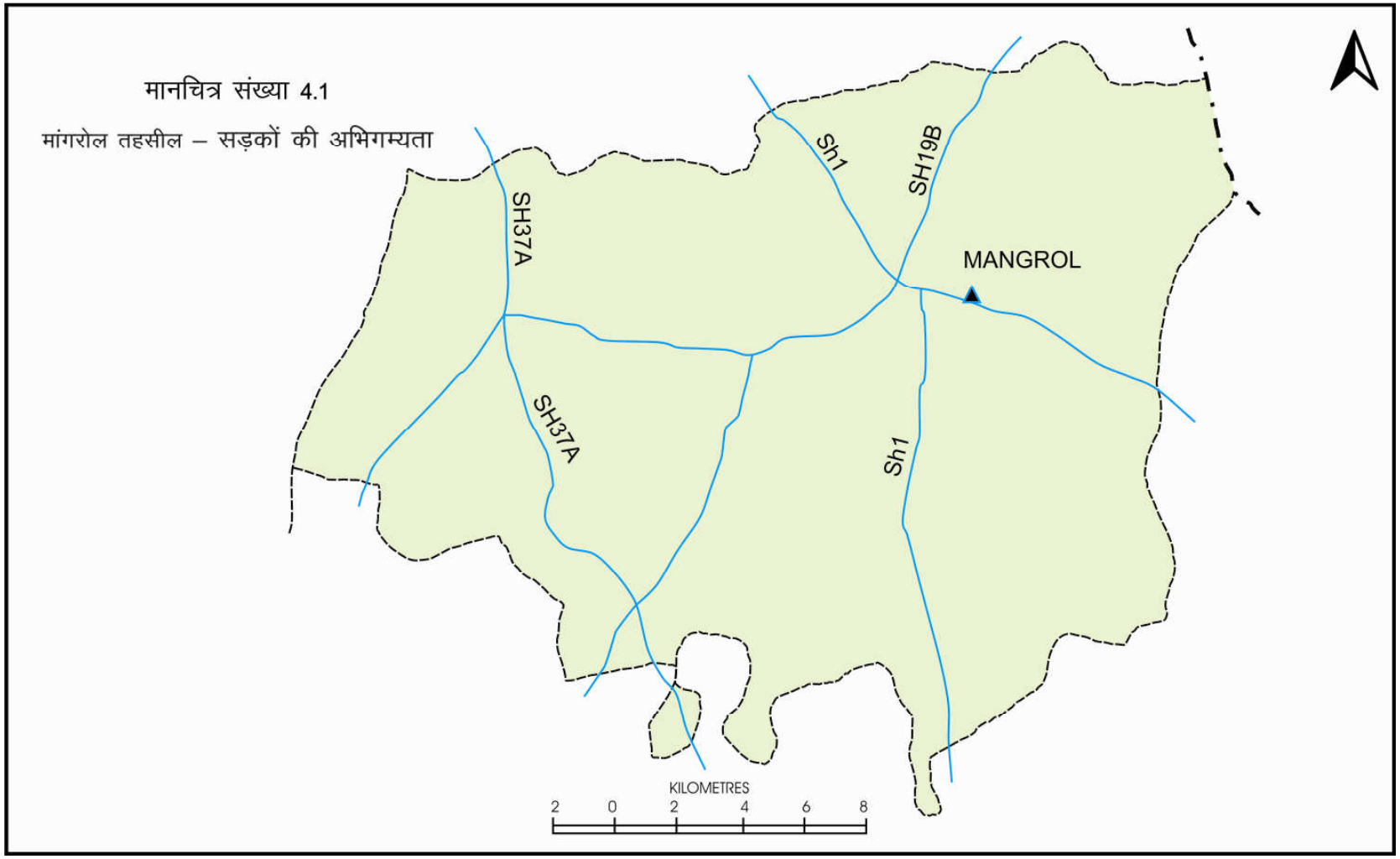
मानचित्र संख्या 4.1
मांगरोल तहसील – सड़कों की अभिगम्यता
SH37A
Sh1
SH19B
MANGROL
SH37A
Sh1
KILOMETRES
2 0 2 4 6 8

तो वहाँ पर ग्रेवल सड़कें उपलब्ध हैं। तहसील मुख्यालय से दिल्ली, जयपुर, कोटा, बाराँ, सवाई माधोपुर, झालावाड़, इंदौर के लिए प्रतिदिन बस सेवा उपलब्ध है।

वर्तमान में राष्ट्रीय राजमार्ग प्रस्तावित है। जिसके पूर्ण होने पर उज्जैन, जयपुर, मथुरा जैसे बड़े नगरों का मार्ग भी सुगम हो जायेगा। अध्ययन क्षेत्र के सभी भागों में सड़क जाल विस्तृत देखने को मिलता है।

4.2 यातायात प्रवाह–

अध्ययन क्षेत्र में पर्याप्त यातायात सुविधा होने के कारण प्रतिदिन यातायात प्रवाह विस्तृत दिखाई देता है। मांगरोल तहसील मुख्यालय से चारों ओर विभिन्न बसें संचालित हैं। जिनसे यातायात प्रवाह सुगम होता है। विभिन्न प्रवाह मार्गों का विवरण निम्न प्रकार से किया जा सकता है।

(अ) बाराँ–ईटावा–श्योपुर **(SH1)** द्वारा यातायात प्रवाह – तहसील मुख्यालय पर **SH1** द्वारा इस मार्ग से विभिन्न प्रकार के साधन बस, जीप एवं अन्य यातायात के साधन संचालित होते हैं। इस राज्य मार्ग से ईटावा की दूरी तहसील मुख्यालय से 27 किलोमीटर, बाराँ की दूरी 25 किलोमीटर है। जिसमें बाराँ की ओर 42 बसें, ईटावा की ओर 22 बसें प्रतिदिन संचालित होती हैं। ईटावा होते हुए यह मार्ग श्योपुर (म.प्र.) जिले से जुड़ा हुआ है।

(ब) मांगरोल–बड़ौदा–श्योपुर मार्ग **(SH19B)**– यह मार्ग मध्य प्रदेश राज्य के श्योपुर जिले को मांगरोल से जोड़ता है। श्योपुर की दूरी 42 किलोमीटर है। जिसमें प्रतिदिन 14 बसें एवं अन्य साधन संचालित होते हैं। यह मार्ग नवीनतम होने के कारण व्यवहारिक मार्ग नहीं है। इस कारण वर्तमान में यातायात प्रवाह कम देखने को मिलता है।

(स) मांगरोल–कोटा मार्ग – यह मार्ग मांगरोल का मुख्य मार्ग माना जाता है जो शैक्षणिक नगरी कोटा को जोड़ता है। इसी मार्ग में सीसवाली, बड़ौद, सुल्तानपुर से कोटा की ओर 27 बसें प्रतिदिन संचालित होती हैं तथा

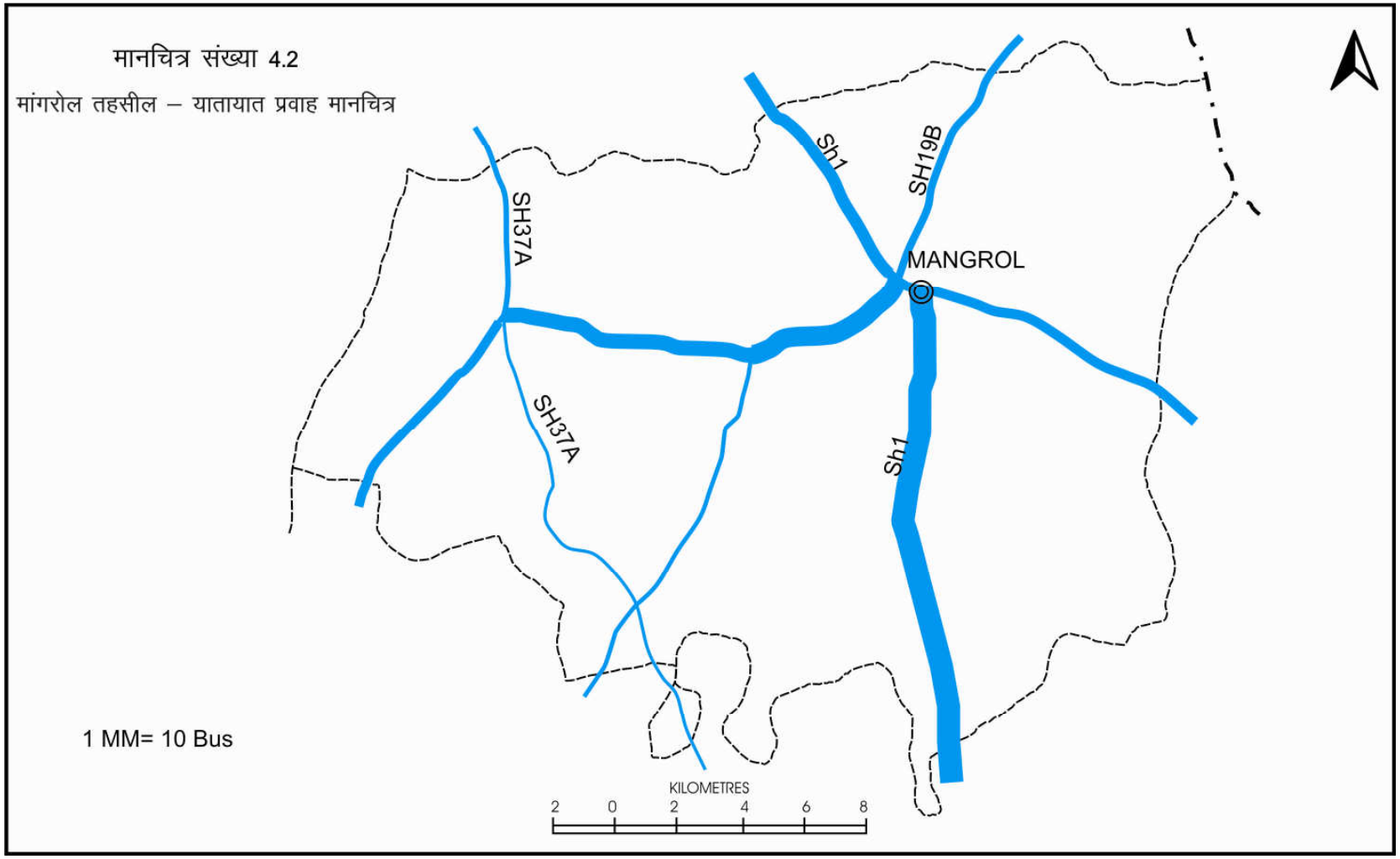
मानचित्र संख्या 4.2
मांगरोल तहसील – यातायात प्रवाह मानचित्र
SH37A
Sh1
SH19B
MANGROL
SH37A
Sh1
1 MM= 10 Bus
KILOMETRES
2 0 2 4 6 8

इसी मार्ग से सीसवाली, अंता एन.एच. 27 मार्ग होते हुए कोटा की ओर 8 बसें प्रतिदिन संचालित होती हैं।

इस प्रकार चारों ओर से विकसित प्रवाह तंत्र देखने को मिलता है। अध्ययन क्षेत्र में सड़क तंत्र विकसित होने के कारण विभिन्न साधनों का संचालन संभव हैं। जिसमें व्यक्ति उचित मार्गों का चयन करते हुए विभिन्न सड़क मार्गों का उपयोग करते हुए विभिन्न स्थानों की यात्रा करता हैं।

4.3 वर्तमान यातायात सुविधा एवं सम्बद्धता–

अध्ययन क्षेत्र वर्तमान में बाराँ, कोटा, सवाई माधोपुर, श्योपुर (म.प्र) आदि जिलों से सड़क मार्ग के द्वारा जुड़ा हुआ है। इसी कारण यहाँ पर विभिन्न प्रकार की सेवाओं का लाभ जैसे कृषि सेवा, प्रशासनिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक आदि के लिए विभिन्न यातायात के साधनों द्वारा प्राप्त करता है। वर्तमान में राष्ट्रीय राजमार्ग प्रस्तावित होने के कारण अध्ययन क्षेत्र का तहसील मुख्यालय उज्जैन (मध्य प्रदेश), जयपुर (राजस्थान), मथुरा (उ.प्र.) आदि नगरों से जुड़ जायेगा। जिससे यहाँ पर विभिन्न कार्यों की सुगमता उपलब्ध होगी। मांगरोल तहसील मुख्यालय विभिन्न सड़क मार्गों द्वारा एवं ग्रामीण सड़कों द्वारा एक दूसरे से अन्तर्सम्बद्धता बनाये हुए हैं जिनके द्वारा विभिन्न प्रकार की सुविधाऐं अन्य अधिवासों को प्रदान की जाती है एवं ग्रामीण अधिवासों द्वारा विभिन्न प्रकार की सेवाऐं प्राप्त की जाती हैं। इन मार्गों में पंचायत मुख्यालयों में सर्वाधिक दूरी पर उदपुरिया पंचायत मुख्यालय 26 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है तथा न्यूनतम दूरी पर किशनपुरा ग्राम पंचायत मुख्यालय 2.5 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। इन पंचायतों की अन्तर्सम्बद्धता दूरी के अनुसार निकटतम पंचायतों की अधिक एवं अधिक दूरी पर स्थित पंचायतों की अन्तर्सम्बद्धता कम दर्ज की गई। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि पश्चिमी क्षेत्र में अन्तर्सम्बद्धता कम एवं मध्य क्षेत्र में अन्तर्सम्बद्धता कम तहसील के साथ अधिक है। मानचित्र संख्या 4.2 के अनुसार विभिन्न मार्गों में यातायात सुविधा उपलब्ध हैं। जिससे एक दूसरे स्थानों के बीच अन्तर्सम्बद्धता निर्धारित होती है। जिसमें सर्वाधिक मार्ग मध्य भाग में अधिक होने के कारण अन्तर्सम्बद्धता अधिक है।

4.4 सामाजिक सुविधाओं व उनकी सम्बद्धता की रिक्तता एवं समस्यायें–

सामाजिक सुविधाओं के अन्तर्गत जीवन निर्वाह की विभिन्न सेवाओं को सम्मिलित किया जाता हैं। जिनका उपभोग व्यक्ति अपनी सुविधा के अनुसार करता है। यदि सामाजिक सुविधा स्थानिक नहीं होती तो निकटतम सुविधा केन्द्रों से सेवा प्राप्त की जाती है। अध्ययन क्षेत्र में मूलभूत सुविधाऐं सभी अधिवासों पर उपलब्ध हैं। इन सुविधाओं का वर्णन निम्न प्रकार से किया जाता है।

4.4.1 दैनिक सामाजिक आवश्यकता की ग्रामीण प्राथमिकता–

दैनिक जीवन में जीवन निर्वाह के लिए उपयोगी आवश्यक सुविधाऐं विभिन्न अधिवास केन्द्रों पर उपलब्ध है। मानचित्र संख्या 4.3 के अनुसार स्पष्ट है कि विभिन्न सुविधाऐं अधिवास प्रारूप के आधार पर निर्धारित है तथा मूलभूत सुविधाओं का सांद्रण लगभग सभी अधिवासों पर उपलब्ध हैं। इन सुविधाओं का वर्णन निम्न प्रकार से किया जा सकता है।

(अ) घरेलू उद्योगों का वितरण प्रतिरूप – मानचित्र संख्या 4.3 के अनुसार कुल 80 अधिवासों में विभिन्न प्रकार के घरेलू उद्योगों का सांद्रण पाया जाता है। जिसमें 74 अधिवास ऐसे हैं जहाँ पर लगभग 1 प्रकार की घरेलू उद्योग सेवा उपलब्ध है। शेष 6 अधिवास गैर आबादी होने के कारण यहाँ पर यह सुविधा उपलब्ध नहीं है।

अध्ययन क्षेत्र ग्रामीण परिवेश का होने के कारण पीने के पानी के लिए मिट्टी के मटकों का उपयोग किया जाता है। इसी कारण गाँव में 74 अधिवासों में मटका उद्योग स्थित है। यह सुविधा आवश्यक होने के कारण सभी अधिवासों में उपलब्ध है।

भोजन के लिए आटा तैयार करने के लिए अध्ययन क्षेत्र में विभिन्न अधिवासों पर आटा चक्की स्थित हैं। यहाँ पर कुल 66 सेवा केन्द्रों पर यह सुविधा उपलब्ध है। सर्वाधिक आटा चक्कियाँ मध्य भाग में स्थित हैं। जहाँ

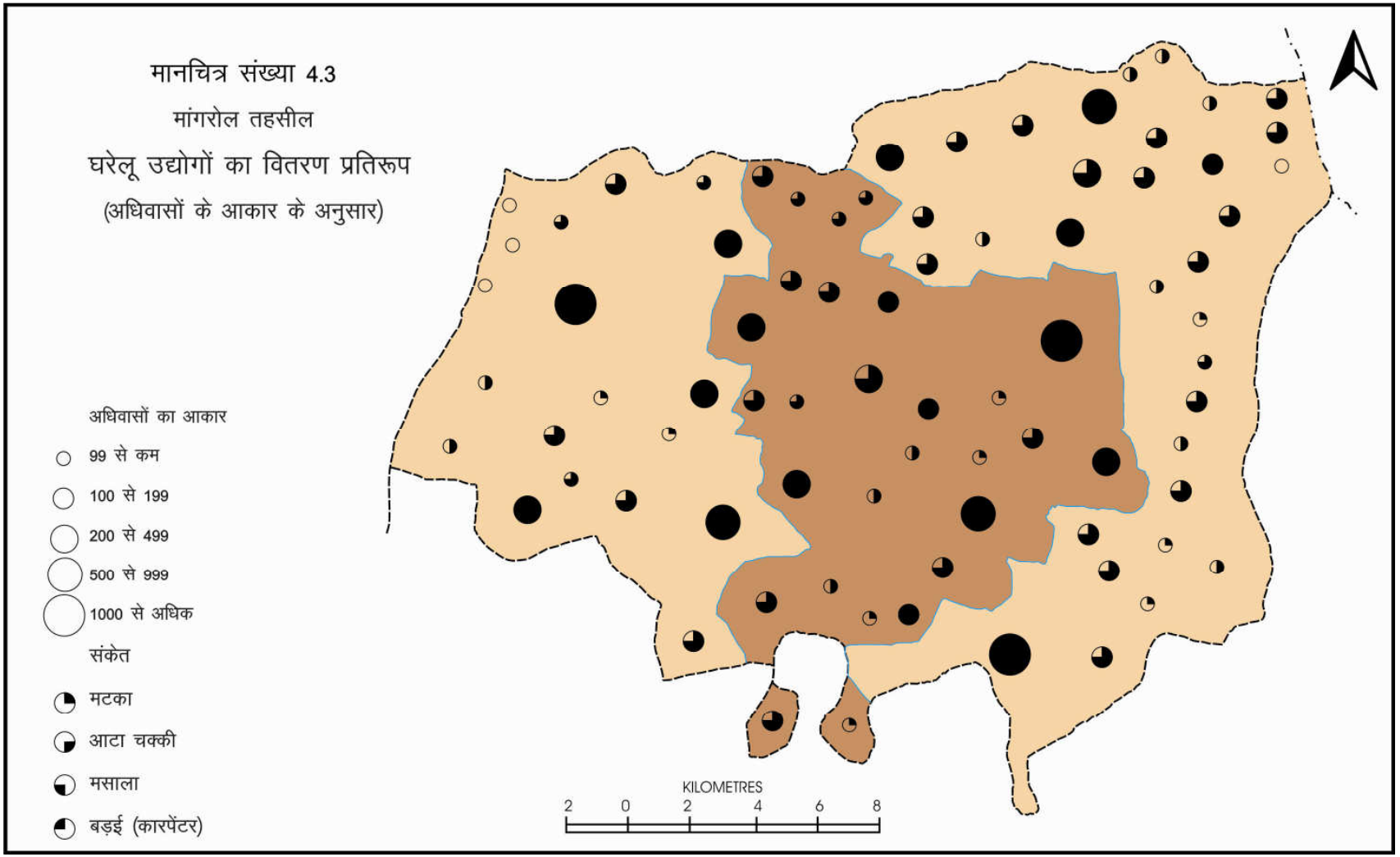
मानचित्र संख्या 4.3
मांगरोल तहसील
घरेलू उद्योगों का वितरण प्रतिरूप
(अधिवासों के आकार के अनुसार)
अधिवासों का आकार
99 से कम
100 से 199
200 से 499
500 से 999
1000 से अधिक
संकेत
मटका
आटा चक्की
मसाला
बड़ई (कारपेंटर)
KILOMETRES
2 0 2 4 6 8

पर यह सुविधा उपलब्ध नहीं है वहाँ पर नजदीकी सेवा केन्द्रों से सुविधा प्राप्त की जाती है।

अध्ययन क्षेत्र में 80 अधिवासों में से 52 अधिवासों में मसाला उद्योग स्थित हैं। जो कि घरेलू आटा चक्कियों के साथ एवं व्यावसायिक रूप से उपलब्ध है। यहाँ पर यह सुविधा सर्वाधिक मध्य भाग में स्थित है। क्योंकि मध्य भाग में जनसंख्या का सांद्रण अधिक है।

आवास के लिए एवं कृषि कार्यों के लिए लकड़ी उद्योग भी महत्वपूर्ण उद्योग है। यहाँ पर लकड़ी उद्योग की सुविधा धीरे–धीरे कम होती जा रही है। यहाँ वर्तमान में 18 सेवा केन्द्रों पर यह सुविधा उपलब्ध है। अन्य सेवा केन्द्र तहसील मुख्यालय एवं 1000 से अधिक आवासों वाले अधिवासों पर निर्भर है।

इस प्रकार सर्वाधिक सेवा केन्द्र पूर्वी भाग में स्थित है तथा मध्य भाग में अधिकतम घरेलू सेवाऐं तहसील मुख्यालय से प्राप्त हो जाती है।

(ब) साप्ताहिक हाट बाजार केन्द्रों का वितरण प्रतिरूप – हाट बाजार मुख्यतः बाजार के सिद्धान्त पर कार्य करते हैं। जहाँ पर जनसंख्या घनत्व अधिक होता है एवं अधिकतम व्यक्तियों की पहुँच का केन्द्र होता है वहाँ पर यह केन्द्र स्थापित है। मानचित्र संख्या 4.4 के अनुसार पूर्वी भाग में दो अधिवासों पर हाट बाजार स्थित है। जो कि अधिक आवासों वाले क्षेत्र होने के कारण यहाँ पर स्थित है। अन्य अधिवासों में हाट बाजार की सुविधा उपलब्ध नहीं है। इसी प्रकार मध्य भाग में तहसील मुख्यालय होने के कारण यहा सुविधा उपलब्ध है। यहाँ पर मुख्यालय केन्द्र पर साप्ताहिकी हाट बाजार लगता है। इसी प्रकार पश्चिमी निम्न भूमि भाग पर सर्वाधिक 3 अधिवासों पर साप्ताहिकी हाट बाजार की सेवाऐं उपलब्ध हैं। इस भाग में अधिक जनघनत्व के 3 केन्द्र होने एवं तहसील मुख्यालय के अधिक दूरी पर स्थित होने के कारण यह बाजार विकसित हुए हैं तथा यह बाजार इस क्षेत्र में विभिन्न अधिवासों को अपनी सेवाऐं दे रहे हैं।

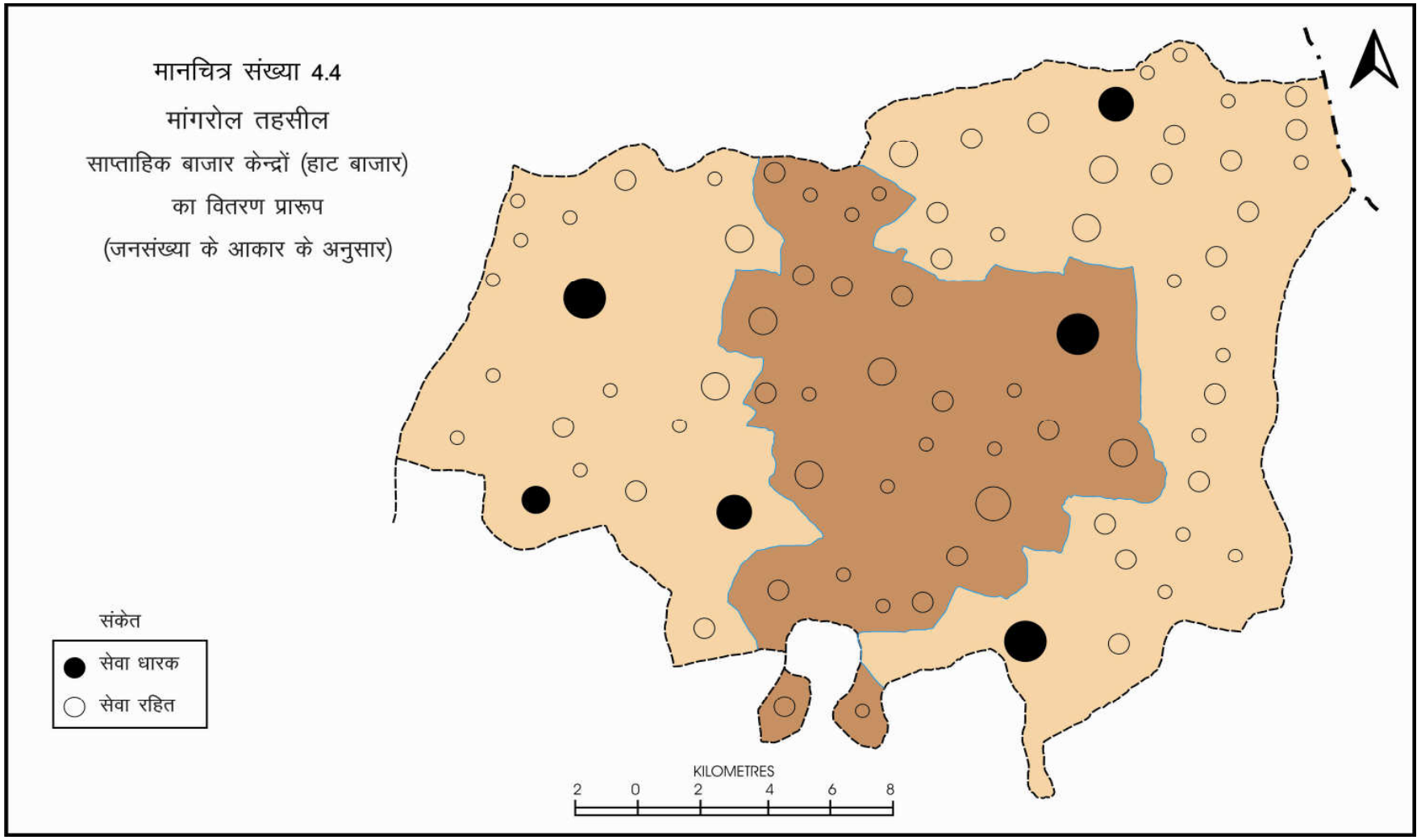
मानचित्र संख्या 4.4
मांगरोल तहसील
साप्ताहिक बाजार केन्द्रों (हाट बाजार)
का वितरण प्रारूप
(जनसंख्या के आकार के अनुसार)
संकेत
सेवा धारक
सेवा रहित
KILOMETRES
2 0 2 4 6 8

इस प्रकार साप्ताहिकी हाट बाजार मुख्य रूप से आवासों की संख्या पर निर्भर है। जहाँ आवासों की संख्या अधिक है वहाँ पर यह बाजार संचालित है। जहाँ पर आवासों की संख्या कम है उन्हें अन्य अधिवासों पर साप्ताहिकी बाजार सेवा के लिए निर्भर रहना पड़ता है। सम्पूर्ण अध्ययन क्षेत्र में कुल 5 साप्ताहिकी हाट बाजार अपनी सेवाऐं विभिन्न अधिवासों को प्रदान करते हैं।

(स) राजस्थान सम्पर्क केन्द्रों की ग्रामीण प्राथमिकता –

वर्तमान में व्यक्ति की पहचान को यूनिक करने के लिए तकनीकी से जोड़ा गया है। जिसमें आधार कार्ड, भामाशाह कार्ड के साथ विभिन्न महत्वपूर्ण दस्तावेजों को संलग्न किया गया है। यह सुविधा प्रत्येक पंचायत स्तर पर व्यक्तियों को राजस्थान सम्पर्क केन्द्रों से प्राप्त होती है। यहाँ पर विभिन्न प्रकार के कार्ड, प्रशासनिक प्रमाण पत्र एवं आवश्यक दस्तावेज का कार्य किया जाता है तथा रोजगार गारंटी से जोड़ने के लिए जॉब कार्ड जारी किये जाते हैं। मानचित्र संख्या 4.5 के अनुसार अध्ययन क्षेत्र के कुल 80 अधिवासों में सर्वाधिक राजस्थान सम्पर्क केन्द्रों की स्थिति मध्य भाग में है। जिनकी संख्या 7 है। इन क्षेत्रों में पंचायत मुख्यालयों की निकटता होने के कारण अधिक सेवा केन्द्र उपलब्ध हैं तथा पूर्वी भाग में 6 सेवा केन्द्र विभिन्न अधिवासों में उपलब्ध हैं। जिनसे अन्य संलग्न अधिवास सेवायें प्राप्त करते हैं। पश्चिमी भाग में न्यूनतम सेवा केन्द्र स्थित हैं क्योंकि यहाँ पर अधिवास अधिक दूरी पर हैं एवं पंचायत मुख्यालय केन्द्रों की संख्या केवल 4 है जहाँ पर ही यह सुविधा उपलब्ध है। इस प्रकार सम्पूर्ण क्षेत्र में कुल 17 अधिवासों पर यह सुविधा उपलब्ध है। जिनसे निकटतम अधिवास सेवायें प्राप्त करता है। इसमें संचालित सभी सेवा केन्द्र समस्त अध्ययन क्षेत्र को सेवायें देने में सक्षम है। इसमें पंचायत मुख्यालयों की कोई बाध्यता नहीं है। इसी कारण निकटतम सेवा केन्द्रों से विभिन्न अधिवास सेवा प्राप्त करते हैं।

इस प्रकार इन केन्द्रों में ई–मित्र, बैंकिंग एवं प्रशासनिक सुविधाऐं उपलब्ध हैं।

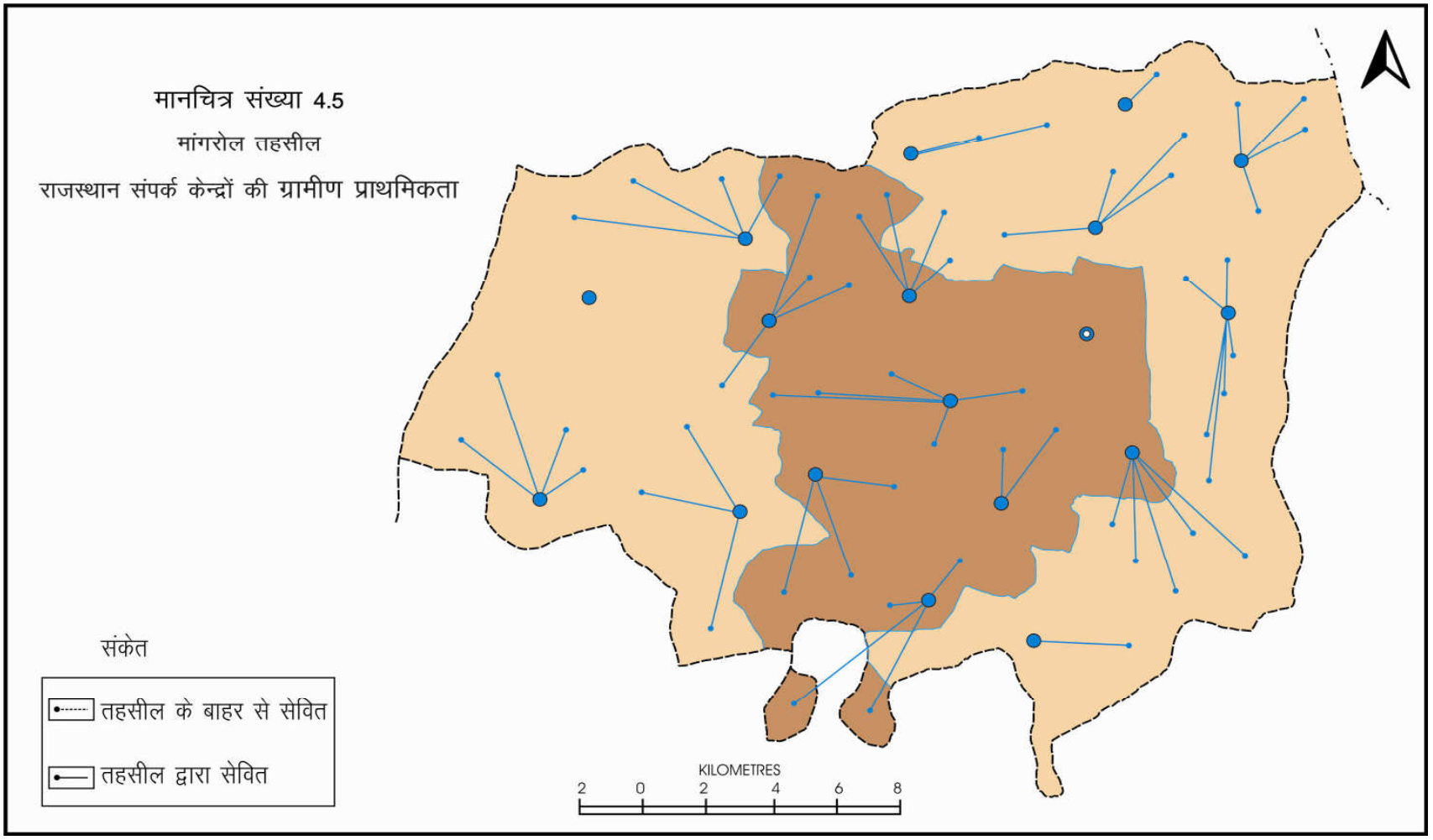
मानचित्र संख्या 4.5
मांगरोल तहसील
राजस्थान संपर्क केन्द्रों की ग्रामीण प्राथमिकता
संकेत
तहसील के बाहर से सेवित
तहसील द्वारा सेवित
KILOMETRES
2 0 2 4 6 8

(द) ईंधन आपूर्ति केन्द्रों को ग्रामीण प्राथमिकता –

सम्पूर्ण अध्ययन क्षेत्र में ईंधन आपूर्ति के विभिन्न सेवा केन्द्रों पर यह सुविधा उपलब्ध होती है। जिसमें पेट्रोल, डीजल एवं केरोसीन प्रमुख हैं। ईंधन आपूर्ति मुख्य रूप से कृषि कार्यों के अन्तर्गत सम्मिलित की जाती है एवं इसे आवश्यक सेवा के रूप में भी माना जाता है। इसी कारण अध्ययन विषय में इसे आवश्यक सेवाओं के अन्तर्गत सम्मिलित किया गया है। मानचित्र संख्या 4.6 के अनुसार विभिन्न 4 अधिवास केन्द्रों में यह सेवा उपलब्ध है। अन्य अधिवास ईंधन आपूर्ति के लिए इन सेवा केन्द्रों पर निर्भर हैं। सर्वाधिक आपूर्ति केन्द्र पूर्वी भाग में स्थित हैं। क्योंकि यह बाराँ एवं श्योपुर मार्ग पर स्थित होने के कारण यह केन्द्र अधिक विकसित है तथा मांगरोल, बम्बोरीकलां सेवा केन्द्र मध्य प्रदेश राज्य को भी ईंधन आपूर्ति प्रदान करते हैं। यहाँ पर मांगरोल सेवा केन्द्र से सर्वाधिक अधिवासों को सेवा प्रदान की जाती है क्योंकि यह अधिकतम अधिवासों से निकटतम दूरी पर स्थित है। यहाँ पर 29 सेवा केन्द्रों को ईंधन आपूर्ति प्रदान की जाती है। इसके अतिरिक्त पूर्वी भाग में स्थित बोहत सेवा केन्द्र से मात्र 3 अधिवासों को ईंधन आपूर्ति प्राप्त होती है तथा बम्बोरीकलां ईंधन आपूर्ति केन्द्र से निकटतम दूरी पर स्थित 9 अधिवासों द्वारा ईंधन आपूर्ति सेवा केन्द्रों का अधिकतम लाभ लिया जाता है। इसी प्रकार पश्चिमी भाग में पटपड़ा में स्थित सेवा केन्द्र से कुल 16 निकटतम अधिवास सेवायें प्राप्त करते हैं। यह सेवा केन्द्र अन्य सेवा केन्द्रों की भांति अध्ययन क्षेत्र के बाहर के अधिवासों को भी सेवाऐं प्रदान करता है। अध्ययन क्षेत्र में 11 अधिवास ऐसे हैं जो बाहरी सेवा केन्द्रों से ईंधन आपूर्ति की सेवा प्राप्त करते हैं। जिनमें सर्वाधिक सेवा केन्द्र मध्य भाग के है तथा न्यूनतम सेवा केन्द्र पश्चिमी भाग के हैं।

4.5 कृषि एवं अकृषि कार्यों का बाजारीय प्रवाह की रिक्तता एवं बहुलता–

अध्ययन क्षेत्र कृषि प्रधान क्षेत्र होने के कारण यहाँ पर बाजारीय प्रवाह मुख्य रूप से कृषि आधारित होता है। कृषि सेवा केन्द्रों एवं सहकारी समिति उर्वरक केन्द्र, कीटनाशक केन्द्र आदि तक व्यक्तियों का आवागमन रहता है।

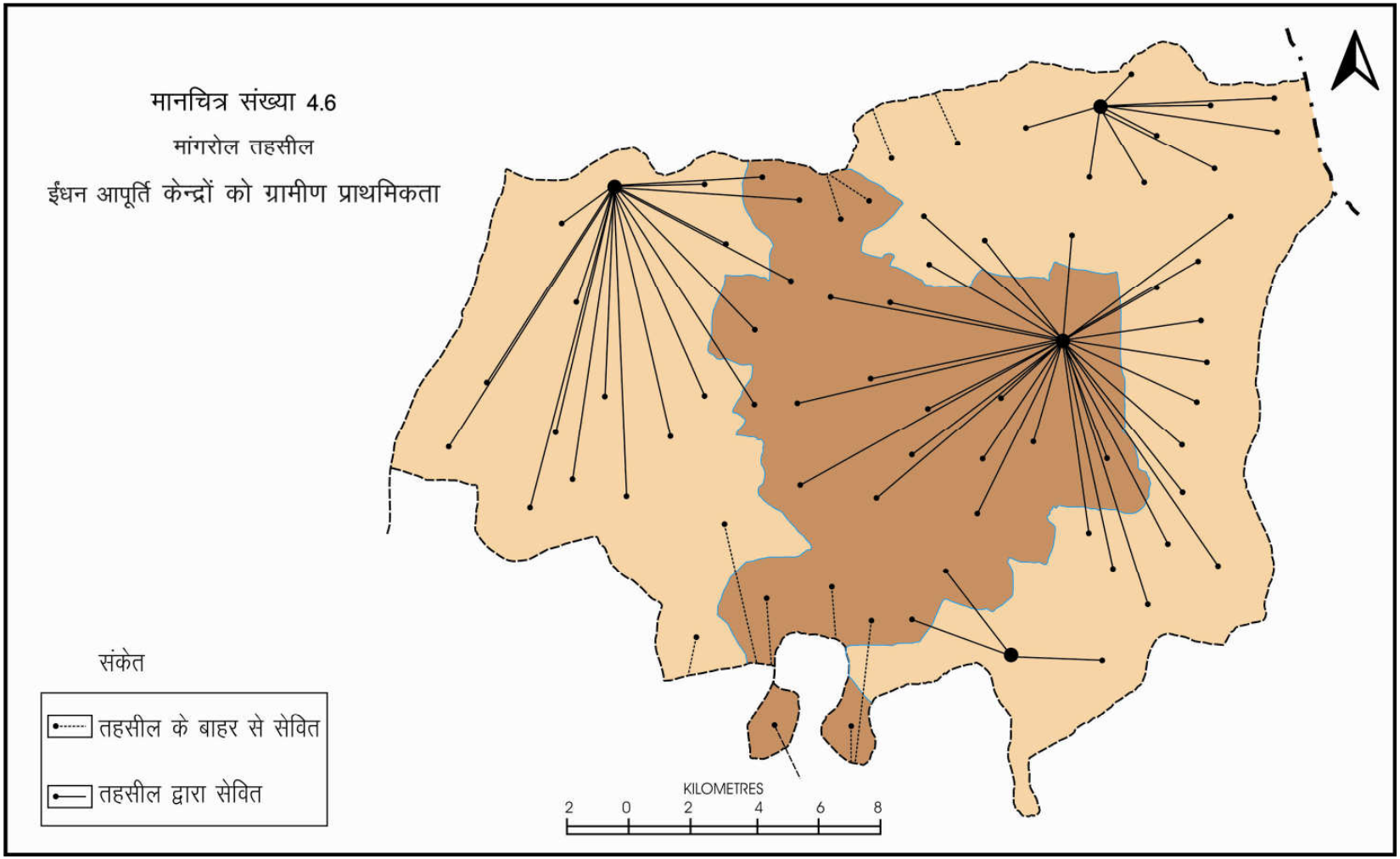
मानचित्र संख्या 4.6
मांगरोल तहसील
ईंधन आपूर्ति केन्द्रों को ग्रामीण प्राथमिकता
संकेत
तहसील के बाहर से सेवित
तहसील द्वारा सेवित
KILOMETRES
2 0 2 4 6 8

4.5.1 कृषि कार्यों के बाजारीय प्रवाह की रिक्तता एवं बहुलता–

प्रवाह का मुख्य आधार कृषि को माना गया है। इसमें कृषि कार्यों के अन्तर्गत निम्न बाजार प्रवाह को सम्मिलित किया गया है।

(अ) सहकारी समितियों की ग्रामीण प्राथमिकता–

मानचित्र संख्या 4.7 के अनुसार सेवा केन्द्रों में ग्रामीण सहकारी समितियाँ मुख्य योगदान रखती हैं। जहाँ से व्यक्ति को आर्थिक सुविधा एवं उर्वरक प्राप्त होते हैं। इस प्रकार की सहकारी समितियाँ प्रत्येक पंचायत मुख्यालय पर स्थित हैं तथा तहसील मुख्यालय पर भी सहकारी केन्द्र स्थित हैं। इस प्रकार कुल 18 सहकारी केन्द्र अध्ययन क्षेत्र में स्थित हैं। जिसमें मध्य एवं पूर्वी भाग में सहकारी केन्द्रों की संख्या समान है। इन भागों पर सहकारी समितियों की संख्या 7 है तथा पश्चिमी भाग पर सहकारी केन्द्रों की संख्या 4 है। यहाँ पर पंचायत मुख्यालय की संख्या कम होने के कारण सेवा केन्द्रों की संख्या भी कम है। इसी कारण इस भाग के अधिकांश अधिवास केन्द्र इन्हीं केन्द्रों पर निर्भर हैं। सहकारी समितियों में मांगरोल व सीसवाली बड़े सेवा केन्द्र हैं जो अधिकांश अधिवासों को सेवायें दे रहे हैं।

(ब) उर्वरक केन्द्रों की ग्रामीण प्राथमिकता–

कृषि में उर्वरक एवं कीटनाशकों का प्रयोग किसानों की परम्परा बन गयी है। प्रत्येक कृषक अधिकतम उर्वरक एवं कीटनाशकों का प्रयोग करता है। इनके लिए वह अपने निकटतम सेवा केन्द्रों से सेवा प्राप्त करता है। अध्ययन क्षेत्र में कुल 18 उर्वरक सेवा केन्द्र स्थित हैं। जहाँ से क्षेत्र के कुल 74 अधिवासों को सेवायें प्राप्त होती हैं। शेष 6 गैर आबादी क्षेत्र होने के कारण इनकों सेवा केन्द्रों में सम्मिलित नहीं किया गया है। मानचित्र संख्या 4.8 के अनुसार सर्वाधिक सेवा केन्द्र मध्य भाग में स्थित है तथा न्यूनतम सेवा केन्द्र पश्चिमी भाग में स्थित है। इन सेवा केन्द्रों की संख्या मध्य भाग में 8 एवं पूर्वी भाग में 6 है। जिनसे अधिकतम अधिवास सेवायें प्राप्त करते

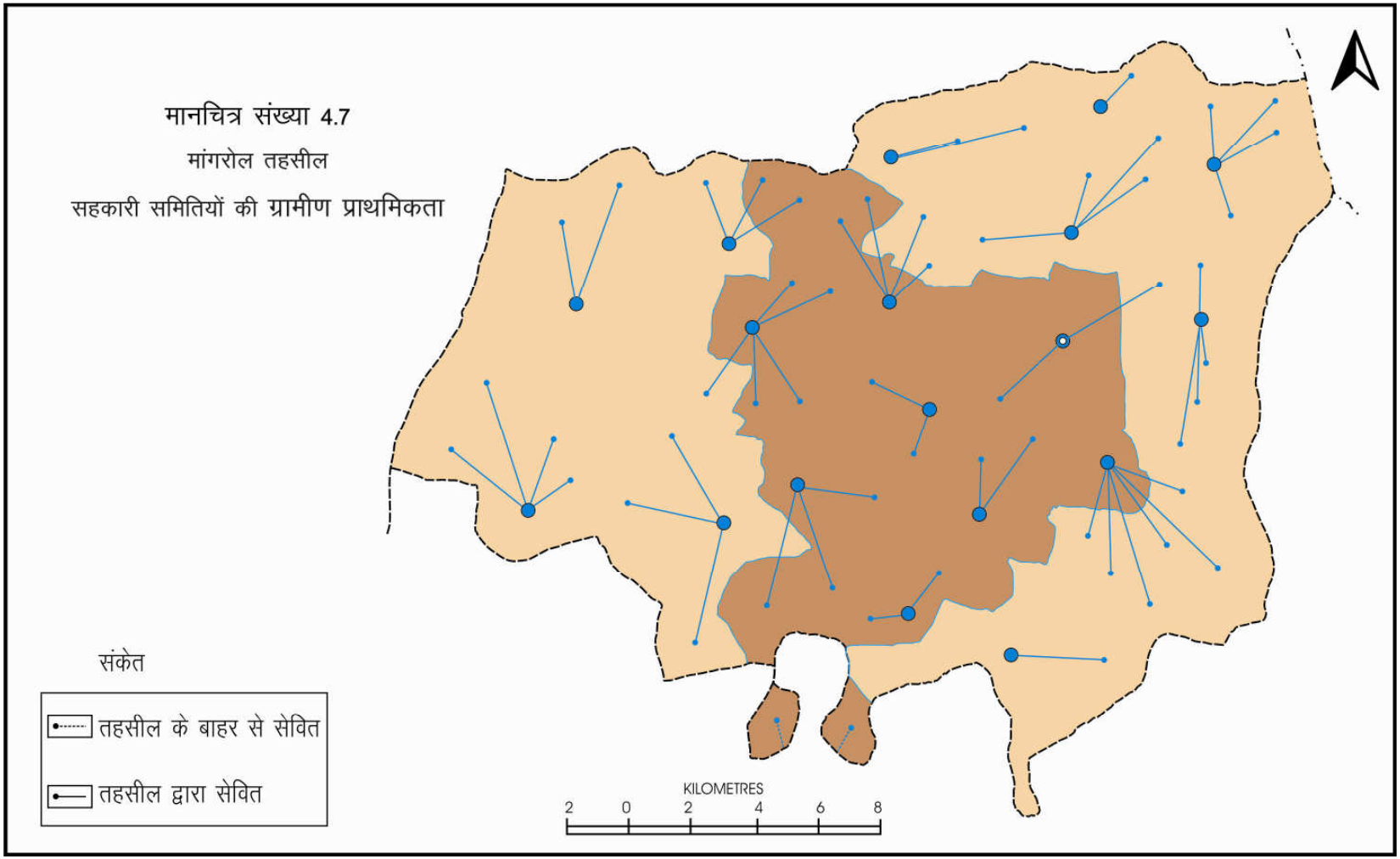
मानचित्र संख्या 4.7
मांगरोल तहसील
सहकारी समितियों की ग्रामीण प्राथमिकता
संकेत
तहसील के बाहर से सेवित
तहसील द्वारा सेवित
KILOMETRES
2 0 2 4 6 8

मानचित्र संख्या 4.8

मांगरोल तहसील – उर्वरक केन्द्रों की ग्रामीण प्राथमिकता

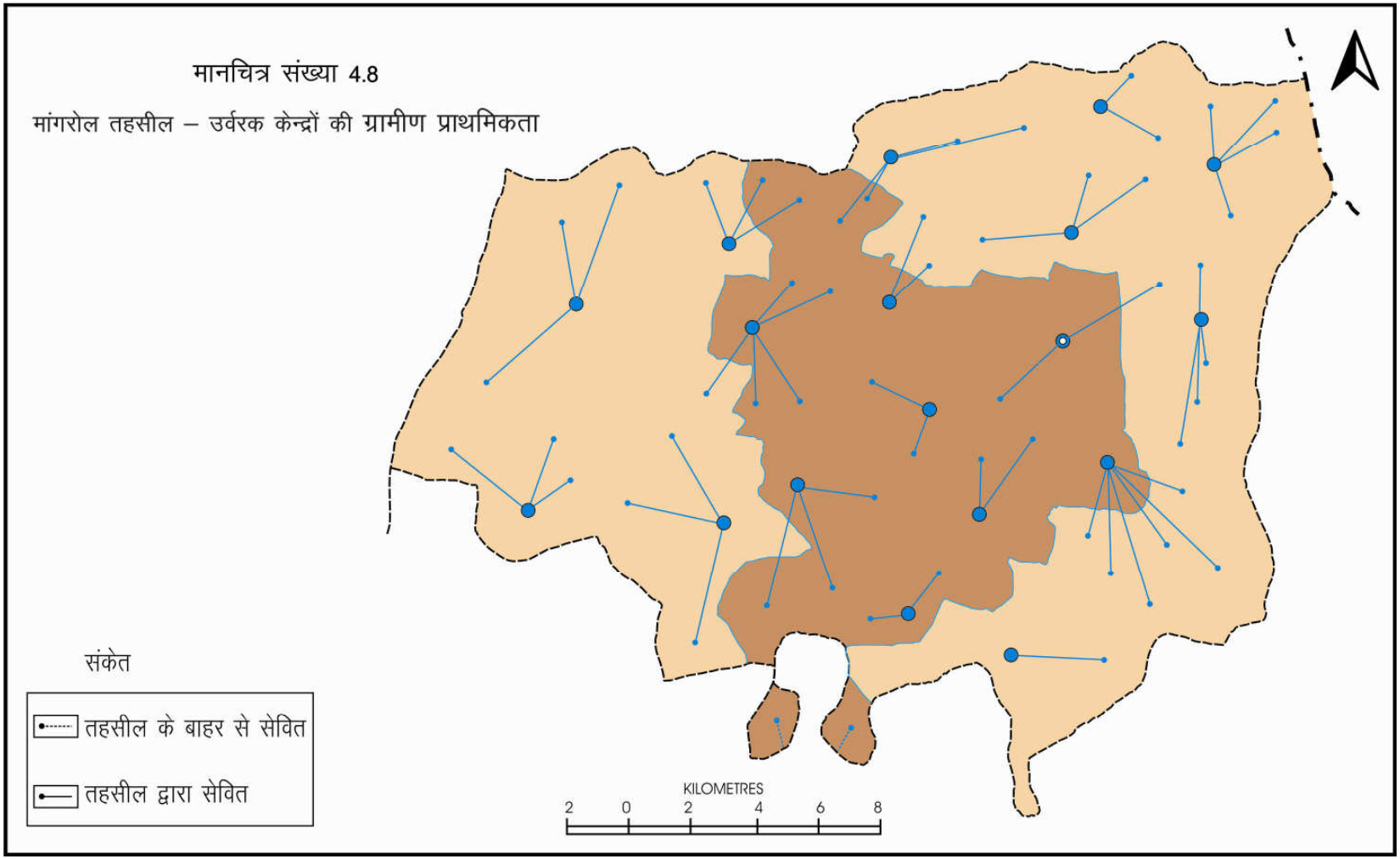

हैं। पश्चिमी भाग में सीसवाली, रायथल, उदपुरिया, तिसाया में उर्वरक एवं कीटनाशक केन्द्र स्थित हैं। जिसमें सर्वाधिक सुविधायें सीसवाली केन्द्र से प्राप्त होती है। यहाँ पर अधिकतम व्यक्तियों द्वारा सुविधाओं का उपभोग किया जाता है।

(स) <u>पशु चिकित्सा केन्द्रों को ग्रामीण प्राथमिकता</u>–

कृषि कार्य के साथ–साथ पशुपालन भी कृषकों का मुख्य व्यवसाय है। दूध, दही, घी, मक्खन, पनीर आदि सुविधाओं के लिए किसान कृषि के साथ–साथ पशु पालन भी करता है। इसी कारण पशु चिकित्सा केन्द्रों की प्राथमिकता भी ग्रामीण अधिवासों में देखी गयी है। मानचित्र संख्या 4.9 के अनुसार अध्ययन क्षेत्र में कुल 18 पशु चिकित्सा केन्द्र स्थित हैं परन्तु इन शिक्षा केन्द्रों में चिकित्सक उपलब्ध नहीं होने के कारण ग्रामीणों की प्राथमिकता सीसवाली, मांगरोल, बम्बोरीकलां अधिवास सेवा केन्द्रों पर अधिक हैं। अपितु चिकित्सक उपलब्ध होने पर यह सुविधा पंचायत मुख्यालय पर उपलब्ध है। जहाँ पर सर्वाधिक चिकित्सा केन्द्र मध्य भाग में स्थित है। क्योंकि इस भाग में अधिवासों का प्रारूप संकेन्द्रित है। मध्य भाग में इन सेवा केन्द्रों की संख्या 8 है तथा पूर्वी भाग में सेवा केन्द्रों की संख्या 6 है। पश्चिमी भाग में मात्र 4 सेवा केन्द्र हैं। इस प्रकार कुल 18 सेवा केन्द्र 72 अधिवासों को अपनी सेवायें दे रहे हैं। शेष 2 सेवा केन्द्र हरसोली एवं बलदेवपुरा बाराँ जिला मुख्यालय के पास होने के कारण तहसील के बाहर से सेवा प्राप्त करते हैं।

इस प्रकार कृषि के आधार पर विभिन्न आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए व्यक्तियों का प्रवाह विभिन्न सेवा केन्द्रों की ओर होता है। कहीं सेवा केन्द्रों के आधार पर व्यक्ति प्रतिदिन सेवा केन्द्रों की ओर गमन करता है। इस प्रकार अन्य क्षेत्रों से अन्तर्सम्बद्धता बनी रहती है।

4.5.2 अकृषि कार्यों के बाजारीय प्रवाह की रिक्तता एवं बहुलता –

विभिन्न सेवा केन्द्रों में कृषि कार्यों के अतिरिक्त अन्य कार्यों के आधार पर भी बाजारीय प्रवाह देखने को मिलता है। अध्ययन क्षेत्र में बैंकिंग, प्रशासनिक सेवा, राजस्व सेवा, तहसील मुख्यालय सम्बन्धी, थोक एवं खुदरा

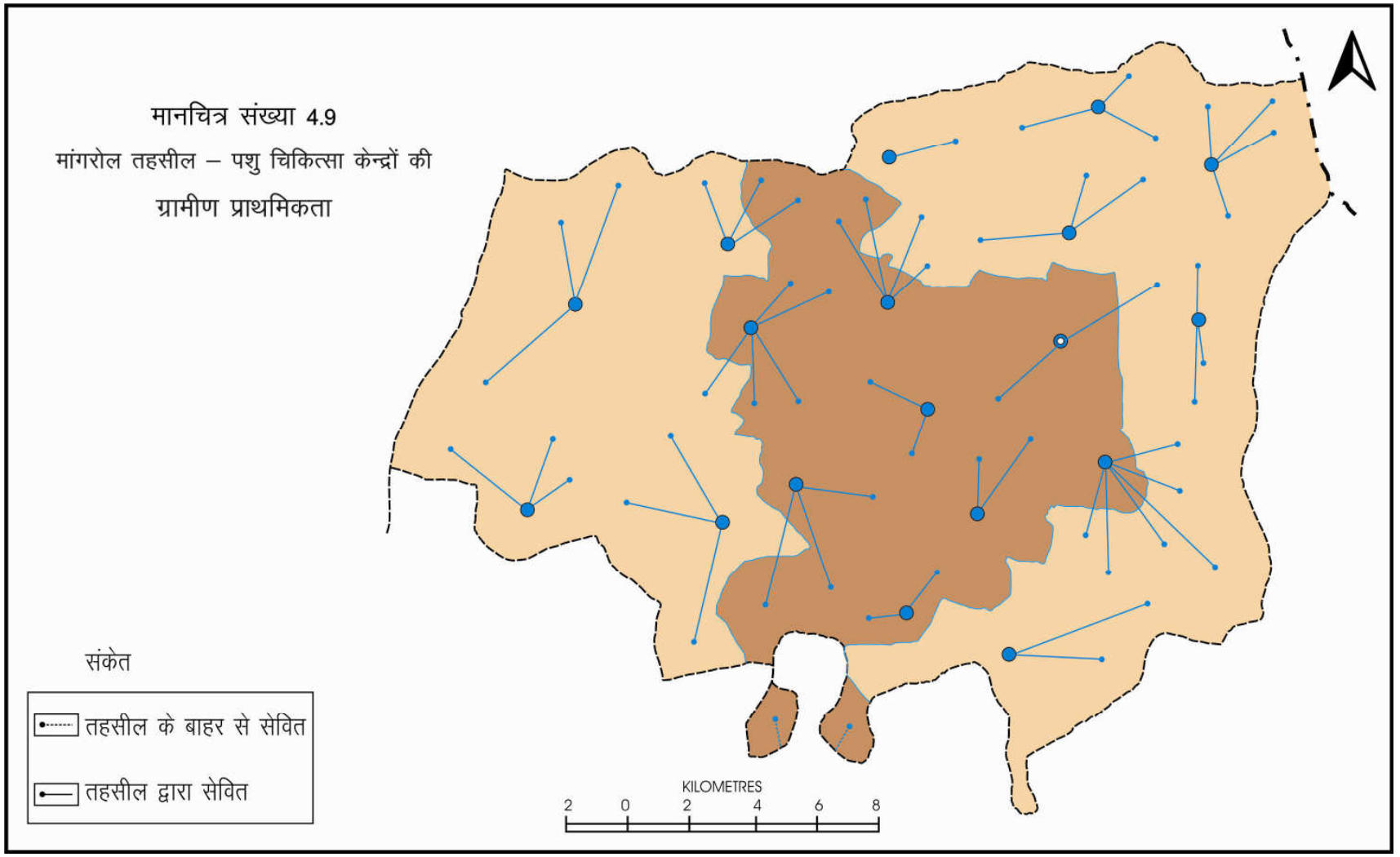

मानचित्र संख्या 4.9
मांगरोल तहसील – पशु चिकित्सा केन्द्रों की
ग्रामीण प्राथमिकता
संकेत
तहसील के बाहर से सेवित
तहसील द्वारा सेवित
KILOMETRES
2 0 2 4 6 8

बाजार एवं अन्य सुविधाओं हेतु बाजारीय प्रवाह बना रहता है। परन्तु अधिकांशतः व्यक्तियों के आवागमन बैंकिंग सेवा के आधार पर होता है।

(अ) <u>बैंकिंग सेवाओं को ग्रामीण प्राथमिकता</u>–

अध्ययन क्षेत्र में सहकारी बैंकों के अतिरिक्त विनिमय बैंक, राष्ट्रीयकृत एवं ग्रामीण बैंक स्थित हैं। जिनके द्वारा अधिकतम अधिवासों को सेवायें प्रदान की जाती है। मानचित्र संख्या 4.10 के अनुसार पूर्वी एवं पश्चिमी भागों में 2–2 बैंक सेवा केन्द्र स्थित हैं। जहाँ पर विभिन्न बैंक सेवायें देते हैं। यहाँ पर पूर्वी भाग में बम्बोरीकलां व बोहत में ग्रामीण बैंक स्थित हैं तथा पश्चिमी भाग में सीसवाली एवं रायथल में राष्ट्रीयकृत एवं ग्रामीण बैंक स्थित है। इसी प्रकार मध्य भाग में बैंकिंग सेवाओं के लिए पूर्ण रूप से तहसील मुख्यालय पर निर्भरता बनी रहती है।

बैंकिंग सेवाओं के प्रवाह के आधार पर सर्वाधिक प्रवाह मध्य भाग में देखने को मिलता है। यहाँ पर 41 अधिवास केन्द्रों का प्रवाह तहसील मुख्यालय की ओर बैंकिंग सेवाओं के लिए होता है। यह अधिवास केन्द्र पूर्ण रूप से तहसील मुख्यालय की सेवाओं पर निर्भर हैं। इसी प्रकार पश्चिमी भाग में सीसवाली सेवा केन्द्र की ओर 13 अधिवास सेवा के लिए प्रवाहित होते है एवं रायथल सेवा केन्द्र की ओर 6 सेवा केन्द्र प्रवाहित होते हैं। इसी प्रकार पूर्वी भाग में बोहत सेवा केन्द्र से 5 अधिवास केन्द्रों की अन्तर्सम्बद्धता बनी रहती है तथा बम्बोरीकलां सेवा केन्द्र की ओर सबसे कम प्रवाहितता 4 अधिवासों की होती है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि सर्वाधिक बहुलता मध्य भाग में स्थित है एवं प्रवाह की रिक्तता पश्चिम भाग में एवं पूर्वी भाग में स्थित है। जहाँ पर कम आवासों वाले अधिवास होने के कारण बैंकिंग सेवाऐं उपलब्ध नहीं हैं। इसी कारण बड़े केन्द्रों की ओर प्रवाह की बहुलता देखने को मिलती है तथा अन्य केन्द्रों की ओर इनकी रिक्तता नजर आती है।

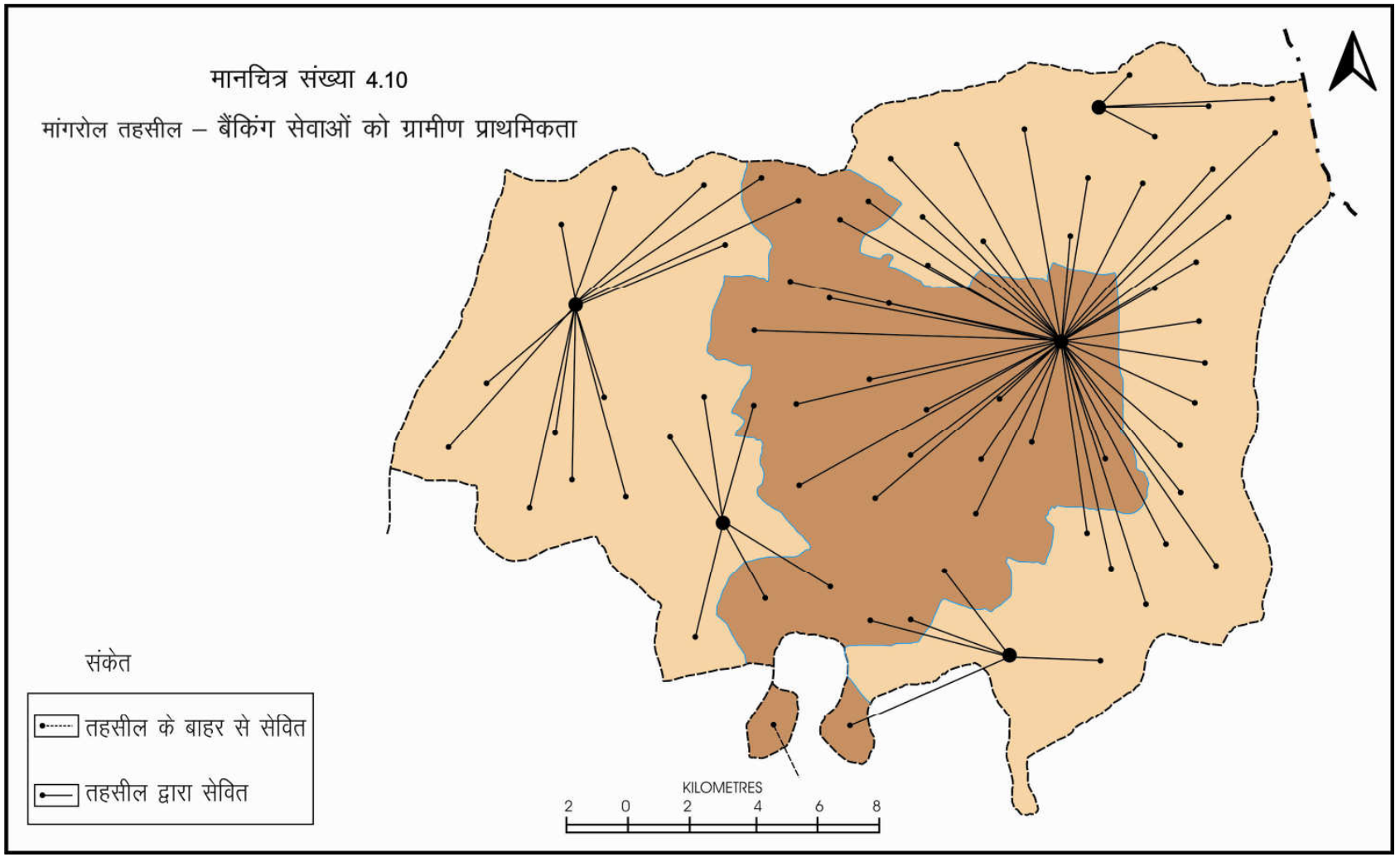

मानचित्र संख्या 4.10
मांगरोल तहसील – बैंकिंग सेवाओं को ग्रामीण प्राथमिकता
संकेत
तहसील के बाहर से सेवित
तहसील द्वारा सेवित
KILOMETRES
2 0 2 4 6 8

4.6 समग्र नियोजन में केन्द्रीय स्थलों की ग्रामीण स्तर पर भूमिका –

किसी भी क्षेत्र के समग्र नियोजित विकास के लिए वहाँ पर विभिन्न सुविधाओं का होना आवश्यक है। विभिन्न सुविधाओं के आधार पर ही उसके नियोजित विकास को परिभाषित किया जा सकता है। यदि सेवा केन्द्रों का सांद्रण केवल केन्द्रीय स्थल की ओर होता है तो धीरे–धीरे अन्य क्षेत्रों को केन्द्रीय स्थल अविकसित बना देता है तथा अधिवासों की आत्मनिर्भरता केन्द्रीय स्थल की ओर बढ़ जाती है। अध्ययन क्षेत्र में विभिन्न तथ्यों के आधार पर स्पष्ट किया जा सकता है कि ग्रामीण स्तर पर विभिन्न प्रकार की सेवायें उपलब्ध होने के कारण क्षेत्र के नियोजित विकास को गति मिलती है तथा इसके द्वारा विभिन्न प्रकार की समग्र नियोजित विकास की संकल्पनायें निर्धारित की जाती हैं। तहसील मांगरोल में विभिन्न पंचायत मुख्यालयों पर मूलभूत आवश्यकताओं एवं कृषि, शिक्षा, चिकित्सा, सामाजिक सुविधा एवं अन्य केन्द्रीय कार्यों की बहुलता होने के कारण समग्र विकास संभव हो सका है। इस आधार पर इसको नियोजित विकास क्षेत्र की श्रेणी में रखा जा सकता है। क्योंकि कुछ अधिवास ही ऐसे हैं जहाँ पर किसी भी प्रकार की सुविधा देखने को नहीं मिलती। जहाँ पर आवासों की संख्या सेवा केन्द्र के अनुसार उचित है वहाँ पर सेवा केन्द्र उपलब्ध हैं।

इस आधार पर ग्रामीण स्तर पर समग्र विकास की संकल्पना निर्धारित की जा सकती है। जिसमें केन्द्रीय स्थल के भार को ग्रामीण अधिवास केन्द्र कम करते हैं तथा पूर्ण रूप से आश्रित न होकर अपने समीप के सेवा केन्द्र से सेवायें प्राप्त करते हैं। इसको नियोजित विकास की श्रेष्ठ श्रेणियों के अन्तर्गत रखा जा सकता है।

5.1 कार्यात्मक पदानुक्रम की भूमिका–

विभिन्न कार्यों के पदानुक्रम का निर्धारण अधिवासों के सेवा भार केन्द्रों के आधार पर किया जाता है। सेवा केन्द्रों का भार अधिक होने से तात्पर्य वहाँ पर केन्द्रीय कार्यों की रिक्तता से है एवं केन्द्रीय भार का कम होना, सेवा केन्द्रों की बहुलता को प्रदर्शित करता है। अध्ययन क्षेत्र में विभिन्न अधिवासों के सेवा केन्द्रों का अध्ययन किया गया तथा सेवा केन्द्रों के आधार पर पदानुक्रम को निर्धारित किया गया। सेवा केन्द्रों को उनके कार्यों के आधार पर विभिन्न समूहों में वर्गीकृत किया गया है। जिसके आधार पर कार्यिक भार ज्ञात किया जा सकता है। कुल 74 अधिवासों में से 12 अधिवासों का विभिन्न सेवाओं का समावेश किया गया। इसमें गैर आबादीत 6 अधिवासों को अध्ययन में शामिल नहीं किया गया। इस प्रकार आबादी अधिवासों के सेवा केन्द्रों का पदानुक्रम निर्धारित किया गया जिसमें 1 तहसील अधिवास नगरीय एवं 73 ग्रामीण अधिवासों को विभिन्न सेवा केन्द्रों के भार को प्रदर्शित किया गया है जो निम्न प्रारूप के आधार पर वर्गीकृत किया गया।

1. शैक्षणिक सेवाऐं

   (अ) प्राथमिक विद्यालय (ब) उच्च प्राथमिक विद्यालय

   (स) माध्यमिक विद्यालय (द) उच्च माध्यमिक विद्यालय

   (य) महाविद्यालय

2. चिकित्सा सेवाऐं

   (अ) प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र (ब) उप स्वास्थ्य केन्द्र

   (स) परिवार कल्याण केन्द्र (द) चिकित्सालय

   (य) डिस्पेंसरी

3. आधारभूत सेवाऐं

   (अ) जलापूर्ती (ब) खाद्यापूर्ति (स) विद्युतापूर्ती

4. बैंकिंग सेवाऐं

(अ) राष्ट्रीय बैंक (ब) ग्रामीण बैंक (स) सहकारी बैंक

5. प्रशासनिक सेवाऐं

(अ) तहसील मुख्यालय (ब) पंचायत मुख्यालय

(स) राजस्थान सम्पर्क केन्द्र

6. संचार सेवाऐं

(अ) डाकघर (ब) डाक एवं तार घर

(स) दूरभाष (द) मोबाईल

7. सहकारिता सेवाऐं

(अ) कृषि सहकारी समिति

(ब) अकृषि सहकारी समिति

(स) अन्य सहकारी समिति

8. मनोरंजन सेवाऐं

(अ) खेल का मैदान (ब) पुस्तकालय (स) डिश एंटिना

9. कृषि सेवाऐं

(अ) बीज एवं उर्वरक केन्द्र

10. वाणिज्य सेवाऐं

(अ) थोक बाजार

(ब) खुदरा बाजार

11. पशु सेवाऐं

(अ) पशु चिकित्सा केन्द्र

12. उच्च स्तरीय सेवाऐं

(अ) विश्राम गृह

5.2 चयनित कार्यों के मूल्यांकन के आधार पर पदानुक्रम–

अध्ययन क्षेत्र में विभिन्न प्रकार की सेवाओं का मूल्यांकन किया गया एवं केन्द्रीय भार सूचकांक का निर्धारण एन.एल.भट्ट महोदय के करनाल हरियाणा के कार्यिक भार सूचकांक का प्रयोग करते हुए किया गया। जिसमें विभिन्न सेवाओं का कार्यिक भार निम्न सूत्र के आधार पर ज्ञात किया गया।

W1 = N/F1

W1= कार्य का कार्यभार

N= कुल अधिवासों की संख्या

F1 = कार्य उपकार्य रखने वाले अधिवासों की संख्या

अध्ययन क्षेत्र में कार्यिक भार का निर्धारण केन्द्रीय कार्यों की संख्या के आधार पर किया गया। जहाँ पर अधिवासों में सेवा केन्द्रों की संख्या अधिक हैं वहाँ पर केन्द्रीय भार कम एवं जहाँ पर सेवा केन्द्रों की संख्या कम है वहाँ पर केन्द्रीय भार अधिक प्राप्त हुआ। इस प्रकार सेवा केन्द्रों के साथ केन्द्रीय भार का युत्तक्रमानुपाती सम्बन्ध प्रदर्शित होता है। तालिका संख्या 5.1 के अनुसार अध्ययन क्षेत्र में सर्वाधिक कार्यभार प्रशासनिक सेवाओं में तहसील मुख्यालय केन्द्र का प्राप्त हुआ एवं न्यूनतम कार्यभार आवश्यक सेवाओं में जलापूर्ती, खाद्यापूर्ती, विद्युतापूर्ती एवं मनोरंजन के साधनों में डिश एंटिना जैसी सेवाओं का प्राप्त हुआ। अध्ययन क्षेत्र में 12 समूहों में कुल 34 सेवाओं को सम्मिलित किया गया। जिनका कार्यिक भार तालिका में वर्णित है।

तालिका संख्या 5.1 के अनुसार पूर्वी भाग में 31 अधिवासों में कुल 292 सेवा केन्द्र हैं। इस प्रकार औसत सेवा केन्द्रों की संख्या 9 के लगभग है। मध्य भाग में 28 अधिवासों में 291 सेवा केन्द्र हैं। जिसमें औसत अधिवास लगभग 10 हैं तथा पश्चिमी भाग में 15 अधिवासों में 171 सेवा केन्द्र हैं जिनमें औसत सेवा केन्द्र लगभग 11 हैं।

तालिका संख्या 5.1 : मांगरोल तहसील – सेवाओं का कार्य भार

क्र.स.	सेवा केन्द्र	पूर्वी भाग	मध्य भाग	पश्चिमी भाग	कुल योग	कार्य भार
1	प्राथमिक विद्यालय	26	24	14	64	1.25
2	उच्च प्राथमिक विद्यालय	18	10	7	35	2.29
3	माध्यमिक विद्यालय	7	9	4	20	4.00
4	उच्च माध्यमिक विद्यालय	7	7	4	18	4.44
5	महाविद्यालय	0	1	1	2	40.00
6	प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र	2	1	2	5	0.00
7	प्राथमिक उप स्वास्थ्य केन्द्र	8	8	3	19	4.21
8	परिवार कल्याण केन्द्र	29	26	13	68	1.18
9	चिकित्सालय	2	1	2	5	16.00
10	डिस्पेन्सरी	2	1	2	5	16.00
11	जलापूर्ती	31	28	15	74	1.08
12	विद्युतापूर्ति	31	28	15	74	1.08
13	खाद्यापूर्ति	31	28	15	74	1.08
14	राष्ट्रीयकृत बैंक	1	4	3	8	10.00
15	ग्रामीण बैंक	7	7	4	18	4.44
16	सहकारी बैंक	7	7	4	18	4.44
17	राजस्थान संपर्क केन्द्र	7	6	4	17	4.71
18	पुस्तकालय	7	7	4	18	4.44
19	खेल का मैदान	0	7	4	11	7.27
20	डाकघर	7	7	4	18	4.44
21	डाक एवं तार घर	6	7	4	17	4.71
22	दूरभाष केन्द्र	6	7	4	17	4.71
23	मोबाईल टावर	0	1	4	5	16.00
24	कृषि सहकारी समिति	6	7	4	17	4.71
25	अकृषि सहकारी समिति	0	0	0	0	0.00
26	अन्य सहकारी समिति	0	0	0	0	0.00
27	तहसील मुख्यालय	0	1	0	1	80.00
28	ग्राम पंचायत मुख्यालय	7	6	4	17	4.71
29	खाद्य एवं उर्वरक	7	7	1	15	5.33
30	पशु चिकित्सा केन्द्र	7	7	4	18	4.44
31	थोक बाजार	0	1	1	2	40.00
32	खुदरा बाजार	2	1	4	7	0.00
33	विश्राम गृह	0	1	2	3	26.67
34	डिश एंटिना	21	28	15	64	1.25
	कुल	**292**	**291**	**171**	**754**	**324.88**

इस प्रकार सर्वाधिक औसत सेवा केन्द्र पश्चिमी भाग में स्थित हैं। यहाँ पर कार्यिक भार न्यूनतम है। क्योंकि बड़े अधिवासों की संख्या अधिक है एवं आश्रित कुल अधिवासों की संख्या कम है। पूर्वी भाग में आश्रित अधिवासों की संख्या अधिक एवं कार्यिक भार अधिकतम है। इस भाग में सेवा केन्द्र अधिक है एवं अधिवासों की संख्या अधिक होने के कारण औसत सेवा केन्द्र अपेक्षित कम हैं।

5.3 केन्द्रीय कार्य के भार का निर्धारण–

केन्द्रीय कार्यों के भार को समायोजित करते हुए केन्द्रीय सूचकांक का निर्धारण किया गया। जिसमें प्रत्येक अधिवास को अधिवास में विभिन्न प्रकार के सेवा केन्द्रों का कार्यिक भार जोड़ते हुए उनका केन्द्रीय सूचकांक ज्ञात किया गया। जिसमें विभिन्न अध्ययन क्षेत्रों का केन्द्रीय सूचकांक परिशिष्ट संख्या–3 द्वारा प्रदर्शित किया गया है। जिसमें सर्वाधिक केन्द्रीय सूचकांक मध्य भाग में एवं न्यूनतम केन्द्रीय सूचकांक पश्चिमी भाग में ज्ञात हुआ। इसमें सर्वाधिक केन्द्रीय भार तहसील मुख्यालय मांगरोल का प्राप्त हुआ।

5.4 केन्द्रीय कार्य एवं जनसंख्या की व्यावसायिक संरचना के आधार पर पदानुक्रम–

अध्ययन क्षेत्र में जनसंख्या आकार एवं केन्द्रीय सूचकांक में 0.93 उच्च स्तरीय धनात्मक सहसम्बन्ध प्राप्त हुआ है। जिसके आधार पर स्पष्ट है कि विभिन्न सेवाओं का सम्बन्ध जनसंख्या आकार से है। जनसंख्या आकार के आधार पर पदानुक्रम निर्धारित है। विभिन्न पदों के आधार पर केन्द्रीय सूचकांक के वितरण का अध्ययन विभिन्न स्तर पर तालिका संख्या 5.2 के आधार पर किया गया है जिसमें कुल 74 अधिवासों के विभिन्न केन्द्रीय सूचकांक का निर्धारण किया गया तथा उसे विभिन्न चरणों में विभाजित किया गया। सर्वाधिक पदानुक्रम 5वें स्तर पर 56 अधिवासों का प्राप्त हुआ। जिनका प्रतिशत 75.68 है तथा चतुर्थ स्तर का पदानुक्रम में 11 अधिवास सम्मिलित हैं जिनका प्रतिशत 14.86 प्राप्त हुआ। तृतीय स्तर के 4 अधिवास स्थित हैं जिनका कुल प्रतिशत 5.42 प्राप्त हुआ। द्वितीय स्तर पर पश्चिमी भाग का रायथल अधिवास सम्मिलित किया गया जो कुल अधिवासों का 1.35

प्रतिशत भाग रखता है। प्रथम स्तर पर 2 अधिवासों को सम्मिलित किया गया जिसमें 1 तहसील मुख्यालय मांगरोल एवं दूसरा पश्चिमी भाग का सीसवाली कस्बा सम्मिलित किया गया। जहाँ पर केन्द्रीय सूचकांक क्रमशः 338.52 एवं 266.81 है। इस प्रकार के पदानुक्रम में सर्वाधिक सेवा केन्द्र स्थित हैं। क्योंकि अधिवास का आकार विस्तृत है एवं अधिक जनसंख्या रखता है।

तालिका संख्या 5.2 : मांगरोल तहसील – केन्द्रीय सूचकांक के विभिन्न पदानुक्रम के आधार पर अधिवासों की संख्या एवं प्रतिशत

पदानुक्रम स्तर	केन्द्रीय सूचकांक	अधिवासों की संख्या	प्रतिशत
I	200 से अधिक	2	2.70
II	151 से 200	1	1.35
III	101 से 150	4	5.41
IV	51 से 100	11	14.86
V	50 से कम	56	75.68
योग		**74**	**100.00**

ग्राफ संख्या 6.1 : मांगरोल तहसील – जनसंख्या एवं सेवा केन्द्रों के कार्यिक भार का सहसम्बन्ध

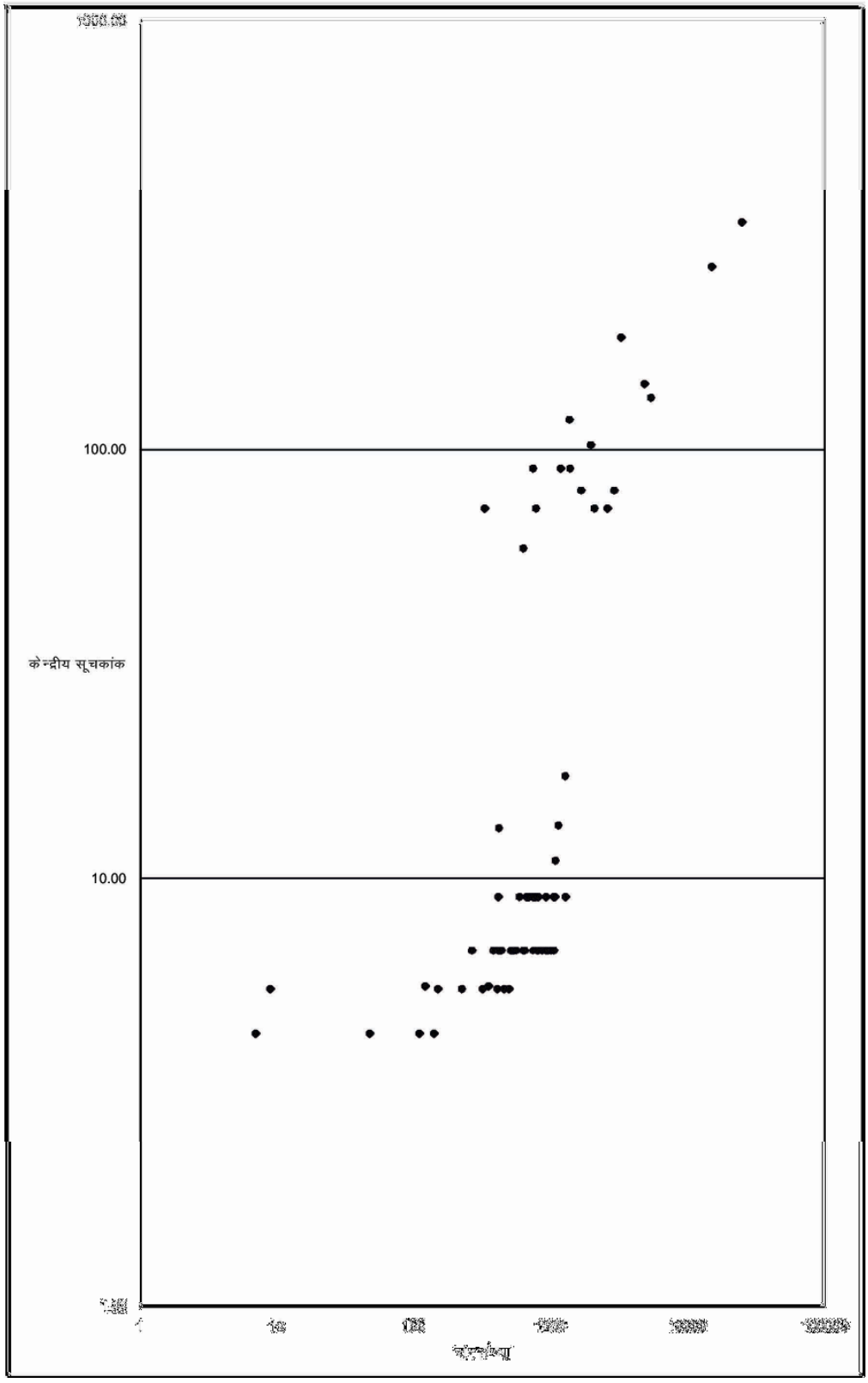

5.4.1 पदानुक्रम का स्थानिक वितरण–

प्रथम स्तर के अधिवास–

इन अधिवासों में उच्च सेवा युक्त अधिवासों को सम्मिलित किया गया है। आरेख संख्या 5.1 एवं तालिका संख्या 5.2 के अनुसार मांगरोल व सीसवाली अधिवास को प्रथम स्तर के अधिवास में सम्मिलित किया गया है। मांगरोल अधिवास में कुल 135 सेवाऐं हैं जिनके कार्यभार का केन्द्रीय सूचकांक 338.52 प्राप्त हुआ तथा सीसवाली अधिवास में 86 सेवाओं के कार्यभार का केन्द्रीय सूचकांक 266.81 प्राप्त हुआ। इन अधिवासों में 29 प्रकार की सेवाऐं उपलब्ध हैं तथा मांगरोल तहसील मुख्यालय होने के कारण एवं सीसवाली बड़ा कस्बा होने के कारण यह पदानुक्रम के प्रथम स्थान पर है। यहाँ पर लगभग सभी प्रकार की सेवाऐं उपलब्ध हैं जहाँ से संलग्न अधिवास सेवाऐं प्राप्त करते हैं। इस प्रकार यह अधिवास विभिन्न अधिवासों को अपनी सेवाऐं दे रहे हैं। यहाँ पर कार्यात्मक रिक्तता का अभाव देखने को मिलता है एवं केन्द्रीय भार अपेक्षित स्थानों से कम है। प्रथम स्तर के अधिवासों में पूर्वी भाग का एक भी अधिवास सम्मिलित नहीं किया गया क्योंकि यहाँ पर अधिकतम केन्द्रीय भार बम्बोरीकलां का है जो कि तृतीय श्रेणी के पदानुक्रम में सम्मिलित है। इसका मुख्य कारण तहसील मुख्यालय के निकटतम दूरी पर होना है।

द्वितीय स्तर के अधिवास–

इस पदानुक्रम के अन्तर्गत केवल पश्चिमी भाग के रायथल अधिवास को सम्मिलित किया गया है। जहाँ पर कुल 37 सेवा केन्द्र हैं तथा यहाँ पर कुल 27 प्रकार की सेवाओं के केन्द्रीय भार का केन्द्रीय सूचकांक 182.60 हैं। इस प्रकार इस श्रेणी के पदानुक्रम में केवल 1 अधिवास सम्मिलित है। अन्य अधिवास विभिन्न सेवाओं के लिए प्रथम श्रेणी एवं तृतीय श्रेणी के अधिवासों पर निर्भर है। इस प्रकार के अधिवास कम होने का मुख्य कारण पूर्वी भाग एवं मध्य भाग में अधिवासों की स्थानिक निकटता है। जिससे बड़े अधिवासों से विभिन्न प्रकार की सेवाऐं उपलब्ध हो जाती है। जिसके कारण सेवाओं की

मांग का अभाव रहता है। यही कारण है कि इस भाग में अन्य कोई द्वितीय श्रेणी पदानुक्रम में सम्मिलित नहीं हो पाये।

तृतीय स्तर के अधिवास–

इस श्रेणी के अधिवासों में केन्द्रीय सूचकांक के आधार पर पूर्वी भाग के 2 अधिवास, पश्चिमी भाग के 2 अधिवासों को सम्मिलित किया गया है। जहाँ पर 22 से 26 प्रकार की सेवाऐं उपलब्ध हैं। इस स्तर के अधिवासों के अन्तर्गत पूर्वी भाग का बम्बोरीकलां अधिवास जिसका केन्द्रीय सूचकांक 142. 21 एवं बोहत जिसका केन्द्रीय सूचकांक 132.21 हैं तथा पश्चिमी भाग के अधिवासों में उदपुरिया जिसका केन्द्रीय सूचकांक 117.48, तिसाया जिसका केन्द्रीय सूचकांक 102.15 है। इस प्रकार इन अधिवासों में विभिन्न प्रकार की सेवाऐं उपलब्ध हैं।

उच्च स्तरीय सेवाओं का अभाव होने के कारण यह तृतीय श्रेणी के अधिवासों में सम्मिलित है। अन्य सभी आवश्यक प्रकार की सेवाऐं इन अधिवासों को प्राप्त हैं। यह अधिवास विभिन्न अधिवासों को अपनी सेवाऐं देते हैं तथा उच्च सेवाओं के लिए प्रथम स्तर के अधिवासों एवं द्वितीय श्रेणी के अधिवासों पर निर्भर हैं।

चतुर्थ स्तर के अधिवास–

इस स्तर के अधिवासों में सर्वाधिक अधिवास मध्य भाग के हैं। जो अधिकांशतः पंचायत मुख्यालय हैं। इनमें शाहपुरा, जलोदा तेजाजी तथा किशनपुरा का केन्द्रीय सूचकांक 90.05 एवं महुआ, ईश्वरपुरा, भटवाड़ा का केन्द्रीय सूचकांक 80.5 है। इस भाग में पंचायत मुख्यालय की अधिकता के कारण अधिक अधिवास इस श्रेणी में सम्मिलित हैं। जबकि पूर्वी भाग में केवल 5 अधिवास सम्मिलित हैं। जिनमें महलपुर, भावगढ़, माल बम्बोरी, महु का केन्द्रीय सूचकांक 72.78 है एवं जारेला का केन्द्रीय सूचकांक 56.66 है। इस प्रकार के अधिवासों से लगभग 18 से 23 प्रकार की सेवाऐं उपलब्ध होती हैं तथा पांचवें स्तर के अधिवासों को इस स्तर के अधिवास केन्द्र सेवाऐं उपलब्ध करवाते हैं। पश्चिमी भाग में इस स्तर का कोई भी अधिवास नहीं

है। इसका मुख्य कारण अधिवासों का अधिक दूरी पर स्थित होना एवं बड़े अधिवासों का अधिक विकसित होना है। जिसके कारण छोटे अधिवास कम सेवाऐं प्राप्त कर रहे हैं।

पंचम स्तर के अधिवास–

इस स्तर के अधिवासों में पूर्वी भाग के 24 अधिवास, मध्य भाग के 21 अधिवास एवं पश्चिमी भाग के 11 अधिवासों को सम्मिलित किया गया है। यहाँ पर 4 से 9 प्रकार की सेवाऐं उपलब्ध हैं। जिसमें अधिकतम केन्द्रीय सूचकांक बोरदा का 17.25 है। यहाँ पर पूर्वी भाग के पगारा, पाली मध्य भाग के इन्द्राहेड़ी एवं पश्चिमी भाग के गोदावरी का न्यूनतम केन्द्रीय सूचकांक 4. 32 है। इस प्रकार इस स्तर के अधिवासों में कुल 56 प्रकार के अधिवासों को सम्मिलित किया गया है जो कुल भाग का 75.78 प्रतिशत है। सर्वाधिक अधिवास इस स्तर में सम्मिलित हैं क्योंकि अध्ययन क्षेत्र में छोटे अधिवासों की संख्या अधिक हैं। जहाँ पर मूलभूत आवश्यकताओं के सेवा केन्द्र सेवा दे रहे हैं। अन्य उच्च स्तरीय सेवाओं के लिए पदानुक्रम के उच्च स्तर वाले अधिवासों पर निर्भर हैं।

5.4.2 जनसंख्या की व्यवसायिक संरचना के आधार पर पदानुक्रम–

मांगरोल तहसील में कुल 80 अधिवासों में गैर प्राथमिक कार्यों में संलग्न व्यक्तियों की संख्या 48652 है। जिनकी जनसंख्या बड़े अधिवासों में अधिक है। सर्वाधिक गैर प्राथमिक कार्यों में संलग्न व्यक्तियों की संख्या मध्य भाग के नगर अधिवास मांगरोल में स्थित है। यहाँ पर कुल संलग्न व्यक्तियों की संख्या 10123 है जो कि कुल जनसंख्या का लगभग 20 प्रतिशत भाग है। अधिवासों की केन्द्रीयता एवं पदानुक्रम के आधार पर ज्ञात होता है कि सर्वाधिक सांद्रण बड़े अधिवासों में अधिक सेवाओं के कारण स्थित है। क्षेत्र में अधिवासों की केन्द्रता ज्ञात करने के लिए निम्न सूत्र के आधार पर जनसंख्या केन्द्रीयता ज्ञात की जा सकती है। इसमें कुल जनसंख्या एवं अधिवासों की जनसंख्या के आधार पर केन्द्रीयता का मूल्य ज्ञात किया जाता है। जो निम्न प्रकार है –

$$C = \frac{N100}{P}$$

C = केन्द्रीयता मूल्य

N = अधिवास में व्यवसाय में संलग्न व्यक्तियों की संख्या

P = सम्पूर्ण क्षेत्र में व्यवसाय में संलग्न व्यक्तियों की संख्या

5.4.3 जनसंख्या की व्यवसायिक संरचना के आधार पर पदानुक्रम–

व्यवसायिक संरचना के आधार पर जनसंख्या को विभिन्न पदानुक्रम में विभाजित किया गया। इसमें तालिका संख्या 5.3 के अनुसार प्रथम श्रेणी के अधिवासों की संख्या कम एवं पंचम श्रेणी के अधिवासों की संख्या अधिक हैं। जिसमें जनसंख्या की केन्द्रीयता का मूल्य सम्पूर्ण अध्ययन क्षेत्र में 0.01 से लेकर 20.81 तक है। इस प्रकार जनसंख्या केन्द्रीयता सूचकांक अधिवासों में सतत् रूप से वृद्धि करता हुआ प्रदर्शित होता है। क्योंकि जनसंख्या के आकार के आधार पर जनसंख्या सूचकांक निर्धारित है। जैसे–जैसे जनसंख्या बढ़ती जाती है वैसे–वैसे जनसंख्या सूचकांक की दर भी बढ़ती जाती है। इसको विभिन्न पदानुक्रम में निम्न प्रकार से विभाजित किया गया है।

तलिका संख्या 5.3 – मांगरोल तहसील – जनसंख्या की व्यवसायिक संरचना के आधार पर पदानुक्रम

पदानुक्रम स्तर	केन्द्रीय सूचकांक	अधिवासों की संख्या	प्रतिशत
I	2.00 से अधिक	9	12.16
II	1.51 से 2.00	1	1.35
III	1.01 से 1.50	14	18.92
IV	.51 से 1.00	23	31.08
V	.50 से कम	27	36.49
योग		**74**	**100.00**

ग्राफ संख्या 5.2

मांगरोल तहसील – जनसंख्या एवं व्यवसायिक जनसंख्या केन्द्रीय भार का सहसम्बन्ध

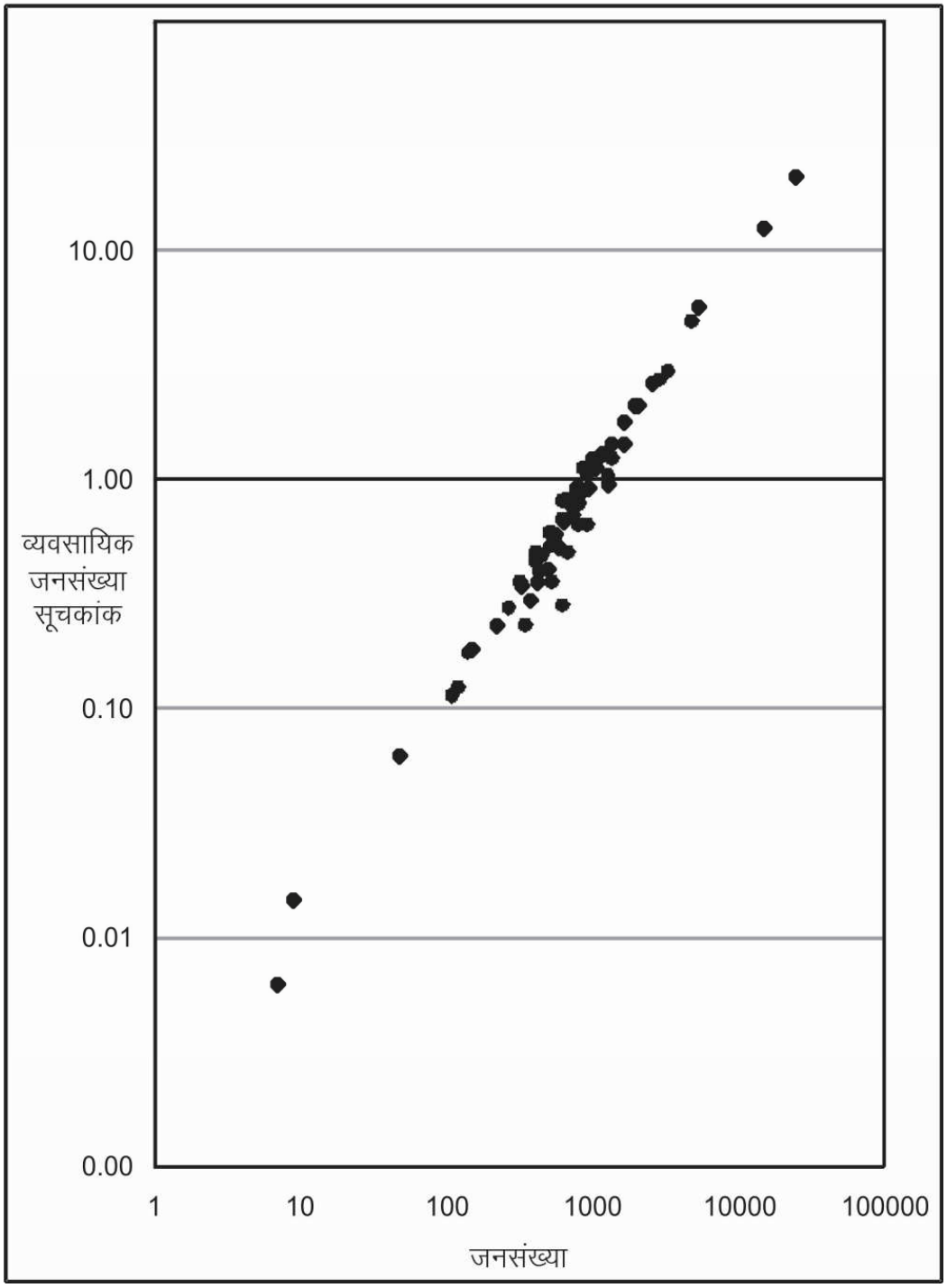

तालिका में प्रथम श्रेणी के पदानुक्रम के अन्तर्गत कुल 9 अधिवास सम्मिलित किये गये हैं जो कि कुल अधिवासों के 12.16 प्रतिशत भाग रखते हैं। इसमें अधिकांशतः बड़े अधिवासों को सम्मिलित किया गया है। जिनका जनसंख्या सूचकांक 2.00 से अधिक है। द्वितीय श्रेणी के पदानुक्रम में केवल 1 अधिवास को सम्मिलित किया गया है जो कि कुल भाग का 1.35 प्रतिशत है। इसमें जनसंख्या सूचकांक 1.51 से लेकर 2.00 तक को सम्मिलित किया गया है। तृतीय श्रेणी के पदानुक्रम में जनसंख्या सूचकांक 1.01 से लेकर 1.50 तक को सम्मिलित किया गया है। जिसमें कुल 14 अधिवास शामिल किये गये हैं। जो कि सम्पूर्ण भाग के 18.92 प्रतिशत हैं। चतुर्थ श्रेणी के पदानुक्रम में जनसंख्या सूचकांक 0.51 से लेकर 1.00 मूल्य वाले अधिवासों को सम्मिलित किया गया है। जिसमें कुल 23 अधिवास सम्मिलित हैं जो कि सम्पूर्ण भाग के 31.08 प्रतिशत है। पंचम श्रेणी के पदानुक्रम में जनसंख्या सूचकांक 0.01 से 0.50 के मूल्य को सम्मिलित किया गया है जिसके अन्तर्गत 27 अधिवास प्रदर्शित हैं जो कि सम्पूर्ण भाग का 36.49 प्रतिशत भाग रखता है। इस प्रकार अध्ययन क्षेत्र में द्वितीय श्रेणी के पदानुक्रम के अधिवास न्यूनतम एवं पंचम श्रेणी के पदानुक्रम के अधिवास अधिकतम हैं। इससे यह स्पष्ट होता है कि जनसंख्या केन्द्रीयता का मूल्य छोटे अधिवासों में कम एवं बड़े अधिवासों में अधिक है।

5.4.4 जनसंख्या की व्यवसायिक संरचना के पदानुक्रम का स्थानिक वितरण–

प्रथम स्तर के अधिवास –

इस पदानुक्रम स्तर के अधिवासों में 9 अधिवास सम्मिलित हैं। जिसमें पूर्वी भाग के माल बम्बोरी, मऊ, बम्बोरीकलां, बोहत को सम्मिलित किया गया है एवं मध्य भाग भटवाड़ा, मांगरोल को सम्मिलित किया गया है। इस श्रेणी में पश्चिमी भाग में सीसवाली, रायथल, तिसाया सम्मिलित हैं। इनमें सर्वाधिक केन्द्रीयता मूल्य मांगरोल नगर अधिवास का 20.81 है एवं इसके बाद सीसवाली अधिवास का 12.37 है। इस प्रकार प्रथम श्रेणी के अधिवासों

में सर्वाधिक अधिवास पूर्वी भाग में स्थित है। इसका मुख्य कारण पंचायत मुख्यालय पर जनसंख्या की व्यवसायिक संरचना अधिक है।

द्वितीय स्तर के अधिवास–

इस श्रेणी में केवल एक अधिवास महुआ सम्मिलित किया गया है जो कि मध्य भाग में स्थित है। जिसका केन्द्रीयता मूल्य 1.75 है। यह पंचायत मुख्यालय होने के साथ–साथ नगर मुख्यालय के नजदीक स्थित है। इसी कारण यहाँ पर व्यवसायिक संरचना अधिक है। यही कारण है कि यह अधिवास द्वितीय श्रेणी के अधिवासों में सम्मिलित है। अन्य भागों में इस श्रेणी का कोई अधिवास नहीं है।

तृतीय स्तर के अधिवास–

इन अधिवासों में सर्वाधिक अधिवास मध्य भाग में स्थित हैं। इनमें पाड़लिया, हिंगोनिया, जलोदा तेजाजी, बोरदा, शाहपुरा, ईश्वरपुरा सम्मिलित हैं। पूर्वी भाग में झाड़वा, भगवानपुरा, सीमलिया, रावल–जावल एवं पश्चिमी भाग में पटपड़ा, छत्रपुरा, सोनवा, उदपुरिया अधिवास सम्मिलित हैं। इस प्रकार अध्ययन क्षेत्र में कुल 14 प्रकार के अधिवास जो तृतीय स्तर के पदानुक्रम में सम्मिलित किये गये हैं। जिनका केन्द्रीय मान 1.05 से लेकर 1. 41 तक है। जिसमें सर्वाधिक केन्द्रीय मान शाहपुरा ग्राम पंचायत मुख्यालय का 1.41 है जो मध्य भाग में स्थित है। इस श्रेणी के अधिकांश अधिवास मुख्य सड़क मार्ग से जुड़े हुए हैं।

चतुर्थ स्तर के अधिवास–

इस श्रेणी के अधिवासों में सर्वाधिक अधिवास पूर्वी भाग में गोपालपुरा, रामपुरा भक्तान, जारेला, सिंगोला, बालापुरा, रिझिया, मूंडिया, भोजाहेड़ी, बालून्दा, रेनगढ़, भावगढ़ सहित कुल 11 हैं तथा पश्चिमी भाग में मून्डला, पापड़ली, पाकलखेड़ा जैसे 3 अधिवास हैं। मध्य भाग में इस प्रकार के कुल 9 अधिवास सोकन्दा, चेनपुरिया, जैतलहेड़ी, श्रीनाल, किशनपुरा, बलदेवपुरा, मूंडली, कूंडला हैं। इस श्रेणी के अधिवासों की संख्या पूर्वी भाग में अधिक होने का मुख्य कारण तहसील मुख्यालय के नजदीकी अधिवासों की संख्या

पूर्वी भाग में अधिक होना है तथा पश्चिमी भाग में तहसील मुख्यालय की दूरी अधिक होने के कारण यहाँ पर इस श्रेणी के अधिवास कम हैं।

पंचम श्रेणी के अधिवास–

इस श्रेणी के सर्वाधिक अधिवास पूर्वी भाग में स्थित हैं तथा न्यूनतम अधिवास पश्चिमी भाग में स्थित हैं। पूर्वी भाग में अधिवासों की संख्या 12 मध्य भाग में 10 तथा पश्चिमी भाग में 5 हैं। इस प्रकार निम्न स्तर पर व्यवसायिक संरचना के अधिवासों की संख्या इस श्रेणी के अधिवासों में अधिक होने के कारण है।

5.4.5 संयुक्त केन्द्रीयता भार के आधार पर अधिवासों का पदानुक्रम –

अध्ययन क्षेत्र में कुल कार्यिक भार एवं जनसंख्या केन्द्रीयता भार को जोड़ते हुए संयुक्त केन्द्रीय भार का निर्धारण किया गया। जिसको विभिन्न पाँच स्तरों में विभाजित किया गया हैं। तालिका संख्या 5.4 एवं ग्राफ संख्या 5.3 के अनुसार संयुक्त केन्द्रीय भार के मूल्य का निर्धारण प्रथम श्रेणी में 200 से अधिक, द्वितीय श्रेणी में 151 से 200, तृतीय श्रेणी 101 से 151, चतुर्थ श्रेणी में 51 से 100, पंचम श्रेणी में 50 से कम में किया गया। इस प्रकार तालिका संख्या 5.4 के अनुसार प्रथम स्तर के संयुक्त केन्द्रीयता भार वाले अधिवासों की संख्या 2 है जो 2.70 प्रतिशत भाग रखते हैं। द्वितीय श्रेणी के भार वाले अधिवासों की संख्या 1 है जो 1.35 प्रतिशत भाग पर स्थित है। पदानुक्रम के तृतीय स्तर पर कुल 4 अधिवास सम्मिलित किये गये हैं जो कुल क्षेत्र के 5.40 प्रतिशत भाग पर स्थित हैं। चतुर्थ श्रेणी के कुल 11 अधिवास संयुक्त केन्द्रीय भार के अन्तर्गत रखे गये हैं। जो 14.86 प्रतिशत भाग पर स्थित हैं। पदानुक्रम के पांचवें स्तर पर सर्वाधिक 56 अधिवास हैं जो कुल भाग के 75.68 प्रतिशत भाग पर स्थित हैं। इस प्रकार संयुक्त केन्द्रीयता भार में सर्वाधिक अधिवास पांचवें स्तर के एवं न्यूनतम अधिवास दूसरे स्तर के हैं। इसका मुख्य कारण अध्ययन क्षेत्र में छोटे अधिवासों की संख्या का अधिक होना है एवं बड़े अधिवासों की संख्या का कम होना है। यहाँ पर बड़े अधिवासों में नगर मुख्यालय के अतिरिक्त सीसवाली एवं रायथल अधिवास हैं।

ग्राफ संख्या 5.3

मांगरोल तहसील – जनसंख्या एवं संयुक्त केन्द्रीय भार का सहसम्बन्ध

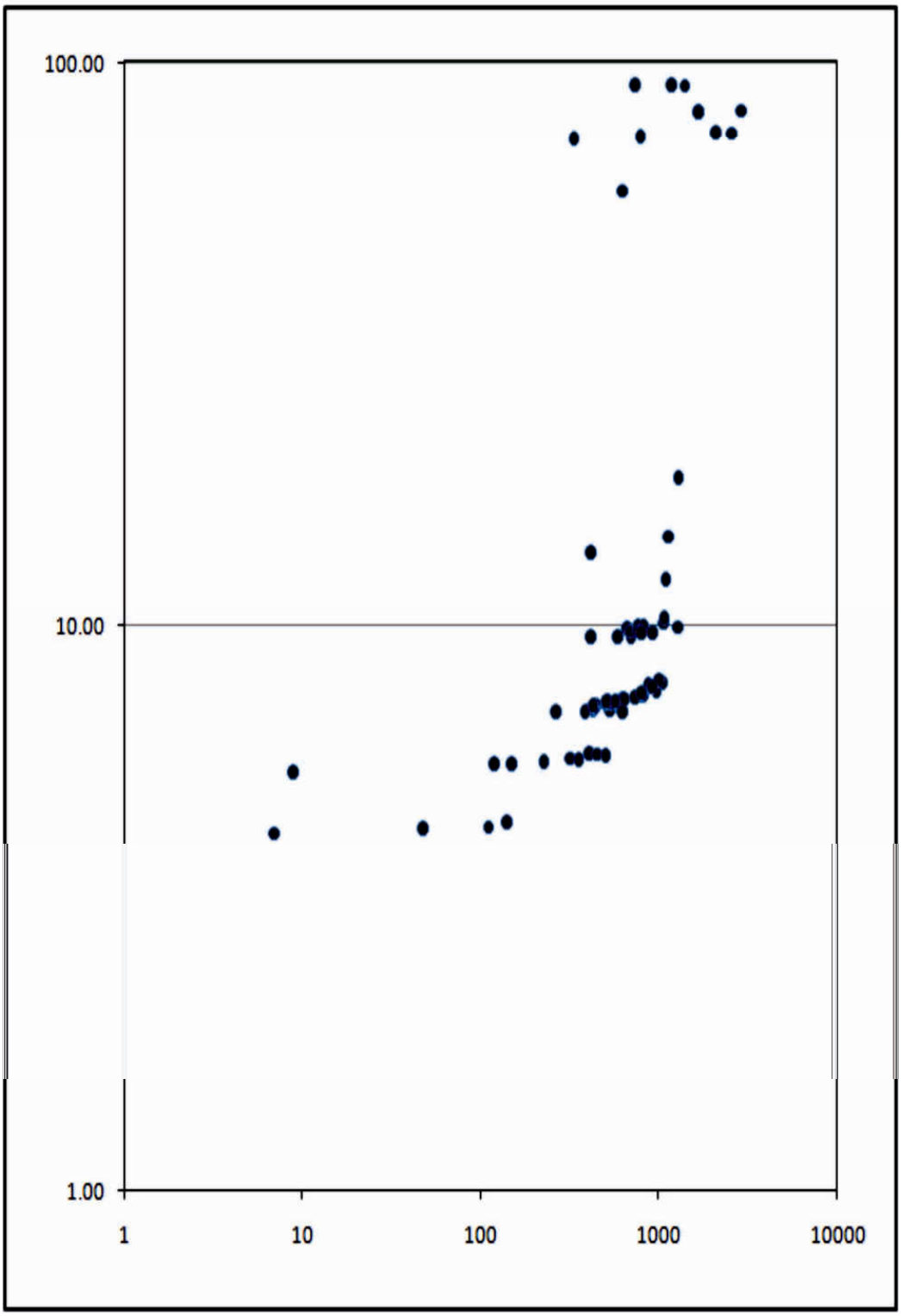

तालिका संख्या 5.4 : मांगरोल तहसील – संयुक्त केन्द्रीय भार के आधार पर अधिवासों का पदानुक्रम के अनुसार वितरण

पदानुक्रम स्तर	केन्द्रीय सूचकांक	अधिवासों की संख्या	प्रतिशत
I	200 से अधिक	2	2.70
II	151 से 200	1	1.36
III	101 से 150	4	5.40
IV	51 से 100	11	14.86
V	50 से कम	56	75.68
योग		**74**	**100.00**

इस तालिका में गैर आबादित 6 अधिवासों को सम्मिलित नहीं किया गया है।

5.4.6 संयुक्त केन्द्रीय भार का स्थानिक वितरण–

प्रथम स्तर के अधिवास–

इसमें 200 से अधिक केन्द्रीय भार वाले कुल 2 अधिवासों को सम्मिलित किया गया है। जिसमें पश्चिमी भाग का सीसवाली अधिवास सम्मिलित है। जिसका संयुक्त केन्द्रीय भार 279.19 है एवं पूर्वी भाग का मांगरोल अधिवास जिसका संयुक्त केन्द्रीय भार 359.33 है। इस प्रकार इन अधिवासों का प्रतिशत 2.70 है। संयुक्त केन्द्रीयता भार के अधिवासों की

संख्या अध्ययन क्षेत्र में कम होने का मुख्य कारण बड़े अधिवासों की संख्या कम होना है। अध्ययन क्षेत्र में केवल 2 ही अधिवास बड़े अधिवासों की श्रेणी में है। यही कारण है कि इस स्तर के अधिवासों में कम अधिवास सम्मिलित हैं।

द्वितीय स्तर के अधिवास–

इस प्रकार के अधिवासों में 151 से 200 संयुक्त केन्द्रीयता भार वाले अधिवासों को सम्मिलित किया गया है। इसमें पश्चिमी भाग का एक मात्र रायथल अधिवास सम्मिलित है। जिसका संयुक्त केन्द्रीय भार 185.55 है एवं अधिवासों का प्रतिशत 1.35 है।

तृतीय स्तर के अधिवास–

संयुक्त केन्द्रीयता भार वाले अधिवासों में इस श्रेणी के अधिवास का भार 101 से 150 है। इस प्रकार के अधिवासों की संख्या अध्ययन क्षेत्र में कम है। इस श्रेणी में उदपुरिया, तिसाया, बम्बोरीकलां, बोहत जैसे 4 अधिवास सम्मिलित हैं। इस प्रकार के अधिवास पश्चिमी एवं पूर्वी भाग में 2–2 हैं।

चतुर्थ स्तर के अधिवास–

इसमें 51 से 100 संयुक्त केन्द्रीय भार वाले अधिवासों को सम्मिलित किया गया है। जिसके अन्तर्गत कुल 11 अधिवास आते हैं। पश्चिमी भाग में इस श्रेणी का एक भी अधिवास नहीं है। पूर्वी भाग में इस श्रेणी के 5 अधिवास एवं मध्य भाग में 6 अधिवास हैं। तहसील मुख्यालय की समीपता के कारण संयुक्त भार इसी भाग में अधिक है एवं छोटे अधिवासों में केन्द्रीय भार का मूल्य चतुर्थ स्तर का है।

पंचम स्तर के अधिवास–

इस प्रकार के अधिवासों का संयुक्त केन्द्रीय भार 50 से कम है। अध्ययन क्षेत्र में ऐसे कुल 56 अधिवास हैं जो 75.68 प्रतिशत भाग रखते हैं। इस स्तर के सर्वाधिक अधिवास पूर्वी भाग में 24 हैं तथा पश्चिमी भाग में ऐसे

अधिवासों की संख्या 11 एवं मध्य भाग में 21 हैं। इस श्रेणी में ऐसे अधिवासों की संख्या अधिक होने का मुख्य कारण यहाँ की जनसंख्या है। जनसंख्या के आधार पर ही विभिन्न सेवाओं एवं जनसंख्या केन्द्रीयता का निर्धारण होता है।

5.4.7 कार्यात्मक पदानुक्रम एवं जनसंख्या पदानुक्रम के अधिवासों की संख्या का तुलनात्मक वितरण–

तालिका संख्या 5.5 के अनुसार कार्यात्मक पदानुक्रम के अधिवासों की संख्या एवं जनसंख्या की व्यवसायिक पदानुक्रम में अंतर प्रदर्शित किया गया है।

तालिका संख्या 5.5 : मांगरोल तहसील – कार्यात्मक पदानुक्रम एवं जनसंख्या पदानुक्रम के आवासों की संख्या का तुलनात्मक वितरण

पदानुक्रम स्तर	केन्द्रीय सूचकांक	कार्यात्मक पदानुक्रम अधिवासों की संख्या	जनसंख्या पदानुक्रम अधिवासों की संख्या	अंतर
I	200 से अधिक	2	9	7
II	151 से 200	1	1	0
III	101 से 150	4	14	10
IV	51 से 100	11	23	12
V	50 से कम	56	27	29
योग		**74**	**74**	**0**

प्रथम स्तर के अधिवास–

इस स्तर के अधिवासों में कार्यात्मक भार के अधिवासों की संख्या 2 एवं जनसंख्या के अधिवासों की संख्या 9 हैं। दोनों के बीच कुल 7 अधिवासों

का अंतर हैं। दोनों ही प्रकार के पदानुक्रम में मांगरोल एवं सीसवाली प्रथम स्तर में सम्मिलित है। क्योंकि इनका केन्द्रीय भार दोनों में अधिक है।

द्वितीय स्तर के अधिवास–

इन अधिवासों में दोनों में केवल रायथल गाँव को सम्मिलित किया गया है क्योंकि इस श्रेणी का अध्ययन क्षेत्र में यह एक अधिवास है। जिसकी जनसंख्या सीसवाली, मांगरोल के बाद तीसरे स्थान पर है।

तृतीय स्तर के अधिवास–

इस प्रकार के अधिवासों में दोनों पदानुक्रम में सर्वाधिक अंतर देखने को मिलता है। कार्यिक भार में जहाँ 4 अधिवास हैं वहीं व्यवसायिक जनसंख्या भार में 14 अधिवास सम्मिलित हैं। इस प्रकार 10 अधिवासों का अंतर देखने को मिलता है। जिसका मुख्य कारण जनसंख्या के आधार पर अधिवासों का भार निर्धारण होना है।

चतुर्थ स्तर के अधिवास–

इस प्रकार के पदानुक्रम के अंतर्गत कार्यिक भार के 11 अधिवास एवं जनसंख्या में 23 अधिवास सम्मिलित किये गये हैं। जिनमें कुल 12 अधिवासों का अंतर है। इसका मुख्य कारण भी जनसंख्या भार के आधार पर केन्द्रीय भार का निर्धारण है।

पंचम स्तर के अधिवास–

इस प्रकार के अधिवासों में विपरीत सम्बन्ध देखने को मिलता है। यहाँ पर कार्यिक भार वाले अधिवासों की संख्या 56 है जबकि जनसंख्या भार के आधार पर केवल 27 अधिवास इस श्रेणी में सम्मिलित हैं। इसका मुख्य कारण जनसंख्या भार के आधार पर कार्यिक भार की विशिष्टता इस श्रेणी में देखने को मिलती हैं।

5.4.8 कार्यात्मक पदानुक्रम एवं संयुक्त पदानुक्रम में अंतर–

तालिका संख्या 5.6 के अनुसार इसमें 1 से 5 स्तर तक किसी भी अधिवास में अंतर देखने को नहीं मिलता। इसका मुख्य कारण कार्यात्मक पदानुक्रम एवं संयुक्त पदानुक्रम में सकारात्मक सहसम्बन्ध मिलता है। कार्यात्मक पदानुक्रम का मान संयुक्त पदानुक्रम के मान को सर्वाधिक प्रभावित करता है। यही कारण है कि इसमें अंतर देखने को नहीं मिलता।

तालिका संख्या 5.6 : मांगरोल तहसील – कार्यात्मक पदानुक्रम एवं संयुक्त पदानुक्रम के आवासों की संख्या का तुलनात्मक वितरण

पदानुक्रम स्तर	केन्द्रीय सूचकांक	कार्यात्मक पदानुक्रम अधिवासों की संख्या	संयुक्त पदानुक्रम अधिवासों की संख्या	अंतर
I	200 से अधिक	2	2	0
II	151 से 200	1	1	0
III	101 से 150	4	4	0
IV	51 से 100	11	11	0
V	50 से कम	56	56	0
योग		**74**	**74**	**0**

5.4.9 जनसंख्या पदानुक्रम एवं संयुक्त पदानुक्रम में अंतर का वितरण–

इस पदानुक्रम का वितरण भी कार्यात्मक अधिवासों के वितरण के समान ही है। क्योंकि संयुक्त पदानुक्रम के अधिवासों की संख्या कार्यात्मक अधिवासों के समान है। इसी कारण दोनों में समानता है और पदानुक्रम का अंतर उपरोक्त वर्णित कार्यात्मक पदानुक्रम के अनुसार है। जिसका विवरण तालिका संख्या 5.7 में दर्शाया गया है।

पदानुक्रम के आधार पर तीनों श्रेणियों के पदानुक्रम में पदानुक्रम महत्वपूर्ण रूप से कार्यात्मक आधार पर सर्वाधिक प्रभावित है। क्योंकि कार्यात्मक आधार पर अध्ययन क्षेत्र में महत्वपूर्ण सेवाऐं उपलब्ध हैं। इसी

कारण छोटे अधिवासों का कार्यात्मक भार भी जनसंख्या कम होते हुए भी अधिक है। जबकि अन्य अध्ययन क्षेत्रों में ऐसा देखने को नहीं मिलता। वर्तमान में सभी आधुनिकतम मूलभूत आवश्यकताऐं उपलब्ध होने शिक्षा, चिकित्सा एवं अन्य प्राथमिक सुविधाऐं लगभग सभी ग्रामीण अधिवासों में प्राप्त हो जाती हैं।

तालिका संख्या 5.7 : मांगरोल तहसील – जनसंख्या पदानुक्रम एवं संयुक्त पदानुक्रम के आवासों की संख्या का तुलनात्मक वितरण

पदानुक्रम स्तर	केन्द्रीय सूचकांक	जनसंख्या पदानुक्रम अधिवासों की संख्या	संयुक्त पदानुक्रम अधिवासों की संख्या	अंतर
I	200 से अधिक	9	2	7
II	151 से 200	1	1	0
III	101 से 150	14	4	10
IV	51 से 100	23	11	12
V	50 से कम	27	56	29
योग		**74**	**74**	**0**

जिसके कारण कार्यात्मक भार, जनसंख्या भार एवं संयुक्त भार में अधिक अंतर देखने को नहीं मिलता। इसमें कार्यात्मक भार संयुक्त भार को प्रभावित करता है। अध्ययन क्षेत्र में संयुक्त भार का निर्धारण कार्यात्मक भार के अुनसार प्रदर्शित है।

6.1 विभिन्न कार्यों एवं सेवाओं के लिये जनसंख्या का न्यूनतम स्तर –

न्यूनतम जनसंख्या की संकल्पना –

न्यूनतम जनसंख्या की संकल्पना किसी भी अधिवास की कार्यात्मक रिक्तता के आधार पर निर्धारित की जाती है। उसमें विकास की संभावनाऐं आर्थिक सामाजिक स्तर के बीच सामंजस्य स्थापित करती है। इसके लिए सेवित अधिवास एवं गैर सेवित अधिवास का मध्य बिन्दु न्यूनतम जनसंख्या का निर्धारण करता है। प्रत्येक कार्य के लिए निश्चित संख्या का निर्धारण आवश्यक है। जिसका निर्धारण उनकी आवश्यकताओं के आधार पर होता है। कोई भी कार्य एक निश्चित जनसंख्या के आधार पर निर्धारित होता है। जब तक वहां पर निर्धारित जनसंख्या नहीं होती कार्यों की स्थानियता वहां पर रिक्त रहती है। इस प्रकार कार्यात्मक रूप से क्षेत्रों का निर्धारण जनसंख्या के आधार पर निर्धारित होता है। जिसमें किसी कार्य की न्यूनतम सीमा निर्धारित होती है। विभिन्न विद्वानों ने संकल्पना प्रस्तुत की एवं उनकी संकल्पना के आधार पर प्रस्तावित कार्यों की संख्या निर्धारित की गयी।

न्यूनतम जनसंख्या की संकल्पना को निम्न प्रकार से समझा जा सकता है। यदि किसी कार्य के लिए न्यूनतम जनसंख्या 100 है तो साधारणतः वह अधिवास जो इससे अधिक जनसंख्या रखते है वह विकसित अधिवास है। इस प्रकार क्षेत्र में केन्द्रीय कार्यों की संकल्पना का निर्धारण न्यूनतम जनसंख्या की संकल्पना के आधार पर किया जाता है। न्यूनतम जनसंख्या के आधार पर किसी क्षेत्र में प्रस्तावित कार्य एवं न्यूनतम जनसंख्या से अधिक जनसंख्या वाले अधिवासों में कार्यों की बहुलता देखी जाती है।

इस प्रकार न्यूनतम जनसंख्या की संकल्पना से स्पष्ट है कि किसी भी अधिवास की न्यूनतम जनसंख्या वह जनसंख्या है जो उसकी

रिक्तता एवं कार्यों की स्थानियता के मध्य स्थापित है। इन्हीं के आधार पर न्यूनतम जनसंख्या को निर्धारित किया जाता है।

चयनित कार्यों की न्यूनतम जनसंख्या –

विधि तंत्र –

मांगरोल तहसील में सामाजिक, आर्थिक कार्यों की जनसंख्या का निर्धारण आलेख विधि द्वारा किया गया है जिसमें रीडमंच विधि (1938) के आधार पर न्यूनतम जनसंख्या को निर्धारित किया गया।

जिसमें तालिका संख्या 6.1 के अनुसार **X** एक्सिस पर कार्य सहित अधिवास की कुल संख्या को दर्शाया गया जबकि **Y** एक्सिस पर अधिवासों की कुल संख्या को प्रदर्शित किया गया है। इस आरेख द्वारा दो प्रकार की रेखाओं द्वारा कार्यों सहित अधिवासों को एवं कार्य रहित अधिवासों को प्रदर्शित किया गया है। जिस बिन्दु पर दोनों रेखाऐं एक दूसरे को काटती है उसे न्यूनतम जनसंख्या माना गया है। न्यूनतम जनसंख्या मानक के रूप में **T50** मूल्य निर्धारित किया गया है तथा इससे अधिक जनसंख्या वालों को विकसित अधिवास के रूप में प्रदर्शित किया गया है।

न्यूनतम जनसंख्या हेतु कई प्रकार की तकनीक का प्रयोग किया जा सकता है। जिसके आधार पर न्यूनतम जनसंख्या को निर्धारित किया जा सकता है। न्यूनतम जनसंख्या का निर्धारण निम्न सूत्र के द्वारा निर्धारित किया गया है।

$$P_f = \frac{Tp}{T50f}$$

P_f = अपेक्षित सेवा केन्द्रों की संख्या

Tp = कुल जनसंख्या

$T50f$ = न्यूनतम जनसंख्या

तालिका संख्या 6.1 : मांगरोल तहसील – अधिवासों की जनसंख्या आकार एवं कार्यात्मक वितरण

सेवा केन्द्र		जनसंख्या आकार					
	अधिवास प्रतिरूप	0-99	100-199	200-499	500-999	Above 1000	कुल
	कुल अधिवास	30	34	10	3	3	80
प्राथमिक विद्यालय	सेवित	15	33	10	3	3	64
	गैर सेवित	15	1	0	0	0	16
उच्च प्राथमिक विद्यालय	सेवित	3	16	10	3	3	35
	गैर सेवित	27	18	0	0	0	45
माध्यमिक विद्यालय	सेवित	1	5	9	3	3	21
	गैर सेवित	29	29	1	0	0	59
उच्च माध्यमिक विद्यालय	सेवित	1	4	7	3	3	18
	गैर सेवित	29	30	3	0	0	62
प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र	सेवित	0	0	0	2	3	5
	गैर सेवित	30	34	10	1	0	75
डिस्पेंसरी	सेवित	0	0	0	2	3	5
	गैर सेवित	30	34	10	1	0	75
बैंक	सेवित	2	2	10	3	3	20
	गैर सेवित	28	32	0	0	0	60
राजस्थान संपर्क केन्द्र	सेवित	1	2	10	3	2	18
	गैर सेवित	29	32	0	0	1	62
डाकघर	सेवित	1	2	10	3	3	19
	गैर सेवित	29	32	0	0	0	61
सहकारी समिति	सेवित	1	2	10	3	3	19
	गैर सेवित	29	32	0	0	0	61
खाद्य एवं उर्वरक	सेवित	1	2	7	3	3	16
	गैर सेवित	29	32	3	0	0	64
पशु चिकित्सा केन्द्र	सेवित	1	2	10	3	3	19
	गैर सेवित	29	32	0	0	0	61

तालिका संख्या 6.2 : विभिन्न कार्यों एवं सुविधाओं के लिए न्यूनतम जनसंख्या के अनुसार प्रस्तावित एवं आवश्यक कार्यों की संख्या

कार्य	न्यूनतम जनसंख्या	प्रस्तावित कार्यों की जनसंख्या	वर्तमान कार्यों की संख्या	आवश्यक कार्यों की संख्या	न्यूनतम जनसंख्या से अधिक जनसंख्या वाले अधिवास	कुल जनसंख्या	प्रस्तावित कार्यों की संख्या	वर्तमान कार्यों की संख्या	आवश्यक कार्यों की संख्या	न्यूनतम जनसंख्या से कम जनसंख्या वाले अधिवास	कुल जनसंख्या	प्रस्तावित कार्यों की संख्या	वर्तमान कार्यों की संख्या	आवश्यक कार्यों की संख्या
प्राथमिक विद्यालय	260	411	120	291	66	106152	408	118	290	14	811	3	2	1
उच्च प्राथमिक विद्यालय	742	144	88	56	35	91091	123	79	44	45	15872	21	9	12
माध्यमिक विद्यालय	1250	86	44	42	15	71860	57	38	19	65	35103	28	6	22
उच्च माध्यमिक विद्यालय	1270	84	32	52	4	50313	40	27	13	76	56650	45	5	40
प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र	4830	22	5	17	4	50313	10	4	6	76	56650	12	1	11
डिस्पेंसरी	4828	22	5	17	12	50313	10	5	5	68	56650	12	0	12
राजस्थान संपर्क केन्द्र	1380	78	18	60	12	66536	48	11	37	68	40427	29	7	22
डाकघर	1387	77	17	60	11	66536	48	11	37	69	40427	29	6	23
सहकारी समिति	1410	76	18	58	11	66536	47	12	35	69	40427	29	6	23
खाद एवं उर्वरक	1457	73	37	36	12	67920	47	29	18	68	39043	27	8	19
पशु चिकित्सालय	1383	77	18	59	11	67920	49	12	37	69	39043	28	6	22
बैंक	1391	77	47	30	11	66536	48	24	24	69	40427	29	23	6

अध्ययन विषय के अन्तर्गत सम्पूर्ण तथ्यों का अध्ययन कर पाना अत्यन्त कठिन है। इसी कारण मांगरोल तहसील की कुछ सेवाओं का आर्थिक एवं सामाजिक उद्देश्यों के आधार पर अध्ययन किया गया है। जिसमें प्राथमिक विद्यालय, उच्च प्राथमिक विद्यालय, माध्यमिक, उच्च माध्यमिक विद्यालय, प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र, डिस्पेंसरी, राजस्थान संपर्क केन्द्र, डाकघर, सहकारी समिति, खाद्य एवं उर्वरक, पशु चिकित्सालय एवं बैंक जैसे कार्यों को सम्मिलित किया गया है।

सारणी संख्या 6.2 के अनुसार सामाजिक एवं आर्थिक सेवाओं के लिए अध्ययन क्षेत्र में न्यूनतम जनसंख्या का निर्धारण करती है। इसी मूल्य के आधार पर विभिन्न सेवाओं का अध्ययन किया गया है। इसके अंतर्गत केवल उन्हीं सेवाओं को सम्मिलित किया गया है। जो कि अधिक संख्या में उपलब्ध है एवं अन्य अधिवासों के साथ विशेष प्रकार का सम्बन्ध रखती है।

विभिन्न कार्यों एवं सुविधाओं के लिए न्यूनतम जनसंख्या–

शैक्षणिक कार्य–

1. प्राथमिक विद्यालय – तहसील में प्राथमिक विद्यालयों की स्थापना के लिए 260 न्यूनतम जनसंख्या होना आवश्यक है। इस आधार पर यहाँ पर 411 प्राथमिक विद्यालय प्रस्तावित हैं परन्तु वर्तमान में 220 विद्यालय स्थित हैं। इस प्रकार यहाँ पर 291 प्राथमिक विद्यालयों की आवश्यक है। जिनकी पूर्ती विभिन्न आंगनबाड़ी केन्द्र करते हैं। इस आधार पर प्राथमिक विद्यालयों की सुविधा तहसील में सभी स्थानों पर उपलब्ध हैं।

2. उच्च प्राथमिक विद्यालय – तहसील में किसी भी अधिवास में उच्च प्राथमिक विद्यालय को स्थापित करने के लिए 742 न्यूनतम जनसंख्या होना आवश्यक है। न्यूनतम जनसंख्या के आधार पर अध्ययन क्षेत्र में 144 विद्यालय प्रस्तावित है परन्तु वर्तमान में यहाँ पर 88 विद्यालय संचालित हैं। इस प्रकार 56 उच्च प्राथमिक विद्यालयों की आवश्यकता कार्यात्मक रिक्तता को भरने के लिए आवश्यक है।

न्यूनतम जनसंख्या के आधार पर तालिका संख्या 6.2 के अनुसार तहसील में न्यूनतम जनसंख्या से अधिक जनसंख्या वाले अधिवासों की संख्या 66 हैं जहाँ पर कुल जनसंख्या 106152 है। जिसमें उच्च प्राथमिक विद्यालयों की संख्या 123 होनी चाहिए परन्तु वर्तमान में यहाँ पर 79 उच्च प्राथमिक विद्यालय स्थित हैं। इसकी रिक्तता को पूर्ण करने के लिए 44 विद्यालय खोले जाने आवश्यक हैं।

दूसरी ओर कुल 80 अधिवासों में न्यूनतम जनसंख्या से कम जनसंख्या वाले कुल 45 अधिवासों (115872 जनसंख्या) में 21 विद्यालय प्रस्तावित हैं परन्तु यहाँ पर वर्तमान में 9 विद्यालय स्थित हैं। इसकी रिक्तता को पूर्ण करने के लिए 12 उच्च प्राथमिक विद्यालयों का होना आवश्यक है।

3. माध्यमिक विद्यालय – माध्यमिक विद्यालय की स्थापना के लिए न्यूनतम जनसंख्या 1250 होना आवश्यक है। इस जनसंख्या के आधार पर यहाँ कुल 86 विद्यालय प्रस्तावित हैं परन्तु वर्तमान में 44 माध्यमिक विद्यालय संचालित हैं। माध्यमिक विद्यालय की रिक्तता को पूर्ण करने के लिए 42 विद्यालय होना आवश्यक हैं।

तालिका संख्या 6.2 के अनुसार न्यूनतम जनसंख्या से अधिक जनसंख्या वाले कुल 15 अधिवासों की कुल जनसंख्या 71860 है जिसके आधार पर यहाँ 57 विद्यालय प्रस्तावित हैं। जिनमें यहाँ पर 38 विद्यालय स्थित हैं। इस प्रकार 19 विद्यालयों की आवश्यकता है।

न्यूनतम जनसंख्या से कम जनसंख्या वाले अधिवासों की संख्या 65 है जिसकी जनसंख्या 35103 है। इस जनसंख्या के आधार पर यहाँ पर प्रस्तावित विद्यालयों की संख्या 28 होनी आवश्यक है परन्तु वर्तमान में यहाँ पर 6 विद्यालय स्थित हैं। इस प्रकार यहाँ पर 22 विद्यालयों की आवश्यकता है।

4. उच्च माध्यमिक विद्यालय – उच्च माध्यमिक विद्यालय के लिए वर्तमान सरकार ने प्रत्येक ग्राम पंचायत को चिन्हित किया है परन्तु इसके लिए अध्ययन क्षेत्र में न्यूनतम जनसंख्या 1270 होना आवश्यक है। इस जनसंख्या के आधार पर यहाँ पर कुल 84 उच्च

माध्यमिक विद्यालय प्रस्तावित हैं परन्तु वर्तमान में यहाँ पर 32 उच्च माध्यमिक विद्यालय स्थित हैं। इस प्रकार यहाँ पर 52 विद्यालयों की ओर अधिक आवश्यकता है।

तालिका संख्या 6.2 के अनुसार न्यूनतम जनसंख्या से अधिक जनसंख्या वाले कुल 15 अधिवासों में 71860 कुल जनसंख्या है जिसके अनुसार 57 विद्यालय होना प्रस्तावित है परन्तु यहाँ पर वर्तमान में 27 विद्यालय स्थित हैं। इस प्रकार 30 अन्य विद्यालयों की आवश्यकता है। न्यूनतम जनसंख्या से कम जनसंख्या वाले 65 अधिवासों में 35103 कुल जनसंख्या है। जिसमें 27 विद्यालय प्रस्तावित हैं तथा वर्तमान में यहाँ पर 5 विद्यालय स्थित है। इसकी रिक्तता को पूर्ण करने के लिए यहाँ पर 22 नये विद्यालयों की आवश्यकता है।

<u>स्वास्थ्य सुविधाऐं</u>–

1. प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र – प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र की स्थापना के लिए न्यूनतम जनसंख्या 4830 होना आवश्यक है। इसके अनुसार यहाँ पर कुल 22 प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र स्थापित किये जाना प्रस्तावित है। वर्तमान में यहाँ पर केवल 5 स्वास्थ्य केन्द्र स्थित हैं। इस प्रकार यहाँ पर 17 स्वास्थ्य केन्द्र की ओर अधिक आवश्यकता है।

तालिका संख्या 6.2 के अनुसार न्यूनतम जनसंख्या से अधिक जनसंख्या वाले कुल 4 अधिवास हैं जिनकी जनसंख्या 50313 व्यक्ति है। इस जनसंख्या के अनुसार यहाँ पर 10 प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र प्रस्तावित हैं तथा वर्तमान में यहाँ पर 4 स्वास्थ्य केन्द्र हैं। स्वास्थ्य केन्द्र की रिक्तता को पूर्ण करने के लिए 6 स्वास्थ्य केन्द्र स्थापित करने आवश्यक है।

इसी प्रकार न्यूनतम जनसंख्या वाले 76 अधिवासों में 56650 जनसंख्या है। जिसके अनुसार यहाँ पर 12 स्वास्थ्य केन्द्र प्रस्तावित हैं परन्तु वर्तमान में केवल 1 स्वास्थ्य केन्द्र स्थित है। स्वास्थ्य केन्द्र की रिक्तता को पूर्ण करने के लिए अन्य 11 प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों की आवश्यकता है।

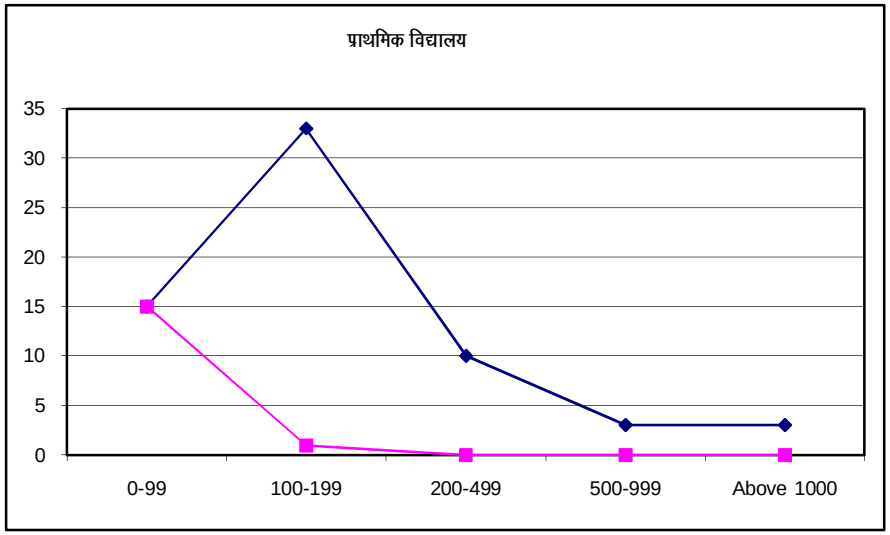
प्राथमिक विद्यालय
35
30
25
20
15
10
5
0
0-99
100-199
200-499
500-999
Above 1000

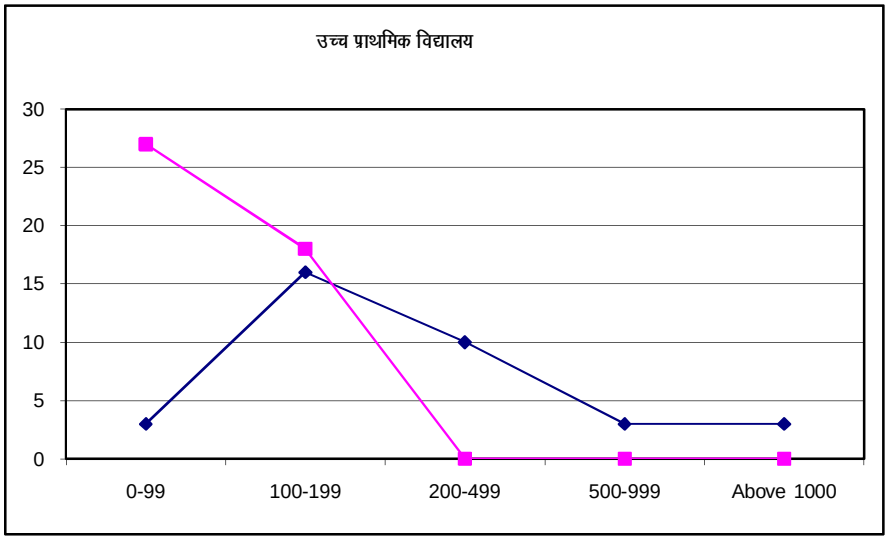
उच्च प्राथमिक विद्यालय
30
25
20
15
10
5
0
0-99
100-199
200-499
500-999
Above 1000

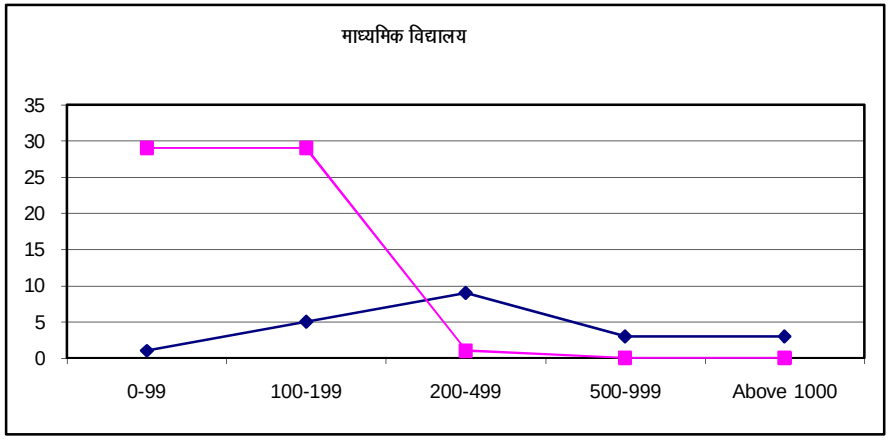
माध्यमिक विद्यालय
35
30
25
20
15
10
5
0
0-99
100-199
200-499
500-999
Above 1000

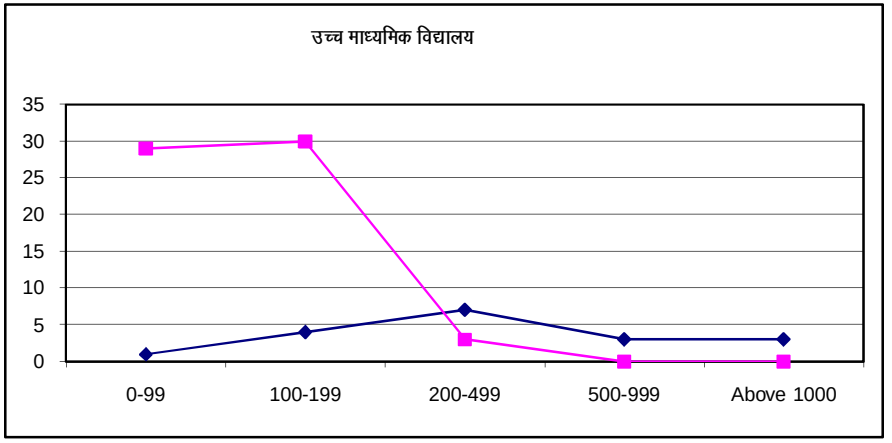
उच्च माध्यमिक विद्यालय
35
30
25
20
15
10
5
0
0-99
100-199
200-499
500-999
Above 1000

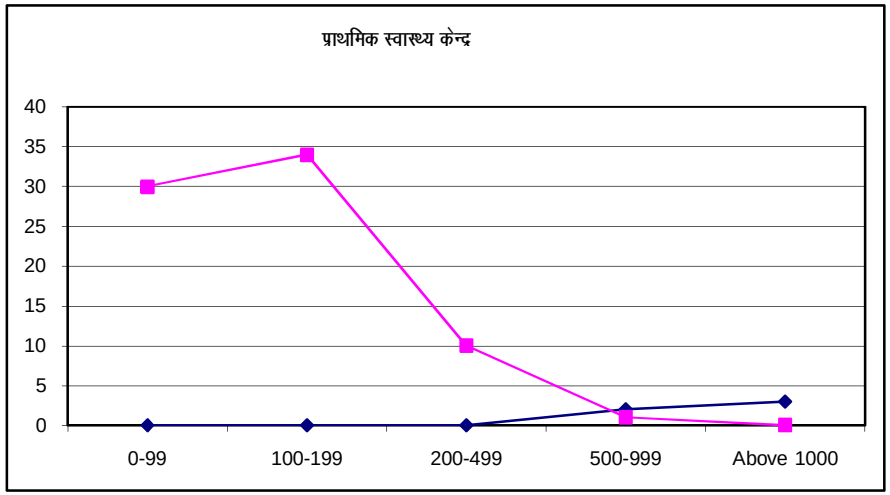
प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र
40
35
30
25
20
15
10
5
0
0-99
100-199
200-499
500-999
Above 1000

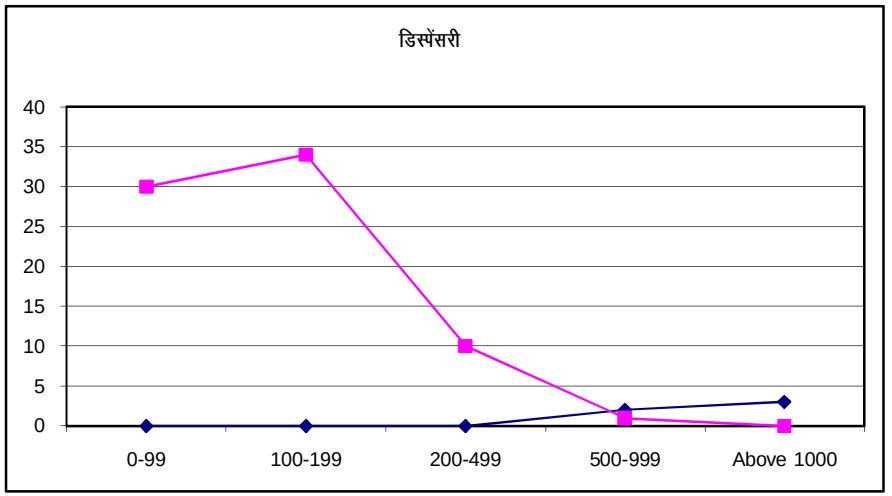
डिस्पेंसरी
40
35
30
25
20
15
10
5
0
0-99
100-199
200-499
500-999
Above 1000

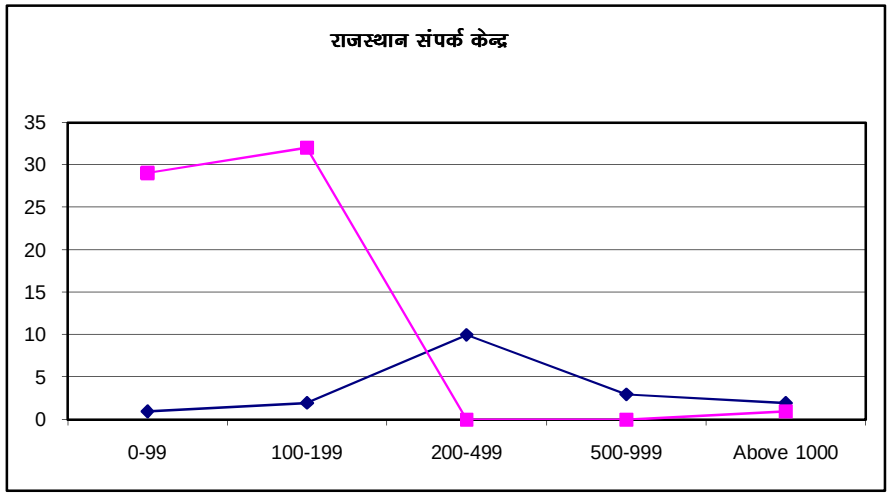
राजस्थान संपर्क केन्द्र
35
30
25
20
15
10
5
0
0-99
100-199
200-499
500-999
Above 1000

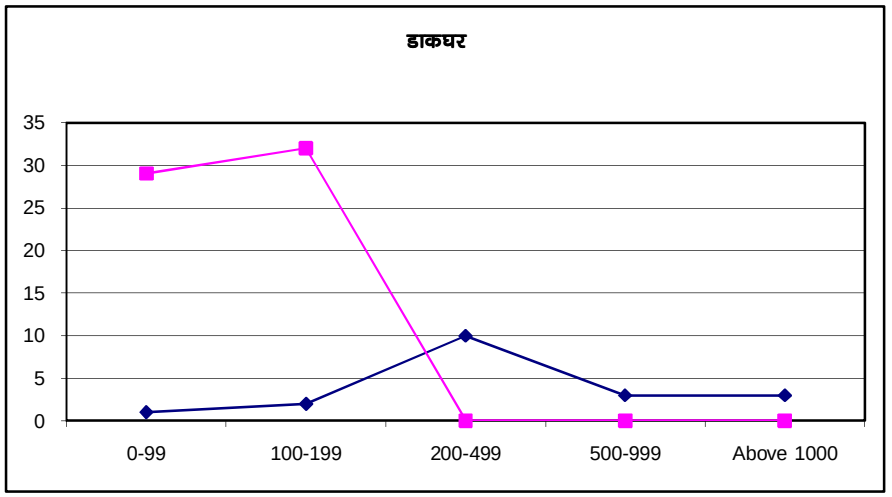
डाकघर
35
30
25
20
15
10
5
0
0-99
100-199
200-499
500-999
Above 1000

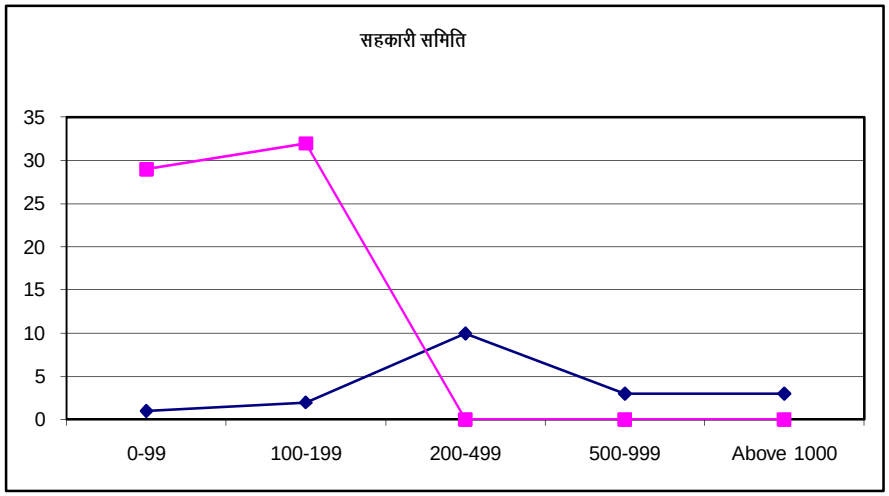
सहकारी समिति
35
30
25
20
15
10
5
0
0-99
100-199
200-499
500-999
Above 1000

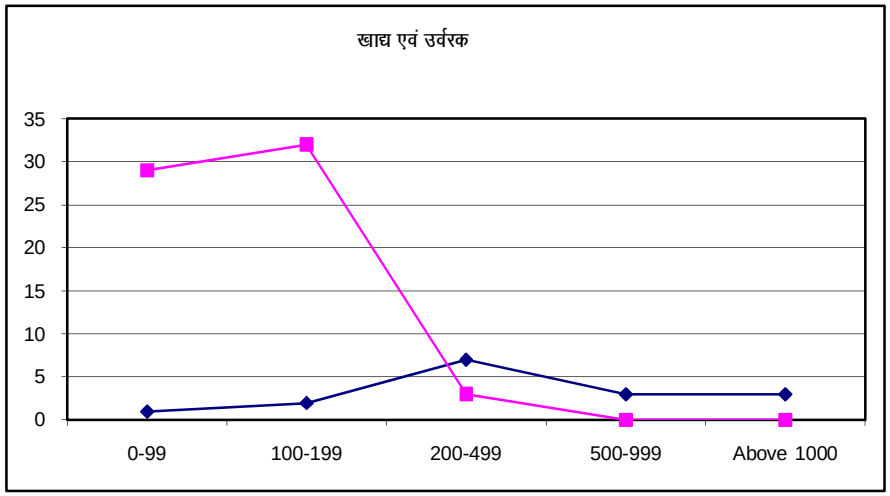
खाद्य एवं उर्वरक
35
30
25
20
15
10
5
0
0-99
100-199
200-499
500-999
Above 1000

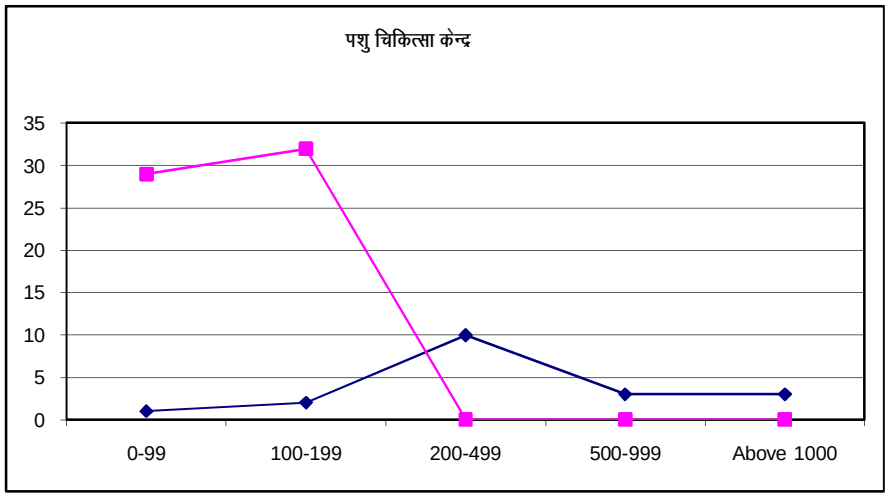
पशु चिकित्सा केन्द्र
35
30
25
20
15
10
5
0
0-99
100-199
200-499
500-999
Above 1000

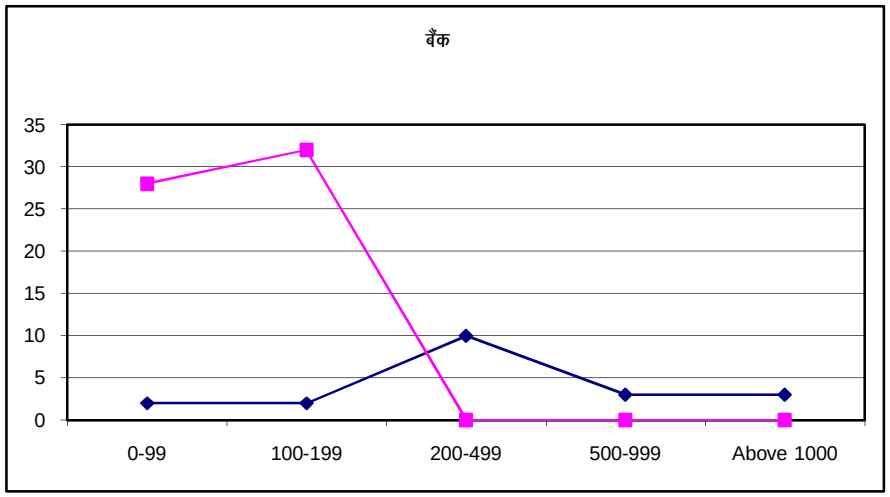
बैंक
35
30
25
20
15
10
5
0
0-99
100-199
200-499
500-999
Above 1000

2. डिस्पेंसरी – डिस्पेंसरी स्थापित करने के लिए न्यूनतम जनसंख्या 4828 होना आवश्यक है। इस जनसंख्या के अनुसार यहाँ पर कुल 22 डिस्पेंसरी प्रस्तावित हैं। वर्तमान में केवल 5 डिस्पेंसरी स्थित है तथा 17 डिस्पेंसरी की आवश्यकता है।

तालिका संख्या 6.2 के अनुसार न्यूनतम जनसंख्या से अधिक जनसंख्या वाले अधिवासों की संख्या 4 है। जहाँ पर कुल जनसंख्या 50313 है। इसके अनुसार यहाँ पर 10 डिस्पेंसरी प्रस्तावित है तथा वर्तमान में 5 डिस्पेंसरी स्थित है और रिक्तता को पूर्ण करने के लिए 5 डिस्पेंसरी की ओर अधिक आवश्यकता है। इसी प्रकार न्यूनतम जनसंख्या वाले 76 अधिवासों में 56650 जनसंख्या स्थित है। जिसमें कुल 12 डिस्पेंसरी प्रस्तावित है। वर्तमान में न्यूनतम जनसंख्या वाले अधिवासों में एक भी डिस्पेंसरी स्थित नहीं है तथा रिक्तता को पूर्ण करने के लिए 12 डिस्पेंसरी की आवश्यकता है।

सूचना एवं संपर्क सुविधा–

1. राजस्थान सूचना केन्द्र – राजस्थान सूचना केन्द्र स्थापित करने के लिए न्यूनतम जनसंख्या 1380 होना आवश्यक है। जिसके अनुसार तहसील में कुल 78 सूचना केन्द्र प्रस्तावित हैं। वर्तमान में यहाँ पर 18 सूचना केन्द्र स्थित हैं तथा 60 सूचना केन्द्रों की आवश्यकता है।

तालिका संख्या 6.2 के अनुसार न्यूनतम जनसंख्या से अधिक जनसंख्या वाले अधिवासों की संख्या 12 है। इन अधिवासों में 66536 जनसंख्या निवास करती है। इस प्रकार यहाँ 48 सूचना केन्द्र प्रस्तावित हैं जिसमें वर्तमान में 11 केन्द्र स्थित है तथा 37 केन्द्रों की आवश्यकता है।

न्यूनतम जनसंख्या से कम जनसंख्या वाले अधिवासों की संख्या 68 है तथा यहाँ पर 40427 जनसंख्या निवास करती है जिसके

अनुसार 29 केन्द्र प्रस्तावित हैं तथा वर्तमान में 7 केन्द्र स्थित हैं एवं 22 की आवश्यकता है।

2. डाकघर – डाकघर की स्थापना के लिए न्यूनतम जनसंख्या 1387 होना आवश्यक है। इस जनसंख्या के अनुसार सम्पूर्ण तहसील में 77 डाकघर प्रस्तावित हैं जबकि वर्तमान में 17 डाकघर स्थित हैं एवं यहाँ पर 60 अन्य डाकघरों की आवश्यकता है।

तालिका संख्या 6.2 के अनुसार न्यूनतम जनसंख्या से अधिक जनसंख्या वाले अधिवासों की संख्या 11 है। इसकी कुल जनसंख्या 66536 है जिसमें कुल 48 डाकघर प्रस्तावित हैं जिसमें से वर्तमान में 11 डाकघर स्थित है तथा 37 की आवश्यकता है।

इसी प्रकार न्यूनतम जनसंख्या वाले 68 अधिवासों की जनसंख्या 40427 हैं। जिसके अनुसार यहाँ पर 29 डाकघर प्रस्तावित है तथा वर्तमान में 6 डाकघर स्थित हैं एवं 23 की आवश्यकता है।

<u>किसान सेवा केन्द्र</u>–

1. सहकारी समिति – सहकारी समिति की स्थापना के लिए 1410 न्यूनतम जनसंख्या की आवश्यकता है। इस प्रकार तहसील में 76 सहकारी समितियाँ प्रस्तावित हैं परन्तु वर्तमान में 18 सहकारी समितियाँ स्थित हैं तथा 58 सहकारी समितियों की आवश्यकता है।

तालिका संख्या 6.2 के अनुसार न्यूनतम जनसंख्या से अधिक जनसंख्या वाले 11 अधिवासों की जनसंख्या 66536 है जिसके अनुसार यहाँ पर 47 सहकारी समितियाँ प्रस्तावित हैं परन्तु वर्तमान में 12 स्थित हैं। रिक्तता को पूर्ण करने के लिए 35 सहकारी समितियों की ओर अधिक आवश्यकता है।

इसी प्रकार न्यूनतम जनसंख्या वाले 69 अधिवासों में 40427 जनसंख्या है जिसके अनुसार 29 सहकारी समितियाँ प्रस्तावित हैं। जबकि वर्तमान में मात्र 6 सहकारी समितियाँ स्थित हैं। अतः 23 सहकारी समितियों की आवश्यकता है।

2. खाद एवं उर्वरक केन्द्र – खाद एवं उर्वरक केन्द्र की स्थापना के लिए न्यूनतम जनसंख्या 1457 होना आवश्यक है। यहाँ पर कुल खाद एवं उर्वरक केन्द्र 73 प्रस्तावित हैं परन्तु वर्तमान में 37 स्थित हैं एवं 36 की आवश्यकता है।

तालिका संख्या 6.2 के अनुसार न्यूनतम जनसंख्या से अधिक जनसंख्या वाले अधिवासों की संख्या 12 है। जिनकी कुल जनसंख्या 67920 है। जिसके अनुसार यहाँ पर 47 सेवा केन्द्र प्रस्तावित हैं परन्तु वर्तमान में 29 सेवा केन्द्र स्थित हैं एवं 18 और सेवा केन्द्रों की आवश्यकता है।

न्यूनतम जनसंख्या से कम जनसंख्या वाले 68 अधिवासों में 39043 जनसंख्या निवास करती है जिसके अनुसार 27 सेवा केन्द्र प्रस्तावित हैं परन्तु वर्तमान में 8 सेवा केन्द्र स्थित हैं। अतः 19 सेवा केन्द्रों की आवश्यकता है।

पशु चिकित्सा सुविधा–

1. पशु चिकित्सालय – पशु चिकित्सालय की स्थापना के लिए न्यूनतम जनसंख्या 1383 आवश्यक है। इसके अनुसार तहसील में कुल 77 पशु चिकत्सा सेवा केन्द्र प्रस्तावित हैं। जिनमें वर्तमान में 18 सेवा केन्द्र स्थित हैं तथा 39 सेवा केन्द्रों की आवश्यकता है।

तालिका संख्या 6.2 के अनुसार न्यूनतम जनसंख्या से अधिक जनसंख्या वाले कुल 11 अधिवासों की जनसंख्या 66536 है। जिसके अनुसार 49 सेवा केन्द्र प्रस्तावित हैं। वर्तमान में 12 सेवा केन्द्र स्थित हैं तथा 37 सेवा केन्द्रों की आवश्यकता है।

इसी प्रकार कम जनसंख्या वाले 69 अधिवासों में 40427 जनसंख्या है। जिसके अनुसार 28 सेवा केन्द्र प्रस्तावित हैं तथा वर्तमान में 6 स्थित हैं एवं 22 की आवश्यकता है।

बैंक सुविधा–

1. बैंक – बैंक के लिए न्यूनतम जनसंख्या 1391 आवश्यक है। इसके अनुसार यहाँ पर 77 बैंक प्रस्तावित हैं। वर्तमान में 47 बैंक स्थित हैं। एवं 30 बैंक खोले जाने आवश्यक है।

तालिका संख्या 6.2 के अनुसार न्यूनतम जनसंख्या से अधिक जनसंख्या वाले 11 अधिवासों में 66536 जनसंख्या निवास करती है। जिसके अनुसार 48 सेवा केन्द्र प्रस्तावित हैं। वर्तमान में 24 स्थित हैं और 24 की आवश्यकता है।

इसी प्रकार न्यूनतम जनसंख्या से कम जनसंख्या वाले 69 अधिवासों की जनसंख्या 40427 है जिसके अनुसार 29 सेवा केन्द्र प्रस्तावित हैं परन्तु वर्तमान में 23 स्थित हैं एवं 6 सेवा केन्द्रों की आवश्यकता है।

6.2 स्थानिक रिक्तता के क्षेत्र–

स्थानिक रिक्तता एवं पूर्णता को ज्ञात करने के लिए विभिन्न सेवा केन्द्रों को केन्द्र मानकर वृत खींचकर निर्धारित किया जा सकता है। जिसमें न्यूनतम दूरी एवं सेवा केन्द्रों से सेवित अधिवासों को पहचाना जा सकता है तथा दो या दो से अधिक केन्द्रों से सेवा प्राप्त करने वाले अधिवासों को ज्ञात किया जा सकता है। इन सेवा केन्द्रों की पहचान निम्न अर्धव्यासों द्वारा तालिका संख्या 6.3 में प्रदर्शित है।

स्थानिक रिक्तता का अध्ययन तालिका संख्या 6.3 के अनुसार प्रदर्शित किया गया है। इनकी सेवाओं को तीन प्रकार से विभाजित किया गया है जो निम्न प्रकार है –

तालिका संख्या 6.3 : मांगरोल तहसील – विभिन्न सेवाओं का वितस्तार

सेवा का प्रकार	अपेक्षित दूरी वृत की त्रिज्या (किमी.)
शैक्षणिक	
1. प्राथमिक विद्यालय	केवल गाँव
2. उच्च प्राथमिक विद्यालय	3
3. माध्यमिक विद्यालय	5
4. उच्च माध्यमिक विद्यालय	8
5. महाविद्यालय	8
चिकित्सा सुविधा	
1. डिस्पेंसरी	5
2. स्वास्थ्य केन्द्र	8
संचार सुविधा	
1. डाकघर	3
2. Wifi सुविधा	5
व्यापारिक सुविधा	
1. थोक बाजार	8
बैंकिंग सुविधा	
1. बैंक	8
2. सहकारी समिति	5
अन्य सुविधाऐं	
1. राजस्थान संपर्क केन्द्र	5
2. उर्वरक वितरण केन्द्र	5
3. पशु चिकित्सा	8

1. उच्च सेवा – 8 किलोमीटर वृत्त की त्रिज्या वाली सेवाओं को सम्मिलित किया गया है।

   (i) उच्च माध्यमिक विद्यालय

   (ii) महाविद्यालय

   (iii) प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र

   (iv) थोक बाजार

   (v) बैंक

   (vi) पशु चिकित्सा

2. मध्यम सेवा – इसमें 5 किलोमीटर वृत्त की त्रिज्या वाले सेवाओं को सम्मिलित किया गया है।

   (i) माध्यमिक विद्यालय

   (ii) डिस्पेंसरी

   (iii) **Wifi** सुविधा

   (iv) राजस्थान सम्पर्क केन्द्र

   (v) सहकारी समिति

   (vi) उर्वरक केन्द्र

3. निम्न सेवा – इसमें 3 किलोमीटर वृत्त की त्रिज्या वाले सेवाओं को सम्मिलित किया गया है।

   (i) उच्च प्राथमिक विद्यालय

   (ii) डाकघर

उच्च सेवाओं की रिक्तता के क्षेत्र–

मानचित्र संख्या 6.1 से स्पष्ट होता है कि उच्च सेवाओं की दृष्टि से केवल दक्षिणी भाग एवं उत्तरी–पूर्वी भाग को छोड़कर सभी जगह सेवाओं की पूर्णता है। यह क्षेत्र अन्य क्षेत्रों से विभिन्न आवश्यकताओं की पूर्ती करते हैं। जिसमें विभिन्न भौतिक विभागों के आधार पर विश्लेषण निम्न प्रकार है –

1. पूर्वी निम्न प्रदेश –

अध्ययन क्षेत्र में इसके अन्तर्गत केवल महाविद्यालय एवं थोक बाजार की रिक्तता प्रदर्शित होती है। यहाँ पर पूर्वी भाग में खानपुरिया, भावगढ़, बालूंदा, पगारा, करेरिया, भगवानपुरा, बोहत आदि गांवों में महाविद्यालय एवं थोक बाजार की रिक्तता है। यहाँ पर यह इन सेवाओं के लिए अन्य क्षेत्रों पर निर्भर हैं।

2. मध्य उच्च प्रदेश –

अध्ययन क्षेत्र में इसके अन्तर्गत उच्च सेवा की दृष्टि से केवल दक्षिणी भाग में रिक्तता देखने को मिलती है। जिसमें महुआ, मूंडली, सोकन्दा, श्यामपुरा, हिंगोनिया, बलदेवपुरा, हरसोली आदि अधिवासों में महाविद्यालय एवं थोक बाजार की रिक्तता है। यह अधिवास आवश्यकताओं की पूर्ती के लिए तहसील मुख्यालय एवं जिला मुख्यालय पर निर्भर हैं।

3. पश्चिमी निम्न प्रदेश –

अध्ययन क्षेत्र में मानचित्र के अनुसार प्रदर्शित होता है कि यहाँ पर केवल मूंडला को छोड़कर शेष सभी अधिवासों पर उच्च सेवा पूर्णता देखने को मिलती है। मूंडला में थोक बाजार एवं महाविद्यालय की रिक्तता है। यह सेवा इसे जिला मुख्यालय से प्राप्त होती है।

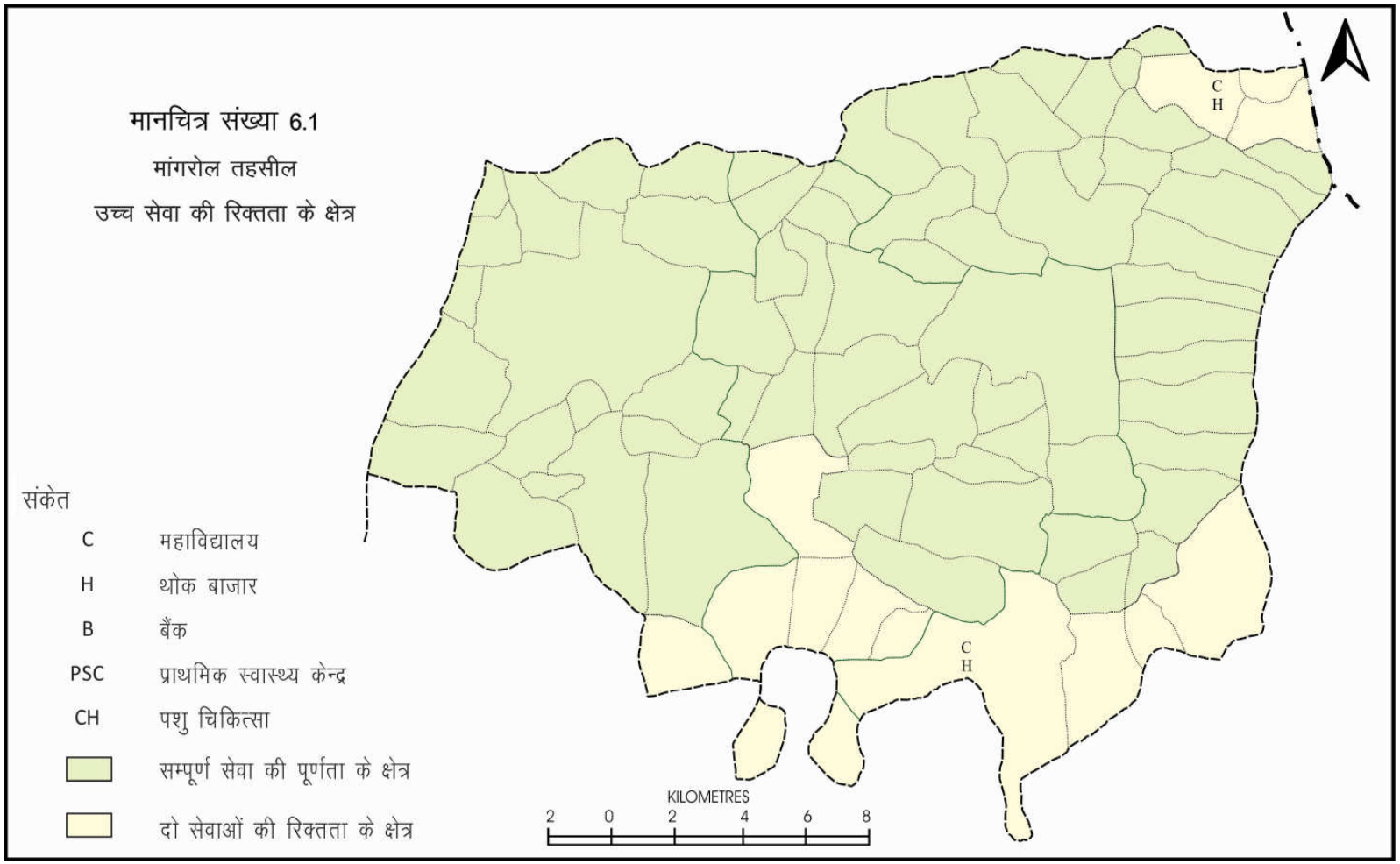
मानचित्र संख्या 6.1
मांगरोल तहसील
उच्च सेवा की रिक्तता के क्षेत्र
संकेत
C महाविद्यालय
H थोक बाजार
B बैंक
PSC प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र
CH पशु चिकित्सा
सम्पूर्ण सेवा की पूर्णता के क्षेत्र
दो सेवाओं की रिक्तता के क्षेत्र
C H
C H
KILOMETRES
2 0 2 4 6 8

मध्यम सेवाओं की रिक्तता के क्षेत्र–

मानचित्र संख्या 6.2 के अनुसार मध्यम सेवा की रिक्तता वाले क्षेत्रों को तीन भागों में विभाजित किया गया है। जिसमें एक सेवा की रिक्तता, दो प्रकार की सेवा की रिक्तता एवं पूर्णता के क्षेत्र सम्मिलित हैं। भौगोलिक प्रदेश के अनुसार जिसका विश्लेषण निम्न प्रकार से किया जा सकता है।

1. पूर्वी निम्न प्रदेश –

अध्ययन क्षेत्र में इस प्रदेश के अन्तर्गत मालबम्बोरी, भावगढ़, जारेला, गुरावदिया, रिझिया, रेलगढ़, नंदगांवड़ी, सिंगोला अधिवासों में एक सेवा डिस्पेंसरी की रिक्तता है तथा अन्य सेवाओं की सभी भागों में पूर्णता है। इस अध्ययन क्षेत्र के अन्तर्गत पगारा में डिस्पेंसरी, राजस्थान सम्पर्क केन्द्र, सहकारी समिति, उर्वरक केन्द्र, **Wifi** सुविधा आदि की रिक्तता है।

2. मध्य उच्च प्रदेश –

मानचित्र के अनुसार मध्य उच्च प्रदेश में श्रीनाल, धूमरखेड़ी, बलवनखेड़ी, केकाखेड़ी, चन्द्राहेड़ी, चेनपुरिया, शाहपुरा, मूंडला, सोकन्दा, श्यामपुरा में डिस्पेंसरी की रिक्तता है तथा बलदेवपुरा, हरसोली में सभी मध्यम प्रकार की सेवाओं की रिक्तता है।

3. पश्चिमी निम्न प्रदेश –

मानचित्र के अनुसार अध्ययन क्षेत्र में पश्चिमी निम्न प्रदेश में रामपुरा, तिसाया, पीपल्दा, उदपुरिया में डिस्पेंसरी की रिक्तता है तथा अन्य अधिवासों में सभी सेवाओं की पूर्णता देखने को मिलती है।

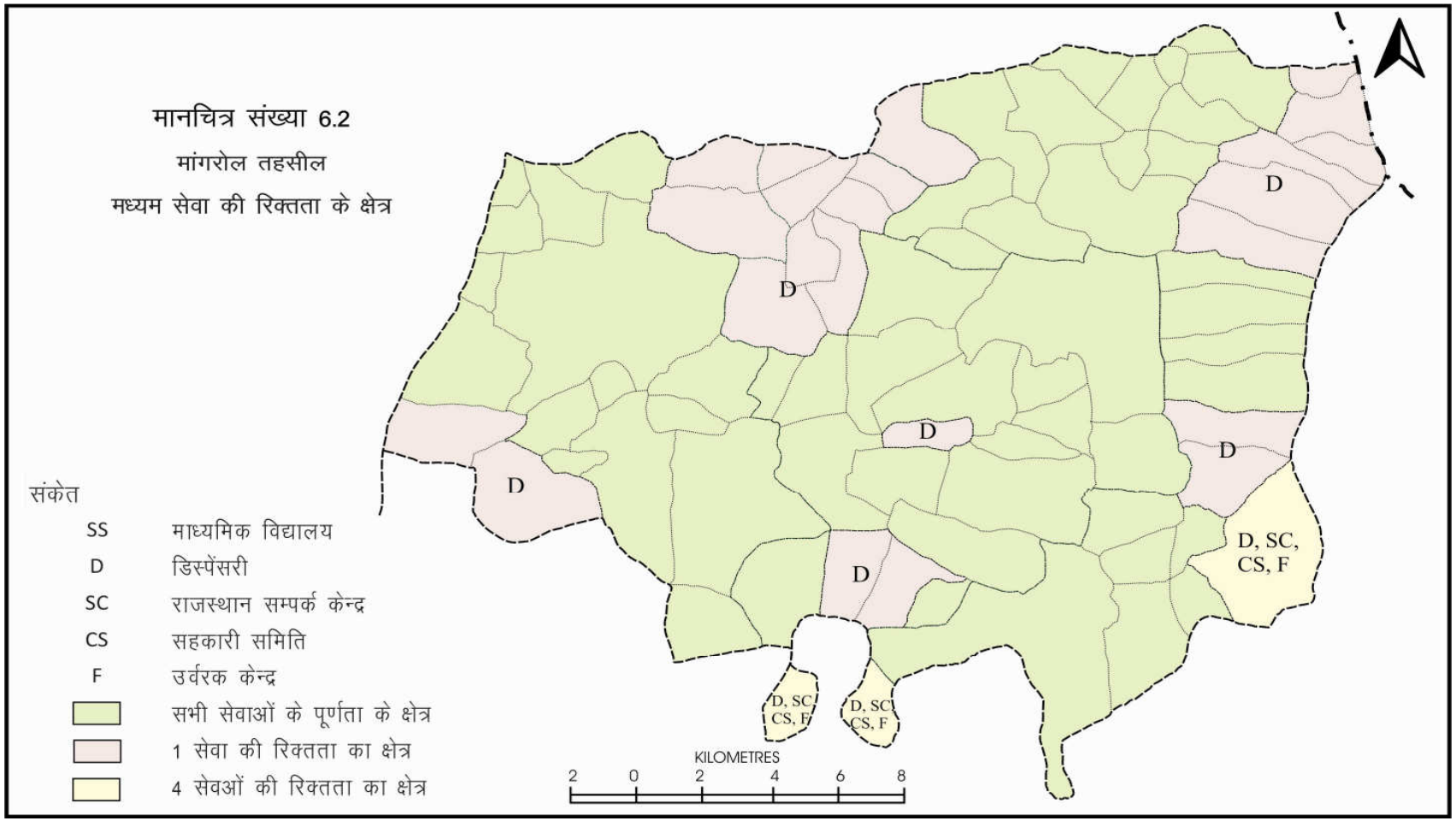
मानचित्र संख्या 6.2
मांगरोल तहसील
मध्यम सेवा की रिक्तता के क्षेत्र
संकेत
SS माध्यमिक विद्यालय
D डिस्पेंसरी
SC राजस्थान सम्पर्क केन्द्र
CS सहकारी समिति
F उर्वरक केन्द्र
सभी सेवाओं के पूर्णता के क्षेत्र
1 सेवा की रिक्तता का क्षेत्र
4 सेवओं की रिक्तता का क्षेत्र
D
D
D
D
D
D, SC, CS, F
D, SC, CS, F
D, SC, CS, F
KILOMETRES
2 0 2 4 6 8

निम्न सेवाओं की रिक्तता के क्षेत्र–

मानचित्र संख्या 6.3 के अनुसार निम्न सेवा की रिक्तता वाले क्षेत्रों को दो भागों में विभाजित किया गया है। जिसमें सभी सेवाओं की पूर्णता वाला क्षेत्र एवं एक प्रकार की सेवा की रिक्तता वाला क्षेत्र है। जिसका विवरण निम्न प्रकार है।

1. पूर्वी निम्न प्रदेश –

मानचित्र के अनुसार धोंकला, सिंगोला, गुदरावनी, गोपालपुरा, करेरिया, पगारा जैसे अधिवासों में डाकघर की रिक्तता देखने को मिलती है। अन्य अधिवासों में निम्न सेवाओं की पूर्णता है।

2. मध्य उच्च प्रदेश –

मानचित्र के अनुसार मूंडली, सोकन्दा, श्यापुरा, हिंगोनिया, बलदेवपुरा, हरसोली आदि अधिवासों में डाकघर की रिक्तता देखने को मिलती है। शेष सभी अधिवासों में निम्न सेवाओं की पूर्णता है।

3. पश्चिमी निम्न प्रदेश –

इसमें शिवपुरा, सोनवा, बालापुरा, मूंडला अधिवासों में डाकघर की रिक्तता प्रदर्शित होती है। जिसमें शिवपुरा एवं बालापुरा गैर आबादित अधिवास है। शेष दो अधिवासों को इसकी रिक्तता पूर्ण करने के लिए अधिक दूरी तय करनी पड़ती है। अन्य निम्न सेवाओं की पूर्णता देखने को मिलती है।

6.3 कार्यात्मक रिक्तता के क्षेत्र–

तालिका 6.3 के आधार पर विभिन्न सेवा केन्द्रों के लिए विभिन्न वृत बनाये गये। इन वृतों के अन्दर कई अधिवासों की सेवाऐं सम्मिलित हुई। उन्हें सेवित एवं वृतों के बाहर वाले सेवा केन्द्रों को निम्न सेवित प्रदर्शित किया गया है तथा इन सेवा केन्द्रों में कुछ सेवा केन्द्र ऐसे निर्धारित हुए जिनसे दो या दो से अधिक वृतों की सीमाऐं गुजर रही हैं ऐसे सेवा केन्द्रों को पूर्ण सेवित

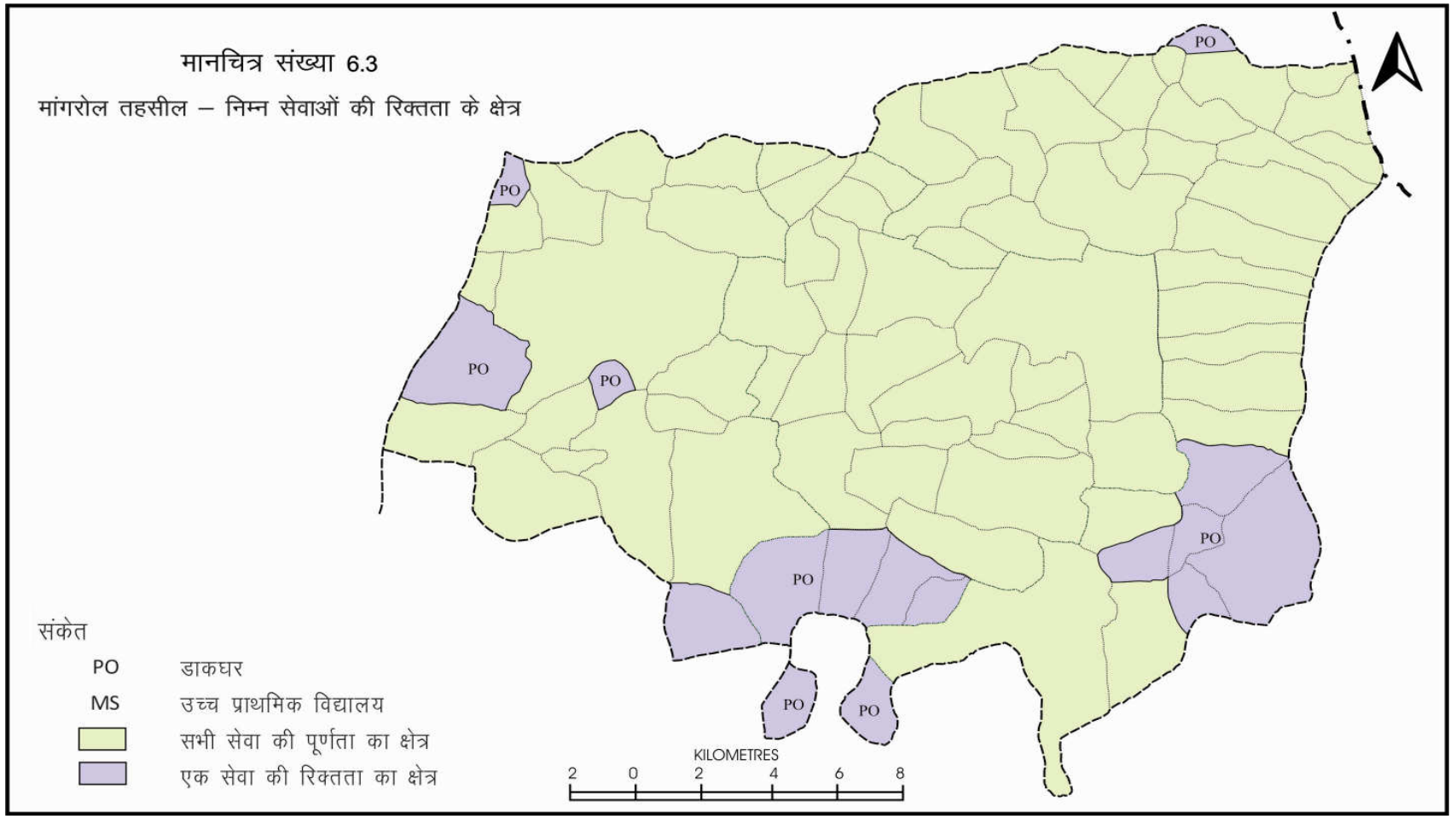
मानचित्र संख्या 6.3
मांगरोल तहसील – निम्न सेवाओं की रिक्तता के क्षेत्र
PO
PO
PO
PO
PO
PO
PO
PO
PO
संकेत
PO डाकघर
MS उच्च प्राथमिक विद्यालय
सभी सेवा की पूर्णता का क्षेत्र
एक सेवा की रिक्तता का क्षेत्र
KILOMETRES
2 0 2 4 6 8

अधिवास माना गया है। उन्हीं के आधार पर सर्वेक्षण में विभिन्न तथ्यों का प्रदर्शन किया जा सकता है। जिसके आधार पर अध्ययन क्षेत्र की कार्यात्मक रिक्तता निर्धारित होती है।

शैक्षणिक सेवाऐं –

1. प्राथमिक विद्यालय – अध्ययन क्षेत्र में कुल 80 अधिवास हैं। जिनमें प्राथमिक विद्यालयों की सेवाऐं प्रत्येक स्थान को प्राप्त है। अध्ययन क्षेत्र में कुल 64 अधिवासों को यह सुविधा प्राप्त है। अन्य क्षेत्रों में आंगनबाड़ी केन्द्रों से प्राथमिक विद्यालयों की सेवाऐं उपलब्ध हो जाती है। यहाँ पर 16 केन्द्रों पर प्राथमिक विद्यालय नहीं हैं। जिसमें 6 गैर आबादी आवास हैं एवं अन्य 10 अधिवासों में अधिकतम दूरी 1 किलोमीटर से अधिक है। इस प्रकार यह सेवाऐं सभी जगह उपलब्ध है।

2. उच्च प्राथमिक विद्यालय – अध्ययन क्षेत्र में कुल 35 सेवा केन्द्रों पर यह सुविधा उपलब्ध है। जिससे प्रत्येक विद्यालय लगभग 2 या 3 अधिवासों को अपनी सेवाऐं दे रहे हैं। अध्ययन क्षेत्र में 3 किलोमीटर से अधिक दूरी पर कोई अधिवास नहीं है क्योंकि राजस्थान सरकार की शिक्षा नीति के अनुसार प्रत्येक पंचायत मुख्यालय पर उच्च माध्यमिक स्तर की सेवा उपलब्ध हो जाती है एवं अध्ययन क्षेत्र में कोई भी अधिवास किसी भी पंचायत मुख्यालय से 3 किलोमीटर से अधिक दूरी पर नहीं है। इसी कारण उच्च प्राथमिक विद्यालय की सेवाऐं पूर्ण रूप से सभी अधिवासों को प्राप्त है।

3. माध्यमिक विद्यालय – माध्यमिक स्तर की शिक्षा सेवा उपलब्ध होने की आदर्श स्थिति 5 किलोमीटर मानी गई है। अध्ययन क्षेत्र में कुल 21 सेवा केन्द्र हैं जिनसे अध्ययन क्षेत्र को यह सुविधा उपलब्ध होती है। अध्ययन क्षेत्र में अधिवासों के बीच की दूरी सेवा केन्द्रों से 5 किलोमीटर से अधिक नहीं है। इसी कारण यह सुविधा आदर्श स्थिति में है एवं यहाँ पर सेवा की पूर्णता देखने को मिलती है।

4. उच्च माध्यमिक विद्यालय – अध्ययन क्षेत्र में प्रत्येक पंचायत मुख्यालय एवं तहसील मुख्यालय पर यह सुविधा उपलब्ध है। अध्ययन क्षेत्र में कुल 18 सेवा केन्द्रों पर यह सेवा उपलब्ध है। पूर्व में पंचायत स्तर पर यह सेवा उपलब्ध नहीं थी परन्तु राजस्थान सरकार द्वारा प्रत्येक पंचायत मुख्यालय पर उच्च माध्यमिक विद्यालय खोले जाने से उच्च माध्यमिक स्तर की सुविधा उपलब्ध हो गई है। प्रत्येक सेवा केन्द्र लगभग 4–5 अधिवासों को सेवा दे रहे हैं। जिनकी अधिकतम दूरी 8 किलोमीटर से अधिक नहीं है। इसलिए इस सेवा के लिए भी अध्ययन क्षेत्र में आदर्श सुविधाऐं उपलब्ध हैं।

5. महाविद्यालय – उच्च शिक्षा सेवा की दृष्टि से अध्ययन क्षेत्र में यह सुविधा केवल 2 सेवा केन्द्रों पर उपलब्ध है परन्तु अधिकांशतः सेवा केन्द्र 8 किलोमीटर से अधिक दूरी पर नहीं है। इसी कारण इन सेवा केन्दों से कम दूरी तय करने पर भी यह सुविधा उपलब्ध हो जाती है। अध्ययन क्षेत्र के तालिका संख्या 6.4 के अनुसार पूर्ण सेवित अधिवासों की संख्या 4 है जो कुल अधिवासों का 5 प्रतिशत है। यह 18.71 किलोमीटर क्षेत्र है जो कि पूर्ण क्षेत्र का 4.34 प्रतिशत भाग है। इस पूर्ण सेवित भाग में 2813 जनसंख्या सेवा का लाभ उठाती है। जो कि पूर्ण जनसंख्या का 2.63 प्रतिशत भाग है जो कि न्यूनतम भाग है। सेवित क्षेत्रों के अन्तर्गत कुल 61 अधिवास आते हैं जो कि कुल अधिवासों का 76.25 प्रतिशत भाग है।

इसके अन्तर्गत अध्ययन क्षेत्र का 332.76 वर्ग किलोमीटर भाग आता है जो कि सम्पूर्ण भाग का 77.16 प्रतिशत भाग है। सेवित अधिवासों के अन्तर्गत जनसंख्या का अधिकतम भाग 89159 व्यक्ति आते हैं जो कि सम्पूर्ण जनसंख्या का 83.35 प्रतिशत भाग अर्थात् उच्च शिक्षा सेवा अधिकांशतः भाग को प्राप्त हो जाती है। इसके लिए सीसवाली, मांगरोल जैसे अधिवासों से लगभग 30–40 अधिवासों को उच्च शिक्षा की सुविधा उपलब्ध हो जाती है।

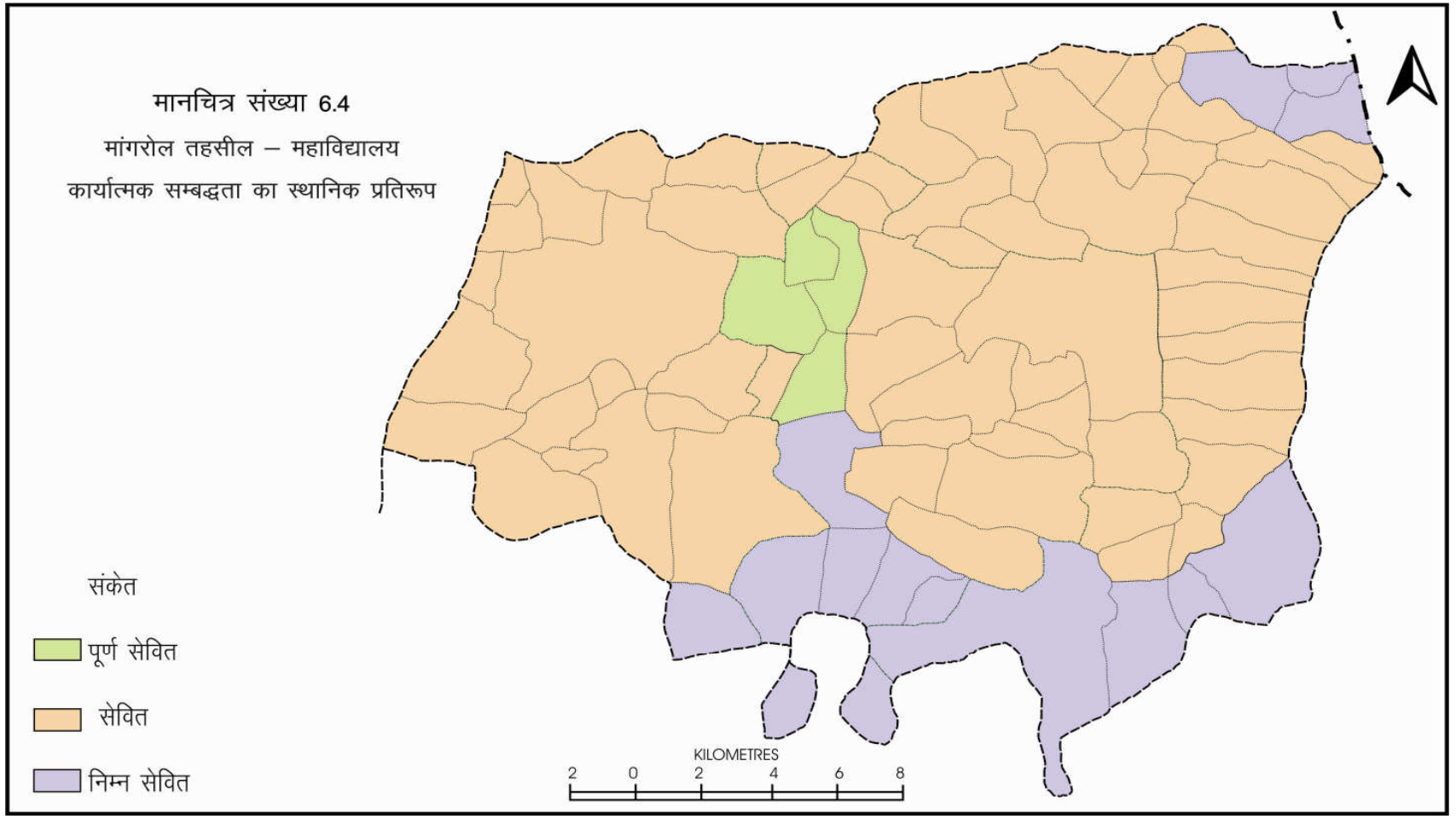
मानचित्र संख्या 6.4
मांगरोल तहसील – महाविद्यालय
कार्यात्मक सम्बद्धता का स्थानिक प्रतिरूप
संकेत
पूर्ण सेवित
सेवित
निम्न सेवित
KILOMETRES
2 0 2 4 6 8

तालिका संख्या 6.4 : मांगरोल तहसील : उच्च शिक्षा सेवित अधिवासों की संख्या, क्षेत्र एवं जनसंख्या

अध्ययन क्षेत्र	अधिवासों की संख्या	प्रतिशत	क्षेत्रफल	क्षेत्र का प्रतिशत	कुल जनसंख्या	कुल जनसंख्या का प्रतिशत
पूर्ण सेवित	4	5	18.71	4.34	2813	2.63
सेवित	61	76.25	332.76	77.16	89159	83.35
निम्न सेवित	15	18.75	79.78	18.5	14991	14.02

निम्न सेवित अधिवासों के अन्तर्गत 15 अधिवास आते हैं जो कि अध्ययन क्षेत्र का 18.75 प्रतिशत भाग है। इसके अन्तर्गत 79.78 वर्ग किलोमीटर भाग आता है। जो सम्पूर्ण क्षेत्र का 18.50 प्रतिशत भाग है। 14991 व्यक्तियों को उच्च शिक्षा के लिए अन्य केन्द्रों पर निर्भर रहना पड़ता है। अध्ययन क्षेत्र में इस प्रकार के 14.02 प्रतिशत जनसंख्या है जो अन्य क्षेत्रों से उच्च शिक्षा प्राप्त करती हैं।

चिकित्सा सुविधाऐं–

1. डिस्पेंसरी – अध्ययन क्षेत्र में कुल 5 डिस्पेंसरी अपनी सेवाऐं सम्पूर्ण क्षेत्र को दे रही हैं। यहाँ से लगभग 1 सेवा केन्द्र से 15 अधिवास सेवाऐं प्राप्त करते हैं तथा इस सेवा से 75 अधिवास वंचित है परन्तु न्यूनतम दूरी के आधार पर तालिका संख्या 6.5 के अनुसार निम्न प्रकार से विश्लेषण किया जा सकता है।

तालिका संख्या 6.5 : मांगरोल तहसील : डिस्पेंसरी सेवित अधिवासों की संख्या, क्षेत्र एवं जनसंख्या

अध्ययन क्षेत्र	अधिवासों की संख्या	प्रतिशत	क्षेत्रफल	क्षेत्र का प्रतिशत	कुल जनसंख्या	कुल जनसंख्या का प्रतिशत
पूर्ण सेवित	6	7.5	30.24	7.01	6262	5.85
सेवित	48	60	271.91	63.05	83202	77.79
निम्न सेवित	26	32.5	129.1	29.94	17499	16.36

अध्ययन क्षेत्र में कुल 6 अधिवास पूर्ण सेवित श्रेणी में प्रदर्शित होते हैं। जो 1 से अधिक सेवा केन्द्रों से सेवाऐं प्राप्त करते हैं। इस प्रकार के अधिवास कुल अधिवासों के 7.5 प्रतिशत भाग पर स्थित है। यह 30.24 वर्ग किलोमीटर भाग पर स्थित है। जो सम्पूर्ण भाग का 7.01 प्रतिशत भाग है। इन पूर्ण सेवित अधिवासों के अन्तर्गत 6262 व्यक्ति आते हैं। जो सम्पूर्ण जनसंख्या का 5.85 प्रतिशत भाग है। इन अधिवासों में रावल जावल, पाकलखेडा, नवलपुरा, बालापुरा, पापड़ली आदि अधिवास आते हैं।

सेवित अधिवासों के अन्तर्गत अधिकांशतः भाग आता है। इसमें कुल 48 अधिवास सम्मिलित किये गये हैं जो सम्पूर्ण अधिवासों का 7 प्रतिशत भाग है। यह अधिवास 271.91 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में विस्तृत हैं। जो सम्पूर्ण क्षेत्र का 63.05 प्रतिशत भाग है। सेवित अधिवासों के अन्तर्गत 83202 जनसंख्या सेवित है जो सम्पूर्ण जनसंख्या का 77.79 प्रतिशत भाग है। चिकित्सा सुविधा में डिस्पेंसरी से निःशुल्क दवाओं एवं प्राथमिक उपचार जैसी सुविधाऐं प्राप्त करती हैं।

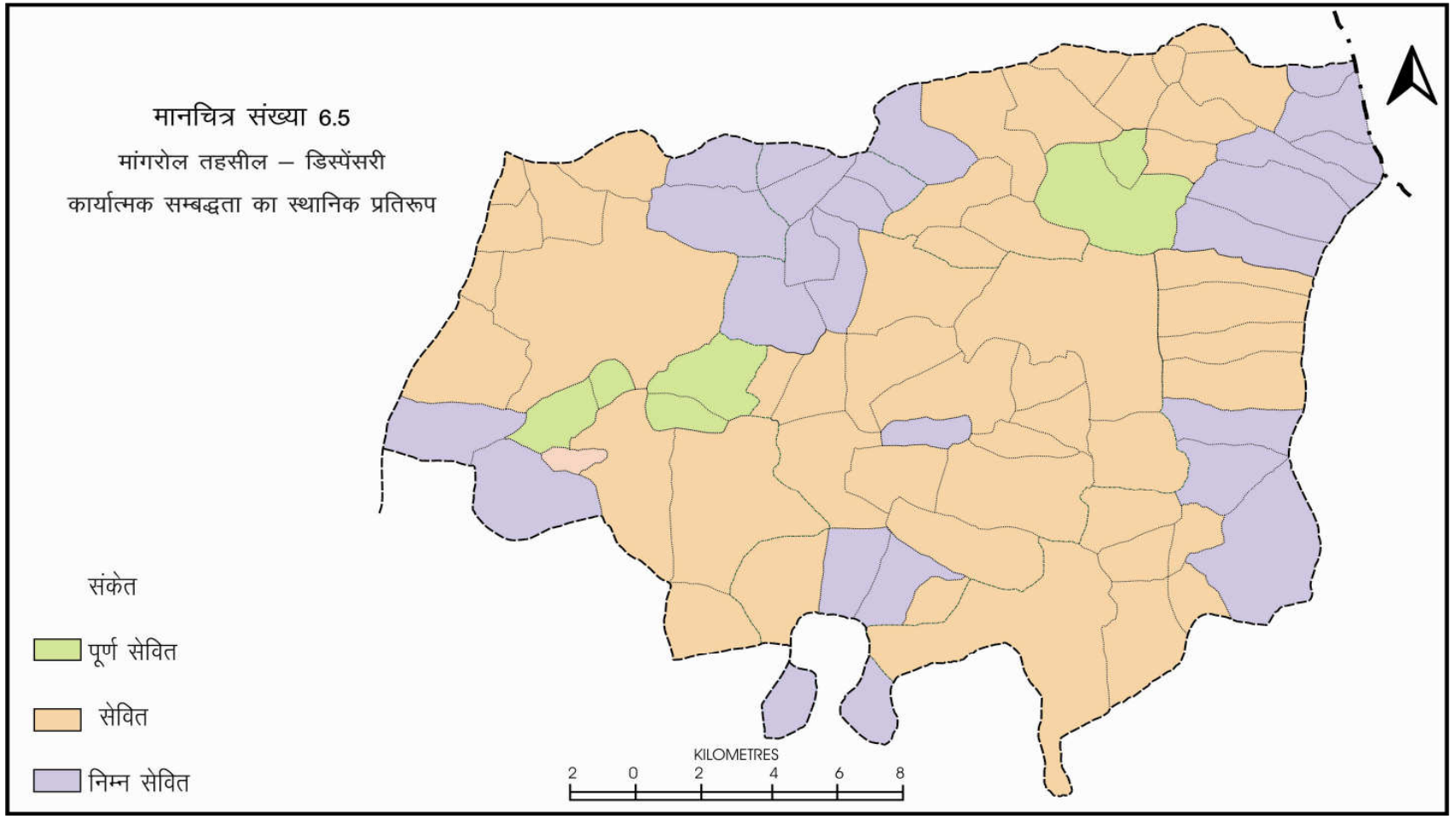
मानचित्र संख्या 6.5
मांगरोल तहसील – डिस्पेंसरी
कार्यात्मक सम्बद्धता का स्थानिक प्रतिरूप
संकेत
पूर्ण सेवित
सेवित
निम्न सेवित
KILOMETRES
2 0 2 4 6 8

निम्न सेवित अधिवासों के अन्तर्गत कुल 26 अधिवास सम्मिलित किये गये हैं। जो कि अधिवासों का 32.5 प्रतिशत भाग है। यह 129.1 क्षेत्र वर्ग किलोमीटर पर स्थित हैं जो कि सम्पूर्ण क्षेत्र का 29.94 प्रतिशत भाग है। निम्न सेवित अधिवासों में 17499 व्यक्ति निवास करते हैं जो कुल आबादी का 16.36 प्रतिशत भाग है।

2. प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र – अध्ययन क्षेत्र में कुल 5 डिस्पेंसरी अपनी सेवाऐं सम्पूर्ण क्षेत्र को दे रही हैं। यहाँ से लगभग 1 सेवा केन्द्र से 15 अधिवास सेवाऐं प्राप्त करते हैं तथा इस सेवा से 75 अधिवास वंचित हैं परन्तु न्यूनतम दूरी के आधार पर तालिका संख्या 6.6 के अनुसार निम्न प्रकार से विश्लेषण किया जा सकता है।

अध्ययन क्षेत्र में कुल 6 अधिवास पूर्ण सेवित श्रेणी में प्रदर्शित होते हैं। जो 1 से अधिक सेवा केन्द्रों से सेवाऐं प्राप्त करते हैं। इस प्रकार के अधिवास कुल अधिवासों के 7.5 प्रतिशत भाग पर स्थित है। यह 30.24 वर्ग किलोमीटर भाग पर स्थित है। जो सम्पूर्ण भाग का 7.01 प्रतिशत भाग है। इन पूर्ण सेवित अधिवासों के अन्तर्गत 6262 व्यक्ति आते हैं। जो सम्पूर्ण जनसंख्या का 5.85 प्रतिशत भाग है। इन अधिवासों में रावल जावल, पाकलखेडा, नवलपुरा, बालापुरा, पापड़ली आदि अधिवास आते हैं।

सेवित अधिवासों के अन्तर्गत अधिकांशतः भाग आता है। इसमें कुल 48 अधिवास सम्मिलित किये गये हैं जो सम्पूर्ण अधिवासों का 7 प्रतिशत भाग है। यह अधिवास 271.91 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में विस्तृत हैं। जो सम्पूर्ण क्षेत्र का 63.05 प्रतिशत भाग है। सेवित अधिवासों के अन्तर्गत 83202 जनसंख्या सेवित है जो सम्पूर्ण जनसंख्या का 77.79 प्रतिशत भाग है। चिकित्सा सुविधा में डिस्पेंसरी से निःशुल्क दवाओं एवं प्राथमिक उपचार जैसी सुविधाऐं प्राप्त करती हैं।

निम्न सेवित अधिवासों के अन्तर्गत कुल 26 अधिवास सम्मिलित किये गये हैं। जो कि अधिवासों का 32.5 प्रतिशत भाग है। यह 129.1 क्षेत्र वर्ग किलोमीटर पर स्थित है जो कि सम्पूर्ण क्षेत्र का 29.94 प्रतिशत भाग है। निम्न सेवित अधिवासों में 17499 व्यक्ति निवास करते हैं जो कुल आबादी का 16.36 प्रतिशत भाग है।

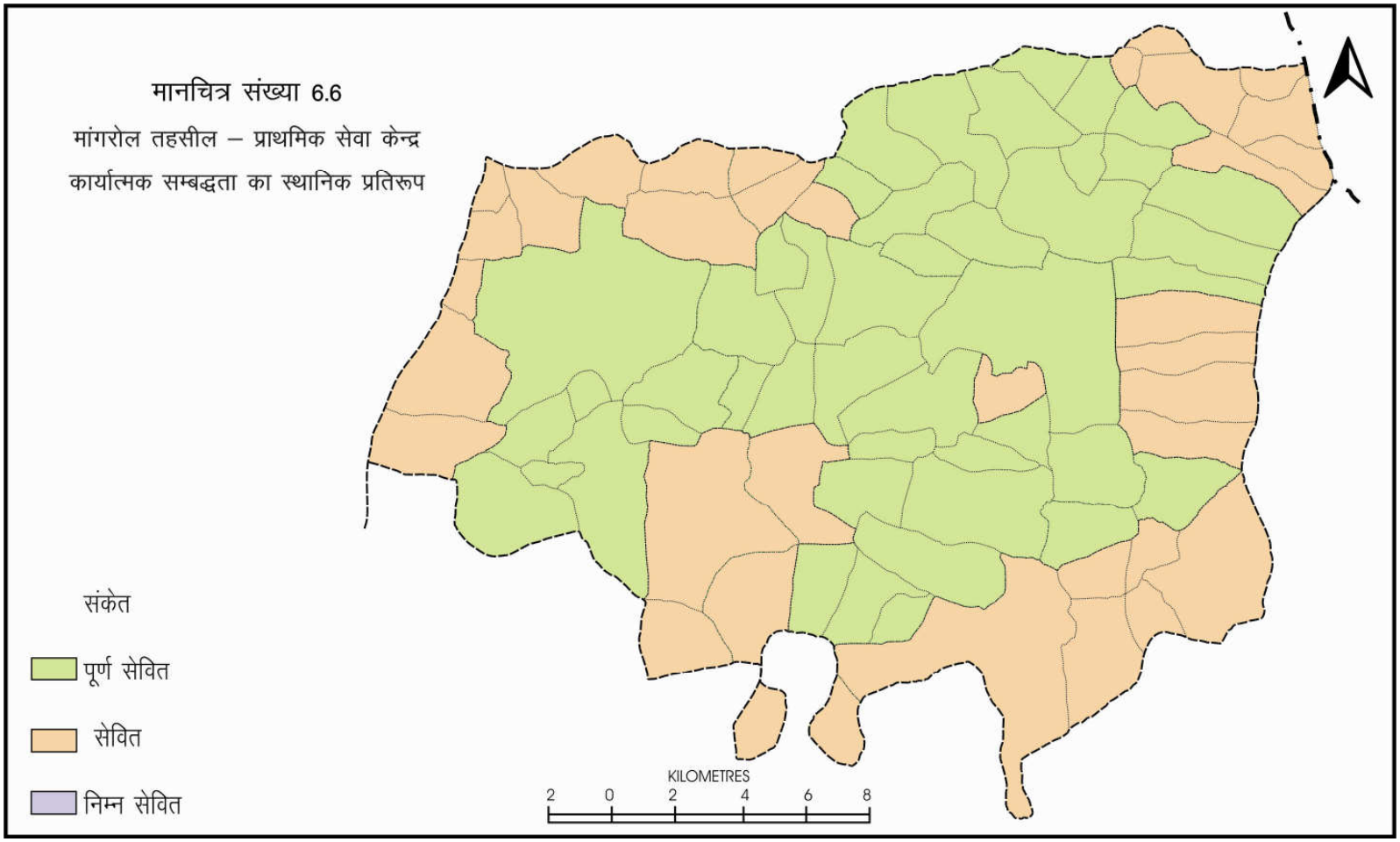
मानचित्र संख्या 6.6
मांगरोल तहसील – प्राथमिक सेवा केन्द्र
कार्यात्मक सम्बद्धता का स्थानिक प्रतिरूप
संकेत
पूर्ण सेवित
सेवित
निम्न सेवित
KILOMETRES
2 0 2 4 6 8

तालिका संख्या 6.6 : मांगरोल तहसील : प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों से सेवित अधिवासों की संख्या, क्षेत्र एवं जनसंख्या

अध्ययन क्षेत्र	अधिवासों की संख्या	प्रतिशत	क्षेत्रफल	क्षेत्र का प्रतिशत	कुल जनसंख्या	कुल जनसंख्या का प्रतिशत
पूर्ण सेवित	6	7.5	30.24	7.01	6262	5.85
सेवित	48	60	271.91	63.05	83202	77.79
निम्न सेवित	26	32.5	129.1	29.94	17499	16.36

संचार सुविधा –

1. डाकघर – अध्ययन क्षेत्र में कुल 19 डाकघर स्थित हैं जो सम्पूर्ण क्षेत्र को अपनी सेवाऐं दे रहे हैं। 1 डाकघर पर लगभग 4 से 7 अधिवास आश्रित हैं। तालिका संख्या 6.7 के अनुसार अध्ययन क्षेत्र में पूर्ण सेवित अधिवासों के अन्तर्गत 25 अधिवास आते हैं जो कुल अधिवासों का 31.25 प्रतिशत भाग है। इसके अन्तर्गत 168.44 वर्ग किलोमीटर भाग आता है जो कि सम्पूर्ण क्षेत्र का 39.06 प्रतिशत भाग है। पूर्ण सेवित अधिवासों में 47100 व्यक्ति निवास करते हैं जो कुल जनसंख्या का 44.03 प्रतिशत भाग है। डाक सेवाओं के लिए पूर्ण सेवित क्षेत्रों में पंचायत मुख्यालय के अतिरिक्त अन्य भागों पर भी उपलब्ध है।

इसमें सेवित क्षेत्रों के अन्तर्गत 39 अधिवास आते हैं जो कि कुल अधिवासों का 48.75 प्रतिशत भाग है। यह अधिवास 206.82 वर्ग किलोमीटर भाग में फैले हुए है जो सम्पूर्ण भाग 47.96 प्रतिशत भाग है। यहाँ पर 52068 व्यक्ति निवास करते हैं जो कुल जनसंख्या का 48.68 प्रतिशत भाग है। अर्थात् लगभग 50 प्रतिशत जनसंख्या सेवित अधिवासों के अन्तर्गत आती है।

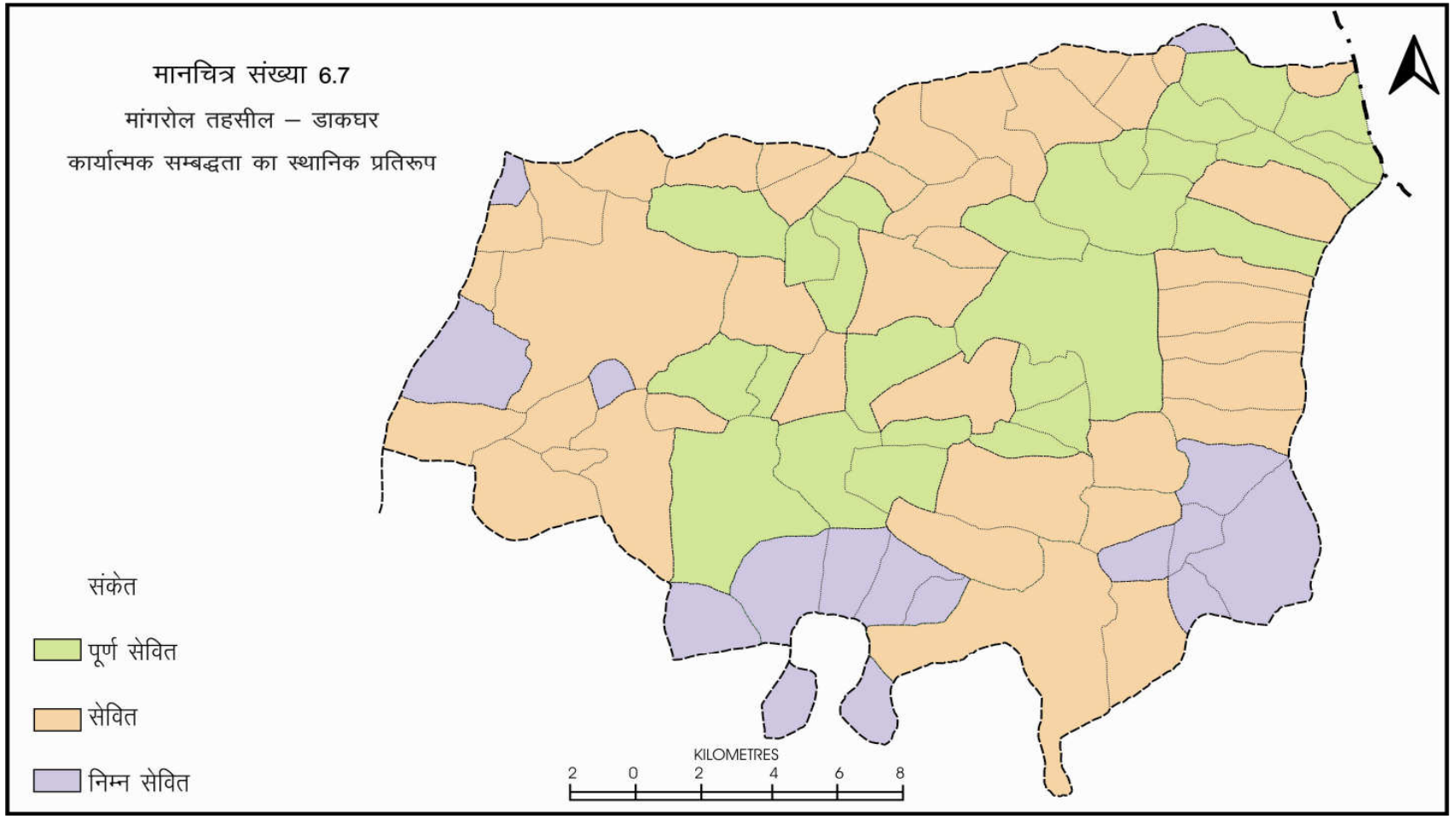
मानचित्र संख्या 6.7
मांगरोल तहसील – डाकघर
कार्यात्मक सम्बद्धता का स्थानिक प्रतिरूप
संकेत
पूर्ण सेवित
सेवित
निम्न सेवित
KILOMETRES
2 0 2 4 6 8

तालिका संख्या 6.7 : मांगरोल तहसील : डाकघर सेवित अधिवासों की संख्या, क्षेत्र एवं जनसंख्या

अध्ययन क्षेत्र	अधिवासों की संख्या	प्रतिशत	क्षेत्रफल	क्षेत्र का प्रतिशत	कुल जनसंख्या	कुल जनसंख्या का प्रतिशत
पूर्ण सेवित	25	31.25	168.44	39.06	47100	44.03
सेवित	39	48.75	206.82	47.96	52068	48.68
निम्न सेवित	16	20	55.99	12.98	7795	7.29

निम्न सेवित अधिवासों में 16 अधिवास सम्मिलित किये गये हैं जो कि अधिवासों का 20 प्रतिशत भाग है। यह 55.99 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र पर विस्तृत है जो सम्पूर्ण भाग 12.98 प्रतिशत भाग है। यहाँ पर 7795 व्यक्ति निवास करते हैं जो कुल जनसंख्या का 7.29 प्रतिशत भाग है।

डाक सेवाऐं वर्तमान में पत्र व्यवहार तक सिमित नहीं रही है। अपितु आवश्यक दस्तावेज डाक सेवाओं द्वारा उपलब्ध करवाये जाते हैं।

2. **WiFi** सुविधा – यह सुविधा प्रत्येक पंचायत मुख्यालय पर उपलब्ध है तथा मोबाईल एवं संचार क्रांति के इस युग में प्रत्येक ग्राम में मोबाईल इंटरनेट सुविधा उपलब्ध है। इस सुविधा की दृष्टि से सरकार द्वारा प्रत्येक पंचायत पर वाई फाई सुविधा उपलब्ध करा दी गई है। जिससे व्यक्तियों को संचार की सुविधा वाई फाई के माध्यम

से उपलब्ध होती है। इसकी दृष्टि से अध्ययन क्षेत्र के प्रत्येक अधिवास पूर्ण सेवित अधिवास के अंतर्गत आते हैं क्योंकि शेष अधिवासों में मोबाईल इंटरनेट के द्वारा यह सुविधा उपलब्ध होने से वाई फाई की सुविधा प्रत्येक अधिवास पर उपलब्ध है।

<u>व्यापारिक सुविधा</u>–

1. थोक बाजार – व्यापारिक सुविधा की दृष्टि से अध्ययन क्षेत्र में केवल 2 सेवा केन्दों पर यह सुविधा उपलब्ध है। क्योंकि विस्तृत जनसंख्या नहीं होने के कारण थोक बाजार विकसित नहीं हो पाते। थोक बाजार की सुविधा के लिए अन्य अधिवास सीसवाली एवं मांगरोल सेवा केन्द्रों पर निर्भर है। थोक बाजार के पूर्ण सेवित अधिवासों के अन्तर्गत 4 अधिवास सम्मिलित हैं जो सम्पूर्ण भाग का 5 प्रतिशत है।

तालिका संख्या 6.8 : मांगरोल तहसील : थोक बाजार सेवा से सेवित अधिवासों की संख्या, क्षेत्र एवं जनसंख्या

अध्ययन क्षेत्र	अधिवासों की संख्या	प्रतिशत	क्षेत्रफल	क्षेत्र का प्रतिशत	कुल जनसंख्या	कुल जनसंख्या का प्रतिशत
पूर्ण सेवित	4	5	18.71	4.34	2813	2.63
सेवित	61	76.25	332.76	77.16	89159	83.35
निम्न सेवित	15	18.75	79.78	18.5	14991	14.02

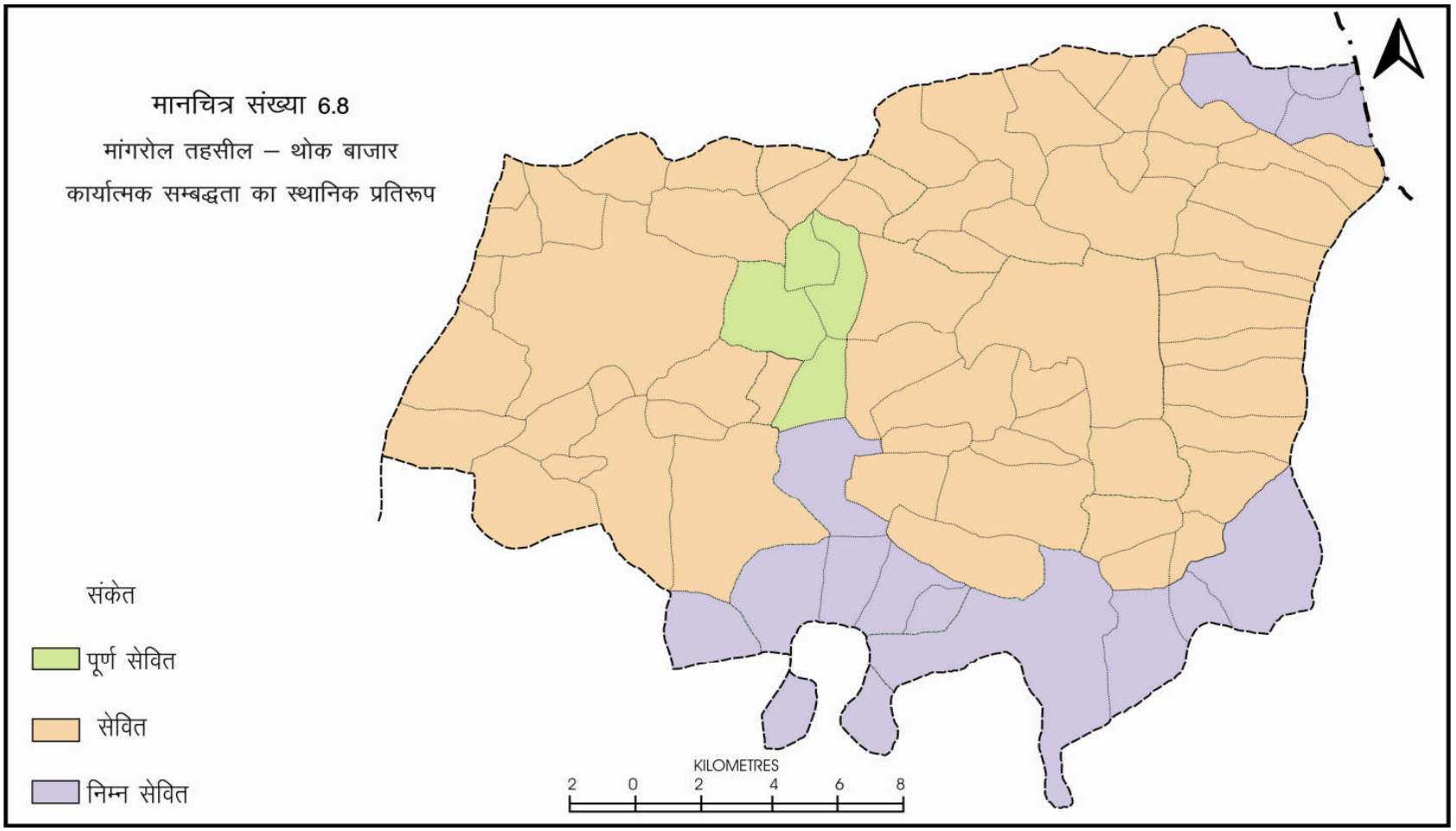
मानचित्र संख्या 6.8
मांगरोल तहसील – थोक बाजार
कार्यात्मक सम्बद्धता का स्थानिक प्रतिरूप
संकेत
पूर्ण सेवित
सेवित
निम्न सेवित
KILOMETRES
2 0 2 4 6 8

इस क्षेत्र के अंतर्गत 18.71 वर्ग किलोमीटर भाग आता है जो सम्पूर्ण क्षेत्र का 4.34 प्रतिशत भाग है। पूर्ण सेवित भाग में 2813 व्यक्ति सेवा का लाभ प्राप्त करते हैं जो कुल जनसंख्या का 2.63 प्रतिशत भाग है। सेवित अधिवासों के अंतर्गत कुल 61 अधिवास आते हैं जो कुल भाग का 76.25 प्रतिशत भाग है। यह 332.76 वर्ग किलोमीटर भाग पर विस्तृत है तथा सम्पूर्ण क्षेत्र का 77.16 प्रतिशत भाग सेवित भाग है। जिसमें 89159 व्यक्ति 8 किलोमीटर की न्यूनतम दूरी से थोक बाजार की सेवा प्राप्त करते हैं। इसके अंतर्गत कुल आबादी का 83.35 प्रतिशत भाग आता है। अर्थात् अध्ययन क्षेत्र के अधिकांश व्यक्तियों को थोक बाजार की सुविधा न्यूनतम दूरी से प्राप्त हो जाती है।

निम्न सेवित अधिवासों के अंतर्गत 15 अधिवास आते हैं जो सेवा केन्द्र से 8 किलोमीटर से अधिक दूरी पर स्थित हैं। इसके अंतर्गत अधिवासों का 18.75 प्रतिशत भाग आता है। जो कि 79.78 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैला हुआ है जो सम्पूर्ण क्षेत्र का 18.50 प्रतिशत भाग है। निम्न सेवित अधिवासों के अंतर्गत 14991 व्यक्ति थोक बाजार की सुविधा अधिकतम दूरी से प्राप्त करते हैं। इनकों सेवा के लिए अन्य केन्द्रों पर आश्रित रहना पड़ता है एवं लम्बी दूरी तय करनी पड़ती है।

<u>बैंकिंग सुविधा –</u>

1. बैंक – अध्ययन क्षेत्र में विभिन्न प्रकार की बैंकिंग सुविधाऐं उपलब्ध हैं। यहाँ पर राष्ट्रीय एवं ग्रामीण बैंक सेवाऐं 20 अधिवासों पर स्थित है। जो अन्य क्षेत्रों को विभिन्न प्रकार की सेवाऐं प्रदान करते हैं। अध्ययन क्षेत्र में राष्ट्रीय स्तर के बैंकिंग सुविधाओं को तालिका संख्या 6.9 में प्रदर्शित किया गया है। जिसमें पूर्ण सेवित अधिवासों में कुल 52 अधिवास सम्मिलित हैं जो कि अधिवासों का 65 प्रतिशत है। इन अधिवासों का विस्तार 308.4 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में है जो कि सम्पूर्ण क्षेत्र का 71.50 प्रतिशत है। इन सेवाओं का लाभ 87770 व्यक्ति उठाते हैं जो कि पूर्ण जनसंख्या का 80.06 प्रतिशत भाग है।

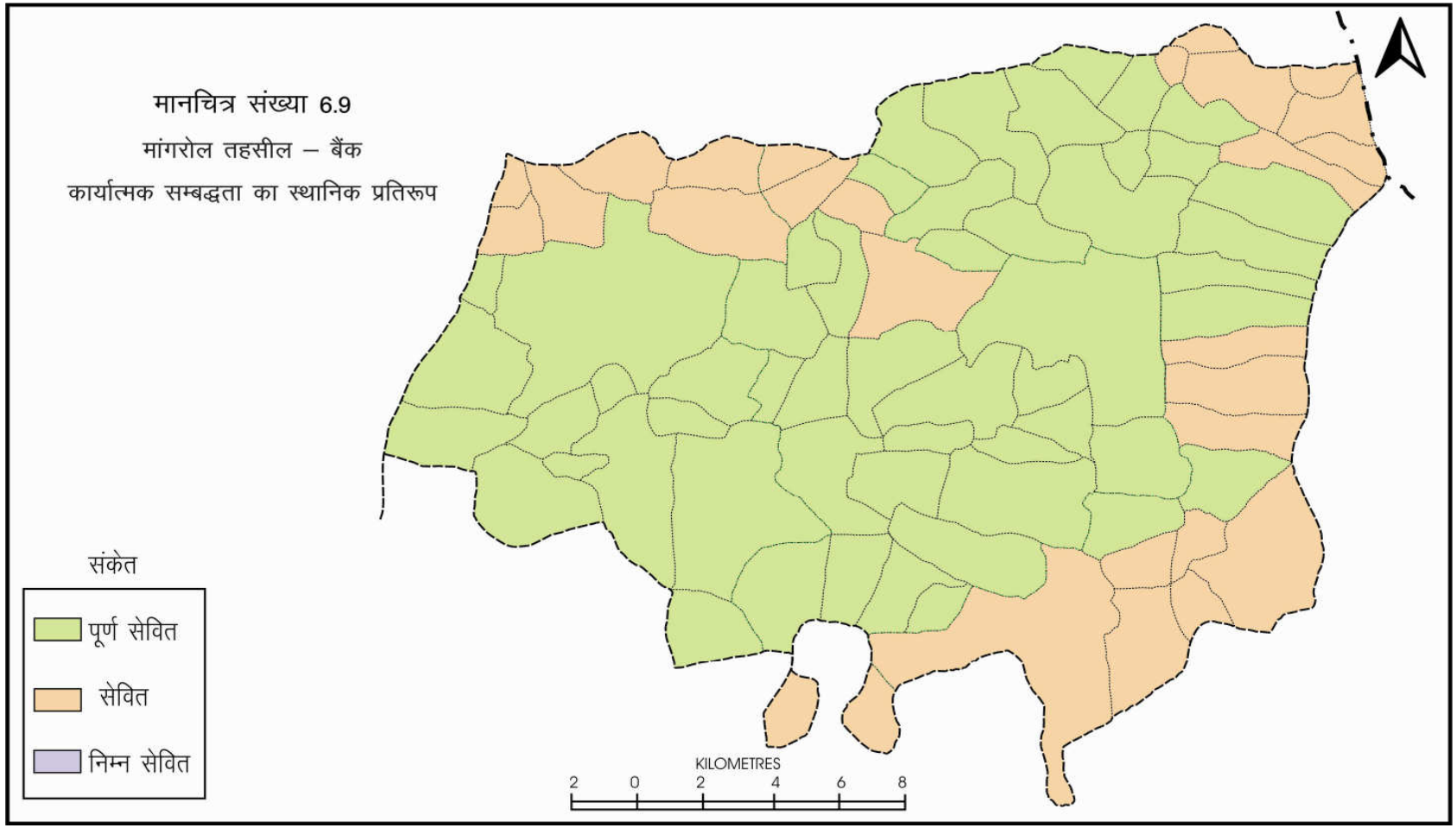
मानचित्र संख्या 6.9
मांगरोल तहसील – बैंक
कार्यात्मक सम्बद्धता का स्थानिक प्रतिरूप
संकेत
पूर्ण सेवित
सेवित
निम्न सेवित
KILOMETRES
2 0 2 4 6 8

इस प्रकार यहाँ पर अधिकांश भाग पूर्ण सेवित अधिवास के अंतर्गत आता है। क्योंकि अधिकांश अधिवासों को एक से अधिक बैंकों से यह सुविधाऐं उपलब्ध हो जाती हैं।

तालिका संख्या 6.9 : मांगरोल तहसील : बैंक सेवित अधिवासों की संख्या, क्षेत्र एवं जनसंख्या

अध्ययन क्षेत्र	अधिवासों की संख्या	प्रतिशत	क्षेत्रफल	क्षेत्र का प्रतिशत	कुल जनसंख्या	कुल जनसंख्या का प्रतिशत
पूर्ण सेवित	52	65	308.4	71.5	87770	82.06
सेवित	28	35	122.85	28.5	19193	17.94
निम्न सेवित	0	0	0	0	0	0

सेवित अधिवास में अधिवासों की संख्या 28 है जो कुल अधिवासों का 35 प्रतिशत भाग है। यह 122.85 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र एवं सम्पूर्ण क्षेत्र का 28.50 प्रतिशत भाग है। सेवित अधिवासों के अंतर्गत 19193 व्यक्ति सेवाओं का लाभ उठाते हैं। यह सम्पूर्ण जनसंख्या का 17.94 प्रतिशत भाग है। इस प्रकार स्पष्ट है कि अध्ययन क्षेत्र में लगभग सभी अधिवासों को बैंक सुविधा उपलब्ध है। यहाँ पर 8 किलोमीटर की न्यूनतम दूरी तय करने पर बैंकिंग सुविधा उपलब्ध हो जाती है।

2. सहकारी समितियाँ – अध्ययन क्षेत्र में कुल 19 सहकारी समितियाँ स्थित हैं। जो अन्य अधिवासों को सेवाऐं प्रदान करती हैं। यहाँ पर अधिकांश अधिवास सहकारी समितियों की दृष्टि से पूर्ण सेवित अधिवासों के अंतर्गत आते हैं। यहाँ पर तालिका संख्या 6.10 के अनुसार पूर्ण सेवित अधिवासों में कुल 73 अधिवास सम्मिलित हैं जो एक सेवा केन्द्र से अधिक सेवा केन्द्रों से सेवा का

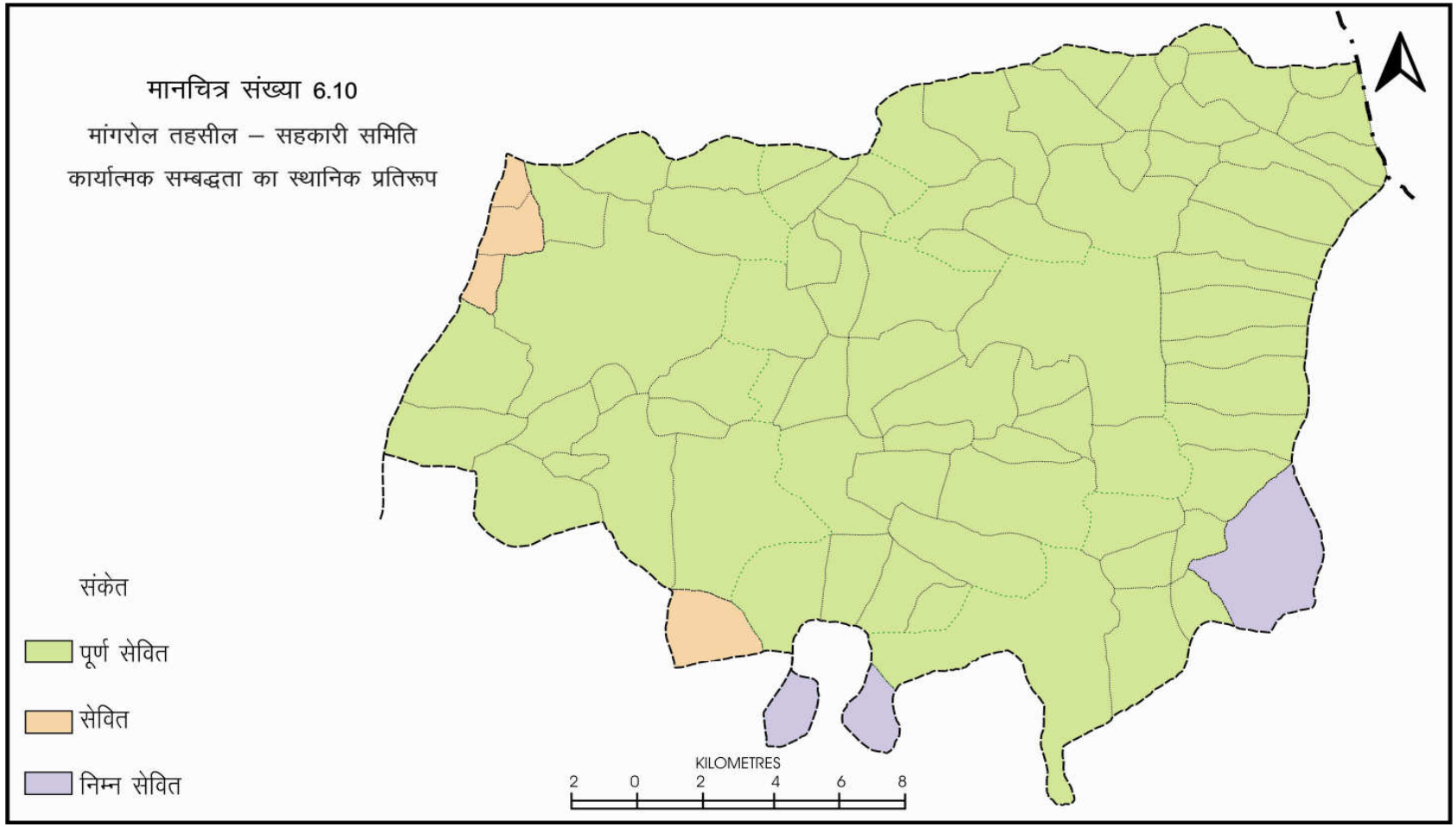
मानचित्र संख्या 6.10
मांगरोल तहसील – सहकारी समिति
कार्यात्मक सम्बद्धता का स्थानिक प्रतिरूप
संकेत
पूर्ण सेवित
सेवित
निम्न सेवित
KILOMETRES
2 0 2 4 6 8

लाभ प्राप्त करते हैं। इस प्रकार के अधिवास 91.5 प्रतिशत है। यह 409.51 वर्ग किलोमीटर क्षेत्रफल विस्तृत है जो कुल क्षेत्रफल का 94.96 प्रतिशत भाग है। इस भाग के अंतर्गत 104813 व्यक्ति सेवा का लाभ प्राप्त करते हैं जो कुल जनसंख्या 97.99 प्रतिशत भाग है। अर्थात् लगभग सभी व्यक्तियों को सहकारी समितियों का लाभ प्राप्त होता है एवं न्यूनतम दूरी तय करनी पड़ती है। यह सेवा एक से अधिक सेवा केन्द्रों से प्राप्त हो जाती है। सेवित अधिवासों के अंतर्गत 4 अधिवास आते हैं। जिसमें 3 अधिवास गैर आबादित है तथा 1 मूंडला आबादी क्षेत्र है। जिसको अन्य से अधिक दूरी तय करनी पड़ती है। यहाँ पर 742 व्यक्ति निवास करते हैं। जो कुल जनसंख्या का 0.69 प्रतिशत भाग है।

तालिका संख्या 6.10 : मांगरोल तहसील : सहकार समिति से सेवित अधिवासों की संख्या, क्षेत्र एवं जनसंख्या

अध्ययन क्षेत्र	अधिवासों की संख्या	प्रतिशत	क्षेत्रफल	क्षेत्र का प्रतिशत	कुल जनसंख्या	कुल जनसंख्या का प्रतिशत
पूर्ण सेवित	73	91.25	409.51	94.96	104813	98.99
सेवित	4	5	11.96	2.77	742	0.69
निम्न सेवित	3	3.75	9.78	2.27	1408	1.32

निम्न सेवित क्षेत्र के अंतर्गत पगारा, बलदेवपुरा, हरसोली अधिवासों को सम्मिलित किया गया है। यह कुल अधिवासों का 3.75

प्रतिशत भाग है तथा 9.78 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में स्थित है जो कुल क्षेत्र का 2.27 प्रतिशत भाग है। इन अधिवासों में 1408 व्यक्ति निवास करते हैं। जिन्हें सेवा के लिए 5 किलोमीटर से अधिक की दूरी तय करनी पड़ती है। यह कुल जनसंख्या का 1.32 प्रतिशत भाग है। अर्थात् लगभग सभी व्यक्तियों को यह सेवाऐं आसानी से प्राप्त हो जाती है।

अन्य सेवाऐं–

1. राजस्थान सम्पर्क केन्द्र – प्रत्येक ग्राम पंचायत मुख्यालय पर राजस्थान सम्पर्क केन्द्र स्थित है। जहाँ से विभिन्न अधिवास सेवाऐं प्राप्त करते हैं। इन सेवा केन्द्रों पर राशनकार्ड, आधार कार्ड, नरेगा जोब कार्ड, नरेगा रोजगार आदि सेवाऐं प्राप्त होती हैं। इसके अंतर्गत तालिका संख्या 6.11 के अनुसार अधिकांश क्षेत्र पूर्ण सेवित है एवं कुछ अधिवासों को छोड़कर यह सुविधा प्रत्येक अधिवास को प्राप्त कम दूरी तय करने पर भी मिल जाती है।

तालिका संख्या 6.11 : मांगरोल तहसील : राजस्थान सम्पर्क केन्द्र सेवित अधिवासों की संख्या, क्षेत्र एवं जनसंख्या

अध्ययन क्षेत्र	अधिवासों की संख्या	प्रतिशत	क्षेत्रफल	क्षेत्र का प्रतिशत	कुल जनसंख्या	कुल जनसंख्या का प्रतिशत
पूर्ण सेवित	73	91.25	409.51	94.96	104813	98.99
सेवित	4	5	11.96	2.77	742	0.69
निम्न सेवित	3	3.75	9.78	2.27	1408	1.32

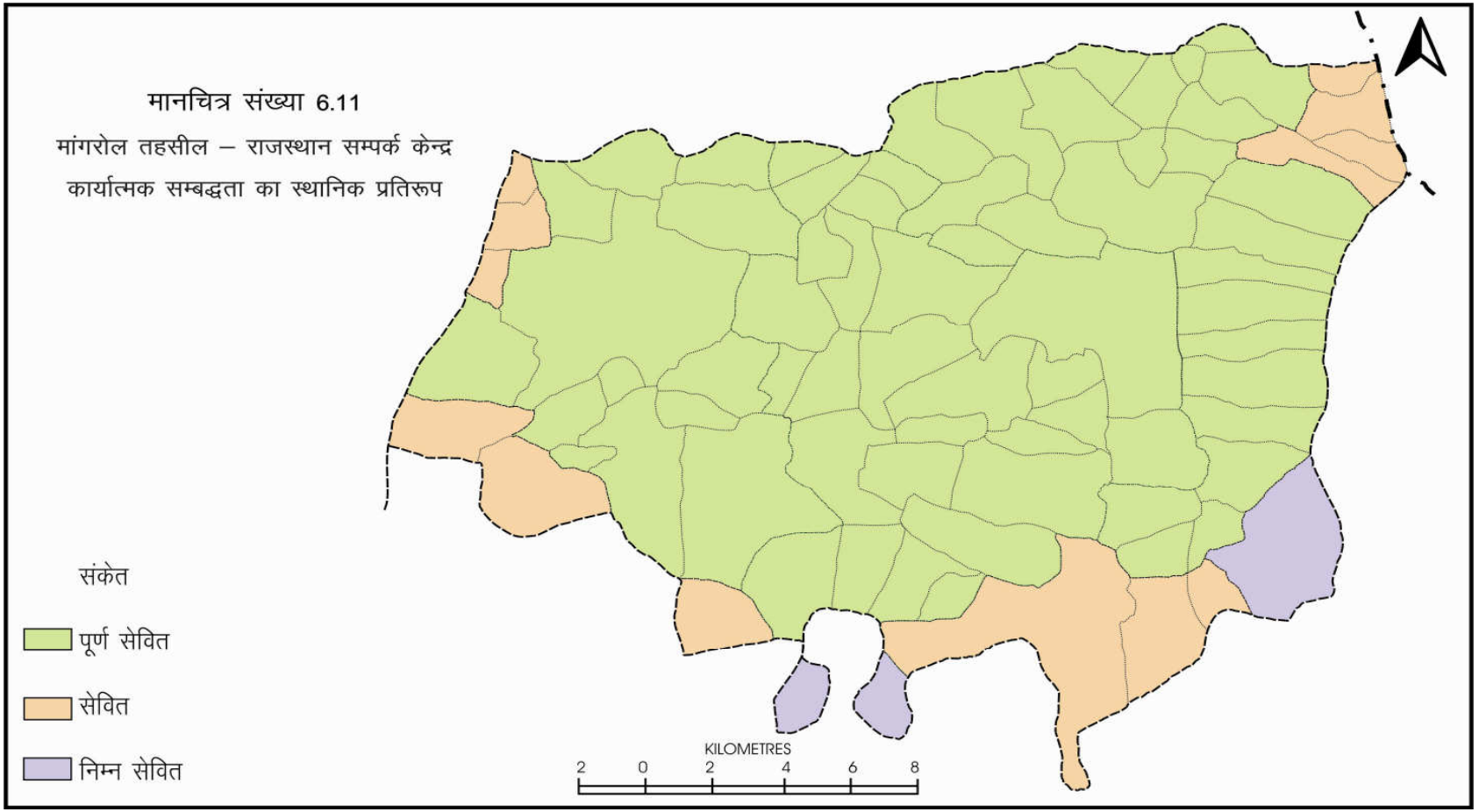
मानचित्र संख्या 6.11
मांगरोल तहसील – राजस्थान सम्पर्क केन्द्र
कार्यात्मक सम्बद्धता का स्थानिक प्रतिरूप
संकेत
पूर्ण सेवित
सेवित
निम्न सेवित
KILOMETRES
2 0 2 4 6 8

तालिका संख्या 6.11 के अुनसार पूर्ण सेवित अधिवासों में 73 अधिवास आते है जो कुल अधिवासों का 91.25 प्रतिशत भाग है तथा क्षेत्रफल 409.51 एवं जनसंख्या 104813 है। जो कुल जनसंख्या का 97.99 प्रतिशत भाग है। इस प्रकार अधिकांश भाग पूर्ण सेवित के अंतर्गत सम्मिलित है। सेवित अधिवासों में कुल 4 अधिवास आते हैं। इसमें 3 गैर आबादित है एवं 1 अधिवास की जनसंख्या 742 है। यह कुल जनसंख्या का 0.69 प्रतिशत भाग है।

निम्न सेवित अधिवासों के अन्तर्गत 3 अधिवास आते हैं जिनकी कुल जनसंख्या 1408 है एवं कुल जनसंख्या का 1.32 प्रतिशत भाग है।

इस सेवा के अन्तर्गत अन्य सेवाओं से समानता देखने को मिलती है क्योंकि अध्ययन क्षेत्र में अधिकांश सेवाऐं पंचायत मुख्यालय पर स्थित होने के कारण आंकड़ों में समानता देखने को मिलती है। इसी कारण विभिन्न आंकड़ें अन्य तालिकाओं के समान है।

2. उर्वरक वितरण केन्द्र – यह सुविधा प्रत्येक पंचायत मुख्यालय की विभिन्न सहकारी समितियों पर उपलब्ध है। इसी कारण इसमें विभिन्न आंकड़ों की समानता देखने को मिलती है। तालिका संख्या 6.12 के अनुसार इसको निम्न प्रकार से परिभाषित किया जाता है।

इसमें पूर्ण सेवित अधिवासों में 73 अधिवास सम्मिलित है। जिनकी जनसंख्या 104813 है। जो कुल जनसंख्या का 98.99 प्रतिशत भाग है। अर्थात् पूर्ण सेवित अधिवासों के अन्तर्गत अधिकांश जनसंख्या का भाग सम्मिलित किया गया है। यहाँ पर व्यक्तियों को यह सुविधा न्यूनतम दूरी पर उपलब्ध हो जाती है। सेवित अधिवासों के अन्तर्गत 4 अधिवास आते है जिनकी जनसंख्या 742 है एवं कुल जनसंख्या का 0. 69 प्रतिशत भाग है।

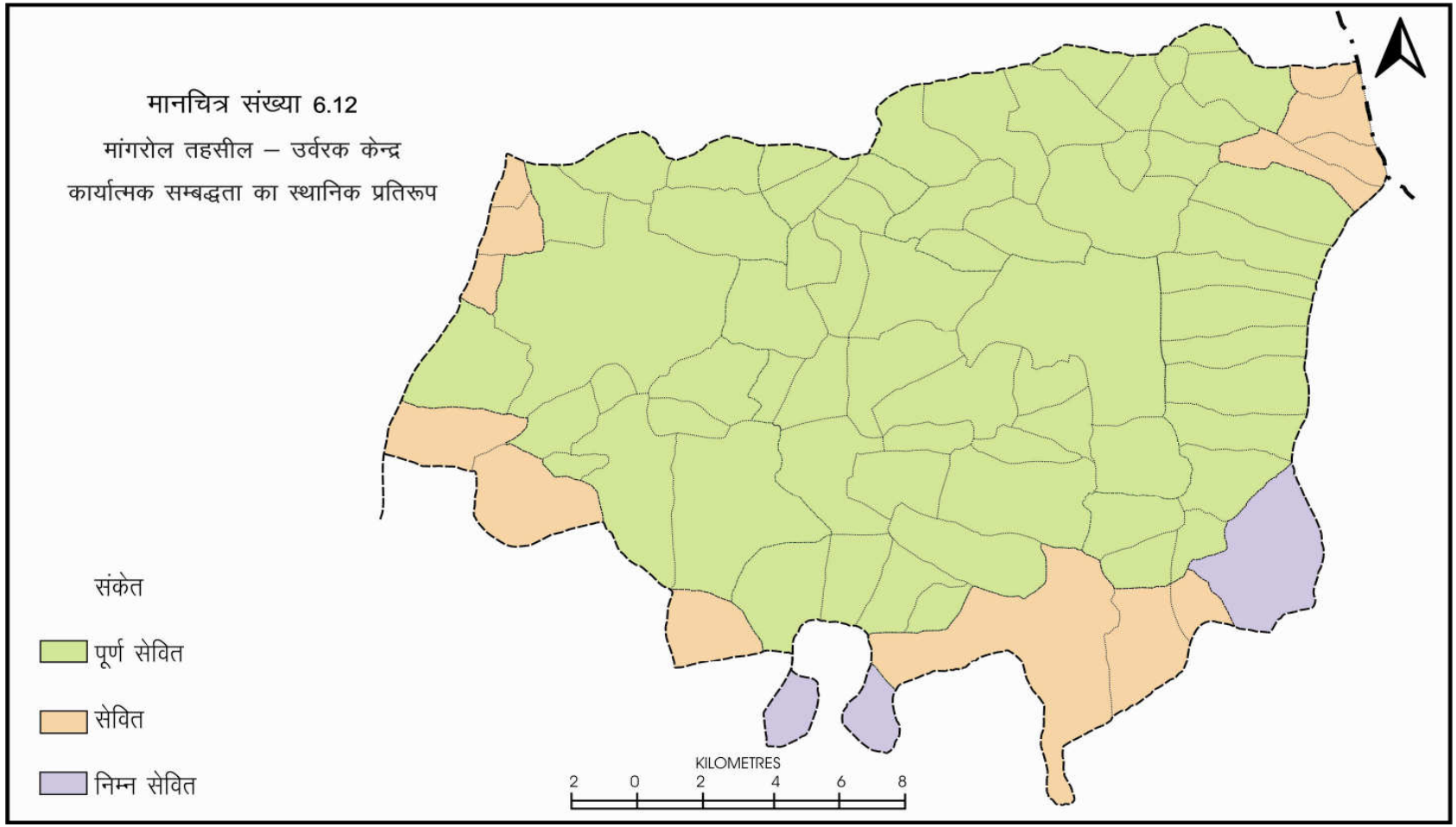
मानचित्र संख्या 6.12
मांगरोल तहसील – उर्वरक केन्द्र
कार्यात्मक सम्बद्धता का स्थानिक प्रतिरूप
संकेत
पूर्ण सेवित
सेवित
निम्न सेवित
KILOMETRES
2 0 2 4 6 8

तालिका संख्या 6.12 : मांगरोल तहसील : उर्वरक वितरण केन्द्र सेवित अधिवासों की संख्या, क्षेत्र एवं जनसंख्या

अध्ययन क्षेत्र	अधिवासों की संख्या	प्रतिशत	क्षेत्रफल	क्षेत्र का प्रतिशत	कुल जनसंख्या	कुल जनसंख्या का प्रतिशत
पूर्ण सेवित	73	91.25	409.51	94.96	104813	98.99
सेवित	4	5	11.96	2.77	742	0.69
निम्न सेवित	3	3.75	9.78	2.27	1408	1.32

निम्न सेवित अधिवासों के अन्तर्गत 3 अधिवास आते हैं तथा जनसंख्या 1408 है जो कुल जनसंख्या का 1.32 प्रतिशत भाग है। अर्थात् यह सुविधा भी अन्य सुविधाओं की भांति पूर्णता रखती है।

3. पशु चिकित्सा – यह सुविधा प्रत्येक पंचायत मुख्यालय को प्राप्त है तथा इसकी औसतन दूरी 8 किलोमीटर से अधिक नहीं है इसी कारण इस सेवा की पूर्णता अध्ययन क्षेत्र में देखने को मिलती है। यहाँ पर ऐसा कोई अधिवास नहीं है जो सेवा केन्द्र से 8 किलोमीटर से अधिक दूरी पर स्थित हो।

6.4 क्षेत्र में वर्तमान एवं अपेक्षित सुविधाऐं–

विभिन्न आँकड़ों एवं अधिवासों के अध्ययन से निम्न तथ्य स्पष्ट होते हैं –

1. मांगरोल अध्ययन क्षेत्र में कुछ अध्ययन क्षेत्र ऐसे हैं जहाँ पर न्यूनतम जनसंख्या से कम जनसंख्या होने पर भी सुविधाऐं उपलब्ध है परन्तु कुछ अधिवास ऐसे है जहाँ पर न्यूनतम जनसंख्या से अधिक जनसंख्या है परन्तु विभिन्न सुविधाओं का केन्द्रियकरण देखने को नहीं मिलता है। अधिकांशतः सुविधाऐं पंचायत मुख्यालयों पर केन्द्रित हैं।

2. अध्ययन क्षेत्र में शिक्षा, चिकित्सा, परिवहन, जलापूर्ती, विद्युतापूर्ती आदि सुविधाऐं सभी जगह उपलब्ध हैं। यहाँ पर वर्तमान में महिला महाविद्यालय एवं तकनिकी महाविद्यालय एवं औद्योगिक केन्द्र की सुविधाऐं अपेक्षित हैं।

3. मांगरोल अध्ययन क्षेत्र में प्राथमिक सुविधाऐं सभी अधिवासों पर उपलब्ध है परन्तु शिवपुरिया, रामपुरिया, बठेड़ी, बालापुरा, गुरावदिया, धोंकलखेड़ी जैसे गैर आबादी क्षेत्रों को छोड़कर सभी में अपेक्षित सुविधाऐं उपलब्ध हैं।

4. अध्ययन क्षेत्र में डिस्पेंसरी एवं प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र की स्थापना यदि न्यूनतम दूरी के आधार पर की जाती तो अधिक सुविधाजनक होती परन्तु इन सुविधा केन्द्रों को पंचायत मुख्यालयों एवं बड़े केन्द्रों पर ही स्थापित किया गया।

5. अध्ययन क्षेत्र में वर्तमान में मूलभूत आवश्यक सेवाऐं सभी सेवा केन्द्रों को प्राप्त है। परन्तु उच्च स्तरीय सेवा जैसे महाविद्यालय, थोक बाजार आदि की रिक्तता है। इसमें बोहत एवं बम्बोरीकलां जैसे बड़े अधिवासों में यदि महाविद्यालय एवं थोक बाजार की सुविधा उपलब्ध हो जाती है तो सम्पूर्ण क्षेत्र सभी सुविधाओं से पूर्ण हो जाता है।

7. समग्र विकास हेतु वर्तमान स्वरूप एवं भावी विकास के लिए व्यूह रचना

7.1 प्रदेश के विकास में केन्द्रीय स्थलों की भूमिका–

केन्द्रीय स्थल ऐसे अधिवास हैं जो अन्य अधिवासों को विभिन्न सेवाऐं प्रदान करवाते हैं। यह अधिवास मुख्य रूप से प्रमुख सेवा के केन्द्र होते हैं जिन पर अन्य अधिवास आश्रित होते हैं। विभिन्न आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए छोटे अधिवास इन अधिवासों पर आश्रित हैं। अध्ययन क्षेत्र में केन्द्रीय स्थल, ग्राम पंचायत एवं नगर पालिका क्षेत्र है जिनके द्वारा विभिन्न सेवाऐं अन्य अधिवासों को प्राप्त होती हैं।

छोटे अधिवास अपनी मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए बड़ें अधिवासों पर निर्भर हैं जिनसे उनकों शिक्षा, चिकित्सा, कृषि, आर्थिक क्रियाऐं एवं अन्य मूलभूत आवश्यक वस्तुऐं प्राप्त होती हैं। इन मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए अध्ययन क्षेत्र में किसी भी अधिवास को अधिक दूरी तय नहीं करनी पड़ती। यहाँ पर अधिकांश गैर आबादीत अधिवासों को ही सुविधा प्राप्त नहीं है। अन्यथा आबादीत अधिवासों में सभी प्रकार की सुविधाऐं कुछ दूरी पर प्राप्त हो जाती हैं। केन्द्रीय स्थलों में सेवाऐं उत्तम प्रकार की हैं। केवल चिकित्सा के आधार पर कुछ सेवाओं की रिक्तता देखने को मिलती हैं। इन सेवाओं के लिए बड़े कस्बों एवं तहसील मुख्यालय पर निर्भर रहना पड़ता है।

7.2 वर्तमान आर्थिक सुविधाओं में भावी विकास की कठिनाईयाँ भौगोलिक, आर्थिक व सामाजिक

(अ) भौगोलिक कठिनाईयाँ – मांगरोल तहसील कृषि की दृष्टि से विकसित क्षेत्रों के अन्तर्गत आती है। परन्तु इसका पूर्वी भाग एवं पश्चिमी भाग पार्वती एवं कालिसिंध नदी के बीहड़ क्षेत्र होने के कारण इनमें कृषि का विकास कम देखने को मिलता है एवं गैर आबादीत अधिवास देखने को मिलते हैं। यदि इस क्षेत्र में विभिन्न योजनाओं के द्वारा अधिवास

विकसित किये जाये तो पूर्वी एवं पश्चिमी भाग भी कृषि क्षेत्र के रूप में विकसित हो सकता है।

मांगरोल तहसील में सोयाबीन, धनियाँ गेहूँ, सरसों आदि की फसलें मुख्य रूप से की जाती है। परन्तु यहाँ पर कोई भी तेल मील, आटा मील नहीं होने के कारण कृषि उत्पाद का अधिक मूल्य प्राप्त नहीं हो पाता है। यहाँ पर कृषि उत्पाद के आधार पर उद्योग की विभिन्न छोटी इकाईयाँ स्थापित की जा सकती है।

मांगरोल क्षेत्र में शिक्षा का विस्तार होने के बावजूद भी कृषि पद्दति प्राचीन ढंग की है। यहाँ पर कृषि विकास केन्द्र के द्वारा विभिन्न तकनिकी प्रशिक्षण देकर कृषि पद्दति में सुधार किया जा सकता है।

अध्ययन क्षेत्र में अधिकांश भाग सिंचित कृषि के अन्तर्गत आता है। परन्तु अत्यधिक सिंचाई के कारण भूमि की उर्वरक क्षमता लगातार समाप्त होती जा रही है। इसके लिए कृषकों को उचित मार्गदर्शन की आवश्यकता है। इसके लिए प्रत्येक पंचायत मुख्यालय पर कृषि विस्तार सेवा केन्द्रों की स्थापना की जाए।

अध्ययन क्षेत्र में सरकार द्वारा कईं प्रकार की योजनाऐं कृषि विस्तार हेतु संचालित हैं परन्तु योजनाऐं मूलरूप से कृषकों के पास नहीं पहुँच पाती जिसके अभाव में कृषक इसका लाभ प्राप्त नहीं कर पाते हैं। इसके लिए विभिन्न प्रकार की जागरूकता अभियान चलाकर कृषकों को जागरूक किया जा सकता है।

भौगोलिक दृष्टि से अध्ययन क्षेत्र समतल क्षेत्र के अन्तर्गत आता है। जहाँ पर कृषि भूमि का विस्तार अधिक है। इसलिए उर्वरक, बीज, कीटनाशक आदि उचित मूल्य पर मिलना आवश्यक है एवं कृषि में तकनिकी यंत्रों पर विभिन्न प्रकार की सहायता दी जाए।

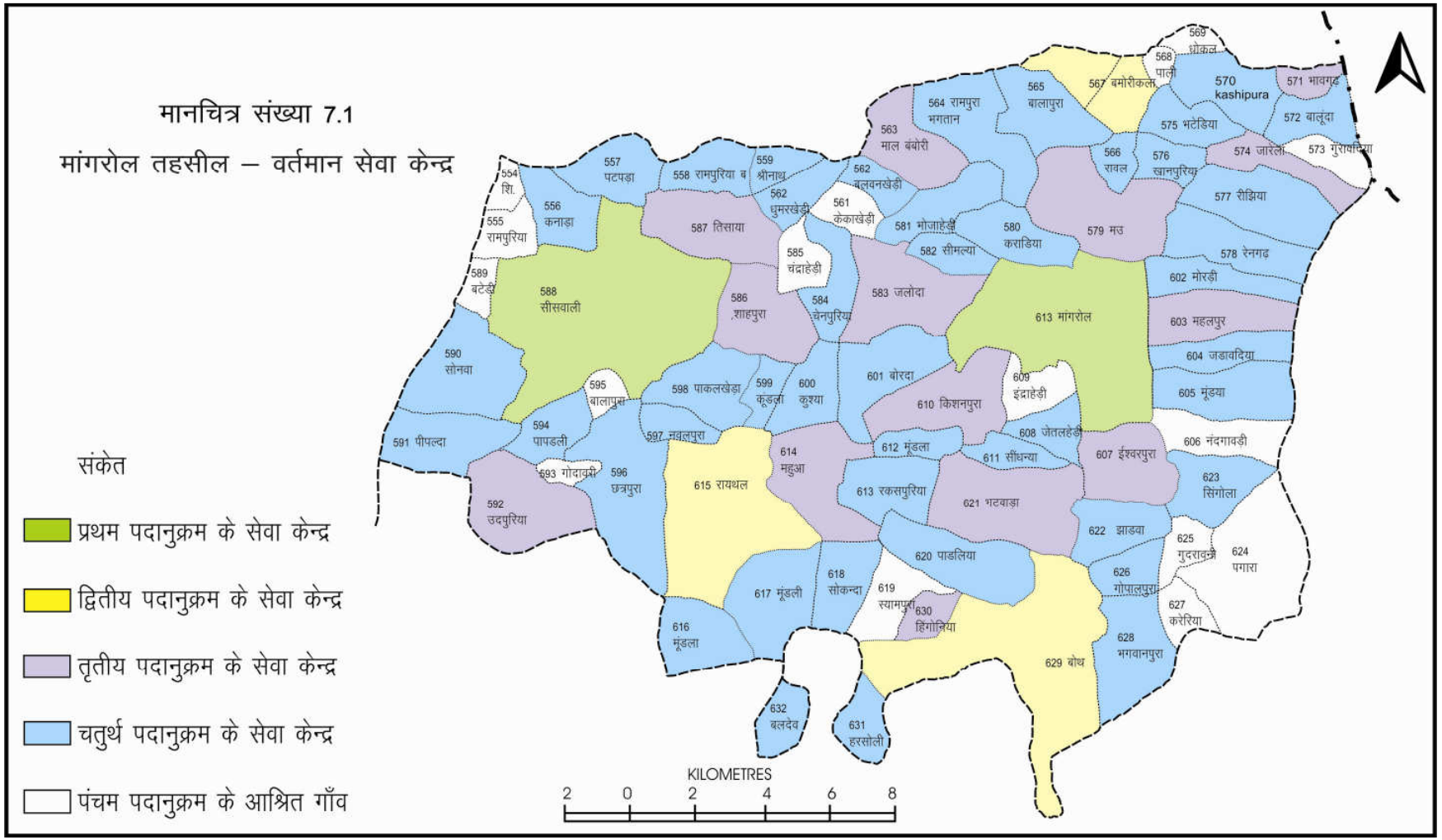

मानचित्र संख्या 7.1
मांगरोल तहसील – वर्तमान सेवा केन्द्र
संकेत
प्रथम पदानुक्रम के सेवा केन्द्र
द्वितीय पदानुक्रम के सेवा केन्द्र
तृतीय पदानुक्रम के सेवा केन्द्र
चतुर्थ पदानुक्रम के सेवा केन्द्र
पंचम पदानुक्रम के आश्रित गाँव
KILOMETRES
2 0 2 4 6 8
557 पटपड़ा
558 रामपुरिया ब
559 श्रीनाथ
562 धुमरखेड़ी
562 बलवनखेड़ी
563 माल बंबोरी
564 रामपुरा भगतान
565 बालापुरा
567 बमोरीकलां
568 पाली
569 धोकल
570 kashipura
571 भावगढ़
572 बालूंदा
573 गुरायदिया
574 जारेला
575 भटेडिया
576 खानपुरिया
566 रावल
577 रीझिया
578 रेनगढ़
579 मउ
580 कराडिया
581 भोजाहेड़ी
582 सीमल्या
583 जलोदा
584 चेनपुरिया
585 चंद्राहेड़ी
586 शाहपुरा
587 तिसाया
588 सीसवाली
589 बटेडी
590 सोनवा
591 पीपल्दा
592 उदपुरिया
593 गोदावरी
594 पापडली
595 बालापुरा
596 छत्रपुरा
597 नवलपुरा
598 पाकलखेड़ा
599 कूंडला
600 कुश्या
601 बोरदा
602 मोरडी
603 महलपुर
604 जडावदिया
605 मूंडया
606 नंदगावडी
607 ईश्वरपुरा
608 जेतलहेडी
609 इंद्राहेड़ी
610 किशनपुरा
611 सींधन्या
612 मूंडला
613 मांगरोल
613 रकसपुरिया
614 महुआ
615 रायथल
616 मूंडला
617 मूंडली
618 सोकन्दा
619 स्यामपुरा
620 पाडलिया
621 भटवाड़ा
622 झाडवा
623 सिंगोला
624 पगारा
625 गुदरावनी
626 गोपालपुरा
627 करेरिया
628 भगवानपुरा
629 बोथ
630 हिंगोनिया
631 हरसोली
632 बलदेव
554 शि.
555 रामपुरिया
556 कनाड़ा
561 केकाखेड़ी

कृषि भूमि में मौसम की अनियमितता के कारण कई बार कृषकों की मूल लागत अधिक होती है परन्तु उतनी मात्रा में कृषि उपज से आय प्राप्त नहीं होती है। अतः किसान लगातार कर्जदार होते जा रहे हैं। इसके लिए किसानों को विभिन्न औद्योगिक ईकाईयों के समान लोन सुविधा उपलब्ध करवाई जाये जिससे वह प्रतिवर्ष किश्तों के द्वारा लोन राशि का भुगतान कर सके एवं अपने कर्ज को कम कर सके।

कृषि के साथ–साथ यहाँ पर पशुपालन को व्यवसायिक रूप में नहीं किया जाता जबकि कृषि के साथ पशुपालन आसानी से किया जा सकता है। जिससे कृषकों को अतिरिक्त आय प्राप्त हो सकती है। इसके लिए विभिन्न कृषकों को जागरूक करके एवं पशुपालन की योजनाओं से अवगत कराकर पशुपालन को व्यवसायिक रूप में अपनाया जा सकता है।

अध्ययन क्षेत्र में विकसित कृषि क्षेत्र होने के बावजूद भी यहाँ पर भंडारण सुविधा उपलब्ध नहीं है। यदि सीसवाली, मांगरोल, रायथल में माल गोदाम एवं भंडारण सुविधा उपलब्ध हो जाये तो किसानों के अनाज को खराब होने से बचाया सकता है।

(ब) आर्थिक सुविधाऐं एवं कठिनाईयाँ –

अध्ययन क्षेत्र में आर्थिक आय का कृषि के अतिरिक्त अन्य कोई साधन नहीं है। इसलिए अध्ययन क्षेत्र में छोटे उद्योग विकसित होना आवश्यक है। जिससे व्यक्तियों को रोजगार प्राप्त हो सके।

मांगरोल में गेहूँ की फसल का अधिक उत्पादन होता है। जिससे यहाँ पर आटा मील स्थापित की जा सकती है। यह यहाँ पर रोजगार और आय का मुख्य साधन बन सकती है।

खरीफ की फसल के अन्तर्गत सोयाबीन का अधिक उत्पादन होता है। जिससे यहाँ पर तेल मील एवं सोयाबीन निर्मित विभिन्न उत्पादों के छोटे उद्योग संचालित किये जा सकते हैं।

अध्ययन क्षेत्र में मांगरोल नगर खादी के लिए जाना जाता है। परन्तु यहाँ पर खादी कपड़ा बनाने की कोई बड़ी मील नहीं है। यदि यहाँ पर खादी कपड़ा मील स्थापित की जाये तो कईं लोगों को रोजगार एवं सस्ता कपड़ा आसानी से मिल सकता है।

अध्ययन क्षेत्र में धनियाँ, मिर्च एवं लहसुन की फसल भी पर्याप्त मात्रा में की जाती है। जिससे यहाँ पर मसाला उद्योग एवं लहसुन उत्पाद उद्योग स्थापित किया जा सकता है।

अध्ययन क्षेत्र में दुग्ध उत्पादन अधिक होता है। यदि दुग्ध उत्पाद उद्योग स्थापित किया जाय तो पशुपालन के प्रति लोगों की निर्भरता बढ़ेगी एवं व्यवसायिक पशुपालन किया जा सकेगा।

यहाँ पर सीसवाली व मांगरोल में ईंट उद्योग विकसित किया जा सकता है। जिससे यहाँ पर निमार्ण की मूलभूत आवश्यकताओं को पूरा किया जा सकता है।

अध्ययन क्षेत्र में पशुपालन के साथ–साथ मछली पालन एवं मुर्गी पालन की संभावना भी विद्यमान है। यहाँ पर मुर्गी पालन एवं मछली पालन के केन्द्र विकसित किये जा सकते हैं जिससे व्यक्तियों को अतिरिक्त आय प्राप्त हो सके।

(स) सामाजिक सुविधाऐं एवं कठिनाईयाँ –

अध्ययन क्षेत्र में सामाजिक जागरूकता के केन्द्र कम देखें जाते हैं। जिससे सामाजिक विकास देखने को नहीं मिलता है। विभिन्न सामाजिक समितियों के द्वारा सामाजिक विकास को बढ़ावा दिया जा सकता है।

अध्ययन क्षेत्र में समाज कल्याण विभाग द्वारा विभिन्न सुविधाऐं प्रदान की जाती हैं। परन्तु आमजन तक सुविधाऐं नहीं पहुँच पाती। इसके लिए सामाजिक जागरूकता की आवश्यकता है।

अध्ययन क्षेत्र में व्यक्तियों के लिए परिवहन की सुविधा के रूप में केवल बस, कार एवं निजी साधन उपलब्ध हैं। यहाँ पर रेल सुविधा की संभावनाऐं व्याप्त हैं।

अध्ययन क्षेत्र में शिक्षा के लिए पर्याप्त सुविधा है परन्तु चिकित्सा एवं मनोरंजन के साधनों की कमी देखने को मिलती है। यदि अध्ययन क्षेत्र में विभिन्न चिकित्सा केन्द्र विकसित किये जायें एवं मनोरंजन के साधन उपलब्ध करवाये जायें तो सामाजिक विकास ओर अधिक विकसित हो सकता है।

7.3 कार्यात्मक पदानुक्रम का प्रस्तावित प्रारूप—

अध्ययन क्षेत्र में कार्यात्मक रिक्तता के क्षेत्र को परिभाषित किया जा चुका है। तहसील के कुछ भाग पूर्ण सेवित हैं तथा कुछ भाग अर्ध सेवित हैं एवं कुछ सेवित हैं। इस प्रकार केन्द्रीय कार्यों की विषमता देखने को मिलती है। समग्र विकास के लिए केन्द्रीय कार्यों की उपलब्धता होना आवश्यक है। विभिन्न अधिवासों के विस्तार के आधार पर उन स्थानों पर केन्द्रीय कार्यों की उपलब्धता होना आवश्यक है। विभिन्न अधिवासों को सेवाओं एवं आकार के आधर पर विभिन्न श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है। जिसमें बंसल द्वारा प्रस्तावित स्थानिक एकीकरण के लिए पांच वर्गों में रखा गया है जिसमें प्रादेशिक राजधानी, प्रादेशिक सेवा केन्द्र, केन्द्रीय गांव एवं आश्रित गांव सम्मिलित है। इसी आधार पर तहसील के विभिन्न कार्यों को परिभाषित किया गया है। इसी के आधार पर इनका पदानुक्रम निर्धारित किया गया है।

इसमें उच्च पदानुक्रम पर उसके निम्न पदानुक्रम वाले अधिवास आश्रित होंगे। प्रादेशिक राजधानी मुख्य एवं केन्द्रीय सेवा केन्द्र होंगे। जिन पर प्रादेशिक सेवा केन्द्र आश्रित होते हैं तथा प्रादेशिक सेवा केन्द्रों पर अन्य सेवा केन्द्र आश्रित हैं। सेवा केन्द्रों पर केन्द्रीय गांव तथा केन्द्रीय गांव पर आश्रित गांव आश्रित रहेंगे। इस प्रकार पदानुक्रम के विभिन्न स्तरों में क्रमानुसार अधिवास आश्रित रहेंगे। इनमें प्रदत्त विभिन्न सेवाओं के

आधार पर आश्रित अधिवासों का प्रारूप निर्धारित किया गया है। जो निम्न प्रकार है –

मांगरोल तहसील में विभिन्न सेवाओं का सम्बन्ध एवं स्थानिक वितरण का प्रारूप

(1) प्रादेशिक राजधानी –

महाविद्यालय, आधुनिक सुविधाऐं (एक्स रे, ऑपरेशन थियेटर) से सुसज्जित अस्पताल, परिवार नियोजन केन्द्र, मातृत्व शिशु कल्याण केन्द्र, डाक एवं तार, दूरभाष केन्द्र, बैंक, सहकारी समिति, थोक बाजार, पशु चिकित्सालय, बस स्टेण्ड, रेलवे स्टेण्ड, हॉटल, रेस्टोरेन्ट, सिनेमाघर, तहसील स्तरीय प्रशासनिक कार्यालय आदि।

(2) प्रादेशिक सेवा केन्द्र –

उच्च माध्यमिक विद्यालय, प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र, परिवार नियोजन, मातृत्व शिशु कल्याण केन्द्र, डाक एवं तार, छोटा दूरभाष केन्द्र, बैंक, सहकारी समिति, नियमित बाजार, पशु चिकित्सालय, बस स्टेण्ड, सिनेमाघर, खण्ड विकास कार्यालय आदि।

(3) सेवा केन्द्र –

माध्यमिक विद्यालय, ग्रामीण स्वास्थ्य डिस्पेंसरी, मातृत्व शिशु कल्याण केन्द्र, उप डाकघर, सहकारी समिति, खुदरा बाजार, पशु चिकित्सालय, उर्वरक एवं बीज केन्द्र, बस स्टॉप, ग्राम पंचायत

(4) केन्द्रीय गाँव –

उच्च प्राथमिक विद्यालय, मातृत्व शिशु कल्याण केन्द्र, शाखा डाकघर, साप्ताहिक बाजार, पशु चिकित्सा केन्द्र, साईकिल रिपेयरिंग, रेडियों, कृषि औजार सेवा केन्द्र आदि।

(5) आश्रित गाँव –

प्राथमिक विद्यालय, निजी चिकित्सा व्यवसायी, छोटा सामान्य प्रोविजन स्टोर, आटा चक्की आदि।

समग्र क्षेत्र विकास नियोजन अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य तहसील के ग्रामीण क्षेत्रों में विभिन्न कार्यात्मक सेवा केन्द्रों पर विकास है। जिसमें वहाँ की स्थिति के आधार पर विभिन्न सेवा केन्द्रों की रिक्तता को पूर्ण किया जा सके। जिससे वहाँ पर निवासित व्यक्तियों का भौगोलिक, आर्थिक व सामाजिक विकास हो सके तथा तहसील स्तर पर एवं मुख्यालय स्तर पर प्राप्त विभिन्न सुविधाऐं उनकों छोटे सेवा केन्द्रों से प्राप्त हो सके एवं जीवन की गुणवत्ता में वृद्धि हो सके। इसके लिए आवश्यक है कि विभिन्न सेवा केन्द्रों का विकास हो एवं सेवा केन्द्रों पर प्रारूप में प्रदत्त विभिन्न सेवाओं का विकास हो।

उपरोक्त प्रारूप में समग्र विकास के लिए आधुनिक समय की मांग को देखते हुए विभिन्न सेवाओं का प्रारूप प्रस्तुत किया गया है। जिसमें विभिन्न योजनाओं के द्वारा सेवा केन्द्रों का केन्द्रीयकरण होना आवश्यक है। जिससे प्रदेश का समग्र विकास हो सके एवं व्यक्तियों को विभिन्न प्रकार की प्रादेशिक सेवाओं का लाभ तहसील स्तर पर दिया जा सके। छोटे से छोटे आश्रित अधिवास को कम दूरी तय करके विभिन्न प्रकार की सेवाऐं प्राप्त हो सके। इसके लिए आवश्यक है कि विभिन्न सेवा केन्द्रों का प्रारूप के आधार पर निर्धारण आवश्यक है जो कि प्रत्येक व्यक्ति की पहुँच में हो।

सेवा केन्द्रों के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि अधिवास परस्पर एक दूसरे पर आश्रित होते हैं। जिसमें छोटे अधिवास बड़े अधिवासों पर आश्रित होते हैं तथा बड़े अधिवासों की विभिन्न सेवाओं का उपभोग करते हैं। इस प्रकार विभिन्न अधिवासों में परस्पर सामंजस्य एवं आत्म निर्भरता बनी रहती है। अध्ययन क्षेत्र में केन्द्रीय अधिवास मुख्य रूप से आधारभूत सेवाऐं उपलब्ध करवाते हैं तथा सेवा केन्द्र उच्च स्तरीय सेवाऐं उपलब्ध कराते

हैं। यहाँ पर प्रादेशिक सेवाऐं नहीं होती है। प्रादेशिक सेवाओं के लिए यह अधिवास प्रादेशिक सेवा केन्द्रों पर निर्भर रहते हैं तथा विभिन्न केन्द्रीय सेवाऐं एवं प्रादेशिक राजधानी की सेवा के लिए प्रादेशिक राजधानी सेवा केन्द्र पर विभिन्न अधिवास आश्रित रहते हैं। इस प्रकार तहसील में विभिन्न सेवा केन्द्रों का पदानुक्रम एक दूसरे को सेवाऐं प्रदत्त करते हैं एवं अधिकतम व्यक्तियों द्वारा सेवाओं का लाभ प्राप्त किया जाता है।

अध्ययन क्षेत्र में विभिन्न सेवा केन्द्रों का पदानुक्रम का निर्धारण उनकी दूरी के आधार पर निर्धारित किया गया है तथा पाँचवाँ अधिवास आश्रित अधिवास की श्रेणी में रखा गया है। इसमें आश्रित अधिवास विभिन्न सेवाओं के लिए अन्य सेवा केन्द्रों पर आश्रित होंगे तथा अगले पदानुक्रम में कुछ अधिवास ऐसे होंगे जहाँ पर विभिन्न प्रकार की सुविधाऐं उनकों स्वयं की सेवा केन्द्रों से प्राप्त होगी। इस प्रकार के सेवा केन्द्रों को केन्द्रीय गाँव कहा गया है। जो अधिकतम 3 किलोमीटर की दूरी तक आश्रित अधिवासों को सेवाऐं प्रदान करेंगे। यह अधिवास आश्रित अधिवासों से विभिन्न सड़क मार्ग से जुड़े हुए होंगे तथा इन सेवा केन्द्रों की अधिकतम जनसंख्या 15000 निर्धारित की गई। इस प्रकार केन्द्रीय गाँव के प्रभाव क्षेत्र में आने वाले सभी अधिवासों को यह सेवा केन्द्र विभिन्न प्रकार की सेवाऐं प्रदान करेंगे।

अध्ययन क्षेत्र में केन्द्रीय गाँव में विभिन्न प्रकार की सेवाऐं उपलब्ध हैं। यहाँ पर पशु चिकित्सालय, साप्ताहिकी बाजार जैसी रिक्तताओं को छोड़कर सभी प्रकार की अन्य सेवाऐं उपलब्ध हैं। केन्द्रीय गाँव में इन सेवाओं के लिए सेवा केन्द्र पर निर्भर रहना पड़ता है।

सेवा केन्द्रों का कार्यात्मक विस्तार 5 किलोमीटर की परिधी में होगा जहाँ पर यह विभिन्न केन्द्रीय गाँवों को सेवाऐं प्रदान करेंगे। सेवा केन्द्र मुख्य रूप से पंचायत मुख्यालय निर्धारित किये गये हैं जिसमें विभिन्न प्रकार की मूलभूत सुविधाऐं उपलब्ध हैं। यहाँ पर डिस्पेंसरी, बस स्टॉप की रिक्तता देखने को मिलती है। इसके लिए यह अधिवास प्रादेशिक सेवा केन्द्रों पर निर्भर हैं।

मानचित्र संख्या 7.2

मांगरोल तहसील – प्रस्तावित सेवा केन्द्र

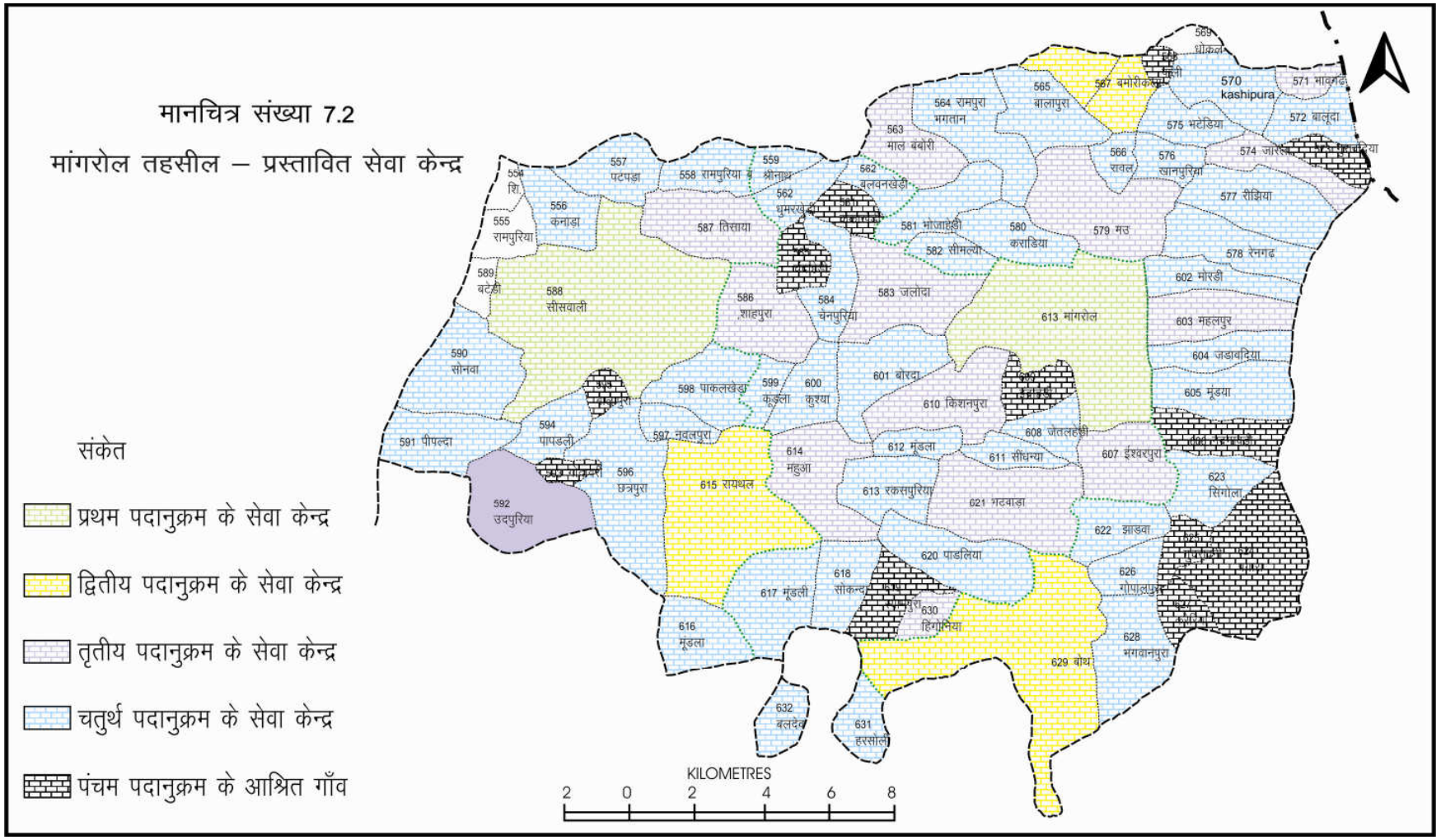

प्रादेशिक सेवा केन्द्र के अन्तर्गत रायथल, बम्बोरी एवं बोहत जैसे अधिवासों को सम्मिलित किया गया है। यह अधिवास विभिन्न प्रकार की प्रादेशिक सेवाऐं निम्न प्रदानुक्रम वाले सेवा केन्द्रों को उपलब्ध करवाते हैं। यहाँ पर विभिन्न प्रकार की प्रादेशिक सेवाऐं उपलब्ध होती हैं। इन सेवाओं का लाभ निम्न सेवा केन्द्रों को प्राप्त होता है। प्रादेशिक सेवा केन्द्र अधिकतम 16 किलोमीटर की दूरी तक सेवाऐं दे सकते हैं। यह 50000 लोगों को एवं 200 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र को सेवाऐं दे सकते हैं। अतः इस प्रकार के सेवा केन्द्रों से सम्पूर्ण क्षेत्रों को प्रादेशिक सेवाऐं प्राप्त होती हैं। राजधानी स्तर की सेवाऐं प्रादेशिक राजधानी सेवा केन्द्र से प्राप्त होती हैं।

प्रादेशिक राजधानी सेवा केन्द्र के अन्तर्गत मुख्य रूप से तहसील मुख्यालय मांगरोल एवं उप तहसील सीसवाली को सम्मिलित किया गया है जो अध्ययन क्षेत्र को विभिन्न प्रकार की राजधानी स्तर की सेवाऐं प्रदान करते हैं। इस प्रकार की सेवाओं के लिए अधिकतम दूरी 25 किलोमीटर निर्धारित की गई है। जिसके अनुसार अध्ययन क्षेत्र के सम्पूर्ण भाग में राजधानी स्तर की अधिकतम सुविधाऐं प्राप्त हैं। यहाँ पर राजधानी स्तर की सेवाओं में पंचायत समिति, ऑपरेशन थियेटर युक्त अस्पताल, रेलवे स्टेशन जैसी सेवाओं की रिक्तता देखने को मिलती है। इस प्रकार की सेवाऐं अध्ययन क्षेत्र को बाराँ जिला मुख्यालय से प्राप्त होती है।

7.4 क्षेत्रिय विकास के प्रस्ताव–

अध्ययन क्षेत्र की विस्तृत अध्ययन के बाद यह स्पष्ट होता है कि मांगरोल तहसील में अधिकांश अधिवास पूर्ण सेवित हैं। यहाँ पर सेवाओं की रिक्तता कम देखने को मिलती है। परन्तु कुछ सेवा केन्द्र अधिक दूरी पर होने के कारण दूर स्थित अधिवासों को सेवाऐं नहीं दे पाते हैं। अध्ययन क्षेत्र के मध्य भाग में अधिकतम अधिवासों को विभिन्न प्रकार की सेवाऐं प्राप्त हो जाती हैं। परन्तु पूर्वी एवं पश्चिमी क्षेत्र के अधिवासों में कुछ अधिवास अधिकतम सेवाओं को प्राप्त नहीं कर पाते हैं। इन सेवाओं के लिए इन अधिवासों को 7 से 10 किलोमीटर तक की दूरी तय करनी पड़ती है।

समग्र क्षेत्र विकास नियोजन के लिए विभिन्न सेवाओं का प्रस्ताव आवश्यक है। अध्ययन क्षेत्र में कुल 80 अधिवासों में 2 अधिवास प्रादेशिक राजधानी, 3 अधिवास प्रादेशिक सेवा केन्द्र, 17 अधिवास सेवा केन्द्र, 42 अधिवास केन्द्रीय गाँव एवं 16 अधिवास आश्रित गाँव के अन्तर्गत आते हैं।

वर्तमान में स्थित सेवा केन्द्र एवं प्रस्तावित सेवा केन्द्रों को निम्न प्रकार से परिभाषित किया जा सकता है।

प्रथम पदानुक्रम के सेवा केन्द्र –

इसके अन्तर्गत राजधानी स्तर की सेवाओं को सम्मिलित किया गया है। जिसमें मांगरोल एवं सीसवाली अधिवास सम्मिलित हैं। इन अधिवासों में सेवा प्रारूप के आधार पर विभिन्न प्रकार की सेवाऐं उपलब्ध हैं। यहाँ पर तहसील मुख्यालय से रेल सुविधा एवं आधुनिक चिकित्सा पद्दति पंचायत समिति प्रारम्भिक शिक्षा अधिकारी कार्यालय होना प्रस्तावित है। जिससे अधिकतम व्यक्तियों को एवं संलग्न अधिवासों को विभिन्न प्रकार की प्रादेशिक राजधानी स्तर की सेवाऐं प्राप्त हो सके।

द्वितीय पदानुक्रम के सेवा केन्द्र –

इस पदानुक्रम के अन्तर्गत बम्बोरी, रायथल, बोहत जैसे अधिवासों को सम्मिलित किया गया है। जहाँ पर विभिन्न प्रकार की सुविधाऐं वर्तमान में उपलब्ध हैं। इन तीनों अधिवासों पर खण्ड विकास कार्यालय का होना प्रस्तावित है।

तृतीय पदानुक्रम के सेवा केन्द्र –

इसके अन्तर्गत 17 अधिवास आते हैं जो मुख्य रूप से ग्राम पंचायत मुख्यालय हैं। इसी कारण इन अधिवासों में वर्तमान में राजस्थान सरकार द्वारा उच्च प्राथमिक विद्यालय, माध्यमिक विद्यालय, उप स्वास्थ्य केन्द्र, सहकारी समिति, पशु चिकित्सा, शिशु कल्याण केन्द्र आदि सेवाऐं उपलब्ध हैं। इन अधिवासों में सभी 17 अधिवासों में डिस्पेंसरी होना प्रस्तावित है। जिससे अन्य अधिवासों को चिकित्सा सुविधा आसानी से मिल सके।

चतुर्थ पदानुक्रम के सेवा केन्द्र –

इस क्रम के अधिवासों में अध्ययन क्षेत्र के 42 अधिवासों को सम्मिलित किया गया है। वर्तमान में इन अधिवासों में शाखा डाकघर, पशु चिकित्सा केन्द्र, साप्ताहिकी बाजार जैसे प्रस्तावित कार्यों को छोड़कर शेष सभी सेवाऐं उपलब्ध हैं।

पंचम पदानुक्रम के आश्रित गाँव –

इसके अन्तर्गत अध्ययन क्षेत्र के 16 अधिवासों को सम्मिलित किया गया है। जिसमें पूर्वी क्षेत्र के करेरिया, पगारा, नन्दगांवड़ी, पाली, गुरदावनी के आबादीत अधिवास एवं गुरावदीया, धोकलखेड़ी गैर आबादीत अधिवास को सम्मिलित किया गया है तथा मध्य क्षेत्र के इन्द्राहेड़ी, श्यामपुरा, चन्द्राहेडी को सम्मिलित किया गया है तथा पश्चिमी भाग में गोदावरी आबादीत क्षेत्र एवं शिवपुरा, रामपुरा, बठेड़ी, बालापुरा अधिवासों को सम्मिलित किया गया है। जहाँ पर कई अधिवासों में प्राथमिक विद्यालय एवं आटा चक्की प्रस्तावित है। यह अधिवास मुख्य रूप से अन्य अधिवासों पर निर्भर हैं। जिनसे सेवाऐं प्राप्त करने के लिए उनकों न्यूनतम दूरी तय करनी पड़ती है। यह सभी अधिवास आश्रित अधिवासों के अन्तर्गत सम्मिलित किये गये हैं जो विभिन्न सेवाओं के लिए अन्य सेवा केन्द्रों पर पूर्ण रूप से आश्रित हैं।

अध्ययन क्षेत्र में कुल 80 सेवा केन्द्र हैं जिसमें 70 सेवा केन्द्रों पर विभिन्न सेवाऐं प्रस्तावित हैं। इन अधिवासों में सम्पूर्ण सेवाऐं उपलब्ध नहीं होने के कारण विभिन्न सेवाओं के लिए इन्हें प्रस्तावित सेवा केन्द्र माना गया है। अधिवासों के बीच अधिक दूरी नहीं होने के कारण इन्हीं सेवा केन्द्रों पर विभिन्न सेवाऐं प्रस्तावित हैं। इस प्रकार 4 नवीन सेवा केन्द्र गुदरावनी, श्यामपुरा, केकाखेड़ी एवं चन्द्राहेड़ी प्रस्तावित हैं।

अध्याय अष्ठम्

उपसंहार, निष्कर्ष

एवं

सुझाव

8. निष्कर्ष, सारांश एवं सुझाव –

समग्र क्षेत्र विकास नियोजन में किसी भी प्रदेश के समग्र विकास की रूपरेखा तैयार की जाती है। जिस रूपरेखा के आधार पर प्रदेश का विकास संभव है इसी को ध्यान में रखते हुए अध्ययन विषय के अन्तर्गत मांगरोल तहसील के समग्र विकास का विश्लेषण किया गया जो कि प्रदेश के ग्रामीण विकास के लिए नया आयाम होगा। जिसके आधार पर विभिन्न ग्रामीण अधिवासों के विकास का प्रस्ताव तैयार किया जा सकता है तथा उनके विकास की रूपरेखा निर्धारित की जा सकती है। इस अध्ययन में ग्रामीण विकास की रूपरेखा में भौगोलिक, आर्थिक व सामाजिक विभिन्न तथ्यों को सारगर्भीत किया गया है एवं विभिन्न अवस्थाओं के आधार पर विकास को निर्धारित किया गया है।

मांगरोल तहसील राजस्थान के दक्षिणी–पूर्वी भाग में बाराँ जिले की एक तहसील है जो कि **$25^0$16'** से **$25^0$33'** उत्तरी अक्षांशों के बीच एवं देशान्तरीय विस्तार **$76^0$20'** से **$76^0$35'** के बीच स्थित है। मांगरोल तहसील 431.25 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में विस्तृत है। 2011 की जनगणना के अनुसार यहाँ पर 106963 व्यक्ति निवास करते हैं। यहाँ पर कुल 20516 परिवार हैं। तहसील का जनघनत्व 248 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर है। इस भाग की समुद्र तल से औसत ऊँचाई 242 मीटर (794 फीट) है। अध्ययन क्षेत्र में भौगोलिक दृष्टि से यह मैदानी भाग है एवं यहाँ पर उच्चावच 220 मीटर से लेकर 260 मीटर के बीच है। इससे स्पष्ट होता है कि अध्ययन क्षेत्र समतल मैदानी भाग है।

यहाँ की भूगर्भिक संरचना बालू मिट्टी, कंकड़, लेटेराइट एवं दक्कन लावा से निर्मित है। यहाँ पर अधिकांशतः जलोढ़ मृदा पाई जाती है।

अध्ययन क्षेत्र के पूर्वी भाग में पार्वती नदी एवं पश्चिमी भाग में कालीसिंध एवं मध्य भाग में बाणगंगा नदी प्रवाहित होती है।

यहाँ की जलवायु उष्ण एवं आर्द्र है। जहाँ पर मानसून से वर्षा होती है। जहाँ पर ग्रीष्मकाल में औसत तापमान 35^0 एवं शीतकाल में 15^0 के

लगभग रहता है। यहाँ पर औसत वार्षिक वर्षा 800 सेन्टीमीटर के लगभग है।

अध्ययन क्षेत्र में उष्ण कटिबंधीय वन पाये जाते हैं। जिसमें विभिन्न प्रकार के वृक्ष बैर, बबूल, आम, नीम, जामून, खेंजडी आदि के वृक्ष देखने को मिलते हैं तथा यहाँ पर विभिन्न प्रकार के जीव जैसे हिरण, सीयार, जंगली गाय, खरगोश आदि देखने को मिलते हैं।

अध्ययन क्षेत्र में काली एवं जलोढ़ मृदा पायी जाती है जिसमें ऊपजाऊ क्षमता अधिक है। इसी कारण अधिकांश भाग में कृषि की जाती है।

अध्ययन क्षेत्र का अधिकांश भाग कृषि भूमि के अन्तर्गत आता है यहाँ पर 45 प्रतिशत भूमि कृषि योग्य भूमि है तथा मात्र 10 प्रतिशत भूमि कृषि अयोग्य है। 30 प्रतिशत भूमि पर वन एवं चरागाह स्थित हैं। यहाँ पर गेहूँ, सोयाबीन, सरसों, धनियाँ, लहसुन, मैथी आदि की फसलें प्रमुखता से की जाती हैं। सिंचाई के लिए यहाँ पर दायीं मुख्य नहर की विभिन्न लिफ्ट परियोजना के द्वारा सिंचाई की सुविधा विकसित है।

यहाँ पर 121670 कुल पशु पाले जाते हैं। जिनमें गाय, भैंस, बकरी, भैड़, घोड़े, खच्चर आदि प्रमुख हैं।

अध्ययन क्षेत्र में पूर्व में कृषि उपज मण्डी संचालित नहीं थी परन्तु जनवरी 2018 से यहाँ पर कृषि मण्डी की शुरूआत की गयी। जिससे किसानों को विभिन्न प्रकार की सुविधाऐं उपलब्ध हुई हैं।

अध्ययन क्षेत्र में रेल सुविधा उपलब्ध नहीं है। परन्तु विभिन्न राष्ट्रीय राजमार्ग एवं राज्य मार्ग से प्रत्येक ग्राम एवं ग्राम पंचायत मुख्यालय परस्पर जुड़े हुए हैं। यहाँ पर परिवहन संचार तंत्र विकसित है।

यहाँ पर 2001 की जनसंख्या 87813 व्यक्ति थी। जो 2011 में बढ़कर 106963 हो गयी। इस प्रकार 21 प्रतिशत दशकीय वृद्धि हुई। यहाँ पर 2011 के अनुसार 932 व्यक्ति लिंगानुपात एवं 237 प्रतिवर्ग किलोमीटर घनत्व दर्ज किया गया।

अध्ययन क्षेत्र की औसत साक्षरता 60.56 प्रतिशत है जिसमें 72.48 प्रतिशत पुरूष साक्षर हैं एवं 47.80 प्रतिशत महिलाऐं साक्षर हैं।

अध्ययन क्षेत्र में विभिन्न प्रकार की सेवाऐं उपलब्ध हैं। यहाँ पर कुल 80 अधिवास हैं जिनमें 17 ग्राम पंचायत व 1 तहसील मुख्यालय है। जिसमें विभिन्न प्रकार की सेवाऐं उपलब्ध हैं। शिक्षा की दृष्टि से यहाँ पर 4 महाविद्यालय स्थित हैं एवं चिकित्सा की दृष्टि से 5 प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र स्थित हैं।

अध्ययन की सुविधा के आधार पर सम्पूर्ण क्षेत्र को 3 निम्न भागों में विभाजित किया गया है। जिसके समग्र विकास को संक्षिप्त रूप में निम्न प्रकार से परिभाषित किया जा सकता है।

1. पूर्वी निम्न प्रदेश – इस क्षेत्र के अन्तर्गत 34 अधिवासों को सम्मिलित किया गया है। जिसमें 5969 परिवार स्थित हैं। जिसकी कुल जनसंख्या 30628 है। यह भाग पार्वती नदी से बाणगंगा नदी के बीच स्थित है। जिसके अन्तर्गत आने वाला अधिकांश भाग कृषि योग्य भूमि के अन्तर्गत है। इसमें माल बम्बोरी, बम्बोरीकलां, भावगढ़, मऊ, महलपुर, बोहत आदि ग्राम पंचायत के विभिन्न गाँव आते हैं। जिनके लिए अपेक्षित सुविधाऐं निम्नलिखित हैं।

(1) अध्ययन क्षेत्र में पार्वती नदी के किनारे वाले भागों में विभिन्न प्रकार के बीहड़ स्थित हैं। जिनको सरकार की विभिन्न योजनाओं के द्वारा कृषि क्षेत्र में परिवर्तित किया जा सकता है।

(2) अध्ययन क्षेत्र में पार्वती नदी से रेत एवं पत्थर का खनन किया जाता है। यहाँ पर क्रेशर लगाकर खनन व्यवसाय को समृद्ध किया जा सकता है।

(3) अध्ययन क्षेत्र में काली, दोमट एवं जलोढ़ मृदा होने के कारण मिट्टी की उपजाऊ क्षमता अधिक है इसी कारण यहाँ पर विस्तृत कृषि देखने को मिलती है परन्तु द्वि फसल पद्दती एवं उन्नत बीज एवं उर्वरकों का प्रयोग करके उत्पादन में वृद्धि की जा सकती है।

(4) इस क्षेत्र के अन्तर्गत गेहूँ, सोयाबीन, धनियाँ, लहसुन आदि की कृषि की जाती है। जिससे विभिन्न प्रकार के कृषि आधारित लघु उद्योग संचालित होने की संभावनाऐं व्याप्त हैं।

(5) अध्ययन क्षेत्र को रेल परिवहन की सुविधा देकर श्योपुर एवं बाराँ से जोड़ा जा सकता है। जिससे विभिन्न प्रकार की अन्तर्राज्यीय सुविधाऐं आसानी से प्राप्त हो सकती हैं।

(6) यह भाग मध्य प्रदेश की सीमा का संलग्न भाग होने के कारण विभिन्न प्रकार की सुविधाऐं मध्य प्रदेश से प्राप्त की जा सकती है।

(7) अध्ययन क्षेत्र में शिक्षा सुविधा विकसित रूप से देखने को मिलती है परन्तु स्थानीय रोजगार के आयाम नहीं होने के कारण शिक्षा निरर्थक प्रतीत हो रही है। यहाँ पर विभिन्न औद्योगिक केन्द्र स्थापित करके बेरोजगारी की समस्या को दूर किया जा सकता है।

(8) अध्ययन क्षेत्र में चिकित्सा सुविधा बम्बोरी कलां, माल बम्बोरी एवं बोहत में विकसित रूप से देखने को मिलती है। अन्य अधिवासों में डिस्पेंसरी स्थापित की जाकर विभिन्न चिकित्सा सुविधाऐं दुरूस्त की जा सकती है।

(9) पूर्वी भौगोलिक भाग में केवल 1 राष्ट्रीयकृत बैंक है। बैंक की सुविधा उपलब्ध कराने के लिए अन्य बैंक स्थापित किया जाना आवश्यक है।

(10) यहाँ पर कृषि सहकारी समितियाँ विभिन्न पंचायतों पर स्थित है। जहाँ पर सभी किसानों को उन्नत बीज एवं सस्ती दर में उर्वरक उपलब्ध करवाया जा सकता है।

(11) इस भाग में किसी प्रकार का कोई मनोरंजन का साधन उपलब्ध नहीं है। यहाँ पर मनोरंजन का साधन उपलब्ध करवाया जा सकता है।

(12) इस प्रदेश में सड़क सुविधा विकसित है। यहाँ से बाराँ से श्योपुर के लिए राज्य मार्ग स्थित है तथा इस मार्ग पर विभिन्न परिवहन के साधन विकसित किये जा सकते हैं।

(13) इस प्रदेश में किसी प्रकार का होटल एवं औद्योगिक इकाई नहीं है। जिसकी आवश्यकता स्थानीय व्यक्तियों द्वारा महसूस की जाती है।

(14) अध्ययन क्षेत्र के इस भाग के अधिकांश व्यक्ति पशु पालन करते हैं तथा उनसे प्राप्त दुग्ध को स्थानीय बाजार में प्रतिदिन पहुँचाते हैं। इसको ध्यान में रखते हुए इस क्षेत्र में 4–5 दुग्ध डेयरी स्थापित की जा सकती है जिससे किसानों को पशु पालन हेतु बढ़ावा मिल सके एवं सरकार के द्वारा विभिन्न प्रकार के अनुदान उपलब्ध हो सके।

(15) अध्ययन क्षेत्र में बम्बोरी कलां मध्य प्रदेश की सीमा का संलग्न प्रदेश है। यहाँ पर महाविद्यालय स्थापित किया जा सकता है।

(16) इस प्रदेश में नदी के पास मत्स्य व्यवसाय विकसित किया जा सकता है।

2. मध्य उच्च प्रदेश –

यह भौगोलिक प्रदेश पश्चिमी एवं पूर्वी निम्न प्रदेशों के बीच का उच्च भाग है। जिसमें 27 गाँव सम्मिलित किये गये हैं। इसके अन्तर्गत तहसील मुख्यालय भी सम्मिलित है। इस प्रदेश में कुल 8859 परिवार निवास करते हैं। जिनमें 47101 जनसंख्या निवास करती है। जिसका संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार है।

(1) मध्य उच्च भूमि प्रदेश में तहसील मुख्यालय सम्मिलित है। इसी कारण इस प्रदेश में अपेक्षित अधिक जनसंख्या निवास करती है। इसी कारण अधिक सेवा केन्द्रों का होना आवश्यक है। जहाँ से विभिन्न सुविधाऐं प्राप्त हो सके।

(2) मांगरोल तहसील मुख्यालय को बाराँ जिला मुख्यालय से रेल परिवहन सुविधा सुगमता से उपलब्ध कराई जा सकती है जिसको आगे की ओर सवाई माधोपुर एवं श्योपुर से जोड़ा जा सकता है।

(3) अध्ययन क्षेत्र के इस भाग में कुल 6 पंचायत मुख्यालय हैं। जहाँ पर विभिन्न प्रकार की सुविधाऐं उपलब्ध हैं तथा डिस्पेंसरी की सुविधा उपलब्ध करवाकर चिकित्सा सुविधा को भी दुरूस्थ किया जा सकता है।

(4) मांगरोल तहसील मुख्यालय पर किसी प्रकार का कोई पार्क एवं बच्चों के खेलने के लिए विस्तृत खेल मैदान नहीं है। जिसकी आवश्यकता यहाँ के व्यक्तियों को महसूस होती है।

(5) अध्ययन क्षेत्र के इस भाग में भटवाड़ा, गणेश जी को देव स्थल के रूप में विकसित कर प्रमुख पर्यटन स्थल बनाया जा सकता है।

(6) इस भाग में अधिकांश भाग कृषि भूमि के अन्तर्गत है इसी कारण कृषि उपजों के लिए उन्नत बीज एवं सस्ते उर्वरक का होना आवश्यक है। जिसकी आपूर्ती सरकार द्वारा की जा सकती है।

(7) इस भाग में मांगरोल तहसील के अन्तर्गत कृषि मण्डी संचालित है परन्तु भंडारण सुविधा उपलब्ध नहीं है। इस क्षेत्र में लोगों को प्रोत्साहित कर वेयर हाउस बनवाये जा सकते हैं।

(8) विभिन्न कृषि उपजों के आधार पर लघु उद्योग स्थापित किये जा सकते हैं।

(9) अध्ययन क्षेत्र में बाणगंगा नदी पूर्ण रूप से मृत अवस्था में पहुँच चुकी है। जिसे विकसित कर दायीं मुख्य नहर से जोड़कर तहसील मुख्यालय को जलापूर्ती की जा सकती है।

(10) अध्ययन क्षेत्र के इस भाग में डेयरी विकास को बढ़ावा देकर पशु पालन में वृद्धि की जा सकती है एवं इसको व्यवसायिक बनाया जा सकता है।

(11) अध्ययन क्षेत्र के इस भाग में जनसंख्या अधिक होने के कारण मुर्गी पालन, मछली पालन आदि उद्योग विकसित किये जा सकते हैं।

(12) मध्य भाग में मांगरोल तहसील मुख्यालय पर खादी वस्त्र के कई हथकरघे संचालित हैं। जिनको बढ़ावा देने के लिए यहाँ पर खादी वस्त्र की मील स्थापित की जा सकती है।

(13) अध्ययन क्षेत्र के इस भाग में विभिन्न फर्नीचर उद्योग स्थापित किये जा सकते हैं।

(14) अध्ययन क्षेत्र के इस भाग में पेयजल का संकट बना रहता है क्योंकि यहाँ का जल फ्लोराइड युक्त है। अतः फ्लोराइड मुक्त जल उपलब्ध करवाने हेतु विभिन्न संयंत्र लगाये जा सकते हैं।

(15) उद्योगों को बढ़ावा देकर एवं व्यक्तियों को प्रोत्साहित करके तहसील मुख्यालय पर विभिन्न छोटे उद्योग संचालित किये जा सकते हैं।

(16) जनसंख्या अधिक होने के कारण इस भाग में मसाला उद्योग, अगरबत्ती उद्योग, बत्ती उद्योग, कृषि उत्पाद उद्योग विकसित किये जा सकते हैं। जिससे लोगों को रोजगार के साथ–साथ गुणवत्तापूर्ण विभिन्न वस्तुऐं प्राप्त हो सके।

3. पश्चिमी निम्न भाग –

यह मध्य भाग के पश्चिम में स्थित है। जिसके अन्तर्गत बाणगंगा से लेकर कालीसिंध तक के 23 गांवों को सम्मिलित किया गया है। इस भाग के अन्तर्गत 108.7 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र को सम्मिलित किया गया है। जहाँ पर कुल 5688 परिवार हैं जिनमें 29234 व्यक्ति निवास करते हैं। यहाँ की विभिन्न आवश्यकताओं का संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार से किया जा सकता है।

(1) यह भाग कालीसिंध नदी के किनारे होने के कारण यहाँ भी खनन व्यवसाय विकसित किया जा सकता है तथा क्रेशर लगाकर पत्थर से विभिन्न निर्माण सामग्री तैयार की जा सकती है।

(2) विभिन्न कृषि उपजों के द्वारा व्यक्तियों को आर्थिक सहायता प्राप्त होती है। कृषि उपजों के उत्पादन में वृद्धि करके व्यक्तियों को समृद्ध बनाया जा सकता है।

(3) अध्ययन क्षेत्र के इस भाग में 3 गौशाला स्थित है। जिनसे यहाँ पर दुग्ध डेयरी स्थापित की जा सकती है एवं गोबर गैस संयंत्र स्थापित किये जा सकते हैं।

(4) अध्ययन क्षेत्र के इस भाग में महिला शिक्षा पर अधिक ध्यान नहीं दिया जाता। इसके लिए लोगों को जागरूक कर महिला शिक्षा के प्रति सजगता बढ़ाई जा सकती है।

(5) इस भाग में अनुसूचित जाति एवं जनजाति की जनसंख्या अधिक है। इसी कारण इस भाग में विभिन्न छात्रावास सुविधा उपलब्ध करवाई जा सकती हैं। जिससे इन वर्गों का स्तर उठाने में सहायता मिलेगी।

(6) यह भाग रेल मार्ग से जुड़ा हुआ नहीं है। अतः इसे दिगोद रेलवे लाईन से आसानी से जोड़ा जा सकता है। जिससे रेल परिवहन सुविधा एवं व्यापारिक परिवहन सुविधा मिल सकती हैं।

(7) अध्ययन क्षेत्र के इस भाग में कोटा, बाराँ एवं इटावा के लिए सरकारी यातायात सुविधा दयनीय है। जो मुख्य रूप से निजी यातायात साधनों पर निर्भर है जो यहाँ के व्यक्तियों के लिए अत्यधिक महंगी है। सरकार द्वारा यातायात सुविधा उपलब्ध करवाई जा सकती है। ग्रामीण बस सेवा शुरू की जानी चाहिए।

(8) यहाँ के कृषकों के लिए विभिन्न सब्जियों के लिए अनुकूल दशाऐं उपलब्ध है। कृषकों को विभिन्न प्रकार की तकनिकी सहायता एवं उचित मार्गदर्शन देकर विभिन्न प्रकार की सब्जियों के उत्पादन को विकसित किया जा सकता है। जिससे ग्रामीण आय में वृद्धि होगी।

(9) अध्ययन क्षेत्र के इस भाग में व्यक्तियों को कृषि की जानकारी देने के लिए विभिन्न जागरूकता शिविर लगाये जाने आवश्यक हैं।

(10) इस भाग में कालीसिंध नदी पर बांध या एनीकट विकसित किया जा सकता है। जिससे स्थानीय व्यक्तियों को सिंचाई की सुविधा उपलब्ध हो सके। साथ ही मत्स्य पालन व्यवसाय विकसित किया जा सकता है।

(11) इस भाग में फसल चक्रण एवं बहु फसल प्रणाली के प्रति व्यक्तियों को जागरूक किया जा सकता है। जिसमें सरकार द्वारा विभिन्न प्रकार के कृषि सहायक अधिकारियों के द्वारा समय–समय पर मार्गदर्शित करके फसलों की जानकारी एवं बीज, कीटनाशक के उपयोग की जानकारी दी जा सकती है। जिससे किसान फसल चक्रण एवं बहु फसल प्रणाली की ओर प्रेरित हो सकें।

(12) अध्ययन क्षेत्र के इस भाग में सीसवाली में मण्डी सुचारू रूप से संचालित नहीं है। मण्डी को संचालित करके विभिन्न कृषकों को अधिकतम लाभ दिया जा सकता है।

शोध सारांश –

समग्र क्षेत्र विकास नियोजन अध्ययन क्षेत्र के विकास की परिभाषा प्रस्तुत करता है। जिसमें विभिन्न कार्यों एवं उनकी क्रियाओं को जनसंख्या एवं संसाधनों के साथ समन्वित किया जाता है। नियोजित विकास से ही समग्र विकास संभव है। अतः स्थानीय व क्षेत्रीय समग्र विकास देश के निवासियों की आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक विकास से सम्बन्धित है। समग्र विकास एक नियोजित क्षेत्रीय विषय है जिसके द्वारा किसी भी प्रदेश की समस्याओं का आंकलन करके निदान हेतु सुझाव दिया जाता है। अधिकांश देशों में भूमि एवं पूंजी सीमित है। अतः समग्र विकास द्वारा संसाधनों का समुचित प्रयोग करते हुए सीमित संसाधन की खोज करके उच्च तकनिकी तथा प्रशिक्षण द्वारा अधिकतम विकास किया जा सकता है।

शोध के प्रमुख उद्देश्य –

1. कृषि, भूमि सुधार, मृदा संरक्षण, सिंचाई सुविधाऐं आदि कृषि अर्थव्यवस्थाओं के विस्तार हेतु प्रेरित करना।
2. शिक्षा, चिकित्सा, संचार, विपणन, साख की मूलभूत अधःसंरचना में सुधार करने हेतु सुझाव प्रस्तुत करना।
3. सामाजिक, आर्थिक अधःसंरचना का विस्तार एवं सुदृढ़िकरण करने का प्रयास।
4. संसाधनों का संरक्षण एवं वृद्धि केन्द्रों का प्रस्ताव प्रस्तुत करना।

अब तक किये गये कार्य की समीक्षा –

पी. सेन गुप्ता एवं गैलिना (1969) ने ''इकोनोमिक रिजनलाईजेशन ऑफ इण्डिया–प्रोब्लम्स एण्ड एप्रोचेज'' में भारत को लघु प्रदेशों में विभाजित किया। लघु प्रदेशों को एकल संसाधन, मध्यम प्रदेशों को

स्थानीय, प्रादेशिक तथा राष्ट्रीय महत्व के विशेषीकरण के आधार पर विभाजित किया।

आर.पी. मिश्रा (1969) ने ''रीजनल प्लानिंग इन इण्डिया'' में भारत को आर्थिक विकास स्तर, संसाधनों का वितरण एवं उपयोग आदि के आधार पर 13 वृहत तथा मध्यम प्रदेशों में विभाजित किया।

संदीप यादव (2001) ने ''स्पेशियों फंक्शनल प्लानिंग इन राजस्थान : ए माइक्रो एनालाइटीकल स्टडी ऑफ ब्यावर–तहसील'' में पिछडेपन को दूर करने के लिए वृद्धि केन्द्रों एवं सेवा केन्द्रों के माध्यम से नियोजन की रूपरेखा प्रस्तुत की।

पी. मीनाक्षी व विमल बारह (2006) ने ''असम के जोहर नगर में महिला साक्षरता व शिक्षा पर शोध अध्ययन किया गया, जिसमें महिलाओं के पिछडेपन के कारणों पर प्रकाश नहीं डाला गया।

धर्मेन्द्र सिंह (2007) द्वारा ''अलीगढ़ नगर में स्वास्थ्य सुविधा'' पर शोध अध्ययन किया गया, जिसमें स्वास्थ्य सम्बन्धी कार्यक्रमों की गुणवत्ता का उल्लेख नहीं किया गया।

देवेन्द्र सिंह राणावत (2010) ने ''एकीकृत ग्रामीण विकास योजना'' (झालरापाटन तहसील का अध्ययन) में स्थानीय स्तर पर उपलब्ध मानवीय एवं भौतिक संसाधनों के क्षैत्रीय विकास के लिए विभिन्न आयाम प्रस्तुत किये गये है। जिनमें विकास के लिए कौशल एवं क्षमताओं की विवेचना नहीं की गई।

परिकल्पनाऐं –

मांगरोल अध्ययन क्षेत्र निम्नलिखित परिकल्पनाओं पर आधारित है।

1. अध्ययन क्षेत्र में आधारभूत सुविधाऐं विद्यमान है परन्तु रोजगार उद्योग जैसी सेवाओं की आवश्यकता है।

2. अध्ययन क्षेत्र के विभिन्न केन्द्रीय स्थल सीमित स्थानों पर उपलब्ध है।

3. तहसील में उच्च शिक्षा, तकनीकि शिक्षा, कृषि तकनीकि जैसी सेवाओं की रिक्तता हैं।

4. मांगरोल तहसील में औद्योगिक रिक्तता एवं बाजारीय प्रवाह की रिक्तता हैं।

आंकड़ों का संग्रहण एवं विधितंत्र –

इसमें प्राथमिक एवं द्वितीयक आंकड़ों का संग्रहण किया गया। जलवायु, जनसंख्या, औद्योगिक आंकड़ें विभिन्न प्रकाशित एवं अप्रकाशित स्त्रोतों सरकारी कार्यालयों आदि से प्राप्त किये गये। विभिन्न सामाजिक सेवाओं एवं आर्थिक कार्यों के आंकड़ें प्राथमिक स्तर पर एकत्रित किये गये।

अध्ययन में निम्नलिखित आधारभूत सांख्यिकी विधियों एवं सूत्रों का प्रयोग किया गया –

(i) कार्लपियर्सन का सहसम्बन्ध गुणांक

$$r = \frac{\sum dxdy}{\frac{N\sqrt{\sum d^2x}}{N} X \frac{N\sqrt{\sum d^2y}}{N}}$$

यहाँ $\sum dxdy$ = **X** तथा **Y** के विचलनों के गुणनफल का योग

$\sum d^2x$ = **X** के विचलनों के वर्गों का योग

$\sum d^2y$ = **Y** के विचलनों के वर्गों का योग

N = पदों की संख्या

(ii) केन्द्रीयता सूचकांक

$$C = \frac{N}{Fi}$$

यहाँ **C=** केन्द्रीयता सूचकांक

N= गाँवों की कुल जनसंख्या

Fi= अधिवास जहाँ सुविधा है।

(iii) अधिवासों की केन्द्रीयता

$$C = \frac{NX100}{P}$$

यहाँ **C=** अधिवासों की केन्द्रीयता

N =उस अधिवास में गैर प्राथमिक कार्य में संलग्न जनसंख्या

P= तहसील में कुल गैर प्राथमिक कार्यों में संलग्न जनसंख्या

(iv) केन्द्रीय भारिता

$$Ci = \sum_{i=1}^{K} wiXij$$

यहाँ **Ci = i** अधिवास के लिये संयुक्त भार

Wi = i सेवा का भार

Xij = j अधिवास में **i** सेवा का भार

K =किसी सेवा की उपसेवाओं का योग

परिचय –

समग्र क्षेत्र विकास नियोजन विकास की परिभाषा प्रस्तुत करता है। जिसमें समग्र विकास की संकल्पना को मूल आधार माना गया है। अध्ययन क्षेत्र में मांगरोल तहसील के समग्र विकास को परिभाषित किया गया है। जिसमें सम्पूर्ण परिवेश ग्रामीण होने के कारण विकास कार्य कृषि पर निर्भर है। यहाँ पर विभिन्न गाँवों में विभिन्न आधारभूत सुविधाऐं उपलब्ध है एवं कई गांव सुविधाओं की दृष्टि से पिछड़े हुए है। अध्ययन क्षेत्र में इन्हीं सुविधाओं को सारगर्भीत किया गया है तथा सुविधाओं के लिए आवश्यक दशाऐं उनकी स्थिति एवं व्यक्तियों के लिए आवश्यकताओं को निर्धारित किया गया है। जिसमें अध्ययन क्षेत्र की स्थिति जलवायु एवं विभिन्न भौतिक दशाऐं क्षेत्र के विकास को परिभाषित करती है। अध्ययन क्षेत्र में शिक्षा चिकित्सा, संचार, बाजार एवं मूलभूत आवश्यकताओं का अध्ययन किया गया है। जिसमें विभिन्न सुविधाओं को विकास के लिए आवश्यक बताया है।

शोध ग्रन्थ में प्रथम अध्याय के अन्तर्गत अध्ययन के उद्देश्य, विकास की संकल्पना, कार्यों की समीक्षा, विधि तंत्र आदि को समायोजित किया गया है। जिसमें विभिन्न संकल्पनाओं के आधार पर अध्ययन की रूपरेखा प्रस्तुत की है।

द्वितीय अध्याय में अध्ययन क्षेत्र की स्थिति उच्चावच, अपवाह तंत्र, जलवायु, प्राकृतिक वनस्पति, मृदा, आर्थिक स्वरूप, जनसांख्यिकीय स्वरूप आदि के आधार पर क्षेत्र की स्थिति का निर्धारण किया गया है।

तृतीय अध्याय में समग्र क्षेत्र विकास के स्वरूप एवं उनके अंगों का वर्णन किया गया है। जिसमें केन्द्रीय कार्यों की संकल्पना प्रस्तृत की गई। तथा उनका महत्व निर्धारित किया गया। इसके बाद केन्द्रीय स्थल के सिद्दान्त मांगरोल के संदर्भ में प्रस्तुत किये गये। जिसमें विभिन्न सेवाओं,

शिक्षा, चिकित्सा, संचार, जनुपयोगी सेवाऐं आदि का वर्णन किया गया तथा सेवा केन्द्रों की स्थिति निर्धारित की गई।

चतुर्थ अध्याय में केन्द्रीय स्थलों की कार्यात्मक सम्बद्धता एवं प्रवाह को परिभाषित किया गया है। जिसमें सम्बद्धता का मुख्य आधार यातायात माना गया है तथा यातायात प्रवाह को परिभाषित किया गया है। जिसमें वर्तमान में यातायात सुविधा एवं उनकी सम्बद्धता को परिभाषित किया गया। इसके अतिरिक्त विभिन्न सामाजिक सुविधाओं कृषि एवं अकृषि सुविधाओं की सम्बद्धता

एवं रिक्तता को परिभाषित किया गया। जिसके आधार पर केन्द्रीय स्थलों की भूमिका को ग्रामीण स्तर पर निर्धारित किया गया।

पंचम अध्याय में कार्यात्मक पदानुक्रम को निर्धारित किया गया जिसमें पदानुक्रम की भूमिका स्पष्ट करते हुए चयनित कार्यों के मूल्यांकन के आधार पर पदानुक्रम निर्धारित किया गया तथा केन्द्रीय कार्यों के भार का निर्धारण किया गया। केन्द्रीय के निर्धारण के साथ ही जनसंख्या की व्यवसायिक संरचना के आधार पर पदानुक्रम निर्धारित किया गया।

षष्ठम अध्याय में प्रादेशिक सम्बद्धता के संश्लेषण को प्रस्तुत किया गया है। जिसमें विभिन्न कार्यों एवं सेवाओं के लिए न्यूनतम जनसंख्या निर्धारित की गयी। जनसंख्या के आधार पर सेवा केन्द्रों की रिक्तता को प्रदर्शित किया गया। साथ ही कार्यात्मक रिक्तता के क्षेत्र बताये गये तथा वर्तमान में अपेक्षित सुविधाओं को सुझाया गया है।

सप्तम अध्याय में समग्र विकास हेतु वर्तमान स्वरूप एवं भावी विकास के लिए व्यूह रचना प्रस्तुत की गयी। जिसमें प्रदेश के विकास में केन्द्रीय स्थलों की भूमिका को निर्धारित करते हुए वर्तमान आर्थिक सुविधाओं में भावी विकास की कठिनाईयाँ भौगोलिक, आर्थिक सामाजिक स्तर पर निर्धारित की गई तथा कार्यात्मक पदानुक्रम का प्रस्ताव निर्धारित किया गया तथा क्षेत्र विकास के लिए प्रस्ताव तैयार किया गया।

अष्ठम अध्याय में शोध सारांश एवं निष्कर्ष एवं सुझाव प्रस्तुत किये गये। इस प्रकार इस शोध ग्रन्थ में समग्र क्षेत्र विकास नियोजन में मांगरोल तहसील को आधार मानते हुए विभिन्न तथ्यों को प्रस्तुत किया गया एवं भावी विकास के लिए विभिन्न प्रस्ताव तैयार किये गये। जिनके आधार पर अध्ययन क्षेत्र को ओर अधिक विकसति किया जा सकता है।

मांगरोल तहसील राजस्थान के दक्षिणी–पूर्वी भाग में बाराँ जिले की एक तहसील है जो कि $25^0$16' से $25^0$33' उत्तरी अक्षांशों के बीच एवं देशान्तरीय विस्तार $76^0$20' से $76^0$35' के बीच स्थित है। मांगरोल तहसील 431.25 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में विस्तृत है। 2011 की जनगणना के अनुसार यहाँ पर 106963 व्यक्ति निवास करते हैं। यहाँ पर कुल 20516 परिवार हैं। तहसील का जनघनत्व 248 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर है। इस भाग की समुद्र तल से औसत ऊँचाई 242 मीटर (794 फीट) है। अध्ययन क्षेत्र में भौगोलिक दृष्टि से यह मैदानी भाग है एवं यहाँ पर उच्चावच 220 मीटर से लेकर 260 मीटर के बीच है। इससे स्पष्ट होता है कि अध्ययन क्षेत्र समतल मैदानी भाग है।

यहाँ की भूगर्भिक संरचना बालू मिट्टी, कंकड़, लेटेराइट एवं दक्कन लावा से निर्मित है। यहाँ पर अधिकांशतः जलोढ़ मृदा पाई जाती है।

अध्ययन क्षेत्र के पूर्वी भाग में पार्वती नदी एवं पश्चिमी भाग में कालीसिंध एवं मध्य भाग में बाणगंगा नदी प्रवाहित होती है।

यहाँ की जलवायु उष्ण एवं आर्द्र है। जहाँ पर मानसून से वर्षा होती है। जहाँ पर ग्रीष्मकाल में औसत तापमान 35^0 एवं शीतकाल में 15^0 के लगभग रहता है। यहाँ पर औसत वार्षिक वर्षा 800 मिलीमीटर के लगभग है।

अध्ययन क्षेत्र में उष्ण कटिबंधीय वन पाये जाते हैं। जिसमें विभिन्न प्रकार के वृक्ष बैर, बबूल, आम, नीम, जामून, खेंजडी आदि के वृक्ष देखने

को मिलते हैं तथा यहाँ पर विभिन्न प्रकार के जीव जैसे हिरण, सीयार, जंगली गाय, खरगोश आदि देखने को मिलते हैं।

अध्ययन क्षेत्र में काली एवं जलोढ़ मृदा पायी जाती है जिसमें ऊपजाऊ क्षमता अधिक है। इसी कारण अधिकांश भाग में कृषि की जाती है।

अध्ययन क्षेत्र का अधिकांश भाग कृषि भूमि के अन्तर्गत आता है यहाँ पर 45 प्रतिशत भूमि कृषि योग्य भूमि है तथा मात्र 10 प्रतिशत भूमि कृषि अयोग्य है। 30 प्रतिशत भूमि पर वन एवं चरागाह स्थित हैं। यहाँ पर गेहूँ, सोयाबीन, सरसों, धनियाँ, लहसुन, मैथी आदि की फसलें प्रमुखता से की जाती है। सिंचाई के लिए यहाँ पर दायीं मुख्य नहर की विभिन्न लिफ्ट परियोजना के द्वारा सिंचाई की सुविधा विकसित है।

यहाँ पर 121670 कुल पशु पाले जाते हैं। जिनमें गाय, भैंस, बकरी, भैड़, घोड़े, खच्चर आदि प्रमुख हैं।

अध्ययन क्षेत्र में पूर्व में कृषि उपज मण्डी संचालित नहीं थी परन्तु जनवरी 2018 से यहाँ पर कृषि मण्डी की शुरूआत की गयी। जिससे किसानों को विभिन्न प्रकार की सुविधाऐं उपलब्ध हुई हैं।

अध्ययन क्षेत्र में रेल सुविधा उपलब्ध नहीं है। परन्तु विभिन्न राष्ट्रीय राजमार्ग एवं राज्य मार्ग से प्रत्येक ग्राम एवं ग्राम पंचायत मुख्यालय परस्पर जुड़े हुए हैं। यहाँ पर परिवहन संचार तंत्र विकसित है।

यहाँ पर 2001 की जनसंख्या 87813 व्यक्ति थी। जो 2011 में बढ़कर 106963 हो गयी। इस प्रकार 21 प्रतिशत दशकीय वृद्धि हुई। यहाँ पर 2011 के अनुसार 932 व्यक्ति लिंगानुपात एवं 237 प्रतिवर्ग किलोमीटर घनत्व दर्ज किया गया।

अध्ययन क्षेत्र की औसत साक्षरता 60.56 प्रतिशत है जिसमें 72.48 प्रतिशत पुरूष साक्षर हैं एवं 47.80 प्रतिशत महिलाऐं साक्षर हैं।

अध्ययन क्षेत्र में विभिन्न प्रकार की सेवाऐं उपलब्ध हैं। यहाँ पर कुल 80 अधिवास हैं जिनमें 17 ग्राम पंचायत व 1 तहसील मुख्यालय है। जिसमें विभिन्न प्रकार की सेवाऐं उपलब्ध हैं। शिक्षा की दृष्टि से यहाँ पर 4 महाविद्यालय स्थित हैं एवं चिकित्सा की दृष्टि से 5 प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र स्थित हैं।

अध्ययन की सुविधा के आधार पर सम्पूर्ण क्षेत्र को 3 निम्न भागों में विभाजित किया गया है। जिसके समग्र विकास को संक्षिप्त रूप में निम्न प्रकार से परिभाषित किया जा सकता है।

1. पूर्वी निम्न प्रदेश – इस क्षेत्र के अन्तर्गत 34 अधिवासों को सम्मिलित किया गया है। जिसमें 5969 परिवार स्थित हैं। जिसकी कुल जनसंख्या 30628 है। यह भाग पार्वती नदी से बाणगंगा नदी के बीच स्थित है। जिसके अन्तर्गत आने वाला अधिकांश भाग कृषि योग्य भूमि के अन्तर्गत है। इसमें माल बम्बोरी, बम्बोरीकलां, भावगढ़, मऊ, महलपुर, बोहत आदि ग्राम पंचायत के विभिन्न गाँव आते हैं। जिनके लिए अपेक्षित सुविधाऐं निम्नलिखित हैं।

(1) अध्ययन क्षेत्र में पार्वती नदी के किनारे वाले भागों में विभिन्न प्रकार के बीहड़ स्थित है। जिनको सरकार की विभिन्न योजनाओं के द्वारा कृषि क्षेत्र में परिवर्तित किया जा सकता है।

(2) अध्ययन क्षेत्र में पार्वती नदी से रेत एवं पत्थर का खनन किया जाता है। यहाँ पर क्रेशर लगाकर खनन व्यवसाय को समृद्ध किया जा सकता है।

(3) इस क्षेत्र के अन्तर्गत गेहूँ, सोयाबीन, धनियाँ, लहसुन आदि की कृषि की जाती है। जिससे विभिन्न प्रकार के कृषि आधारित लघु उद्योग संचालित होने की संभावनाऐं व्याप्त हैं।

(4) अध्ययन क्षेत्र को रेल परिवहन की सुविधा देकर श्योपुर एवं बाराँ से जोड़ा जा सकता है। जिससे विभिन्न प्रकार की अन्तर्राज्यीय सुविधाऐं आसानी से प्राप्त हो सकती हैं।

(5) यह भाग मध्य प्रदेश की सीमा का संलग्न भाग होने के कारण विभिन्न प्रकार की सुविधाऐं मध्य प्रदेश से प्राप्त की जा सकती है।

(6) पूर्वी भौगोलिक भाग में केवल 1 राष्ट्रीयकृत बैंक है। बैंक की सुविधा उपलब्ध कराने के लिए अन्य बैंक स्थापित किया जाना आवश्यक है।

(7) यहाँ पर कृषि सहकारी समितियाँ विभिन्न पंचायतों पर स्थित है। जहाँ पर सभी किसानों को उन्नत बीज एवं सस्ती दर में उर्वरक उपलब्ध करवाया जा सकता है।

(8) इस भाग में किसी प्रकार का कोई मनोरंजन का साधन उपलब्ध नहीं है। यहाँ पर मनोरंजन का साधन उपलब्ध करवाया जा सकता है।

(9) इस प्रदेश में सड़क सुविधा विकसित है। यहाँ से बाराँ से श्योपुर के लिए राज्य मार्ग स्थित है तथा इस मार्ग पर विभिन्न परिवहन के साधन विकसित किये जा सकते हैं।

(10) इस प्रदेश में किसी प्रकार का होटल एवं औद्योगिक इकाई नहीं है। जिसकी आवश्यकता स्थानीय व्यक्तियों द्वारा महसूस की जाती है।

(11) अध्ययन क्षेत्र के इस भाग के अधिकांश व्यक्ति पशु पालन करते हैं

(12) अध्ययन क्षेत्र में बम्बोरी कलां मध्य प्रदेश की सीमा का संलग्न प्रदेश है। यहाँ पर महाविद्यालय स्थापित किया जा सकता है।

(13) इस प्रदेश में नदी के पास मत्स्य व्यवसाय विकसित किया जा सकता है।

2. मध्य उच्च प्रदेश —

यह भौगोलिक प्रदेश पश्चिमी एवं पूर्वी निम्न प्रदेशों के बीच का उच्च भाग है। जिसमें 27 गाँव सम्मिलित किये गये हैं। इसके अन्तर्गत तहसील मुख्यालय भी सम्मिलित है। इस प्रदेश में कुल 8859 परिवार निवास करते हैं। जिनमें 47101 जनसंख्या निवास करती है। जिसका संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार है।

(1) मध्य उच्च भूमि प्रदेश में तहसील मुख्यालय सम्मिलित है। इसी कारण इस प्रदेश में अपेक्षित अधिक जनसंख्या निवास करती है। इसी कारण अधिक सेवा केन्द्रों का होना आवश्यक है। जहाँ से विभिन्न सुविधाऐं प्राप्त हो सके।

(2) मांगरोल तहसील मुख्यालय को बाराँ जिला मुख्यालय से रेल परिवहन सुविधा सुगमता से उपलब्ध कराई जा सकती है जिसको आगे की ओर सवाई माधोपुर एवं श्योपुर से जोड़ा जा सकता है।

(3) अध्ययन क्षेत्र के इस भाग में भटवाड़ा, गणेश जी को देव स्थल के रूप में विकसित कर प्रमुख पर्यटन स्थल बनाया जा सकता है।

(4) इस भाग में मांगरोल तहसील के अन्तर्गत कृषि मण्डी संचालित है परन्तु भंडारण सुविधा उपलब्ध नहीं है। इस क्षेत्र में लोगों को प्रोत्साहित कर वेयर हाउस बनवाये जा सकते हैं।

(5) विभिन्न कृषि उपजों के आधार पर लघु उद्योग स्थापित किये जा सकते हैं।

(6) अध्ययन क्षेत्र में बाणगंगा नदी पूर्ण रूप से मृत अवस्था में पहुँच चुकी है। जिसे विकसित कर दायीं मुख्य नहर से जोड़कर तहसील मुख्यालय को जलापूर्ती की जा सकती है।

(7) अध्ययन क्षेत्र के इस भाग में जनसंख्या अधिक होने के कारण मुर्गी पालन, मछली पालन आदि उद्योग विकसित किये जा सकते हैं।

(8) मध्य भाग में मांगरोल तहसील मुख्यालय पर खादी वस्त्र के कई हथकरघे संचालित हैं। जिनको बढ़ावा देने के लिए यहाँ पर खादी वस्त्र की मील स्थापित की जा सकती है।

(9) अध्ययन क्षेत्र के इस भाग में विभिन्न फर्नीचर उद्योग स्थापित किये जा सकते हैं।

(10) अध्ययन क्षेत्र के इस भाग में पेयजल का संकट बना रहता है क्योंकि यहाँ का जल फ्लोराइड युक्त है। अतः फ्लोराइड मुक्त जल उपलब्ध करवाने हेतु विभिन्न संयंत्र लगाये जा सकते हैं।

(11) उद्योगों को बढ़ावा देकर एवं व्यक्तियों को प्रोत्साहित करके तहसील मुख्यालय पर विभिन्न छोटे उद्योग संचालित किये जा सकते हैं।

3. पश्चिमी निम्न भाग —

यह मध्य भाग के पश्चिम में स्थित है। जिसके अन्तर्गत बाणगंगा से लेकर कालीसिंध तक के 23 गांवों को सम्मिलित किया गया है। इस भाग के अन्तर्गत 108.7 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र को सम्मिलित किया गया है। जहाँ पर कुल 5688 परिवार हैं जिनमें 29234 व्यक्ति निवास करते हैं। यहाँ की विभिन्न आवश्यकताओं का संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार से किया जा सकता है।

(1) यह भाग कालीसिंध नदी के किनारे होने के कारण यहाँ भी खनन व्यवसाय विकसित किया जा सकता है तथा क्रेशर लगाकर पत्थर से विभिन्न निर्माण सामग्री तैयार की जा सकती है।

(2) विभिन्न कृषि उपजों के द्वारा व्यक्तियों को आर्थिक सहायता प्राप्त होती है। कृषि उपजों के उत्पादन में वृद्धि करके व्यक्तियों को समृद्ध बनाया जा सकता है।

(3) अध्ययन क्षेत्र के इस भाग में 3 गौशाला स्थित है। जिनसे यहाँ पर दुग्ध डेयरी स्थापित की जा सकती है एवं गोबर गैस संयंत्र स्थापित किये जा सकते है।

(4) अध्ययन क्षेत्र के इस भाग में महिला शिक्षा पर अधिक ध्यान नहीं दिया जाता। इसके लिए लोगों को जागरूक कर महिला शिक्षा के प्रति सजगता बढ़ाई जा सकती है।

(5) इस भाग में अनुसूचित जाति एवं जनजाति की जनसंख्या अधिक है। इसी कारण इस भाग में विभिन्न छात्रावास सुविधा उपलब्ध करवाई जा सकती हैं। जिससे इन वर्गों का स्तर उठाने में सहायता मिलेगी।

(6) यह भाग रेल मार्ग से जुड़ा हुआ नहीं है। अतः इसे दिगोद रेलवे लाईन से आसानी से जोड़ा जा सकता है। जिससे रेल परिवहन सुविधा एवं व्यापारिक परिवहन सुविधा मिल सकती हैं।

(7) अध्ययन क्षेत्र के इस भाग में व्यक्तियों को कृषि की जानकारी देने के लिए विभिन्न जागरूकता शिविर लगाये जाने आवश्यक हैं।

(8) इस भाग में कालीसिंध नदी पर बांध या एनीकट विकसित किया जा सकता है। जिससे स्थानीय व्यक्तियों को सिंचाई की सुविधा उपलब्ध हो सके। साथ ही मत्स्य पालन व्यवसाय विकसित किया जा सकता है।

(9) अध्ययन क्षेत्र के इस भाग में सीसवाली में मण्डी सुचारू रूप से संचालित नहीं है। मण्डी को संचालित करके विभिन्न कृषकों को अधिकतम लाभ दिया जा सकता है।

BIBLIOGRAPHY

1. Agrawal, P.C. :- "Regional Geography and Regional Planning" 21st Int Geog. Cong. Proceeding, net. Com. For Geog. Calcutta, pp. 198-200

2. Agrawal, P.C. (1976) :- "Geography and Planning for regional Development of Bastar District, M.P. in Essays in Applied Geography Mishra, V.C. et. Al., (Eds), University of Sagar, pp.229-240

3. Ahmad, E. & D.K. Singh (1980) :- "Regional Planning with Particular reference India, Oriental Publisher's New Delhi p.1

4. Angrish A.C. (1987) :- "Regional Economic planning in India", Twenty First Century Publisher's Meerut.

5. Bansal S.C. (1975) :- Town-country Relationalship in Saharanpur City Region. A study in Rural Urban Interdependence problem Published Ph.D. Thesis of Meerut University Meerut. reference to India, Oriental Publisher's New Delhi p.1

6. Bhat L.S., St al, (1976) :- "Micro level Planning - A Case study of Karnal area" Haryana, (India) K.B. Publication, New Delhi.

7. Bhat L.S., St al, (1971) :- "Regional Development and National Planning in India" in Symposium on Regional Planning (21st I.G.C.) Vol.2, Calcutta, pp. 67-69

8. Budhraja, Dr. J.C. (1987) :- "Micro Level Development planning in India" in Symposium on Regional Planning (21st I.G.C.) Vol.2, Calcutta, pp. 67-69

9. Buggi, C. & R, Ramanna (1978) :- "Regional Planning for Rural Development" in Regional Planning and National Development by Mishra, Rp.et al (eds), Vikas Publication, New Delhi pp. 403-410.

10. Chand, M. and Puri, V.K. (1983) :- “Regional Planning in India” Allied publishers Pvt. Ltd. New Delhi.

11. Chandna, R.C. (2002) :- "Regional Planning" Kalyani publishers Pvt. Ltd. New Delhi.

12. Chandrashekhar, C.S. & K.V. Sundram (1972) :- "The Role of Growth foci in Regional Development Strategy, Town and Country Planning Organisation" New Delhi.

13. Chandrashekhar, C.S. (1972) :- "Balanced Regional Development and planning Regional" Census of India 1971, Monograph No.7 New Delhi pp. 59-74

14. Chattopadhyay, B.C. (1985) :- Rural Development Planning in India" S.Chand and Co. Ltd. New Delhi

15. Chauhan, T.S. (1987) :- "Agricultural Geography, A Study of Rajasthan State" Academic Publishers, Jaipur

16. Chauhan, V.S. & B, Singh (1982) :- “Regionalization for Rural Development and Planning” Independent Publication, Pvt. Ltd.

17. Chandrashekher, C.S. & K.V. Sundaram (1968) :- "Planning Regions of India" Town and Country Planning Organization, Pvt. Ltd.

18. Choudhary, Jayasri Roy (2009) :- An Introduction to Development Plannig with special Reference to India. Hyderabad; Orient Blackswan Pvt. Ltd. 2009

19. Clark, P.J. & F.C. Evans, (1954) :- "Distance to Nearest Neighbour as a measure of spatial Relationship in Population Ecology", Vol. 35 pp. 445-453

20. Degaonkar, C.K. (1990) :- "District Planning and Economic Development" Pointer Publishers, Jaipur.

21. Dixit, R.S. (1983) :- "Role of Markets in Regional Development and their spatial planning" in the Metropolitan Region of Kanpur pp. 140-148

22. Dubey, K.N. (1990) :- Planning and Development in India, Asia Publishing House, New Delhi.

23. Dube.,R.S.and Mishra R.P (1981) :- “Levels of Education, A verticle Indicator of Regional Development' Concept Pub.Comp.New Delhi

24. Khular, D.R. (2011) :- "Integrated Development Planning Geography" Tata McGrow Hill Education Pvt.Ltd. New Delhi.

25. Friedman, J and Aloso W (1965) :- "Regional Development and Planning" m.i.t. press mass, Cambridge

26. Friedman, j,(1959) :- “Regional Planning: A Problems of spatial integration” papers regional science association.

27. Haldipur, R.N. (1972) :- “Reading on micro level planning and rural growth centres” edited by L.K. Sen p.5

28. Khan S.A. (1990) :- "Growth Centre and Regional Planning" Pointer Publishers, Jaipur

29. Krishana Murthi, A.V. (1996) :- "Regional Planning in Tamilnadu" Reading on Micro level Planning and Rural Growth Centre (ed.) L.K. Sen NICD, Hyderabad pp. 318-320

30. Krishana Murthi, A.V. (1972) :- "Environmental Politics, People's lives and development choices" Sage Publications, New Delhi.

31. Kurian, G. (1970) :- 'India : A General Survey' National Book Trust, New Delhi

32. Lakshman, T.K. and B.K. Marayan eds., (1984) :- "Rural Development in India" Himalaya Publishing House, Bombay.

33. Mathur, J.S. (1977) :- "Area planning : Critical Review and Regional Development" 10th Course on I.R.D. Sept. Oct. N.I.C.D., Hyderabad

34. Maythew, Susan (2008) :- 'Oxford Dictionary of Geography' New Delhi; Oxford University press 2008

35. Mishra, G.K. and A. Kundu (1980) :- "Regional Planning at the micro level : A study for Rural electrification in Bastar and Chandrapur" India Institute of Publishing Administrative, New Delhi

36. Mishra, R.P. (1972) :- "Regional Planning Concepts, Techniques and Policies" Concept Pub. Comp., New Delhi

37. Mishra, S.P. (1985) :- "Integrated Area Development and Planning" A Geographical Study of Kerakat Tehsil, District Jaunpur (U.P.) Varanasi.

38. Mishra, R.P. & R.N. Achutha, (1990) :- "Micro-Level Rural Planning Principal, Methods and Techniques of Integrated area Planning" Institute of Development studies Mysore University, Mysore

39. Mishra, R.P. & R.N. Achutha, (1976) :- "Regional Development Planning in India" Vikas, Publishers New Delhi

40. Mohammed, Ali (1977) :- "Statistical Methods in Geographical studies" Rajesh Publication, New Delhi

41. Mundle, S (1977) :- "District Planning in India" I.I.P.A., New Delhi

42. Narayan, B.K. & D.V. Rao (1974) :- "Regional Planning Growth Centre Technique" Indian Journal of Regional Science Vol. VI No. 1 pp. 46-56

43. Nath, V. (1965) :- Resource Development Regional and Division of India" Planning Commission, New Delhi

44. Prasad, M. and Singh, H.L. (1981) :- "Rural Development and Micro Leval Planning" A case study of Koilwar Block Bhojpur, Bihar

45. Ray Chaudhuri, J. (2001) :- "An Introduction to Development and Regional Planning" Orient Longman Ltd., Kolkata

46. Sen, L.K. & Mishra, G.K. (1974) :- "Regional Planning for Rural Electrification, A case study of surypet tatluk, Nalgonda District" Andhra Pradesh, NiCD, Hyderabad

47. Shrivasthav, V.K., P.R. Chauhan & N. Sharma (1997) :- "Regional Planning and Balance Development Vasundhra Prakashan, Gorakhpur

48. Singh, L.R. (ed) (1986) :- "Regional Planning and Rural Development" Thinker's Library, The Technical Publishing house, Allahabad

49. Singh, L. (1979) :- "Integrated Rural Development : A case Study of Patna District Bihar" National Geography Vol XIV No.2, pp. 193-203

50. Singh, S.B. (1985) :- "Spatial Distribution Pattern of Central Places in Ballia District" Uttarbharat Bhoogol Patrika, Vol.2 No.1, pp. 27-31

51. Sundaram, K.V. (1971) :- "Regional Planning in India" In Symposium on Regional Planning (21st I.G.C.) Calcutta pp. 109-123

52. Thaper, P.C., (1988) :- "Regional Planning Industrial Planning" The ford foundect New Delhi p. 162

53. Tiwari, P.C. (1988) :- "Regional Development and Planning in India" Criterion Publication, New Delhi

54. Tondon, B.C. (1991) :- "Research Methodology in Social Science" Chaitanya Publishing, New Delhi

55. Wanmali, S. (1970) :- Regional Planning for social facilities-An Examination of Central Places Concepts and their application, A Case study of eastern Maharashtra, NiCD, Hyderabad.

56. Wen, G. (1978) :- "Grass-root approach to Regional Development A Global review in Regional Planning and National Development", by Mishra, R.P.et. Al. (Eds.) VP New Delhi pp.353-364

57. Yadav, S. (2002) :- "Spatio Functional Planning in Rajasthan-A Micro Regional analytical study of Beawer Tehsil" Unpublished Thesis 2001

60. दुबे, बेचन एवं सिंह, मंगला (1985) :- ''समन्वित ग्रमीण विकास'', जीवनधारा प्रकाशन, वाराणसी, पृ.सं. 21

58. सिंह, धर्मेन्द्र (2007) :- ''अलीगढ़ नगर में स्वास्थ्य सुविधा'' अप्रकाशित शोध ग्रन्थ, अलीगढ़ विश्वविद्यालय, उ.प्र.

59. श्राणावत, राणावत (2010) :- एकीकृत ग्रामीण विकास योजना (झालरापाटन तहसील का अध्ययन) अप्रकाशित शोध प्रबन्ध कोटा विश्वविद्यालय, कोटा (2010)

60. गुरू, के.एस. (2008) :- मानव संसाधन एवं विकास मंत्रालय रिपोर्ट

61. पाठक, गणेश कुमार (1993) :- बलिया जनपद (उ.प्र.) के सेवा केन्द्र एवं ग्रामीण विकास में उनका योगदान, पी.एच.डी. शोध प्रबन्ध, अप्रकाशित अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद

62. श्रीवास्तव, दिलीप कुमार (1997) :- ''रोल ऑफ सोसियो, इकॉनोमिक फेसिलिटीज इन इन्टीग्रेटेड रूरल डेवलपमेण्ट'' पूर्वांचल भूगोल पत्रिका, जौनपुर, अंक 3, पृ. 1–11।

REPORT :-

63 A reference Annual Report of India 2011-12

64 Board of Revenue & Record 1956, Live Stock Census, Government of Rajasthan, Ajmer

65 Board of Revenue & Land Record 1988, report on the live stock census, of Rajasthan, Government of Rajasthan, Ajmer

66 I.C.S.S.R. :- A Survey of research in Geography, New Delhi, 1972; Pop. Pack Bombay.

67 N.C.A.E.R. Techno economic survey of Rajasthan 1973, New Delhi

68 Year Book Rajasthan 2012

JOURNAL :-

69 Rajasthan Geographers Association publication, Bhilwara

70 Mitra, A (1961) :- Levels of Rajasthan Development in India, census of Indai Vol 1A(i) Delhi

71 Brahma, S. (1972) :- Approach to Rural Area Development Indian Journal of Regional Science, Vol.2, No.1

72 Singh, T. (1969) :- Planning for economic development of India Vol 2 NewYork

73 National Geographical Journal of India

74 Indian Journal of Agricultural Economics.

Census Reports :-

75 Baran District Census handbook, 2011

76 Mangrol Tehsil - Zila Sankhiki Rooprekha, 2015

ATISHAY KALIT

A Referred International Bilingual Research Journal of
Humanities, Social Science & Fine-Arts

LOTUS (July-December) Vol. 5, Pt. B Sr. 10 Year 2016
ISSN 2277-419X
RNI-RAJBIL01578/2011-TC

Chief Editor :
Dr. Rita Pratap (M.A. Ph.D.)

Co-Editor :
Dr. Shashi Goel (M.A. Ph.D.)

Mailing Address :
Dr. Rita Pratap
ATISHAY KALIT
C-24, Hari Marg, Malviya Nagar, Jaipur-302017
Phone - 0141-2521549 Mobile : 9314631852
INDIA

Editor Writes

Dear Friends,

I am glad to inform you that this Journal Atishay Kalit, Lotus issue (June-Dec 2016) has completed its 5th year. Thanks to all my contributors (Research Scholars) for their co-operation. Wishing you all a Very Happy New Year 2017.

With Best Wishes

Dr. Rita Pratap
(Editor)

This issue is dedicated to my husband Late Shri Anand Pratap Goel
who left for his heavenly abode on 23rd October 2016
It was his inspiration and support that this journal has reached its heights.
May his soul rest in peace

CONTENTS

1.	Editor Writes	*Dr. Rita Pratap*	2
2.	हिमाचल प्रदेश के लोक नाट्य में संगीतिक तत्त्व	*भावना शर्मा*	5
3.	लोकसंगीत तथा उत्तर प्रदेश में प्रचलित लोकसंगीत के कुछ विशेष प्रकारों का संक्षिप्त विवरण	*शिल्पा मिश्रा*	12
4.	भारतीय जीवन–दर्शन का स्वरूप	*डॉ. मंजु सक्सेना* *मुकेश बगडिया*	20
5.	जगमोहन माथोड़िया के भावपूर्ण रेखाचित्र	*प्रो. किरन सरना* *प्रिया बापलावत*	23
6.	राजस्थान की जनजातियों में राजनैतिक चेतना	*बनवारी लाल यादव*	29
7.	वेदों में योग–निरूपण	*डॉ. रामदत्त पाराशर*	39
8.	लालचन्द मारोठिया के रेखांकनों में सौन्दर्य बोध	*प्रो. किरन सरना* *पारूल बापलावत*	41
9.	हाड़ौती भित्ति चित्रण में ''मृग'' अंकन	*डॉ अचला वर्मा*	47
10.	अध्यापकों एवं विद्यार्थियों की वैयक्तिक प्रभावशीलता का अध्ययन	*डॉ. सरोजिनी उपाध्याय* *खुशबू जैन*	54
11.	दलित एवं दलित साहित्य लेखन	*कृष्णा खीची*	60
12.	धर्मसूत्रों में राजा के उत्तरदायित्वों का परिशीलन	*डॉ. कविता*	67

13.	तूँगा के प्राचीन स्मारक एवं वर्तमान स्थिति	*श्रीमती मीनाक्षी शर्मा*	71
14.	''लोक एवं जनजातीय कलाओं से आवृत भारतीय संस्कृति''	*डॉ0 शताक्षी चौधरी*	76
15.	वर्तमान भारतीय शिक्षा व्यवस्था : मौलाना आज़ाद के विचारों का प्रतिबिम्ब	बनवारी लाल मीना	81
16.	आभूषण कला एवं महत्त्व	प्रवीण कुमार	89
17.	सामाजिक सुविधाऐं एवं उनकी सम्बन्धता की रिक्तता एवं समस्याऐं (मांगरोल तहसील का एक अध्ययन)	डॉ. एन. के. जैतवाल रवि कुमारनागर	95
18.	अविद्या और माया : शंकराचार्य के सन्दर्भ में	डॉ. प्रीति सिंह	101
19.	Nudity: Through the eyes of Indian painters	*Mohan Jangid*	105
20.	International organization in the context of good governance	*Dr. Shashi Goel*	111
21.	"The Historical Values of Islamic Calligraphy in Modern Era-In-An Artistic Approach"	*Abdul Salam Khan*	123
22.	Meditation and Yogic Art in Indian Tradition	*Dr. Rita Pratap*	128

डॉ. एन. के. जैतवाल (शोध निर्देशक)
रवि कुमारनागर (शोध छात्र)
राजकीय महाविद्यालय,
बून्दी

ATISHAY KALIT
Vol. 5, Pt. B
Sr. 10, 2016
ISSN : 2277-419X

सामाजिक सुविधाऐं एवं उनकी सम्बन्धता की रिक्तता एवं समस्याऐं

(मांगरोल तहसील का एक अध्ययन)

राजस्थान के दक्षिण–पूर्वी भाग में हाड़ौती अंचल के अन्तर्गत बारां जिला आता है। पूर्व में 1948–1949 तक तत्कालिन कोटा रियासत का बाराँ जिला मुख्यालय था। जिसमें बाराँ, किशनगंज, शाहबाद, मांगरोल, सांगोद, कुंजेड नामक 7 निजाम शामिल थे। आजादी के बाद संयुक्त राजस्थान का गठन होने पर बाराँ को कोटा जिले में सम्मिलित किया गया। 43 वर्ष तक बाराँ को कोटा जिले की तहसील के रूप में जाना गया तथा उपखण्ड मुख्यालय रहा।

राजस्थान सरकार द्वारा 10 अप्रेल 1991 को विभिन्न जिलों की घोषणा के साथ बाराँ जिले को जिला घोषित किया गया। जिसमें विभिन्न तहसीलें स्थित है।

1. बाराँ 2. मांगरोल 3. अंता
4. छीपाबड़ौद 5. छबड़ा 6. अटरू
7. किशनगंज 8. शाहबाद

तहसील की कुल 80 अधिवासों का अध्ययन किया गया है। जिसमें उनकी सामाजिक सुविधाओं एवं उनकी सम्बद्धता की रिक्तता एवं समस्याओं का अध्ययन किया गया है। जिसमें विभिन्न सुविधाओं का स्थानिक वितरण एवं सेवा केन्द्रों का निर्धारण किया गया है।

उद्देश्य

1. सामाजिक एवं आर्थिक संरचना के विस्तार एवं सुदृढ़ीकरण करने का प्रयास।
2. विकास के लिए क्षमता एवं कौशल का उन्नयन
3. कुटीर उद्योग, लघु उद्योग, बागवानी, पशुपालन जैसी संलग्न गतिविधियों के माध्यम से रोजगार के साधनों का उन्नयन
4. क्षमता के आधार पर उपलब्ध लघु उद्योग, कुटीर उद्योग, बाजार एवं अन्य सुविधाओं का शुक्ष्म अध्ययन

सामाजिक सुविधाओं व उनकी सम्बद्धता की रिक्तता एवं समस्यायें

सामाजिक सुविधाओं के अन्तर्गत जीवन निर्वाह की विभिन्न सेवाओं को सम्मिलित किया जाता है। जिनका उपभोग व्यक्ति अपनी सुविधा के अनुसार करता है। यदि सामाजिक सुविधा स्थानिक नहीं होती तो निकटतम सुविधा केन्द्रों से सेवा प्राप्त की जाती है। अध्ययन क्षेत्र में मूलभूत सुविधाऐं सभी अधिवासों पर उपलब्ध है। इन सुविधाओं का वर्णन निम्न प्रकार से किया जाता है।

दैनिक सामाजिक आवश्यकता की ग्रामीण प्राथमिकता

दैनिक जीवन में जीवन निर्वाह के लिए उपयोगी आवश्यक सुविधाऐं विभिन्न अधिवास केन्द्रों पर उपलब्ध है। मानचित्र संख्या 1 के अनुसार स्पष्ट है कि विभिन्न सुविधाऐं अधिवास प्रारूप के आधार पर निर्धारित है तथा मूलभूत सुविधाओं का सांद्रण लगभग सभी अधिवासों पर उपलब्ध है। इन सुविधाओं का वर्णन निम्न प्रकार से किया जा सकता है।

(अ) घरेलू उद्योगों का वितरण प्रतिरूप – मानचित्र संख्या 2 के अनुसार कुल 80 अधिवासों में विभिन्न प्रकार के घरेलू उद्योगों का सांद्रण पाया जाता है। जिसमें 74 अधिवास ऐसे है जहाँ पर लगभग 1 प्रकार की घरेलू उद्योग सेवा उपलब्ध है। शेष 6 अधिवास गैर आबादी होने के कारण यहाँ पर यह सुविधा उपलब्ध नहीं है।

अध्ययन क्षेत्र ग्रामीण परिवेश का होने के कारण पीने के पानी के लिए मिट्टी के मटकों का उपयोग किया जाता है। इसी कारण गांव में 74 अधिवासों में मटका उद्योग स्थित है। यह सुविधा आवश्यक होने के कारण सभी अधिवासों में उपलब्ध है।

भोजन के लिए आटा तैयार करने के लिए अध्ययन क्षेत्र में विभिन्न अधिवासों पर आटा चक्की स्थित है। यहाँ पर कुल 66 सेवा केन्द्रों पर यह सुविधा उपलब्ध है। सर्वाधिक आटा चक्कियाँ मध्य भाग में स्थित है। जहाँ पर यह सुविधा उपलब्ध नहीं है वहाँ पर नजदीकी सेवा केन्द्रों से सुविधा प्राप्त की जाती है।

अध्ययन क्षेत्र में 80 अधिवासों में से 52 अधिवासों में मसाला उद्योग स्थित है। जो कि घरेलू आटा चक्कियों के साथ एवं व्यवसायिक रूप से उपलब्ध है। यहाँ पर यह सुविधा सर्वाधिक मध्य भाग में स्थित है। क्योंकि मध्य भाग में जनसंख्या का सांद्रण अधिक है।

आवास के लिए एवं कृषि कार्यों के लिए लकड़ी उद्योग भी महत्वपूर्ण उद्योग है। यहाँ पर लकड़ी उद्योग की सुविधा धीरे–धीरे कम होती जा रही है। यहाँ वर्तमान में 18 सेवा केन्द्रों पर यह सुविधा उपलब्ध है। अन्य सेवा केन्द्र तहसील मुख्यालय एवं 1000 से अधिक आवासों वाले अधिवासों पर निर्भर है।

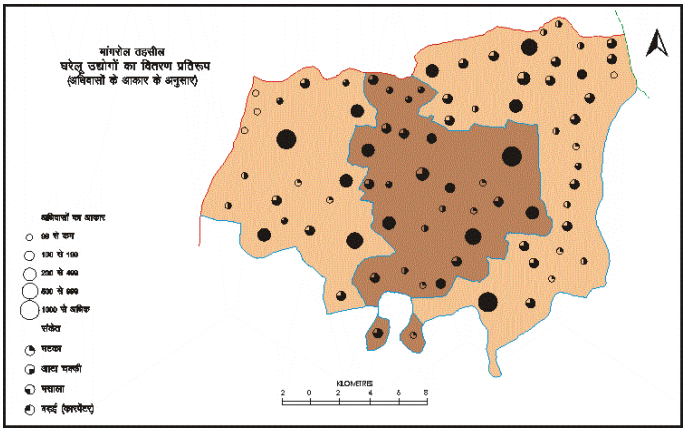

इस प्रकार सर्वाधिक सेवा केन्द्र पूर्वी भाग में स्थित है तथा मध्य भाग में अधिकतम घरेलू सेवाऐं तहसील मुख्यालय से प्राप्त हो जाती है।

(ब) साप्ताहिक हाट बाजार केन्द्रों का वितरण प्रतिरूप – हाटा बाजार मुख्यतः बाजार के सिद्धान्त पर कार्य करते है। जहाँ पर जनसंख्या घनत्व अधिक होता है एवं अधिकतम व्यक्तियों की पहुँच का केन्द्र होता है वहाँ पर यह केन्द्र स्थापित है। मानचित्र संख्या 3 के अनुसार पूर्वी भाग में दो अधिवासों पर हाट बाजार स्थित है। जो कि अधिक आवासों वाले क्षेत्र होने के कारण यहाँ पर स्थित है। अन्य अधिवासों में हाट बाजार की सुविधा उपलब्ध नहीं है। इसी प्रकार मध्य भाग में तहसील मुख्यालय होने के कारण यहा सुविधा उपलब्ध है। यहाँ पर मुख्यालय केन्द्र पर साप्ताहिकी हाट बाजार लगता है। इसी प्रकार पश्चिमी निम्न भूमि भाग पर सर्वाधिक 3 अधिवासों पर साप्ताहिकी हाट बाजार की सेवाऐं उपलब्ध है। इस भाग में अधिक जनघनत्व के 3 केन्द्र होने एवं तहसील मुख्यालय के अधिक दूरी पर स्थित होने के कारण यह बाजार विकसित हुए है तथा यह बाजार इस क्षेत्र में विभिन्न अधिवासों को अपनी सेवाऐं दे रहे हैं।

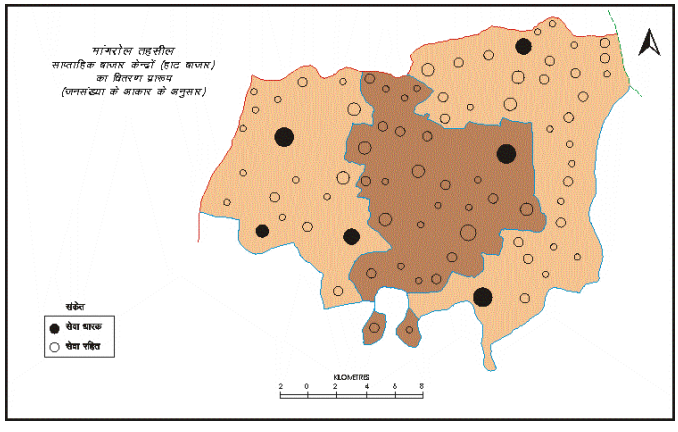

इस प्रकार साप्ताहिकी हाट बाजार मुख्य रूप से आवासों की संख्या पर निर्भर है। जहाँ आवासों की संख्या अधिक है वहाँ पर यह बाजार संचालित है। जहाँ पर आवासों की संख्या कम है उन्हें अन्य अधिवासों पर साप्ताहिकी बाजार सेवा के लिए निर्भर रहना पड़ता है। सम्पूर्ण अध्ययन क्षेत्र में कुल 5 साप्ताहिकी हाट बाजार अपनी सेवाऐं विभिन्न अधिवासों को प्रदान करते है।

(स) राजस्थान सम्पर्क केन्द्रों की ग्रामीण प्राथमिकता – वर्तमान में व्यक्ति की पहचान को यूनिक करने के लिए तकनीकि से जोड़ा गया है। जिसमें आधार कार्ड, भामाशाह कार्ड के साथ विभिन्न महत्वपूर्ण दस्तावेजों को संलग्न किया गया है। यह सुविधा प्रत्येक पंचायत स्तर पर व्यक्तियों को राजस्थान सम्पर्क केन्द्रों से प्राप्त होती है। यहाँ पर विभिन्न प्रकार के कार्ड, प्रशासनिक प्रमाण पत्र एवं आवश्यक दस्तावेज का कार्य किया जाता है तथा रोजगार गारंटी से जोड़ने के लिए जोब कार्ड जारी किये जाते है। मानचित्र संख्या 4 के अनुसार अध्ययन क्षेत्र के कुल 80 अधिवासों में सर्वाधिक राजस्थान सम्पर्क केन्द्रों की स्थिति मध्य भाग में है।

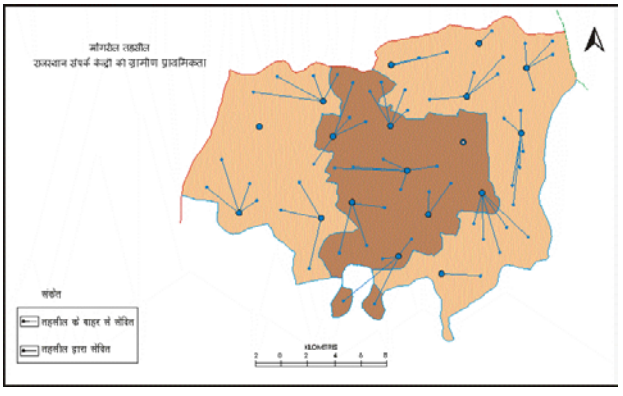

जिनकी संख्या 7 है। इन क्षेत्रों में पंचायत मुख्यालयों की निकटता होने के कारण अधिक सेवा केन्द्र उपलब्ध है तथा पूर्वी भाग में 6 सेवा केन्द्र विभिन्न अधिवासों में उपलब्ध है। जिनसे अन्य संलग्न अधिवास सेवायें प्राप्त करते हैं। पश्चिमी भाग में न्यूनतम सेवा केन्द्र स्थित है क्योंकि यहाँ पर अधिवास अधिक दूरी पर है एवं पंचायत मुख्यालय केन्द्रों की संख्या केवल 4 है जहाँ पर ही यह सुविधा उपलब्ध है। इस प्रकार सम्पूर्ण क्षेत्र में कुल 17 अधिवासों पर यह सुविधा उपलब्ध है। जिनसे निकटतम अधिवास सेवायें प्राप्त करता है। इसमें संचालित सभी सेवा केन्द्र समस्त अध्ययन क्षेत्र को सेवायें देने में सक्षम है। इसमें पंचायत मुख्यालयों की कोई बाध्यता नहीं है। इसी कारण निकटतम सेवा केन्द्रों से विभिन्न अधिवास सेवा प्राप्त करते है।

इस प्रकार इन केन्द्रों में ई–मित्र, बैंकिंग एवं प्रशासनिक सुविधाऐं उपलब्ध है।

(द) ईंधन आपूर्ति केन्द्रों को ग्रामीण प्राथमिकता – सम्पूर्ण अध्ययन क्षेत्र में ईंधन आपूर्ति के विभिन्न सेवा केन्द्रों पर यह सुविधा उपलब्ध होती है। जिसमें पेट्रोल, डीजल एवं केरोसीन प्रमुख है। ईंधन आपूर्ति मुख्य रूप से कृषि कार्यों के अन्तर्गत सम्मिलित की जाती है एवं इसे आवश्यक सेवा के रूप में भी माना जाता है। इसी कारण अध्ययन विषय में इसे आवश्यक सेवाओं के अन्तर्गत सम्मिलित किया गया है। मानचित्र संख्या 4.6 के अनुसार विभिन्न 4 अधिवास केन्द्रों में यह सेवा उपलब्ध है। अन्य अधिवास ईंधन आपूर्ति के लिए इन सेवा केन्द्रों पर निर्भर है। सर्वाधिक आपूर्ति केन्द्र पूर्वी भाग में स्थित है। क्योंकि यह बारां एवं श्योपुर मार्ग पर स्थित होने के कारण यह केन्द्र अधिक विकसित है तथा मांगरोल, बम्बोरीकलां सेवा केन्द्र मध्य प्रदेश राज्य को भी ईंधन आपूर्ति प्रदान करते है। यहाँ पर मांगरोल सेवा केन्द्र से सर्वाधिक अधिवासों को सेवा प्रदान की जाती है क्योंकि यह अधिकतम अधिवासों से निकटतम दूरी पर स्थित है।

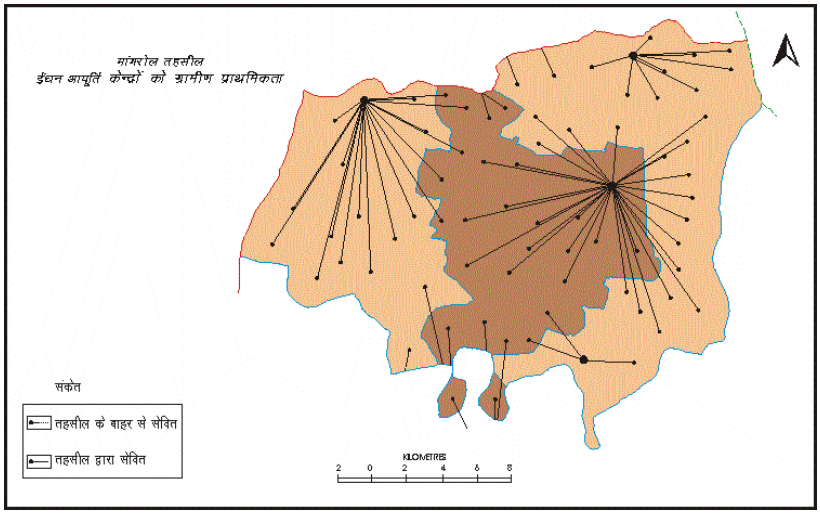

यहाँ पर 29 सेवा केन्द्रों को ईंधन आपूर्ति प्रदान की जाती है। इसके अतिरिक्त पूर्वी भाग में स्थित बोहत सेवा केन्द्र से मात्र 3 अधिवासों को ईंधन आपूर्ति प्राप्त होती है तथा बम्बोरीकलां ईंधन आपूर्ति केन्द्र से निकटतम दूरी पर स्थित 9 अधिवासों द्वारा ईंधन आपूर्ति सेवा केन्द्रों का अधिकतम लाभ लिया जाता है। इसी प्रकार पश्चिमी भाग में पटपड़ा में स्थित सेवा केन्द्र से कुल 16 निकटतम अधिवास सेवायें प्राप्त करते है। यह सेवा केन्द्र अन्य सेवा केन्द्रों की भांति अध्ययन क्षेत्र के बाहर के अधिवासों को भी सेवाऐं प्रदान करता है। अध्ययन क्षेत्र में 11 अधिवास ऐसे है जो बाहरी सेवा केन्द्रों से ईंधन आपूर्ति की सेवा प्राप्त करते है। जिनमें सर्वाधिक सेवा केन्द्र मध्य भाग के है तथा न्यूनतम सेवा केन्द्र पश्चिमी भाग के है।

सामाजिक सुविधाओं की समस्याऐं –

अध्ययन क्षेत्र में घरेलू उद्योग, ईंधन, राजस्थान संपर्क केन्द्र, साप्ताहिक हाट बाजार आदि का अध्ययन किया गया। जिससे यह ज्ञात हुआ कि अध्ययन क्षेत्र में घरेलू उद्योग अधिक विकसित है। प्रत्येक अधिवास पर लगभग महत्वपूर्ण आवश्यक सुविधाऐं उपलब्ध है। परन्तु इसके अतिरिक्त भी अध्ययन क्षेत्र में निम्न प्रकार की समस्याऐं प्राप्त हुई।

1. अध्ययन क्षेत्र में महत्वपूर्ण सुविधाओं का केन्द्रीकरण केवल बड़े अधिवासों तक सीमित है। छोटे अधिवासों को इन पर निर्भर रहना पड़ता है।
2. अध्ययन क्षेत्र में बाजार सुविधा केवल बड़े अधिवासों में कुछ स्थानों पर उपलब्ध है। इसके लिए बड़े शहरों की ओर लोगों का आकर्षण बना रहता है।
3. घरेलू उद्योग व्यवसायिक संरचना का अधिकांश भाग रखते है। परन्तु इनसे आर्थिक लाभ की प्राप्ति नहीं हो पाती। जिससे आर्थिक स्तर निम्न श्रेणी का देखने को मिलता है।
4. अध्ययन क्षेत्र में किसी प्रकार का कोई बड़ा उद्योग केन्द्र नहीं है। जिससे रोजगार की समस्या का सामना करना पड़ता है।
5. अध्ययन क्षेत्र में ईंधन आपूर्ति के लिए कुछ ही स्थानों पर आपूर्ति केन्द्र है। जिनकी सेवा प्राप्त करने के लिए अधिकतम ईंधन की खपत सेवा प्राप्त करने में हो जाती है।

समाधान –

1. अध्ययन क्षेत्र में कृषि आधारित उद्योग होना आवश्यक है।
2. तहसील मुख्यालय के अतिरिक्त अन्य छोटे केन्द्रों पर सेवा केन्द्रों का होना आवश्यक है।
3. कुटीर उद्योग, लघु उद्योग घरेलू आवश्यकताओं की पूर्ति के अतिरिक्त आय के स्त्रोत में विकसीत होना आवश्यक है।
4. ईंधन आपूर्ति के लिए निकटतम दूरी पर आपूर्ति केन्द्र होना आवश्यक है।

निष्कर्ष –

अध्ययन केन्द्र में विभिन्न प्राथमिक सेवाओं का अध्ययन किया गया जिससे यह प्राप्त हुआ कि यहाँ पर सामाजिक सुविधाओं में प्रमुख महत्त्वपूर्ण सुविधाऐं उपलब्ध है। जिसमें राजस्थान संपर्क केन्द्रों में आधुनिकतम सुविधा भी पंचायत मुख्यालय को प्राप्त है। इन सेवाओं का उपयोग करने के लिए अन्य अधिवास पंचायत मुख्यालयों पर निर्भर है तथा अन्य सामाजिक सुविधाऐं प्रत्येक अधिवास को प्राप्त है। अन्य विशिष्ट सेवाओं के लिए बड़े केन्द्रों पर निर्भर रहना पड़ता है।

❑ ❑ ❑

Nature and Society

A Referred International Bilingual Multi Disciplinary
Quarterly Research Journal

Volume IV No. 1 January-March 2017 **ISSN : 2394-1340**

Chief Editor
Dr. S.S. Yadav

Executive Editor
Dr. Ruchi Tyagi

Thar India Institution

The Harman Villa,
A-553-554, Siddharth Nagar, Airport Road
Jawahar Circle, Jaipur (India) 302017
Email : ssyadav73@gmail.com, rnd@tharindia.com,
Contact : +91 7891092431
www.tharindia.com

Nature and Society

An international Bilingual Multi Disciplinary Quarterly Research Journal

Patron in Chief

Prof. K.L. Kamal : Former Vice Chancellor, University of Rajasthan, Jaipur, India

Chairperson

Prof. R.P. Yadav : Former Vice Chancellor, RTU, Kota, India

Editorial Advisory Board

Prof. G.P. Rao : Senior Professor and Head, Department of Management Studies, Kamaraj University, Madurai, India

Dr. Antonova Nataliya : Assistt. : Professor, Faculty of Social Humanities, Ural State University of Physical Cultural, Russia

Dr. A.V. Singh : Head, Department of Philosophy, University of Rajasthan, Jaipur, India

Prof. N.P. Singh : Former Head, Department of Zoology, University of Rajasthan, Jaipur, India

Prof. K.P. Sharma : Head, Department of Botany, University of Rajasthan, Jaipur, India

Prof. Manika Mohan : Head, Department of Psychology, University of Rajasthan, Jaipur, India

Prof. Rashmi Jain : Department of Sociology, University of Rajasthan, Jaipur, India

Ayesha Zaheer : Special Advisor SCWEC i.e. Saarc Chamber Women entrepreneur Council-Pakistan

Prof. Rozanova Vladimir : Gneisin Russian Academy, Mascow

Dr. Anita Rajpal : Department of Sanskrit, Hindu College, University of Delhi, India

Julia A. Shabanova : Head, Department of Philosophy, National Mining University, Dr. Sc (Philosophy) Habit, Ukraine

Dr. Nijole : Romeris University, Lithunia

Dr. Okaro Kingley : Ebonyi State University Abakaliki, Nigeria

Chief Editor
Dr. S.S. Yadav

Executive Editor
Dr. Ruchi Tyagi

Thar India Institution

The Harman Villa,
A-553-554, Siddharth Nagar, Airport Road, Jawahar Circle, Jaipur (India) 302017
www.tharindia.com Email : ssyadav73@gmail.com, rnd@tharindia.com,
Contact : +91 7891092431

Disclaimer : The facts and views in the article and research papers etc. are of the authors and will be totally responsible of authenticity, validity and originality. No claim is made for the authenticity by information reflected in the Articles. The views express the journal are neither harbored by Nature and Society not the editors.

सम्पादक की कलम से...

वर्तमान में प्राकृतिक संसाधन और मानव संसाधन दोनों ही संकट से झूझ रहे हैं। औद्योगिक क्रान्ति के बाद राजनीतिक एवं सामाजिक स्थितियाँ अचानक बदलती हुई नजर आती हैं। समाज पर अर्थ हावी हो गया और अर्थ पर राजनीति। राजनीति की सर्वोच्च नीति यहीं ठहर गई है कि सत्ता में पार्टी का स्थायित्व कैसे काबिज रहे। इस लक्ष्यहीन गति और अंधी लालसा की दौड़ में न समाज का उत्थान के मायने रहे ना ही प्रकृति की सुरक्षा का जिम्मा जेहन में रहा।

इधर भटकती हुई युवा पीढ़ी के अपने सवाल है जिनके साथ राजनीतिक पार्टियाँ बड़ी चतुराई से खेल रही हैं। समाज में फैलता अवसाद, नशा और बेरोजगारी का दंश युवाओं को कहाँ ले जा रहा है, इसका जायजा हम आज पर नहीं आने वाले कल पर छोड़ते हैं। लेकिन प्रकृति का संदेश को हम ज्यादा दिन तक अनसुना नहीं कर सकते हैं। यह और बात है कि इसकी आवाज सुनने के लिए न हमारे पास समय है ना कोई योजना जिसे सरकार दीर्घकालीन नीति के रूप में बनाकर लागू कर सकें। समाज और प्रकृति दोनों में एक गहरा मतभेद शुरु हो गया है जो किसी भी राष्ट्र या सभ्यता के लिए शुभ संकेत नहीं हो सकता। प्रकृति एवं समाज दोनों ही क्षेत्रों में संतुलन, सुरक्षा, संरक्षण, सामंजस्य एवं समता के मूल तत्त्व खतरे में हैं। आवश्यकता इस बात की है कि तथाकथित संकीर्णता को छोड़कर इस गहन और व्यापक दृष्टि पर विचार कौन करे?

– डॉ. रूचि त्यागी

CONTENTS

1.	राजस्थान में जल–स्थिति एवं प्रबन्धन : एक अध्ययन	डॉ. कृष्ण मोहन	1
2.	अलगाव क्षेत्रवाद का स्वरूप एवं विशेषताएँ : एक दृष्टि	प्रो. करण सिंह विरेन्द्र सिंह (शोध छात्र)	9
3.	राजस्थान में पेय जल संकट एवं बढ़ती फ्लोराइड की मात्रा	बीरम सिंह गुर्जर	14
4.	राजस्थान में सूखा एवं अकाल : एक अध्ययन	डॉ. शंकर लाल गोस्वामी	19
5.	आरक्षण को प्रभावी बनाने के लिए किए गए संविधान संशोधन	डॉ. दीपिका कुमारी	30
6.	खलील जिब्रान की 'पागल' पर एक पैनी नजर	डॉ. सुगनचन्द पहाड़िया	38
7.	भारत में महिलाओं के संवैधानिक अधिकार एवं स्वतंत्रता के पश्चात बदलती स्थिति	चन्द्रदीप नन्दलाल यादव	44
8.	कश्मीरी विस्थापन और स्त्री	महेन्द्र कुमार	50
9.	भारत में महिलाओं की स्थिति एवं महिला सशक्तिकरण के प्रयास	डॉ. सपना गहलोत गीता बाजिया	55
10.	"श्री आर्य महिला विद्यापीठ (भुसावर) का शैक्षिक विकास : एक वैयक्तिक अध्ययन"	प्रो. वन्दना गोस्वामी वर्षा अग्रवाल	60
11.	अलवर जिले में भूमि उपयोग एवं प्रारूप : एक शोधपरक अध्ययन	कमलेश कुमार	75
12.	मांगरोल तहसील में स्थानिक रिक्तता के क्षेत्र	डॉ. एन. के. जैतवाल रवि कुमारनागर	87
13.	Androgyny, Self efficacy and interpersonal need as significant personality attributes in youth	Dr. Poonam Panghal	94
14.	Watershed Management	Anjali Meena	102
15.	Women Empowerment: Conceptual Framework and Applicability of Empowerment	Monika Sharma	107
16.	Right to Education: Anomalies and Challenges	Ms. Manisha	117
17.	Pollution : The Major Factors	Dr. B.L. Jat	123

ISSN : 2394-1340

मांगरोल तहसील में स्थानिक रिक्तता के क्षेत्र

डॉ. एन. के. जैतवाल
(शोध निर्देशक)
रवि कुमारनागर
(शोध छात्र)
राजकीय महाविद्यालय, बून्दी

1.1 परिचय

राजस्थान के दक्षिण–पूर्वी भाग में हाड़ौती अंचल के अन्तर्गत बारां जिला आता है। पूर्व में 1948–1949 तक तत्कालिन कोटा रियासत का बाराँ जिला मुख्यालय था। जिसमें बाराँ, किशनगंज, शाहबाद, मांगरोल, सांगोद, कुंजेड नामक 7 निजाम शामिल थे। आजादी के बाद संयुक्त राजस्थान का गठन होने पर बाराँ को कोटा जिले में सम्मिलित किया गया। 43 वर्ष तक बाराँ को कोटा जिले की तहसील के रूप में जाना गया तथा उपखण्ड मुख्यालय रहा।

राजस्थान सरकार द्वारा 10 अप्रेल 1991 को विभिन्न जिलों की घोषणा के साथ बाराँ जिले को जिला घोषित किया गया। जिसमें विभिन्न तहसीलें स्थित है।

1. बाराँ	2. मांगरोल	3. अंता	4. छीपाबड़ौद
5. छबड़ा	6. अटरू	7. किशनगंज	8. शाहबाद

1.2 अध्ययन क्षेत्र की स्थिति

मांगरोल तहसील राजस्थान के दक्षिण–पूर्वी भाग में स्थित है। जो मध्य प्रदेश की सीमा के साथ कोटा एवं बाराँ जिले के मध्य स्थित है। बाराँ जिले में मांगरोल की स्थिति उत्तर–पश्चिम भाग में स्थित है। जो कि 25016 से 25033 उत्तरी अक्षांशों के बीच एवं देशान्तरीय विस्तार 76020श से 76035श के बीच स्थित है। इसके उत्तर में कोटा जिले की पीपल्दा तहसील, पूर्व में किशनगंज तहसील, दक्षिण में जिला मुख्यालय बाराँ, पश्चिम में अंता तहसील स्थित है। इसका कुछ भाग मध्य प्रदेश की सीमा को स्पर्श करता है जो कि श्योपुर जिले की सीमा के साथ जुड़ा हुआ है। अध्ययन क्षेत्र का विस्तार उत्तर से दक्षिण की ओर लगभग 18 किलोमीटर एवं पूर्व से पश्चिम की ओर लगभग 24 किलोमीटर है। मांगरोल तहसील 431.25 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में विस्तृत है। 2011 की जनगणना के अनुसार यहाँ

पर 106963 व्यक्ति निवास करते हैं। यहाँ पर कुल 20516 परिवार है। तहसील का जनघनत्व 248 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर है। इस भाग की समुद्र तल से औसत ऊँचाई 242 मीटर (794 फीट) है।

शोध पत्र में मांगरोल तहसील के 80 अधिवासों में से 74 अधिवास आबादी एवं 6 अधि ावास गैर आबादी अधिवासों के अन्तर्गत रखे गये है। इसमें सर्वाधिक जनसंख्या तहसील मुख्यालय पर स्थित है। अध्ययन सुविधा के अनुसार अध्ययन क्षेत्र को तीन भागों में विभाजित किया गया है जो निम्न प्रकार है–

1. पूर्वी निम्न मैदानी प्रदेश, 2. मध्य उच्च भूमि, 3. पश्चिमी निम्न मैदानी प्रदेश

स्थानिक रिक्तता के क्षेत्र

स्थानिक रिक्तता एवं पूर्णतः को ज्ञात करने के लिए विभिन्न सेवा केन्द्रों को केन्द्र मानकर वृत खींचकर निर्धारित किया जा सकता है। जिसमें न्यूनतम दूरी एवं सेवा केन्दों से सेवित अधिवासों को पहचाना जा सकता है तथा दो या दो से अधिक केन्दों से सेवा प्राप्त करने वाले अधिवासों को ज्ञात किया जा सकता है। इन सेवा केन्दों की पहचान निम्न अर्ध व्यासों द्वारा तालिका संख्या 1.1 में प्रदर्शित है।

तालिका संख्या 1.1 :	**मांगरोल तहसील – मांगरोल तहसील में विभिन्न सेवाओं का**
सेवा का प्रकार	अपेक्षित दूरी वृत की त्रिज्या (किमी.)
शैक्षणिक	
1. प्राथमिक विद्यालय	केवल गाँव
2. उच्च प्राथमिक विद्यालय	3
3. माध्यमिक विद्यालय	5
4. उच्च माध्यमिक विद्यालय	8
5. महाविद्यालय	8
चिकित्सा सुविधा	
1. डिस्पेंसरी	5
2. स्वास्थ्य केन्द्र	8
संचार सुविधा	
1. डाकघर	3
2.ॅपपि सुविधा	5
व्यापारिक सुविधा	
1. थोक बाजार	8
बैंकिंग सुविधा	
1. बैंक	8
2. सहकारी समिति	5
अन्य सुविधाऐं	
1. राजस्थान संपर्क केन्द्र	5
2. उर्वरक वितरण केन्द्र	5
3. पशु चिकित्सा	8

इनकी सेवाओं को तीन प्रकार से विभाजित किया गया है जो निम्न प्रकार है –

1. उच्च सेवा – 8 किलोमीटर वृत्त की त्रिज्या वाली सेवाओं को सम्मिलित किया गया है।

(i) उच्च माध्यमिक विद्यालय

(ii) महाविद्यालय

(iii) प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र

(iv) थोक बाजार

(v) बैंक

(vi) पशु चिकित्सा

2. मध्यम सेवा – इसमें 5 किलोमीटर वृत्त की त्रिज्या वाले सेवाओं को सम्मिलित किया गया है।

(i) माध्यमिक विद्यालय

(ii) डिस्पेंसरी

(iii) wifi सुविधा

(iv) राजस्थान सम्पर्क केन्द्र

(v) सहकारी समिति

(vi) उर्वरक केन्द्र

3. निम्न सेवा – इसमें 3 किलोमीटर वृत्त की त्रिज्या वाले सेवाओं को सम्मिलित किया गया है।

(i) उच्च प्राथमिक विद्यालय

(ii) डाकघर

उच्च सेवाओं की रिक्तता के क्षेत्र

मानचित्र संख्या 1 से स्पष्ट होता है कि उच्च सेवाओं की दृष्टि से केवल दक्षिणी भाग एवं उत्तरी–पूर्वी भाग को छोड़कर सभी जगह सेवाओं की पूर्णता है। यह क्षेत्र अन्य क्षेत्रों से विभिन्न आवश्यकताओं की पूर्ती करते है। जिसमें विभिन्न भौतिक विभागों के आधार पर विश्लेषण निम्न प्रकार है।

ISSN : 2394-1340

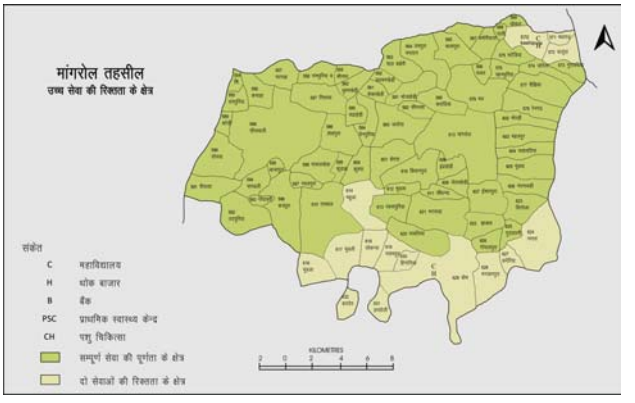

1. पूर्वी निम्न प्रदेश

अध्ययन क्षेत्र में इसके अन्तर्गत केवल महाविद्यालय एवं थोक बाजार की रिक्तता प्रदर्शित होती है। यहाँ पर पूर्वी भाग में खानपुरिया, भावगढ़, बालूंदा, पगारा, करेरिया, भगवानपुरा, बोहत आदि गांवों में महाविद्यालय एवं थोक बाजार की रिक्तता है। यहाँ पर यह इन सेवाओं के लिए अन्य क्षेत्रों पर निर्भर है।

2. मध्य उच्च प्रदेश

अध्ययन क्षेत्र में इसके अन्तर्गत उच्च सेवा की दृष्टि से केवल दक्षिणी भाग में रिक्तता देखने को मिलती है। जिसमें महुआ, मूंडली, सोकन्दा, श्यामपुरा, हिंगोनिया, बलदेवपुरा, हरसोली आदि अधिवासों में महाविद्यालय एवं थोक बाजार की रिक्तता है। यह अधिवास आवश्यकताओं की पूर्ती के लिए तहसील मुख्यालय एवं जिला मुख्यालय पर निर्भर है।

3. पश्चिमी निम्न प्रदेश

अध्ययन क्षेत्र में मानचित्र के अनुसार प्रदर्शित होता है कि यहाँ पर केवल मूंडला को छोड़कर शेष सभी अधिवासों पर उच्च सेवा पूर्णता देखने को मिलती है। मूंडला में थोक बाजार एवं महाविद्यालय की रिक्तता है। यह सेवा इसे जिला मुख्यालय से प्राप्त होती है।

मध्यम सेवाओं की रिक्तता के क्षेत्र

मानचित्र संख्या 2 के अनुसार मध्यम सेवा की रिक्तता वाले क्षेत्रों को तीन भागों में विभाजित किया गया है। जिसमें एक सेवा की रिक्तता, दो प्रकार की सेवा की रिक्तता एवं पूर्णता के क्षेत्र सम्मिलित है। भौगोलिक प्रदेश के अनुसार जिसका विश्लेषण निम्न प्रकार से किया जा सकता है।

ISSN : 2394-1340

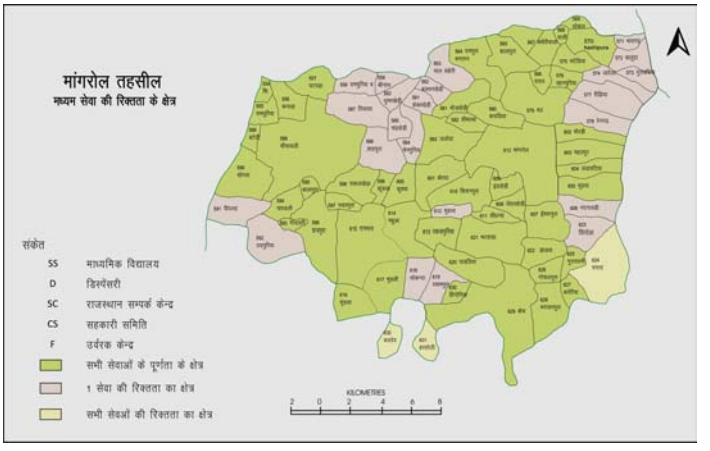

1. पूर्वी निम्न प्रदेश

अध्ययन क्षेत्र में इस प्रदेश के अन्तर्गत मालबम्बोरी, भावगढ़, जारेला, गुरावदिया, रिझिया, रेलगढ़, नंदगांवड़ी, सिंगोला अधिवासों में एक सेवा डिस्पेंसरी की रिक्तता है तथा अन्य सेवाओं की सभी भागों में पूर्णता है। इस अध्ययन क्षेत्र के अन्तर्गत पगारा में डिस्पेंसरी, राजस्थान सम्पर्क केन्द्र, सहकारी समिति, उर्वरक केन्द्र,ॅपपि सुविधा आदि की रिक्तता है।

2. मध्य उच्च प्रदेश

मानचित्र के अनुसार मध्य उच्च प्रदेश में श्रीनाल, धूमरखेड़ी, बलवनखेड़ी, केकाखेड़ी, चन्द्राहेड़ी, चेनपुरिया, शाहपुरा, मूंडला, सोकन्दा, श्यामपुरा में डिस्पेंसरी की रिक्तता है तथा बलदेवपुरा, हरसोली में सभी मध्यम प्रकार की सेवाओं की रिक्तता है।

3. पश्चिमी निम्न प्रदेश

मानचित्र संख्या 2के अनुसार अध्ययन क्षेत्र में पश्चिमी निम्न प्रदेश में रामपुरा, तिसाया, पीपल्दा, उदपुरिया में डिस्पेंसरी की रिक्तता है तथा अन्य अधिवासों में सभी सेवाओं की पूर्णता देखने को मिलती है।

निम्न सेवाओं की रिक्तता के क्षेत्र

मानचित्र संख्या 3 के अनुसार निम्न सेवा की रिक्तता वाले क्षेत्रों को दो भागों में विभाजित किया गया है। जिसमें सभी सेवाओं की पूर्णता वाला क्षेत्र एवं एक प्रकार की सेवा की रिक्तता वाला क्षेत्र है। जिसका विवरण निम्न प्रकार है।

ISSN : 2394-1340

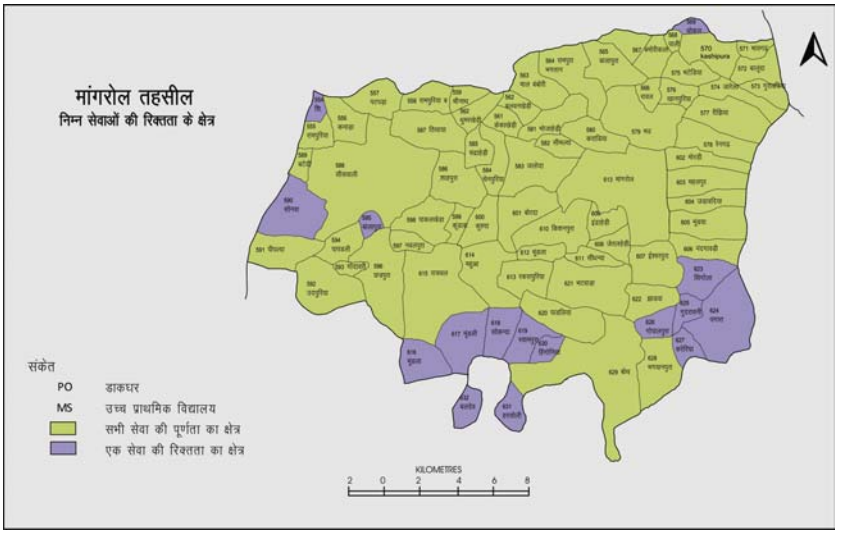

1. पूर्वी निम्न प्रदेश

मानचित्र के अनुसार धोंकला, सिंगोला, गुदरावनी, गोपालपुरा, करेरिया, पगारा जैसे अधि ावासों में डाकघर की रिक्तता देखने को मिलती है। अन्य अधिवासों में निम्न सेवाओं की पूर्णता है।

2. मध्य उच्च प्रदेश

मानचित्र के अनुसार मूंडली, सोकन्दा, श्यापुरा, हिंगोनिया, बलदेवपुरा, हरसोली आदि अधिवासों में डाकघर की रिक्तता देखने को मिलती है। शेष सभी अधिवासों में निम्न सेवाओं की पूर्णता है।

3. पश्चिमी निम्न प्रदेश

इसमें शिवपुरा, सोनवा, बालापुरा, मूंडला अधिवासों में डाकघर की रिक्तता प्रदर्शित होती है। जिसमें शिवपुरा एवं बालापुरा गैर आबादित अधिवास है। शेष दो अधिवासों को इसकी रिक्तता पूर्ण करने के लिए अधिक दूरी तय करनी पड़ती है। अन्य निम्न सेवाओं की पूर्णता देखने को मिलती है।

क्षेत्र में वर्तमान एवं अपेक्षित सुविधाऐं

विभिन्न आँकड़ों एवं अधिवासों के अध्ययन से निम्न तथ्य स्पष्ट होते हैं –

1. मांगरोल अध्ययन क्षेत्र में कुछ अध्ययन क्षेत्र ऐसे हैं जहाँ पर न्यूनतम जनसंख्या से कम जनसंख्या होने पर भी सुविधाऐं उपलब्ध है परन्तु कुछ अधिवास ऐसे है जहाँ पर न्यूनतम जनसंख्या से अधिक जनसंख्या है परन्तु विभिन्न सुविधाओं का केन्द्रियकरण देखने को नहीं मिलता है। अधिकांशतः सुविधाऐं पंचायत मुख्यालयों पर केन्द्रित है।
2. अध्ययन क्षेत्र में शिक्षा, चिकित्सा, परिवहन, जलापूर्ती, विद्युतापूर्ती आदि सुविधाऐं सभी जगह उपलब्ध है। यहाँ पर वर्तमान में महिला महाविद्यालय एवं तकनिकी महाविद्यालय एवं औद्योगिक केन्द्र की सुविधाऐं अपेक्षित है।
3. मांगरोल अध्ययन क्षेत्र में प्राथमिक सुविधाऐं सभी अधिवासों पर उपलब्ध है परन्तु शिवपुरिया, रामपुरिया, बठेड़ी, बालापुरा, गुरावदिया, धोंकलखेड़ी जैसे गैर आबादी क्षेत्रों को छोड़कर सभी में अपेक्षित सुविधाऐं उपलब्ध है।
4. अध्ययन क्षेत्र में डिस्पेंसरी एवं प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र की स्थापना यदि न्यूनतम दूरी के आधार पर की जाती तो अधिक सुविधाजनक होती परन्तु इन सुविधा केन्द्रों को पंचायत मुख्यालयों एवं बड़े केन्द्रों पर ही स्थापित किया गया।
5. अध्ययन क्षेत्र में वर्तमान में मूलभूत आवश्यक सेवाऐं सभी सेवा केन्द्रों को प्राप्त है। परन्तु उच्च स्तरीय सेवा जैसे, महाविद्यालय, थोक बाजार, की रिक्तता है। इसमें बोहत एवं बम्बोरीकलां जैसे बड़े अधिवासों में यदि महाविद्यालय एवं थोक बाजार की सुविधा उपलब्ध हो जाती है तो सम्पूर्ण क्षेत्र सभी सुविधाओं से पूर्ण हो जाता है।

सन्दर्भ सूची

1. Agrwal, P.C.:-"Regional Geography and Regional Planning" 21st IntGeog. Cong. Proceeding net. Com. For Geog. Calcutta, pp. 198-200
2. Chand M. and Puri, V.K (1983) :-"Regional Planning in India" allied publishers Pvt. Ltd. New Delhi.
3. D.R. Khular (2011):-Integrated Development Planning Geography, Tata McGrow Hill Education Pvt. Ltd. New Delhi.
4. Khan S.A. (1990):- "Growth Centre and Regional Planning Pointer Publishers Jaipur.
5. Kurian, G. (1970):- "India : A General Survey National Book Trust, New Delhi.
6. Lakshman T.K. and B.K. Marayan eds., (1984):-"Rural Development in India" Himalaya Publishing House, Bombay.
7. Mitra, A. (1961):-Levels of Rajasthan Development in India, census of India Vol 1A (i) Delhi.
8. Brahma, S. (1972):-Approach to Rural Area Development. Indian Journal of Regional Science, Vol.2, No.1
9. A reference Annual Report of India 2011-12
10. N.C.A.E.R. :- Techno economic survey of Rajasthan 1973, New Delhi

❑❑❑